ISSN 0970-9312

प्राथमिक शिक्षक

शैक्षिक संवाद की पत्रिका

वर्ष 46 अंक 4 अक्तूबर 2022

पत्रिका के बारे में

प्राथमिक शिक्षक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है, शिक्षकों और संबद्ध प्रशासकों तक केंद्रीय सरकार की शिक्षा नीतियों से संबंधित जानकारियाँ पहुँचाना, उन्हें कक्षा में प्रयोग में लाई जा सकने वाली सार्थक और संबद्ध सामग्री प्रदान करना और देश भर के विभिन्न केंद्रों में चल रहे पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों आदि के बारे में समय पर अवगत कराते रहना। शिक्षा जगत में होने वाली गतिविधियों पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए भी यह पत्रिका एक मंच प्रदान करती है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने होते हैं। अत: यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक चिंतन में परिषद् की नीतियों को ही प्रस्तुत किया गया हो। इसलिए परिषद् का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

© 2023. पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है। परिषद् की पूर्व अनुमति के बिना, लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति

निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. : दिनेश प्रसाद सकलानी

अध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग : सुनीति सनवाल

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : अनूप कुमार राजपूत

संपादकीय समिति

अकादमिक संपादक : पद्मा यादव एवं उषा शर्मा

मुख्य संपादक (प्रभारी) : बिज्ञान सुतार

प्रकाशन मंडल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा

मुख्य व्यापार प्रबंधक : विपिन दिवान

संपादन सहायक : ऋषिपाल सिंह

सहायक उत्पादन अधिकारी : राजेश पिप्पल

आवरण

अमित श्रीवास्तव

आवरण चित्र

अनिका यादव, कक्षा-पाँचवी 'डी', सोमरविले स्कूल, ग्रेटर नोएडा

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
होस्केरे हल्ली एक्सटेंशन
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी. डब्ल्यू. सी. कैंपस
धनकल बस स्टॉप के सामने
पनिहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी. डब्ल्यू. सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

मूल्य एक प्रति ₹ 65.00 **वार्षिक ₹ 260.00**

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 के लिए प्रकाशित तथा चन्द्र प्रभु आफसेट प्रिंटिंग वर्क्स (प्रा.) लि., सी-40, सैक्टर-8, नोएडा-201 301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सितंबर 2023 में मुद्रित

ISSN 0970-9312

प्राथमिक शिक्षक

वर्ष 46 **अंक 4** **अक्तूबर 2022**

इस अंक में

संवाद 3

लेख

1. आरंभ अच्छा तो सब अच्छा — सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त' — 5
2. प्राथमिक स्तर के शिक्षण-अधिगम में क्षेत्रीय भ्रमण की भूमिका — अशोक कुमार — 12
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा हेतु विद्या प्रवेश (रेडीनेस) कार्यक्रम की उपादेयता — डी.डी. गौतम — 22
4. वर्तमान परिदृश्य में प्रारंभिक बाल्यावास्था देखभाल एवं शिक्षा का समीक्षात्मक अध्ययन (छत्तीसगढ़ के संदर्भ में) — प्रीति साहू, मुकेश चन्द्राकर — 31
5. कुपोषण पर प्रहार शिक्षकों की भूमिका — अनिल कुमार तेवतिया — 44
6. बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले कारक — नीतिन कुमार ढाढोदरा — 52
7. शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत संचालित विशेष प्रशिक्षण केंद्र के विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की वस्तुस्थिति का अध्ययन — सरला वर्मा — 59
8. प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण में भाषा की भूमिका — रमेश तिवारी — 66
9. अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए रचनावादी शिक्षण — देवेन्द्र कुमार यादव, शिरीष पाल सिंह — 74

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी NCERT

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं– (i) अनुसंधान और विकास, (ii) प्रशिक्षण, तथा (iii) विस्तार।
यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।
उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है– विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

10.	प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान और नैतिकता के समावेशन की आवश्यकता दर्शाती कलाम साहब की *तेजस्वी मन*	पूर्णिमा पाण्डेय दीपा मेहता	86
11.	बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के इंटर्नशिप के दौरान उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन	डिगर सिंह फर्स्वाण किरन सती	92
12.	कोरोना/कोविड-19 में मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारण एवं निदान में शिक्षक की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	अमित अग्रवाल अभिषेक कुमार सिंह	102
13.	डिजिटल पेडागॉजी अर्थपूर्ण अधिगम को समृद्ध करने की दिशा में एक नवाचार	पुष्पेन्द्र यादव	110
14.	प्रातःकालीन सभा विद्यालय संस्कृति का प्रतिबिंब	ऋषभ कुमार मिश्र	122

विशेष

15.	पूर्व-प्राथमिक विद्यालय		132

बालमन कुछ कहता है

16.	माँ	चार्वी यादव	162

कविता

17.	योग एवं स्वास्थ्य	रितिका	163

संवाद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के लिए सीखने के विभिन्न अवसर लेकर आई है। इसके अंतर्गत शिक्षकों को कई ऐसे सुझाव दिए गए हैं जिनसे वे अपने अनुभवों को अभिभावकों से साझा करके शिक्षा के स्तर में अपेक्षित सुधार ला सकते हैं। *प्राथमिक शिक्षक* पत्रिका कुछ ऐसे ही अवसर शिक्षक तथा शोधार्थियों को देती है जिनमें वे विभिन्न विषयों से जुड़े अपने अनुभवों को पाठकों तक पहुँचा सकते हैं।

प्रस्तुत अंक में कुल चौदह लेख, एक कविता, बालमन तथा विशेष शामिल किए गए हैं जिनमें आरंभिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं, जैसे— आरंभिक शिक्षा में खेल, स्थानीय भ्रमण, कविता-कहानी का प्रयोग, विद्या प्रवेश (रेडीनेस कार्यक्रम) आदि पर लेखों के माध्यम से चर्चा की गई है। गतिविधियों द्वारा बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक अवधारणा कैसे विकसित करें; प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल एवं शिक्षा की भूमिका साथ ही बच्चों में कुपोषण को दूर करने के लिए शिक्षक क्या प्रयास कर सकते हैं; बच्चों में साहित्यिक प्रतिभा को कैसे विकसित किया जा सकता है आदि विषय शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। प्रस्तुत पत्रिका में **शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत संचालित विशेष प्रशिक्षण केंद्र में विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की वस्तुस्थिति का अध्ययन, गणित शिक्षण में भाषा की भूमिका, अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए रचनावादी शिक्षण, विज्ञान और नैतिकता के समावेशन, बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का इंटर्नशिप,** कोरोना में मानवीय मूल्यों का ह्रास, डिजिटल पेडागॉजी, प्रातःकालीन सभा से संबंधित लेख सम्मिलित हैं।

आरंभिक शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभाती है। शिक्षा की नींव यदि मजबूत हो तो भविष्य सुनहरा होता है। हर व्यक्ति का सीखने का अपना तरीका होता है वैसे ही बच्चे भी अनेकों तरीके से सीखते हैं, जैसे— कविता, कहानी, खेल-खिलौने इत्यादि। बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए शुरुआत से ही बच्चों को सुनने, बोलने, पढ़ने-लिखने के अवसरों के साथ-साथ कहानी सुनने, चित्र देखने, किताबें पढ़ने आदि के अवसर देना चाहिए। पढ़ाई के साथ-साथ पोषण, स्वच्छता, संस्कार आदि पर भी ध्यान देना चाहिए। बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को भी इन बातों से अवगत कराते रहना होगा। वर्णित लेखों को पढ़कर आप अपनी एक समझ बना सकते हैं जिससे पढ़ने-पढ़ाने के तौर-तरीकों में नवाचार लाकर, आप शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति कर समाज में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

पत्रिका में 'विशेष' के अंतर्गत 'पूर्व-प्रथमिक विद्यालय' को शामिल किया गया है, ताकि आप इसे पढ़कर इससे लाभांवित हों।

आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। यदि पत्रिका के संबंध में आपके कोई सुझाव हों तो हमें अवश्य भेजें। हम अपने आगामी अंक में उन्हें समाहित करने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

अकादमिक संपादक

आरंभ अच्छा तो सब अच्छा

सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'*

वेदों में बताया गया है कि माँ पहली गुरु, उसकी गोदी पहली कक्षा और घर पहली पाठशाला होती है। अनौपचारिक रूप से सीखने के इस विधान से निकलकर बच्चे जब पहली-पहली बार औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत स्कूली जीवन में कदम रखते हैं, तो उनके समक्ष अनेक चुनौतियाँ मुँह बाए खड़ी रहती हैं, जैसे—नए-नए लोगों से सामंजस्य स्थापित करना, नए परिवेश में स्वयं को ढालना आदि। आरंभिक कक्षा के शिक्षक के सामने अनेक चुनौतियाँ होती हैं। पाठशालाई दुनिया में पहली-पहली बार कदम रखने वाले बच्चों को पाठशाला में बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। यदि अध्यापिका कुछ बातों के प्रति सजग रहे तो वह इन चुनौतियों का सामना कर सकती है। आरंभिक शिक्षा, अध्यापिका का व्यवहार और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कैसी हो, इन सबके बारे में यहाँ चर्चा की गई है।

आरंभिक कक्षा ही वह कक्षा है जिसमें अधिकतर बच्चे स्कूली दुनिया में पहला कदम रखते हैं और आरंभिक कक्षा ही वह कक्षा है जो अधिकतर बच्चों का किताबों की दुनिया से परिचय कराती है। यही वह कक्षा है जो बच्चों के मन में पढ़ाई-लिखाई, किताबों, स्कूल और शिक्षकों के प्रति एक नजरिया विकसित करती है। यह नजरिया अगर सकारात्मक होता है तो पढ़ने की दहलीज पर कदम रखने वाला बच्चा स्कूली दुनिया में प्रविष्ट होकर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता चला जाता है। इसके विपरीत स्कूल के प्रति यदि बच्चे का रवैया आरंभिक कक्षा में नकारात्मक बन जाता है तो बच्चों को शाला त्यागते देर नहीं लगती और कई बार तो आरंभिक कक्षा ही आखिरी कक्षा बनकर रह जाती है।

अपनी बोली, मीठी बोली

स्कूल में पहले-पहल कदम रखने वाले प्रत्येक बच्चे अपने साथ अपनी बोली, संस्कृति, रहन-सहन की पद्धति और आदतें साथ लाते हैं। बच्चे को स्कूल में बनाए रखने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रहती है। आरंभिक कक्षा के शिक्षक की जिम्मेदारी अन्य कक्षाओं के शिक्षकों की तुलना में अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। माँ की ममतामयी गोद से निकलकर विद्यालय में कदम रखने वाले इन नन्हें-मुन्ने बच्चों को परिवार के सदस्यों-सा स्नेह देना, उनके साथ

**शोधार्थी*, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद 500 007

घुल-मिल जाना आरंभिक चुनौती है। प्रायः बच्चे जब अपने घर की बोली में कक्षा में कोई बात कहते हैं तो शिक्षक द्वारा उसे तुरंत टोक दिया जाता है। भाषा की कक्षा में तो शिक्षक इस बात पर विशेष रूप से जोर देते हैं कि बच्चे मानक भाषा का व्यवहार करें। मानक भाषा तो बच्चे धीरे-धीरे सीख ही लेंगे पर आरंभिक कक्षा में बच्चे पर मानक भाषा में ही बात करने के दबाव का दुष्परिणाम यह होता है कि बड़े ही उत्साह से अपनी बात कहने को तत्पर बच्चे चुप हो जाते हैं। मानक भाषा में बात करने में असमर्थ बच्चे का आत्मविश्वास लड़खड़ा जाता है। लड़खड़ाते आत्मविश्वास वाले बच्चे फिर कभी मुखर होने का साहस नहीं जुटा पाते। हमारी बहुभाषिक संस्कृति हमारी पहचान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने की सिफारिश करता है। बच्चे की घर की बोली को सम्मान देकर ही बच्चे के आत्मसम्मान को बनाए रखा जा सकता है। आरंभिक कक्षा के शिक्षक बच्चे को अपने शब्दों, अपनी बोली में बोलने का अवसर देकर अत्यंत सहजता से उनके मन को भी स्पर्श कर सकते हैं। बच्चों को उनकी बोली में मिठास का घोल अपने आप मिल जाता है, जिससे उनकी बातचीत में सहजता अपने आप प्रकट होने लगती है।

सीखने-सिखाने का अपनापन

शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की, चाहे वह किसी धर्म-जाति, वर्ग का हो, क्षमता पर भरोसा जताना नितांत आवश्यक है। हर बच्चे को विश्वास दिलाना है कि हाँ, मैं सीख सकता हूँ, मैं पढ़-लिख सकता हूँ। बच्चे के सिर पर रखा शिक्षक का स्नेह भरा हाथ उसे भरोसा दिलाएगा कि हाँ, मेरे शिक्षक मुझे अपना मानते हैं। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों की मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था करने का हर संभव प्रयास करें। कई बार देखा गया है कि पूर्वाग्रहों से युक्त होने के कारण शिक्षक अनजाने में बच्चों के साथ भेदभाव कर जाते हैं। शिक्षक का पक्षपातपूर्ण रवैया बच्चे को स्कूल से विमुख कर देता है। इसलिए उसे जाति, धर्म, वर्ग आदि के किसी भी पूर्वाग्रह से स्वयं को मुक्त रखते हुए कक्षा के प्रत्येक बच्चे के करीब पहुँचना चाहिए।

सीखने का माहौल

सीखने पर माहौल का बड़ा प्रभाव होता है। यदि माहौल बच्चों की मर्जी जैसा होगा तो बच्चों का मन खूब लगेगा। शिक्षक के सामने एक बड़ी चुनौती है बच्चों के अनुकूल वातावरण निर्माण करने की। अकसर विद्यालय परिसर में तथा कक्षा के भीतर बड़े-बड़े सूक्ति वाक्य लिखे रहते हैं। इन वाक्यों का बच्चों की वास्तविक जिंदगी से कोई मतलब नहीं है। ऐसी लिखित सामग्री बच्चों को अपनी ओर नहीं खींचती। बच्चों की रुचि की मुद्रित सामग्री चारों ओर लगी रहेगी तो बच्चे उसे देखेंगे, अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश करेंगे और पढ़ने की दुनिया में कदम रखेंगे। सुंदर चित्र, कोई अच्छा-सा कार्टून, अच्छी-सी कविता, मजेदार-सा वाक्य कुछ भी हो सकता है। कोई भी चार्ट या मुद्रित सामग्री लगाते समय ध्यान रखें कि बच्चे उसे आसानी से देख और पढ़ सकें। वह बच्चों की पहुँच के भीतर हो। मुद्रित सामग्री ही नहीं कक्षा

में रखी किताबें, ब्लैकबोर्ड, डस्टर, चॉक सब कुछ ऐसे स्थान में रखे हों जहाँ बच्चों का हाथ आसानी से पहुँच जाए। इसलिए बच्चों के लिए एक अच्छा माहौल उपलब्ध कराना शिक्षक और अभिभावक दोनों की समान जिम्मेदारी है।

कहानियों के बहाने

कहानी कल्पनाशीलता का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बच्चों को कहानी सुनने और कहने में बहुत मजा आता है। आरंभिक कक्षा के शिक्षक के पास बच्चों के मनपसंद विषयों की कहानियों, कविताओं का अच्छा-खासा खजाना होना चाहिए। कितना अच्छा हो यदि प्रतिदिन कक्षा की शुरुआत रोचक किस्से-कहानी से हो। कहानी का आनंद बच्चों को दिनभर के लिए उमंग तथा उत्साह से लबालब कर देगा। कहानी का विषय बच्चों की पसंद का और उनके परिवेश से जुड़ा हो। भाषा बच्चों की अपनी हो और कहानी सुनाने का तरीका रोचक हो। बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर कहानी सुनाएँ। प्रतिदिन एक कहानी न केवल बच्चे को विद्यालय की ओर आकर्षित करेगी, बल्कि शिक्षक से उसका स्नेहिल नाता भी बड़ी सरलता से बन जाएगा। कहानी के बाद बच्चों से संवाद करें। विभिन्न भाषायी कौशल कहानी के माध्यम से बड़ी सहजता से बच्चों में विकसित किए जा सकते हैं। साथ ही बच्चों से भी कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है। इसके लिए चित्रों अथवा फ्लैश कार्डों का इस्तेमाल किया जा सकता है। चित्र दिखाकर बच्चों की कल्पनाशीलता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। शिक्षक चाहे तो कहानी का आरंभ, मध्य अथवा अंत बताकर भी बच्चों से बतिया सकते हैं। ऐसा करने से बच्चों को बड़ा मजा आता है। इसके लिए शिक्षक का हाव-भाव, कहन-शैली आकर्षक होने चाहिए।

बालगीतों के संग

बच्चे बालगीतों को बड़े चाव से गाते हैं। इसमें लय, गति, तुक होने के कारण बच्चे बहुत जल्दी याद कर लेते हैं और गाते हैं। बच्चों की रुचि के विषयों पर आधारित बालगीत सुनाएँ और बच्चों को साथ में दोहराने के लिए कहें। बालगीत की दो-चार पंक्तियाँ सुनाने के बाद बच्चों से गाने के लिए कहें। जैसे—

अम्मा आज लगा दे झूला,
इस झूले पर मैं झूलूँगा।
उस पर चढ़कर, ऊपर बढ़कर,
आसमान को मैं छू लूँगा।

फिर इसी तरह शेष पंक्तियों को गाने के लिए कहना चाहिए। इससे बच्चे बड़ी रुचि लेकर गाते और उसमें रम जाते हैं।

झूला झूल रही है डाली,
झूल रहा है पत्ता-पत्ता।
इस झूले पर बड़ा मजा है,
चल दिल्ली, ले चल कलकत्ता।

शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों को इसी तरह के कुछ और बालगीत सुनाएँ जिससे वे हँसी-खुशी सीखने के माहौल का आनंद उठा सकें।

सीखने-सिखाने की न हो कोई सीमा

पाठशाला प्रबंधन व शिक्षक समय-सीमा या समय-सारिणी को लेकर अधिक गंभीर न हों। उनका उद्देश्य सीखने-सिखाने पर केंद्रित होना चाहिए।

उन्हें इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि कविता-कहानी सुनाने के दौरान इनका भरपूर आनंद बच्चों को लेने दें। अगर बच्चे कहानी पर चर्चा जारी रखना चाहते हैं तो ऐसा करने दें। इसका मतलब है कि उन्हें कहानी में रस मिला। यह सोचकर तुरंत कोई अन्य विषय पढ़ाना न आरंभ कर दें कि फलाना कालांश की घंटी समाप्त हुई, अब अन्य कालांश की घंटी में फलाना विषय ही पढ़ाना है। सीखना-सिखाने की प्रक्रिया में लचीलेपन का होना नितांत आवश्यक है। नन्हे-मुन्ने बच्चे जब आरंभिक बार स्कूल आते हैं तो कभी-कभी उनका मन नहीं लगता, रोना आरंभ कर देते हैं, कक्षा में पढ़ाई में उनका ध्यान नहीं लगता, अपनी बात कहने में कुछ बच्चे काफी समय लगाते हैं। इन सबसे आसानी से वही शिक्षक पार पा सकते हैं जिसमें धीरज का गुण हो। बच्चों की बात को पूरी तन्मयता और धैर्य से सुनें। गतिविधि कराते समय आपने गोले में खड़े होने के लिए कहा और बच्चे आपके अनुसार बताए गोले में न खड़े होकर आड़े-तिरछे खड़े हों तो डाँटिए नहीं। नन्हे बच्चे धीरे-धीरे स्वतः सीख जाएँगे। उनसे यह अपेक्षा करना कि विषय का जितना इनपुट हम देते हैं उतना वे आउटपुट रूप में देंगे तो यह अनुचित है। इसके लिए पाठशाला प्रबंधन और शिक्षकों को चाहिए कि वे अपनी सोच बदलें और बच्चों की मानसिकता के अनुरूप अपनी कार्य योजना बनाएँ।

हर बच्चा खास है

यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हर बच्चा खास होता है। हर बच्चे में कोई न कोई हुनर अवश्य होता है। कई बच्चे ऐसे परिवारों से आते हैं जहाँ माता-पिता या अभिभावकों के पास इतना समय नहीं होता कि वे बच्चों की प्रतिभा को पहचानें। इस पहचान के लिए पारखी नजर चाहिए होती है। शिक्षक को चाहिए कि वे कक्षा में प्रत्येक बच्चे के हुनर की पहचान करने तथा विकसित करने की चुनौती का सामना बड़ी तत्परता के साथ करें। यह वह दशा होती है जो बच्चों को स्वयं के प्रति रुचि उत्पन्न करने में सहायक है। साथ ही इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि कक्षा में प्रत्येक बच्चे को चाहे वह लड़का हो या लड़की किसी न किसी गतिविधि में नेतृत्व का अवसर अवश्य दें। कार्य में अगुवाई करने से बच्चों में बचपन से ही निर्णय लेने तथा नेतृत्व की क्षमता का विकास होगा। कक्षा में प्रत्येक गतिविधि में लड़के-लड़की दोनों को समान अवसर दें। लिंगभेद का मुद्दा कहीं भी उनपर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हावी न होने दें। कक्षा की व्यवस्था, दीवारों पर लगी सामग्री तथा शिक्षण के दौरान भी इस बात के प्रति सजग रहना होगा कि लड़के-लड़की दोनों के साथ समानता का व्यवहार हो रहा है, उन्हें समान गरिमा और अवसर दिए जा रहे हैं। शिक्षक के लिए नितांत सजग रहकर चुनौतीपूर्ण ढंग से अपने दायित्वों का निर्वाह करना अवश्यंभावी हो जाता है।

चलो चलें सबके संग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता की संस्तुति करती है। वास्तव में सीखने के दौरान बच्चों की भागीदारी निरंतर बनी रहे तो सीखना बच्चों को नीरस और उबाऊ नहीं लगता है,

बल्कि सीखने की प्रक्रिया उनके लिए आनंदमय बन जाती है और कुछ करते-करते वे कैसे सीख लेते हैं, उन्हें इसका अनुमान भी नहीं होता है। इसके लिए शिक्षक को चाहिए कि सभी धर्म, जात-पात, भाषा के बच्चों में भेदभाव रहित वातावरण का निर्माण करें। जब वे सभी बच्चों को समानता के साथ सिखाएँगे तब सबका विकास होगा। बच्चों के लिए प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रथम प्रेरणास्रोत होते हैं। इसलिए कड़े अनुशासन के नाम पर उन्हें अपने से दूर नहीं करना चाहिए। अनुशासन के नाम पर बच्चों को हैड डाउन, फिंगर ऑन योर लिप्स, हाथ बाँधकर चुपचाप बैठा देने से कक्षा में निष्क्रियता और बोझिलता पसर जाएगी। सक्रियता बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उन्हें स्वयं कुछ करने, बाहर जाकर पेड़-पौधों आदि का अवलोकन करने, आपस में बातचीत करने के अवसर देने से ही तो वे स्वयं ज्ञान की रचना कर पाएँगे। बच्चे सक्रिय रहेंगे तो कुछ न कुछ करेंगे, सीखेंगे। सीखने की दशा में अनुशासनहीनता का तो सवाल ही नहीं उठता है। सभी बच्चों को आपस में घुलने-मिलने का पूरा अवसर दें। जब बच्चे एक-दूसरे का साथ पाते हैं और इस प्रक्रिया में शिक्षक सेतु का काम करते हैं तब सबका विकास स्वमेय होने लगता है।

खुद से खुद को जाँचें

नन्हें-मुन्ने बच्चे बड़े क्रियाशील और उत्साही होते हैं। वे सदैव कुछ न कुछ करते रहते हैं। अतः उन्हें अलग से जाँचने की आवश्यकता नहीं है। बच्चों की प्रगति की जाँच सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी स्तर पर, विशेषकर प्राथमिक स्तर पर बच्चों की प्रगति की तुलना अन्य बच्चों से करने की भूल कदापि न करें। इससे बच्चों में हीन भावना जन्म लेती है और वे हतोत्साहित हो जाते हैं। आगे चलकर इसके दुष्परिणाम भी देखने को मिल सकते हैं। बच्चों की प्रगति की जाँच उनकी पहले की प्रगति से तुलना करते हुए करें। जानने का प्रयास करें कि उन्होंने पहले से कुछ ज्यादा अच्छा किया है या वह पहले की तुलना में पिछड़ गए हैं। कहाँ पर सुधार की जरूरत है? अच्छा करने पर बच्चों की सराहना अवश्य करें। अच्छा न करने पर उन्हें डाँटे नहीं, बल्कि सहारा दें, आगे अच्छा करने को प्रोत्साहित करें। आपसे मिला सहारा ही आगे अच्छे प्रदर्शन के लिए उनका संबल बनेगा। हो सके तो समय पर बच्चों के माता-पिता या अभिभावकों से बातचीत करें। आरंभिक कक्षा के शिक्षक के लिए नितांत आवश्यक है कि बच्चों के माता-पिता या अभिभावकों से भी उनका संवाद लगातार बना रहे। गृह शिक्षक के रूप में अभिभावक की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। बच्चों के संबंध में शिक्षक और गृह शिक्षक यानी अभिभावक दोनों सजग रहें और दोनों का ही पर्याप्त स्नेह तथा उचित एवं पर्याप्त मार्गदर्शन बच्चे को समय-समय पर मिले तो आरंभिक कक्षा के बच्चों के लिए विद्यालयी जीवन एक सुखद अनुभव बन सकता है।

निष्कर्ष

बच्चे के जीवन में तीन लोगों का बड़ा योगदान होता है। पहला माता-पिता, दूसरा प्राथमिक पाठशाला के गुरु और तीसरा मित्र। इनके बिना जीवन अधूरा-सा लगता है। इनकी कमी में जीवन पथभ्रष्ट हो सकता है।

जहाँ तक बात स्कूली जीवन की है तो प्राथमिक पाठशाला के शिक्षकों को हम चाहकर भी नहीं भुला सकते। सच्चे अर्थों में जीवन का मार्गदर्शन कोई करता है तो वे प्राथमिक स्तर के शिक्षक ही होते हैं। अतः प्राथमिक स्तर के शिक्षकों का यह दायित्व बन जाता है कि वे अपने दायित्वों को भलीभाँति निभाएँ और बच्चों की आरंभिक शिक्षा के जीवन में मील का पत्थर साबित हों। ध्यान देने पर पता चलता है कि इस स्तर के बच्चों में किसी चित्र, वस्तु अथवा तथ्य को जिज्ञासापूर्वक देखने की इच्छा तीव्र होती है। उनके इसी विशिष्ट गुण का शिक्षकों को भरपूर लाभ उठाना चाहिए। इस स्तर पर एक बार जो उनमें रुचि जागृत हो जाती है, वह आगे जाकर कभी मद्धिम नहीं पड़ती। सभी छात्रों पर ध्यान केंद्रित करने से उनमें बचपन से ही आत्म-सम्मान की भावना पनपने लगती है। यही आत्म-सम्मान उन्हें आगे चलकर नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने और आदर्श नागरिक बनने में सहायता करता है। वे स्वयं अपनी क्षमताओं और कमजोरियों को जानने लगते हैं, और उनमें पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना अन्य लोगों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने की क्षमता बढ़ने लगती है। यह प्रक्रिया एकाएक नहीं होती, लेकिन इसकी शुरुआत यहीं से होती है। एक अध्यापिका के होने के नाते आप अपने आरंभिक अवस्था के छात्रों को अपने विशेष गुणों और आदर्शों से प्रभावित कर सकती हैं।

यह वह अवस्था है जहाँ पढ़ने-पढ़ाने के ढंग में लचीलापन की माँग सबसे अधिक होती है। अध्यापिका होने के नाते आपको यह समझना होगा कि बच्चे बालगीत किस तरह सुनना पसंद करते हैं, कहानियों का हाव-भाव युक्त प्रस्तुतिकरण कैसे हो, अभिनय-संवाद के पर्याप्त अवसर कब-कब उपलब्ध कराए जा सकते हैं आदि का गहराई से विचार करने के बाद उसे आचरण रूप देना नितांत आवश्यक है। इस अवस्था के बच्चे बड़ी कक्षा के बच्चों की तरह जल्दी से घुलते-मिलते नहीं है। उनमें कहीं-न-कहीं भय का पर्दा बना रहता है। पढ़ने की प्रक्रिया बहुत बाद में आती है, सबसे उस भय के पर्दे को हटाना ही दुष्कर कार्य होता है। यह दुष्कर कार्य भी सरल, सुगम हो सकता है तथापि अध्यापिका उन्हें अपनापन दे। बच्चे अध्यापिका में माँ का प्रेम ढूँढते हैं, दोस्तों की तरह खेलने की इच्छा रखते हैं और आँखों में अपनापन खोजने की कोशिश करते हैं। एक बार अध्यापिका माँ का रूप धारणकर मित्रवत व्यवहाररत करते हुए आँखों से नेह की वर्षा करे तो इन बच्चों का भविष्य सुनहरा हो जाता है। अध्यापिका को चाहिए कि वह कक्षा में कोई चीज विशिष्ट छात्रों, समूहों या व्यक्तियों के लिए उपयोगी नहीं है, तो अपनी योजनाओं को बदलने या गतिविधि को रोकने के लिए तैयार रहें। लचीला होना आपको समायोजन करने में सक्षम करेगा ताकि आप सभी छात्रों को अधिक प्रभावी ढंग से शामिल कर सकें।

शिक्षा का अर्थ सच्चे अर्थों में आनंद होता है। जिसमें आनंद न आए वह शिक्षा नहीं हो सकती। प्राथमिक स्तर के बच्चों को खेल-खेल में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में अनभिज्ञ रूप से सम्मिलित करना चाहिए। इस स्तर पर बच्चों का सीखना उनके खेल का हिस्सा होना चाहिए। जो भी क्रियाकलाप करवाएँ उनमें 'मैं' की भावना पनपनी

चाहिए। आरंभिक दशा में स्वास्थप्रद शिक्षा 'मैं' की भावना से ही आरंभ होती है। आगे चलकर यही 'मैं' सशक्त 'हम' में परिवर्तित होता है। इस स्तर पर सबसे अधिक मायने रखने वाले कोई चीज है तो वह है— भाषा। अध्यापिकाओं को चाहिए कि वे जिस भाषा का उपयोग करती हैं उसके बारे में सावधानी से सोचें और बोलते समय अपनत्व को दर्शाने वाली सरल शब्दावली का प्रचुर मात्रा में उपयोग हो। सकारात्मक भाषा और प्रशंसा का उपयोग करें, और छात्रों का तिरस्कार न करें। हमेशा उनके बर्ताव पर टिप्पणी करें, उन पर नहीं।

अंतिम और महत्वपूर्ण बात यह है कि इस स्तर के बच्चों के लिए एक सुरक्षित, स्वागत करने वाले अधिगम वातावरण का सृजन करें। यह ज़रूरी है कि सभी विद्यार्थी स्कूल में सुरक्षित और वांछित महसूस करें। हर एक से परस्पर सम्मानपूर्ण और मित्रवत बर्ताव को प्रोत्साहित करके आप अपने छात्र को वांछित महसूस कराने की स्थिति में होती हैं। इस बारे में सोचें कि स्कूल और कक्षा अलग-अलग छात्रों को कैसी दिखाई देगी और महसूस होगी। इस विषय में सोचें कि उनसे कहाँ बैठने को कहा जाएगा और सुनिश्चित करें कि दृष्टि या सुनने संबंधी दुर्बलताओं या शारीरिक विकलांगताओं वाले छात्र ऐसी जगह बैठें जहाँ से पाठ उनके लिए सुलभ होता हो। निश्चित करें कि जो छात्र शर्मीले हैं या आसानी से विचलित हो जाते हैं वे ऐसे स्थान पर हों जहाँ आप उन्हें आसानी से शामिल कर सकते हैं। इन सब सावधानियों का सबसे बड़ा परिणाम यह निकलता है कि वे धीरे-धीरे प्रश्न पूछने लगते हैं। इस क्रम में उनसे बहुत सारी गलतियाँ होती हैं। अध्यापिका को चाहिए कि वे इन गलतियों पर खीझ न दिखाकर, बल्कि उन्हें सीखने का अंग मानें। ऐसा जब-जब होगा तब-तब सीखना सार्थक होगा।

संदर्भ

नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन : टुवर्डस प्रिपेयरिंग प्रोफेशनल एंड ह्यूमन टीचर. 2009. नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन, नई दिल्ली.

नेशनल नॉलिज कमिशन रिपोर्ट. 2007. भारत सरकार, नई दिल्ली.

पट्टानायक, बी. गुप्ता. 2015. लोकल आर्ट एजुकेशन फॉर होल चाइल्ड डेवलपमेंट एट अर्ली स्टेज. *क्रिएटिंग युअर क्लासरूम कम्युनिटी*. ब्रिजेस एल. स्टेनहाउस पब्लिशर्स, यूनिसेफ.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

वेब्स्टर, एल. रीड. 2012. *दि क्रिएटिव क्लासरूम*. कॉलिन्स, लंदन.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

www.cry.org

www.educationonline.org

2

प्राथमिक स्तर के शिक्षण-अधिगम में क्षेत्रीय भ्रमण की भूमिका

अशोक कुमार*

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के द्वारा बच्चों के व्यवहार में स्थायी परिवर्तन लाया जाता है। इस तरह प्राथमिक स्तर की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है अर्थात वह किस विधि से कक्षा में बच्चों को अधिगम में साहयक होता है। उदाहरण के लिए, अध्यापक-केंद्रित, बाल-केंद्रित और करके सीखने की विधि से, यदि शिक्षक कक्षा में बच्चों को अध्यापक-केंद्रित विधि से पढ़ा रहा है तो वह किसी न किसी रूप में बच्चों को कक्षा में विषयवस्तु को रटवाने से ज्यादा कुछ भी नहीं करता है जिसका परिणाम बच्चे बार-बार विषयवस्तु को भूलेंगे और बार-बार याद करेंगे तथा अंत में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से उनका मन हट भी जाए तो बहुत आश्चर्य की बात नहीं होगी। दूसरी तरफ यदि शिक्षक कक्षा में बाल केंद्रित विधि से शिक्षण कराता है तो निश्चित रूप से बच्चे शिक्षण में आनंदित होकर भागीदारी करेंगे और बच्चों की सृजनात्मक शक्ति को बढ़ाने के साथ-साथ बच्चों का अधिगम भी स्थायी हो जाता है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के अधिगम में संवेदियों का अधिक से अधिक प्रयोग करके अधिगम को आनंदपूर्ण बनाया जा सकता है। पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत की प्रथम अवस्था में संवेदी की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया है। बच्चों को यदि करके सीखने का अवसर दिया जाए तो बच्चें निश्चित रूप से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आनंदित होकर अपनी भूमिका को और बढ़ाने का प्रयास करेंगे। इसी संदर्भ में प्राथमिक स्तर पर बच्चें खेल-खेल में अपनी विषयवस्तु को कंठस्थ करने में सहायक होंगे जिसमें की भ्रमण विधि को एक उदाहरण के रूप में देख सकतें हैं। इस विधि के द्वारा बच्चे स्थायी अधिगम करते हैं जिसको नई शिक्षा नीति के तहत अनुभवजन्य विधि के रूप में रखा गया है, जो बच्चों के अधिगम को आनंदपूर्ण बनाता है। अगर बच्चों को इस प्रकार से सीखाया जाएगा तो बच्चे अधिगम प्रक्रिया में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे और अधिगम को किसी भी तरह का बोझ नहीं समझेंगे। इस प्रकार अधिगम को सरल विधि (भ्रमण विधि) से पूर्ण किया जा सकता है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के अधिगम को सरल व आनंदपूर्ण बनाने में काफी मददगार सिद्ध होगा। प्रस्तुत लेख में प्राथमिक स्तर पर भ्रमण विधि से अधिगम कराने के महत्व का वर्णन किया गया है जो कि प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के लिए सहायक होगा।

* *असिस्टेंट प्रोफेसर*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, डिफेंस कालोनी, दिल्ली 110 024

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण (संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पक्षों) विकास करके बच्चों को उनके चारों तरफ के वातावरण से अवगत कराते हुए वास्तविक जीवन के लिए तैयार करना है। जिससे बच्चों के जीवन के किसी भी स्तर पर आने वाली चुनौतियों का सामना करके जीवन को सरल बना सकें। चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षा के द्वारा बच्चों को कुछ मुख्य प्रकार के कौशलों को सिखाया जाता है जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के जीवन को सरल बनाने में अपनी भूमिका निभाती है और जीवन को आनंदपूर्ण बनाने में भी सफल हो सके। अब इस सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षक ही विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माता होता है। कक्षा-कक्ष को बेहतर व जीवंत बनाने में शिक्षक की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों का अधिगम अधिकतर इंद्रियजन्य होता है अर्थात अधिगम इंद्रियों पर अधिक निर्भर करता है। पियाजे के संज्ञानात्मक सिद्धांत में प्रथम संवेदी अवस्था होती है अर्थात बच्चे प्राथमिक अवस्था में अपने संवेदी से ज्यादा सीखते हैं। वह जिस वस्तु को देखते हैं, जिसे छूते हैं, उसी के अनुभव के आधार पर उनका मूर्त चिंतन शुरू हो जाता है और फिर इसका प्रयोग वह अपने दैनिक जीवन में करते हैं और यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आनंदपूर्ण रूप से भाग लेते हैं। इसलिए प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों को स्थायी रूप से अधिगम कराने में क्षेत्रीय भ्रमण विधि की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है। सीखने की इस विधि में शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को विषयवस्तु से संबंधित किसी विशेष स्थान पर ले जाकर और विषय वस्तु के साथ जोड़कर निरीक्षण कराना और उनके प्राप्त अनुभवों पर चर्चा करके उनके अधिगम को स्थायी बनाया जाता है। इसी के संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के मार्गदर्शन सिद्धांत एक में भी "ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना" अर्थात बच्चों को भ्रमण पर ले जाना और विषयवस्तु को जोड़कर अधिगम को अधिक स्थायी बनाया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी यह वर्णित है कि सभी कक्षाओं में अनुभवात्मक अधिगम का प्रयोग करके शिक्षण अधिगम को प्रभावी बनाना होगा। स्थानीय भ्रमण विधि का प्रयोग कर यदि हम बच्चों को पढ़ाते हैं तो शिक्षण का मूल आधार होगा बच्चों को उनके द्वारा निरीक्षण कर जानने की कोशिश करना। निरीक्षण कक्षा-कक्ष में या बाहर दोनों जगह संभव होगा लेकिन क्षेत्रीय भ्रमण के लिए विद्यार्थियों को किसी स्थान विशेष पर भ्रमण के लिए ले जाया जाए। आज कंप्यूटर एडेड लर्निंग में सजीव दुनिया को एनिमेशन स्ट्रिप्स के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया जा रहा है, जिसे बच्चों से अपने कंप्यूटर स्क्रीन पर देखने की उम्मीद की जाती है। उदाहरण के लिए, सजीव और निर्जीव का पाठ शुरू करने से पहले, यदि कोई शिक्षिका अपनी कक्षा को स्कूल के पास के मैदान में सैर पर ले जाती है, और लौटने पर प्रत्येक बच्चे को दस जीवित चीजों और दस निर्जीव चीजों के नाम लिखने के लिए कहती है, जो उन्होंने बाहर देखे हैं।

इस प्रकार शिक्षण को और अधिक सरल रोचक व सजीव बनाया जा सकता है। इस विधि से बालक

मूर्त से अमूर्त चिंतन की तरफ जाता है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों को चाहिए कि वह बच्चों को पुराने किलों, भवनों, खंड्रों, महलों, युद्ध क्षेत्रों, गुफाओं, मकबरों, मीनारों, नहरों, उद्योगों आदि स्थानों की यात्रा करवाएँ।

प्राथमिक स्तर के शिक्षण में क्षेत्रीय भ्रमण विधि के उद्देश्य

वैसे तो हर स्तर के शिक्षण में क्षेत्रीय भ्रमण विधि का अपना ही महत्व होता है, परंतु प्राथमिक स्तर के शिक्षण में भ्रमण विधि का महत्व अत्यधिक होता है। इससे बच्चों के ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक आदि पक्षों का विकास होता है। अत: इस विधि के उद्देश्यों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

- **मूर्त से अमूर्त चिंतन**— प्राथमिक स्तर पर शिक्षक जब भ्रमण विधि से कक्षा में शिक्षण कराते हैं तो बच्चों के चिंतन को मूर्त से अमूर्त चिंतन की तरफ ले जाने का कार्य करता हैं अर्थात बच्चों का अधिगम व्यवस्थित रूप से स्थायी अधिगम का रूप ले लेता है।
- **बच्चों का व्यापक विकास**— भ्रमण विधि से प्राथमिक स्तर के शिक्षण में बच्चों का व्यापक विकास होता है, जैसे— ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक आदि पक्षों का विकास होना।
- **अवलोकन व निरीक्षण शक्ति का विकास**— प्राथमिक स्तर के शिक्षण को भ्रमण विधि से संचालित किया जाता है तो बच्चे की अवलोकन व निरिक्षण शक्ति का विकास होता है जिससे बच्चे अपनी कक्षा में विषय के साथ जुड़कर कल्पना करने में सक्षम हो सकेंगे।
- **व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि करना**— बच्चों को विषयवस्तु से संबंधित स्थानों पर भ्रमण कराके विषयवस्तु के प्रति बच्चों के व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि कराई जा सकती है।
- **अनुभवों, अभिवृत्ति और मनोवृत्तियों में परिवर्तन करके विद्यार्थियों में आदर्शों का निर्माण कराना**— विषयवस्तु को लेकर बच्चों के अनुभवों, अभिवृत्ति और मनोवृत्तियों में परिवर्तन करके विद्यार्थियों में आदर्शों का निर्माण कराना इत्यादि, उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

प्राथमिक स्तर पर भ्रमण के संचालन से पूर्व शिक्षक को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- भ्रमण के उद्देश्य का निर्धारण करना अति आवश्यक है, उद्देश्य के बिना भ्रमण से बच्चों में सिर्फ थकावट व विभिन्न प्रकार के संघर्ष ही जन्म लेंगे और किसी भी प्रकार का अधिगम संभव नहीं होता जिससे बच्चों के समय की बर्बादी होगी। अतः भ्रमण से पूर्व शिक्षक को चाहिए कि वह विषयवस्तु से संबंधित भ्रमण के स्थान का चुनाव सही रूप से करें जिससे पूर्व निर्धारित उदेश्यों की पूर्ति हो सके।
- भ्रमण से पूर्व बच्चों के संरक्षकों और उच्च अधिकारियों की अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य होता है जिससे भ्रमण को अर्थपूर्ण बनाया जा सके।
- संभव हो तो भ्रमण से पूर्व बच्चों के संरक्षकों के साथ वार्तालाप करनी चाहिए जिससे वह भ्रमण

के महत्व को समझ सके और बच्चों के भ्रमण में किसी भी तरह की बाधा उत्पन्न न करें।

- सभी बच्चों को भ्रमण का समय निश्चित करके पहले से बता देना चाहिए और बच्चों को छोटे-छोटे समूह में बाँट देना चाहिए और प्रत्येक समूह के लिए एक निर्देशक की नियुक्ति कर लेनी चाहिए।
- संभव हो सके तो पर्यटन स्थल पर अगर ठहरने का उद्देश्य हो तो व्यवस्था के लिए व्यवस्थापक से पत्र व्यवहार करके व्यवस्था को बना लेना चाहिए। जिसमें वहाँ पर किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो सके।
- आवश्यक सामग्री, जैसे— खाने का सामान और नोटबुक हो तो उसकी एक दिन पूर्व ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए। जिसमें संभव हो सके तो बच्चे सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को नोट करें और अपनी कक्षा में समय-समय पर चर्चा करें, जिससे शिक्षण प्रक्रिया को और रोचक बनाया जा सकता है।
- शिक्षक को चाहिए कि वह भ्रमण के सारे विवरण, जैसे— सफलताएँ और असफलताओं और उनके कारणों आदि को एक रिपोर्ट के रूप में बनाकर एकत्रित करें, जिससे आने वाले समय में सभी को जागरूक किया जा सके।
- भ्रमण के उपरांत विद्यालय में बच्चों को उनके संरक्षकों को सुपुर्द करना चाहिए और संरक्षक के हस्ताक्षर भी करवाने चाहिए।

क्षेत्रीय भ्रमण की योजना

1. **समस्या व प्रकरण का चयन**— शिक्षक को भ्रमण से पूर्व पाठ्यक्रम से प्रकरण का चयन करना चाहिए, ताकि वह छात्रों को भ्रमण का उद्देश्य स्पष्ट कर सकें। इससे भ्रमण को अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।
2. **पर्यटन के स्थान का चयन**— भ्रमण तभी सफल होता है जब शिक्षक भ्रमण स्थल का चयन ठीक ढंग से कर सके। शिक्षक को चाहिए कि विषय से संबंधित तथा उद्देश्य पूर्ण स्थल का चुनाव करे। उदाहरण के लिए, कक्षा चार में कुतुब मीनार पाठ को पढ़ाने से पहले कुतुबमीनार का भ्रमण कराया जाए जिससे कक्षा-कक्ष शिक्षण को सजीव व रोचक बनाया जा सके।
3. **पर्यटन का संगठन**— पर्यटन या भ्रमण से पूर्व शिक्षक को एक बजट बनाना चाहिए। बजट में शिक्षक छात्रों की संख्या तथा उनके खानपान व आवश्यक सामग्री को ध्यान में रखें। बजट की मांग से पहले विद्यालय अधिकारियों एवं अभिभावकों से अनुमति ले लेनी चाहिए।
4. **क्रियान्वयन**— गंतव्य स्थान पर पहुँचने पर आवश्यक निर्देश एवं सूचनाएँ छात्रों को दे दी जानी चाहिए। समूह दलों के नेताओं को उनसे संबंधित निर्देश देकर, शिक्षक वह एक मार्गदर्शक बनकर छात्रों को उस स्थान की पूर्ण जानकारी देता हैं और अंत में छात्रों को वापस विद्यालय में लेकर आ जाता है।
5. **मूल्यांकन**— अंत में भ्रमण का मूल्यांकन जरूर करना चाहिए। जिस उद्देश्य से भ्रमण कराया गया हो क्या वह पूरा हुआ या नहीं पूरा नहीं हुआ, तो भविष्य में होने वाले भ्रमणों के द्वारा पूरा किया जा सकेगा। इस तरह मूल्यांकन किसी भी प्रकार की प्रक्रिया या रूपरेखा का एक सही चित्रण प्रस्तुत करने में सफल होता है।

भ्रमण में शिक्षक की भूमिका

जैसा कि यह पहले से ही विदित है कि शिक्षक किसी भी कक्षा को संचालित करने में अहम भूमिका निभाता है। अत: भ्रमण के दौरान भी शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। जिसको हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं—

- **आयोजक**— सर्वप्रथम शिक्षक की भूमिका भ्रमण में आयोजक की होती है। जिसका मुख्य कार्य भ्रमण की योजना बनाना तथा उसका क्रियान्वयन करना होता है। शिक्षक द्वारा भ्रमण स्थल का चयन, छात्रों की सूची, परिवहन की व्यवस्था, छात्रों के खानपान का आयोजन आदि कार्यों की योजना बनाई जाती है।
- **निर्देशक के रूप में**— शिक्षक छात्रों तथा परिजनों दोनों के लिए निर्देशक की भूमिका का निर्वाह करता है। जहाँ परिजनों से छात्रों का मेडिकल इतिहास पता करना, भ्रमण के लिए परिजनों को निर्देशित करना कि वे अपने बच्चों को किस प्रकार निर्देशित करें, वहीं दूसरी ओर छात्रों को निर्देशित करना कि उन्हें वहाँ जाकर क्या अवलोकन करना है तथा किन-किन बातों का ध्यान रखना है।
- **संरक्षक**— शिक्षक की भूमिका छात्रों के संरक्षण की भी होती है। छात्रों को ले जाना और वहाँ किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचाने तथा उन्हें घर तक वापस लाने में संरक्षक की भूमिका का निर्वहन भी करना पड़ता है। इस प्रकार शिक्षक एक संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका अदा करता है।
- **योजना बनाना**— शिक्षक के द्वारा भ्रमण विधि की योजना बनाई जानी चाहिए कि कितने समय के लिए योजना बनाई जाए, कितने छात्रों के लिए योजना बनानी है तथा वहाँ क्या अवलोकन करना है? इस सब की पूर्व में ही योजना बनाई जाए।
- **छात्रों की सुरक्षा का ध्यान रखना**— शिक्षक के द्वारा छात्रों की सुरक्षा का ध्यान रखा जाना चाहिए। अतः छात्रों को निर्देशित किया जाना चाहिए कि वह पंक्ति में रहे, कोई बच्चा कहीं छूट ना जाए या कोई दुर्घटनाग्रस्त ना हो जाए और शिक्षक को समूह बनाकर एक समूह के लिए एक मुखिया चयन करना चाहिए।
- **आवश्यक सामग्री की सूची बनाना**— शिक्षक के द्वारा भ्रमण के दौरान आवश्यक सामग्री, जैसे— फर्स्ट एड बॉक्स, छात्रों की सूची बनाना, उनके खाने का आयोजन करना आदि शामिल है।
- **भ्रमण का मूल्यांकन करना**— भ्रमण के बाद शिक्षक द्वारा मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि जिन उद्देश्यों के लिए भ्रमण का आयोजन किया गया था वह उद्देश्य पूरे हुए या नहीं तथा क्या कमियाँ रह गई? जिससे की भविष्य में उन बातों का ध्यान रखा जा सके और मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

भ्रमण के दौरान सावधानियाँ

क्षेत्रीय भ्रमण में जाना बच्चों के लिए सुखद अनुभव होता है, क्योंकि उन्हें नई जगह जाने का मौका मिलता है। क्षेत्रीय भ्रमण बच्चों को आमतौर पर मौज-मस्ती के साथ-साथ अधिगम कराने के लिए होता है। क्षेत्रीय

भ्रमण पूर्णतः बाहरी वातावरण है, इसलिए यहाँ कुछ बातें हैं जो शिक्षकों को क्षेत्रीय भ्रमण ले जाने से पहले ध्यान रखनी चाहिए।

- **अभिभावक अनापत्ति पत्र**— विद्यार्थी एक अनापत्ति पत्र अपने माता-पिता से हस्ताक्षर करवा कर रखें जिसमें ट्रिप की पूर्ण जानकारी हो, जैसे— तारीख, दिन, समय, जगह का नाम, अध्यापक या अध्यापिका का मोबाइल नंबर इत्यादि विवरण हों। साथ ही माता-पिता को यदि बच्चे के बारे में कोई सूचना देनी हो या किसी समस्या से अवगत करवाना हो, जैसे— बच्चे को किसी प्रकार की कोई एलर्जी हो, बीमारी हो अथवा सफर के दौरान बेहोशी या चक्कर आदि की शिकायत हो तो इसका विवरण भी पूर्व ही प्राप्त होना चाहिए, जो शिक्षक के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण होता है।
- **बच्चों को समूहों में विभाजित करना**— अधिक संख्या में विद्यार्थियों को ले जाना व सब का ध्यान व्यक्तिगत तौर पर रख पाना मुश्किल है, इसलिए शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को समूहों में बाँट कर उनके लिए उन्हीं के समूह में से एक मुखिया का चयन करें। जिससे ग्रुप का मुखिया ध्यान रखेगा कि ग्रुप में सभी उपस्थित हैं या नहीं। यदि कोई उपस्थित नहीं है, तो तुरंत शिक्षक को सूचना दें।
- **समूह में जोड़ें बनाना**— समूह के अंदर भी बच्चों के जोड़े बनाएँ जिससे एक साथी दूसरे साथी के साथ रहे और उसका ध्यान भी रखे।
- **यूनिफॉर्म**— अपने विद्यार्थियों की यूनिफॉर्म की अलग पहचान रखें, ताकि शिक्षक को दूर से ही पता चले कि कौन-सा बच्चा उनकी कक्षा या विद्यालय का है। विद्यार्थी अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों में मिश्रित ना हो जाएँ। कई बार ऐसी समस्या अधिक व्यापक हो जाती है।
- **जाने से पूर्व बातचीत**— जाने से पूर्व उनसे बातचीत करना अर्थात जाने वाले स्थान के बारे में सारांश में बताना तथा क्या व क्यों की जानकारी अवश्य देनी चाहिए, ताकि बच्चों को पता हो कि ट्रिप पर उन्हें क्या-क्या करना है? तथा बच्चों में एक उत्साह के साथ अनुशासन बना रहे।
- **प्राथमिक उपचार का प्रबंध**— विद्यार्थी को न चाहते हुए भी यदि चोट लग जाए तो प्राथमिक उपचार की आवश्यकता होती है, इसलिए प्राथमिक उपचार का प्रबंध अर्थात कुछ खास-खास दवाओं को साथ में रखना चाहिए।
- **सुरक्षित परिवहन व्यवस्था**— निजी या किराए पर वाहन के बजाय विद्यालय के वाहन का उपयोग किया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थी सुरक्षित विद्यालय से गंतव्य स्थान पर पहुँच सके और फिर सावधानीपूर्वक वापस आ सके।

क्षेत्रीय भ्रमण के फायदे

- **व्यावहारिक ज्ञान की उपलब्धि**— इसके द्वारा विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति होती है जो कि स्थायी होती है। वास्तविक वस्तुओं का अनुभव होता है अर्थात बच्चों का संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक रूप से विकास होता है।

- **मानसिक विकास**— इस विधि के द्वारा बच्चों की मानसिकता का विकास होता है, क्योंकि बच्चे किसी भी वस्तु या चीज को देखते हैं तो वह कई पक्षों से सोचते हैं, फिर कल्पना करते हैं और इस प्रकार उनका मानसिक विकास होता है।
- **विषयवस्तु के रटने पर रोक**— इस विधि द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान व्यावहारिक तथा चिर स्थायी होता है जो रट्टेबाजी को रोकता है। रटा हुआ ज्ञान या सूचना स्थायी नहीं होती है अर्थात विद्यार्थी बार-बार भूलता रहता है, जो विद्यार्थियों पर बोझ बन जाता है और विद्यार्थी धीरे-धीरे शिक्षण से दूर भागने लगते हैं। जिसके परिणाम फिर बहुत भयानक होते हैं।
- **परीक्षा में बेहतर परिणाम**— इस विधि से विद्यार्थी को वास्तविकता का ज्ञान होता है। विद्यार्थी विषय को अच्छे से समझ लेता है। सीखने में उसे सहायता प्राप्त होती है, विद्यार्थी परीक्षा और प्रोजेक्ट में बेहतर परिणाम लाते हैं और उनमें सीखने के प्रति उत्साह बना रहता है, जिससे विद्यार्थी सदैव अपनी पढ़ाई के साथ जुड़ाव महसूस करते हैं।
- **पुनर्बलन**— विद्यार्थियों के लिए विषय की मजबूती या पुनर्बलन के लिए सहायक सिद्ध होती है। इस विधि में विद्यार्थी अपने नए-नए अनुभवों से प्रभावित होता है और सीखता है और यही सीखने के लिए धनात्मक पुनर्बलन का कार्य करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह विधि प्राथमिक कक्षाओं के लिए तो बहुत उपयोगी है। इसके द्वारा प्राप्त ज्ञान से बच्चों में शैक्षिक गुणों का विकास होता है। वही उसके व्यक्तित्व को भी प्रभावशाली बनाता है।

प्राथमिक स्तर के शिक्षण में भ्रमण विधि के दोष

- **खर्चीली विधि**— भ्रमण विधि खर्चीली विधि है, इस में आने-जाने तथा किसी विशेष स्थान पर लगने वाली टिकट का किराया व खानपान में अत्यधिक खर्च आता है, इसलिए क्षेत्रीय भ्रमण विधि से पढ़ाने का प्रयोग कम ही शिक्षक करते हैं। यहाँ तक कि विद्यार्थियों के प्रति जवाबदेही भी काफी बढ़ जाती है।
- **सभी विषयों के लिए उपयुक्त नहीं**— भ्रमण विधि के द्वारा विज्ञान व सामाजिक विज्ञान के उपविषय उचित रूप से कराए जा सकते हैं तथा उसमें भी सभी उपविषयों के लिए यह विधि सफल नहीं है, जैसे— राजनीति विज्ञान के सभी उपविषय भ्रमण विधि द्वारा संभव नहीं है। अन्य विषयों के लिए भी यह विधि उतनी उपयुक्त नहीं है।
- **अधिक समय लगना**— भ्रमण विधि में समय अधिक लगता है। एक दिन में किसी एक स्थान पर ही लेकर जाया जा सकता है जिससे उन्हें अन्य विषयों का नुकसान होता है तथा पाठ्यक्रम समय पर समाप्त नहीं हो पाता।
- **शिक्षक का अनुभवी न होना**— भ्रमण विधि का अर्थ केवल भ्रमण कराना ही नहीं होता, उसमें कुछ उद्देश्य निहित होते हैं तथा उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षक का अनुभवी होना आवश्यक है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों को भ्रमण पर ले जाने से पहले उचित निर्देश नहीं देता है, तो वह भ्रमण निरर्थक सिद्ध होगा व उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाएगी।

- **छात्रों की सुरक्षा**— विद्यार्थियों की सुरक्षा की भी समस्या होती है जहाँ 40 विद्यार्थियों पर केवल एक या दो शिक्षक होते हैं, ऐसी स्थिति में उनकी सुरक्षा व देखभाल की एक बड़ी समस्या होती है।

प्राथमिक स्तर के बच्चों को क्षेत्रीय भ्रमण के लिए शिक्षकों को सुझाव

- **उद्देश्य निर्धारित करना**— शिक्षक को भ्रमण विधि पर ले जाने से पहले उसके लिए उद्देश्य निर्धारित कर लेने चाहिए कि विद्यार्थियों को उस भ्रमण के बाद किन-किन बातों का ज्ञान हो जाएगा तथा शिक्षक किन-किन उद्देश्यों की पूर्ति कर पाएगा तथा कितने उद्देश्य हैं, जो संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पक्ष से संबंधित हैं।
- **विद्यार्थियों को निर्देशित करना**— शिक्षक विद्यार्थियों को भ्रमण पर ले जाने से पहले ही उन्हें निर्देशित कर दे कि उन्हें वहाँ जाकर किन-किन चीजों का अवलोकन करना है। ताकि शिक्षक द्वारा निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति की जा सके, लेकिन शिक्षक को ऐसा भी ध्यान रखना चाहिए कि सुझाव देते समय बच्चों के सीखने को कहीं वह प्रतिपादित तो नहीं कर रहा। बच्चों को सीखने के लिए एक खुला रास्ता देना चाहिए।
- **छात्रों के स्वास्थ्य का निरीक्षण करना**— अध्यापक द्वारा छात्रों के स्वास्थ्य का अवलोकन किया जाना चाहिए, ताकि यह पता चल जाए कि किसी छात्र को आने-जाने में किसी प्रकार की समस्या तो नहीं होती या उनके द्वारा किसी प्रकार की दवाई का सेवन तो नहीं किया जा रहा है।
- **प्रोत्साहन**— भ्रमण स्थल पर पहुँचकर शिक्षक की भूमिका एक प्रोत्साहक की भी हो जाती है, जो छात्रों को प्रोत्साहित करें। विद्यार्थियों को उस स्थान के बारे में अधिक से अधिक जानने के लिए तथा प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। इस प्रकार शिक्षक को काफी उत्साहित होना चाहिए तथा पूरे समय विद्यार्थियों में घुल-मिलकर रहना चाहिए जिससे बच्चे खुशी-खुशी सीखने के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें।
- **मार्गदर्शक**— शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक की भी होती है जो विद्यार्थियों को भ्रमण स्थल के विषय में बताता है यह महत्वपूर्ण बात है कि शिक्षक भ्रमण के लिए जिस स्थान का चुनाव कर रहा है। उसका ज्ञान शिक्षक को पहले से ही होना चाहिए, ताकि उस स्थान से पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके और शिक्षक विद्यार्थियों के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका को आसानी से अदा कर सके और विद्यार्थियों के स्तर से ही सभी सीखने की जिज्ञासाओं को पूरा कर सकें।
- **मूल्यांकन कर्ता**— शिक्षक की भूमिका एक मूल्यांकन कर्ता की भी होती है, लेकिन मूल्यांकन करें की क्षेत्रीय भ्रमण के उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं। किसी भी कार्य के उद्देश्य पूर्ण होने या ना होने को बताता है। यहाँ तक कि अगर किसी कार्य को करने के पूर्व-निर्धारित उद्देश्य होते हैं तो उसके पूरा करने की प्रक्रिया भी अच्छी होगी और फिर उसका मूल्यांकन भी भली प्रकार से किया जा सकता है जिससे मूल्यांकन कर्ता को संतुष्ट किया जा सकता है।

प्राथमिक स्तर के बच्चों को क्षेत्रीय भ्रमण पर ले जाने में अभिभावकों की भूमिका

प्राथमिक स्तर के बच्चों को विद्यालय की तरफ से क्षेत्रीय भ्रमण पर जब लेकर जाया जाता है तो विद्यालय व शिक्षकों को तो बहुत सारी जिम्मेदारियाँ निभानी ही होती हैं, परंतु साथ ही साथ अभिभावकों की भी इस क्षेत्रीय भ्रमण को सफल बनाने के लिए कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं। जिनको निभाना एक अभिभावक का कर्तव्य है, जो विद्यार्थियों के स्थायी रूप से सीखने में सहायक सिद्ध होगा। इस संबंध में अभिभावकों की निम्न जिम्मेदारियाँ होती है—

- **क्षेत्र का ज्ञान**— विद्यालय की तरफ से या शिक्षक की तरफ से विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों को क्षेत्र भ्रमण की पूर्व सूचना दे दी जानी चाहिए। अतः अभिभावकों की यह जिम्मेदारी है कि वह व्यक्तिगत रूप से अपने बच्चे को उस क्षेत्र के बारे में थोड़ा बताएँ कि शिक्षक उन्हें कहाँ ले कर जाने वाले हैं और क्यों, ताकि बच्चे मानसिक रूप से सीखने के लिए तैयार हो जाएँ और उनमें एक उत्साह पैदा हो सके।
- **अनुशासन में रहने की स्पष्टता**— अभिभावकों को अपने बच्चों के बारे में अच्छे से पता होता है। अतः यदि विद्यार्थी अधिक शरारती है तो अभिभावकों को उन्हें अनुशासन में रहने व अध्यापकों के निर्देशों का पालन करने की आवश्यकता स्पष्ट कर देनी चाहिए। ऐसा न करने पर संभावित परिणामों के बारे में बताना चाहिए। उदाहरण के लिए, "यदि तुम अपने अध्यापिका से छिपकर या नजर बचाकर इधर-उधर भाग गए तो तुम गुम भी हो सकते हो" इत्यादि।
- **जलपान की व्यवस्था**— भ्रमण वाले दिन विद्यार्थी को ऐसा भोजन देना चाहिए जो सुविधाजनक तरीके से ग्रहण किया जा सके। इसमें फलों को भी शामिल किया जाना चाहिए और पीने के लिए पर्याप्त पानी देना चाहिए। यदि गर्मियों का मौसम है तो उन्हें नींबू पानी या ग्लूकोज का पानी दिया जा सकता है जिससे बच्चे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकें और अपने क्षेत्र भ्रमण का आनंद ले सकें।
- **साफ व निर्धारित यूनिफॉर्म पहनाना**— भ्रमण वाले दिन विद्यार्थियों को सही यूनिफार्म पहनानी चाहिए जो विद्यालय द्वारा पूर्व-निर्धारित हो, ताकि विद्यार्थी आसानी से वहाँ पहचान में आ सके कि वह किस विद्यालय के विद्यार्थी हैं। साथ ही एक अतिरिक्त यूनिफार्म भी उनके बैग में रख देनी चाहिए। किसी कारणवश यदि बच्चे की यूनिफॉर्म गंदी हो जाए या गीली हो जाए तो वह पूरा दिन उसमें व्यतीत न करें, इसके लिए एक अतिरिक्त यूनिफॉर्म बैग में रख देनी चाहिए।
- **हल्का बैग देना**— अभिभावक को ध्यान रखना चाहिए कि आज उनका बच्चा क्षेत्रीय भ्रमण पर जा रहा है तो इसके लिए उनके बैग में कोई भी किताब या कॉपी रखने की आवश्यकता नहीं है। उनके बैग में केवल खानपान की चीजें, सैनिटाइजर या रुमाल इत्यादि जरूरी चीजें ही रखनी चाहिए, जिससे बच्चे का बैग हल्का रहे और उसे उठाने में किसी प्रकार की भी कोई समस्या ना हो।

- **विद्यालय पहचान पत्र**— अभिभावकों को अपने बच्चे का पहचान पत्र जो कि विद्यालय द्वारा दिया गया होता है, वह अवश्य पहनाना चाहिए। अभिभावकों को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि पहचान पत्र पर दी गईं सूचनाएँ मुख्यतः पता और फोन नंबर बिल्कुल सही हो। यदि यह दोनों चीजें बदल गईं हो तो अभिभावकों को इसकी सूचना भ्रमण वाले दिन से पूर्व ही शिक्षक को दे देनी चाहिए। यदि संभव हो तो दो-तीन अतिरिक्त फोन नंबर भी देना चाहिए और जब तक विद्यार्थी क्षेत्र भ्रमण से वापस नहीं आ जाता तब तक उन्हें फोन पर उपलब्ध रहना चाहिए।
- **बच्चे से संबंधित बीमारी की सूचना**— यदि बच्चे को किसी प्रकार की बीमारी, एलर्जी या कमजोरी है, तो इस बात की सूचना अभिभावक के द्वारा अध्यापक को दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, बहुत से छोटे बच्चों को उल्टी लगने की समस्या हो जाती है तथा बहुत से बच्चे कुपोषण के शिकार होते हैं जिसके कारण वे बहुत अधिक चल नहीं पाते या अन्य किसी प्रकार की बीमारी हो सकती है। इससे अध्यापकों को भी अचानक किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा और बच्चे अपने क्षेत्र भ्रमण का आनंद ले सकेंगे।
- **अध्यापकों को सहयोग**— क्षेत्रीय भ्रमण के अंतर्गत बच्चों को जिस क्षेत्र में लेकर जाना है उस क्षेत्र के बारे में उचित जानकारी देकर अभिभावक अध्यापकों को भी अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। एक या दो अभिभावक आपसी सहमति के बाद स्वयं भी उस क्षेत्र के दौरे पर जा सकते हैं। इस प्रकार यदि अभिभावकों का भी सहयोग होगा तो बच्चों का क्षेत्रीय भ्रमण सुखद व आनंदपूर्ण होगा और उनके सीखने में भी दोनों का शिक्षक व अभिभावकों का सहयोग काफी फलदायक होगा।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के शिक्षण में करके सीखना, खेल-खेल में सीखना और भ्रमण विधि से सीखना और सिखाना दोनों ही आनंदपूर्ण होता है। इसमें बच्चे भी पूर्ण रूप से सहभागी होते हैं और बच्चों के सीखने का स्तर स्थाई होता है। इस तरह बच्चे अपने ज्ञान के खुद निर्माता होतें हैं तथा कक्षा-कक्ष को सजीव व रुचिपूर्ण बनाने में सहयोगी होते हैं। बच्चे कक्षा में अनुशासित होकर विषयवस्तु पर ध्यान देतें है अर्थात इस प्रकार बच्चों के व्यवहार में स्थायी परिवर्तन दिखाई देता है।

संदर्भ

कुमार, अशोक. 2015. विद्यालय— अनुभव कार्यक्रम से जुड़ी कुछ स्मृतियाँ. *प्राथमिक शिक्षक शैक्षिक संवाद पत्रिका*. अप्रैल 2015, वॉल्यूम 1, ISSN: 970-9312. पृ.सं. 58–61. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/publication/journalsandperiodicals/prathmikshikshak/pspdfjan2016.pdf

मंगल, एस.के. 2019. *शिक्षा मनोविज्ञान*. पी.एच.आई., नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 1966. *कोठारी कमीशन रिपोर्ट*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

3

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा हेतु विद्या प्रवेश (रेडीनेस) कार्यक्रम की उपादेयता

डी.डी. गौतम*

शिक्षा किसी समाज अथवा परिवेश में सदैव चलने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति को शिक्षित करती है और उनमें परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलन की क्षमता विकसित करती है। शिक्षा नित्य विकासमान अवधारणा है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के स्वरूप को और अधिक मूल्यपरक एवं प्रभावी बनाने के लिए सदैव सकारात्मक बदलाव की आवश्यकता महसूस की जाती रही है। इसी आशय को ध्यान में रखकर वर्तमान शिक्षण व्यवस्था के संगठनात्मक ढाँचे में परिवर्तन करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू किया है जिसमें पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को एक मजबूत बुनियाद के रूप में स्वीकार किया गया है। इसमें इस बात की भी अनुशंसा की गई है कि बच्चों को खेल और गतिविधि-आधारित सीखने के साथ भयमुक्त और सुरक्षित वातावरण प्रदान हो। प्रथम बार विद्यालय में प्रवेश लेने वाले बच्चों को कक्षा 1 में पूर्व-औपचारिक शैक्षणिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने हेतु प्ले-आधारित स्कूल तैयारी कार्यक्रम (अंतरिम उपाय) को मिशन मोड पर तत्काल लागू करने की सिफारिश की है जिसे विद्या प्रवेश कार्यक्रम कहा गया है। यह रेडीनेस पैकेज के रूप में कक्षा 1 के शुरुआती तीन माह या 12 सप्ताह में पूर्ण किया जाना है जिसमें गतिविधियों एवं खेल-खेल के माध्यम से बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक अवधारणा को सीखेंगे। ऐसे कौशल भी हासिल करेंगे जो प्रारंभिक स्तर पर सीखने के लिए एक ठोस नींव के निर्माण की दिशा में उपयोगी सिद्ध होंगे।

शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन के लिए आरंभ से अथक प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा प्रणाली व संगठनात्मक ढाँचे में सकारात्मक बदलाव की आवश्यकता महसूस की जाती रही है। वर्तमान परिदृश्य में परिवर्तन के प्रयास एवं सामंजस्य को ही नवाचार कहा गया है। शिक्षा की नींव, बुनियादी ढाँचे पर निर्भर होती है और बच्चों का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास इस बुनियादी ढाँचे पर निर्भर है।

शिक्षा दर्शन में सामान्यतः शिक्षा के दो स्वरूप यथा अनौपचारिक एवं औपचारिक को सम्मिलित किया गया है। अनौपचारिक शिक्षा वह है जो

**अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी*, ब्लॉक-कुम्हेर, भरतपुर (राजस्थान)

व्यावहारिक अथवा परिवेश में अंतःक्रिया करते हुए घर, परिवार अथवा समाज से प्राप्त होती है। जबकि औपचारिक शिक्षा किसी संस्था अथवा विद्यालय में प्रवेश के उपरांत कक्षा-कक्षीय गतिविधियों के अंतर्गत शैक्षिक, भौतिक, सामाजिक एवं शारीरिक कौशल को हासिल करने से प्राप्त होती है। इसमें बच्चे स्कूली शिक्षा के साथ-साथ परिवार व समाज के अनुभवों तथा व्यावहारिक ज्ञान के द्वारा स्वयं भी सीखते हैं, साथ ही स्वतः ज्ञान का सृजन करते हैं। इसे ज्ञान के निर्माण की संज्ञा दी गई है। अतः उत्तरोत्तर कक्षाओं में अध्ययन पूर्व, बुनियादी शिक्षा का सुदृढ़ एवं गुणवत्तापूर्ण होना नितांत आवश्यक है।

पूर्व-प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के स्वरूप एवं संगठनात्मक ढाँचे में बदलाव के साथ-साथ शैक्षिक उत्थान के उद्देश्य से शिक्षा आयोग, नीति, शिक्षाविदों, शिक्षा शास्त्रियों, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005, शिक्षा का अधिकार कानून 2009 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों में शिशु देखभाल एवं बच्चों के सर्वांगीण विकास को प्रारंभिक शिक्षा के स्तर पर महत्वपूर्ण माना है। निपुण भारत मिशन के अंतर्गत इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि बच्चों को इस प्रकार का वातावरण मिलना चाहिए, जिससे स्वतंत्र रूप से अनुभवों के द्वारा निडर होकर खेल-खेल की विधि से स्वयं ज्ञान का सृजन कर सकें। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो बच्चों की अंतर्निहित क्षमताओं, समझ, सीख और योग्यता को प्रखर बना सके। सभी को सरल व सुलभ शिक्षा प्रदान करना मानवाधिकारों की प्राथमिकता भी रही है।

बाल शिक्षा मनोविज्ञान

आयु वर्ग 0 से 5 वर्ष में बच्चों की मानसिक एवं संवेगात्मक विकास की गति, शेष आयु तुलना में तीव्र गति से होती है। इस आयु में मस्तिष्क का लगभग 85 से 90 प्रतिशत भाग विकसित हो जाता है। बचपन में 0–3 आयु वर्ग में बालक अपने परिवार और परिवेश में अंतःक्रिया करते हुए, 3–5 अथवा 3–6 आयु-वर्ग में बालक परिवेश के साथ-साथ उपलब्धतानुसार शैक्षिक संस्थाओं के माध्यम से बाल्यावस्था अनुरूप अधिगम करते हैं। इसे पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की संज्ञा दी गई है। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को औपचारिक शिक्षा की ओर पहला कदम कहा गया है। शिक्षाविदों द्वारा ऐसा माना गया है कि, इस आयु वर्ग के बच्चों को औपचारिक शिक्षा का बोझ न देकर, उन्हें खेल विधियों के द्वारा ज्ञान ग्रहण की ओर अग्रसर करना चाहिए। जिससे बच्चों में मांसपेशीय, भाषात्मक, सामाजिक, संवेगात्मक और रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास सुनिश्चित हो सके। इसे प्रारंभिक बाल विकास कहते हैं।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के द्वारा, बच्चे आत्मविश्वास में वृद्धि की ओर अग्रसर होते हैं। इसे बुनियादी शिक्षा अथवा विद्यालय तैयारी कार्यक्रम भी कहा गया है। इस आयु में बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास में सहजरूप से संतुलन स्थापित किया जा सकता है। इसमें बालक की आधारभूत प्रवृत्तियों का विकास भलीभाँति होने की संभावना होती है। एन.सी.एफ. 2005 में शिशु देखभाल एवं बच्चों के सर्वांगीण विकास को औपचारिक शिक्षा से पूर्व

तैयार करना महत्वपूर्ण माना है। अतः पूर्व-प्राथमिक स्तर पर अनौपचारिक शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने एवं औपचारिक शिक्षा की प्रथम सीढ़ी (कक्षा-1) में प्रवेश हेतु तैयार किए जाने के लिए अनेक संस्थाओं द्वारा संचालित कार्यक्रमों के माध्यम से निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं जिससे औपचारिक शिक्षा की नींव मजबूत की जा सके। अतः इसी आशय को संज्ञान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत वर्तमान में संचालित शिक्षा के संगठनात्मक ढाँचे में परिवर्तन करते हुए 10+2+3 की व्यवस्था के स्थान पर पाठ्यचर्या और शिक्षण शास्त्रीय आधार पर एक नई शिक्षण व्यवस्था को पुनःगठित कर लागू किया गया है जिसकी संरचना में प्रथम 6 वर्ष को बुनियादी अवस्था माना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का महत्व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए आरंभिक कक्षाओं में विद्यार्थियों में बुनियादी शिक्षा (बुनियादी पठन-लेखन और अंक गणितीय कौशल) के मूलभूत कौशल हासिल करने पर सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। इसके अंतर्गत अनौपचारिक शिक्षा व औपचारिक शिक्षा के मध्य कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले बच्चों में सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से निपुण भारत मिशन के तीन माह (12 सप्ताह) का विद्या प्रवेश (अंतरिम उपाय) के रूप में एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया गया है जिसमें खेल-विधि के माध्यम से सरल और सहज वातावरण के साथ-साथ कक्षा 1 में प्रवेश लेने की बुनियादी दक्षता हासिल कर सकें। इसे ही विद्या प्रवेश कहा गया है।

कक्षा 1 के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम में गतिविधियों को शामिल करने से पहले यह ध्यान रखा गया है कि अनुशांसिक शैक्षणिक प्रक्रियाएँ केवल तीन माह (12 सप्ताह) तक ही सीमित नहीं है, बल्कि कक्षा 1 में इसे जारी रखना चाहिए, क्योंकि सभी बच्चों को एक समान गुणवत्तापूर्वक पूर्व प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पाती है। कोई आँगनबाड़ी से आता है और कोई सीधा घर से कक्षा 1 में प्रवेश लेता है। इसी का संज्ञान लेते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह सिफारिश की है कि सभी बच्चों को कक्षा 1 में प्रवेश के उपरांत तीन माह का प्ले-आधारित

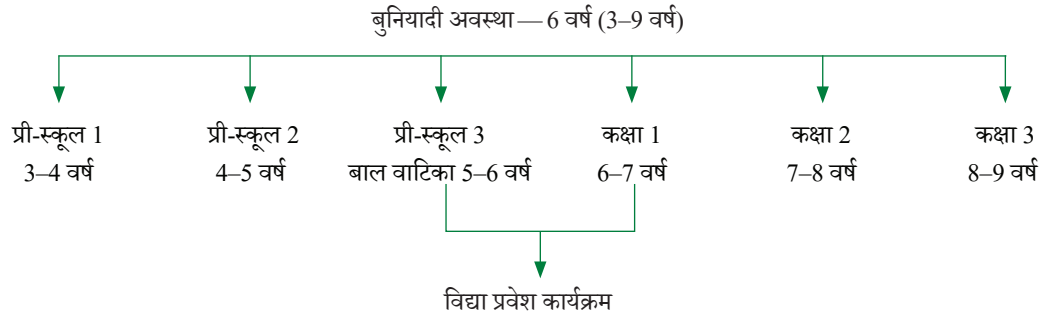

भयमुक्त, सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जाए जो कि औपचारिक शैक्षणिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में मददगार साबित हो सके। इस प्रकार के गतिविधि-आधारित स्कूल तैयारी पैकेज की सहायता से बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक अवधारणा को सीखने के कौशल हासिल कर सकेंगे। इसी को संज्ञान में लेते हुए पूर्व-प्राथमिक शिक्षा हेतु विशेष कार्यक्रम विद्या प्रवेश में अक्षर, ध्वनियाँ, शब्द, रंग, आकार और नंबर सीखने की गतिविधियाँ और कार्य-पत्रकों को शामिल किया गया है। इसके क्रियान्वयन में शिक्षकों के साथ-साथ सामुदायिक सहभागिता को भी महत्व देते हुए उनके दायित्व भी निर्धारित किए गए हैं जिससे प्रत्येक बच्चा स्कूल (औपचारिक शिक्षा) के लिए तैयार हो सके।

विद्या प्रवेश कार्यक्रम क्या है?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधान में प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करने की अनुशंसा के साथ-साथ शिक्षण व्यवस्था में लचीलेपन की अपेक्षा की गई है जिससे शिक्षार्थी अपनी प्रतिभा और रुचि के अनुसार जीवन जीने का रास्ता सहज भाव से खोज सकें। यह शिक्षा नीति बहुल दिशा के दृष्टिकोण पर केंद्रित है, जिसका मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ बचपन को सुदृढ़ बनाना है। नीति, आवश्यक कौशल हासिल करने, बुनियादी अवधारणाओं को सीखने और समग्र विकास के लिए एक मजबूत आधार बनाने की सिफारिश करती है। इसलिए सीखने के अनुभव, पूर्व-प्राथमिक शिक्षा से ही विद्यालयों की प्रारंभिक कक्षा में प्रवेश तक एक निरंतरता में शुरू होने चाहिए, जिसे आधारभूत चरण कहा जाता है।

विद्या प्रवेश कक्षा 1 के लिए तीन माह (90 दिवस) का प्ले-आधारित तैयारी कार्यक्रम है, जो कि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत निपुण भारत मिशन की सिफारिशों के अनुसार विकसित किया गया है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में लगभग पाँच करोड़ से अधिक बच्चे मूलभूत साक्षरता प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं। इन परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा बच्चों के स्कूल शिक्षा में सहज पारगमन को सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण से औपचारिक शिक्षा में प्रवेश पूर्व बच्चों के लिए मनोरंजक एवं प्रेरक वातावरण का सृजन करना है, ताकि उन्हें खेल-खेल में सीखने एवं आयु अनुरूप शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान किया जा सके। इस कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में बच्चों के लिए अक्षर, रंग, आकार और संख्या सीखने के लिए रोचक गतिविधियाँ तैयार की गई हैं, जिससे नौनिहालों को पढ़ाई के प्रति रुचि बढ़ाने की सकारात्मक पहल की जा सके। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण को बनाए रखना, उन्हें एक अच्छा संचारक बनाना है और यह सुनिश्चित करना है कि वे अच्छे शिक्षार्थी बनें और अपने तत्काल पर्यावरण से जुड़ सकें, ताकि बच्चों की पढ़ाई निर्बाध रूप से चल सके, चाहे वह स्कूल में हो या घर पर।

कार्यक्रम समयावधि

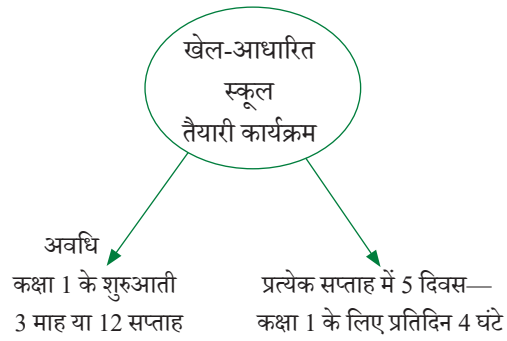

विद्या प्रवेश कार्यक्रम की आवश्यकता क्यों?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को चित्रित किया है। इसमें गुणवत्तापूर्ण देखभाल और शिक्षा की प्रत्येक बच्चे तक पहुँच सुनिश्चित करने तथा शिक्षा के बदलते स्वरूप की दिशा में आगे बढ़ने का एक स्पष्ट संदेश समाहित है। बच्चों के सीखने के आकलन, परिणामों एवं विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ है कि जिन बच्चों की शिक्षा आयु अनुरूप देरी से शुरू होती है अथवा जो बच्चे बिना पूर्व-प्राथमिक शिक्षा ग्रहण किए सीधे ही औपचारिक शिक्षा के लिए कक्षा 1 में प्रवेश पाते हैं वे बच्चे सामान्यतः शिक्षा के मानक स्तर से पीछे रह जाते हैं। परिणामस्वरूप वे स्कूली शिक्षा से या तो पलायन करने की स्थिति में होते हैं या ड्राप आउट हो जाते हैं, क्योंकि वर्तमान परिदृश्य में ज्यादातर मामलों में आँगनबाड़ी के माध्यम से पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के अभाव के कारण बुनियादी शिक्षा सुनिश्चित नहीं हो पाती है। ऐसी स्थिति में सीधे ही 6 वर्ष की आयु में कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले बच्चे बुनियादी साक्षरता और गणना जैसे बुनियादी कौशल को सीखने में असफल रह जाते हैं। अतः वर्तमान परिस्थितियों में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा हेतु ई.सी.सी.ई/बाल वाटिका जैसी संगठनात्मक ढाँचे के विकास की महत्ती आवश्यकता है। इसी को संज्ञान में लेते हुए विद्या प्रवेश कार्यक्रम को विकल्प के रूप में लागू किए जाने का प्रयास किया गया है। जिससे शिक्षा की व्यवस्था को सतत बनाते हुए बच्चों में बातचीत, खेल-कूद, चलने-फिरने, ध्वनि और संगीत के साथ-साथ अन्य ज्ञानेन्द्रियों की क्रियाशीलता के द्वारा संज्ञानात्मक व भावात्मक उत्प्रेरण के वातावरण को तैयार किया जा सके। इस कार्यक्रम को निपुण भारत मिशन या बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के उद्देश्यों की संप्राप्ति हेतु एक अंतरिम उपाय के रूप में देखा जा सकता है जो कि शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में प्राथमिक स्कूल पाठ्यक्रम के साथ कक्षा 1 में प्रवेश पाने वाले बच्चों के सीखने और समायोजन की ओर उन्मुख करता है। अतः बच्चों को स्कूल के माहौल से परिचित कराने, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, प्राकृतिक वातावरण से आत्मसात करने, शिक्षार्थी बनने के कौशल का विकास करने के उद्देश्य से विद्या प्रवेश कार्यक्रम के रूप में एक नवीन पहल की गई है।

कार्यक्रम का शिक्षाशास्त्र

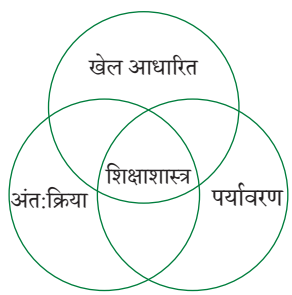

बच्चों को सक्रिय और व्यस्त शिक्षार्थी बनाना

विद्या प्रवेश कार्यक्रम के उद्देश्य

- विद्यालय गमन के वातावरण का पूर्वाभ्यास का विकास करना।
- कक्षा एक के स्तर पर बच्चों का व्यवधानरहित शिक्षण सुनिश्चित करना।
- खेल-खेल के माध्यम से भयमुक्त, आनंददायी एवं प्रेरक वातावरण तैयार करना।
- औपचारिक शिक्षा में गुणवत्ता अभिवृद्धि हेतु आधार तैयार करना।
- पारिवारिक शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा में समन्वय स्थापित करना।
- विशेष आवश्यकता वाले (दिव्यांग) बच्चों को औपचारिक शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित करना।
- खेल-विधि के माध्यम से पठन, लेखन, भाषा एवं संख्या ज्ञान की समझ विकसित करना।
- विद्यालय से पलायन की प्रवृत्ति अथवा ड्राप आउट की दर को न्यूनतम स्तर तक लाना।
- विद्यालयों (औपचारिक शिक्षा) में बच्चों के नामांकन में अभिवृद्धि करना।
- निपुण भारत मिशन/बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के उद्देश्यों की संप्राप्ति हेतु अंतरिम उपाय के रूप में माध्यम तैयार करना।
- शिक्षार्थी बनने के कौशल का विकास करना।
- शिक्षार्थियों की शिक्षा की बुनियाद को सुदृढ़ बनाना।

विद्या प्रवेश कार्यक्रम का क्रियान्वयन

बच्चों की शुरुआती शिक्षा के लिए प्ले-स्कूल की संकल्पना शहरी क्षेत्र की तर्ज पर अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी पहुँचाने के दृष्टिकोण से 2022–2023 में देश के सभी स्कूलों में प्रारंभ की जा रही है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय एवं नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मंशानुसार शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार एवं बुनियादी शिक्षा के उन्नयन के उद्देश्य से पहली कक्षा में प्रवेश लेने से पूर्व ही अक्षर और संख्या ज्ञान के कौशल विकास पर विशेष बल दिया जाएगा। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा विशेष पाठ्यक्रम प्रारंभिक मॉड्यूल तैयार किया गया है जिसमें बच्चों के लिए खेल-विधि के माध्यम से अक्षर, रंग, आकार और संख्या सीखने के लिए रोचक गतिविधियाँ शामिल की गई हैं। यह कार्यक्रम बाल वाटिका के सीखने के परिणाम पर आधारित होगा। इसे स्वास्थ्य कल्याण, भाषा एवं साक्षरता, गणितीय सोच और पर्यावरण जागरूकता से संबंधित मूलभूत दक्षताओं को विकसित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इस रेडीनेस पैकेज में अनुकरणीय गतिविधियों और कार्य-पत्रकों को विशेष रूप से डिजाइन किया गया है जिससे बच्चों में साझा करने, मदद करने, मेल-मिलाप, स्कूल की दिनचर्या का पालन तथा नवीन वातावरण में समायोजन होने जैसे गुणों का विकास सुनिश्चित हो सके। विद्या प्रवेश कार्यक्रम के प्रारूप के अनुसार कार्यक्रम की अवधि तीन माह तथा प्रतिदिन की समय अवधि चार घंटे की होगी जिसके लिए सप्ताह में पाँच दिन का समय निर्धारित किया गया है। इस कार्यक्रम के संचालन के लिए राज्यों को अपनी जरूरतों एवं अनुकूलता अनुसार लागू करने की स्वतंत्रता का प्रावधान रखा गया है। नई शिक्षा नीति, इस कार्यक्रम को मिशन मोड

में तत्काल उपाय के रूप में लागू करने की अनुशंसा करती है जिससे पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में निवेश करने से बुनियादी शिक्षा की पहुँच प्रत्येक बच्चे तक सुनिश्चित हो सकेगी, जिससे समाज में समानता का भाव स्थापित होगा। प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को वर्ष 2030 से पूर्व-सुनिश्चित किए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

कार्यक्रम हेतु समय निर्धारण (अवधि 4 घंटे एवं 7 कालांश)

- प्रार्थना कालांश
- स्वतंत्र खेल कालांश
- संख्यात्मक कालांश
- पर्यावरण एवं विज्ञान कालांश
- भोजन (अंतराल)
- भाषा एवं साक्षरता कालांश
- बाहरी खेल कालांश
- फिर मिलेंगे कालांश

विद्या प्रवेश कार्यक्रम की विशेषता

प्रारंभिक मॉड्यूल में तीन विकासात्मक लक्ष्य निर्धारित किए हैं जो बच्चों की स्कूली शिक्षा शुरू करने पर सीखने की प्रवृत्ति के लिए अपेक्षित दक्षता प्राप्त करने पर बल देते हैं।

विकासात्मक लक्ष्य 1— बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखना (एच.डब्ल्यू.)।

विकासात्मक लक्ष्य 2— बच्चों को प्रभावशाली संप्रेषक बनाना (ई.सी.)।

विकासात्मक लक्ष्य 3— बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और आसपास के परिवेश से जुड़ना (आई.एल.)।

- मूलभूत साक्षरता में मौखिक भाषा, प्रिंट जागरूकता, ध्वन्यात्मकता, वर्णमाला पहचान, तुकबंदी आदि को शामिल किया गया है।
- मूलभूत संख्यात्मकता में आकार, रंग, स्थानिक भावना, वर्गीकरण, क्रमांकन, पैटर्न बनाने, अनुक्रमिक सोच, डेटा हैंडलिंग आदि अवधारणाओं को सम्मिलित किया गया है।

मॉड्यूल में निर्धारित लक्ष्य सीखने के स्पाइरल तरीके पर आधारित है जो कि एच.डब्ल्यू, ई.सी, आई.एल. के क्रम में निरूपित है। प्रथम लक्ष्य 'बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखना' को प्राप्त करने के लिए खेल, कला

विकासात्मक लक्ष्यों के अंतर्गत दक्षताओं को सूचीबद्ध किया गया है जो इस प्रकार हैं—

विकासात्मक लक्ष्य 1	विकासात्मक लक्ष्य 2	विकासात्मक लक्ष्य 3
• सकल मोटर कौशल • फाइन मोटर स्किल्स • आँख-हाथ का समन्वय • सामाजिक-भावात्मक विकास • स्वास्थ्य और पोषण • स्वच्छता • सुरक्षा	• बात करना और सुनना • समझ के साथ पढ़ना • प्रभावी संचारक • भाषा और साक्षरता विकास • उद्देश्य के साथ लिखना	• संवेदी विकास • संज्ञानात्मक कौशल • पर्यावरण-संबंधी अवधारणाएँ • संख्या समझ

एकीकरण और कहानी कहने के साधनों का उपयोग करते हुए व्यावहारिक शिक्षण कार्य किया जाना है। बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण को बनाए रखने के लिए, इसमें शारीरिक और मोटर विकास, सामाजिक, भावात्मक विकास, पोषण, सुरक्षा और स्वच्छता पर विशेष फोकस किया गया है। अन्य दो लक्ष्यों 'बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनें' एवं 'बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना' का उद्देश्य साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए नींव का निर्माण करना है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि बच्चे प्रभावी संचारक बनें और इसमें इस प्रकार शिक्षार्थी शामिल हों जो अपने तत्काल वातावरण से जुड़ने में सक्षम हों। इस प्रकार जो बच्चे बिना पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण किए सीधे ही कक्षा 1 व 2 में प्रवेश लेते हैं, ऐसे बच्चों के लिए एक औपचारिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने को प्राथमिकता देने के लिए यह तैयार किया गया है। जिससे एक सुव्यवस्थित विद्यालय कार्यक्रम की तैयारी होती है जो बच्चों के सीखने को सहज और विद्यालय प्रवेश की प्रक्रिया को आसान बना सकेगा।

विद्या प्रवेश कार्यक्रम से बच्चों में अपेक्षित कौशल विकास

- सीखने के लिए उत्सुक एवं तत्पर।
- संवाद एवं संचार के कौशल का विकास।
- गतिविधियों के आत्मसाथ करने की पहल।
- वर्गीकृत एवं व्यवस्थित करने में निपुण।
- गणितीय समझ का विकास।
- पढ़ने और लिखने के तरीकों की समझ विकसित हो पाना।
- परिवेशीय वस्तुओं और वातावरण का बोध हो पाना।

आकलन एवं दस्तावेजीकरण

बच्चों के बौद्धिक विकास और सीखने की प्रवृत्ति या जानने हेतु सतत रूप से रचनात्मक आकलन किया जाना है जिससे बच्चों के सीखने के स्तर का आकलन किया जा सके।

- विद्यार्थियों का आकलन नियमित रूप से कक्षा-कक्षीय संपूर्ण प्रक्रियाओं के दौरान किया जाना है। कार्यपुस्तिका में प्रथम, द्वितीय व तृतीय माह के आकलन प्रपत्र दिए गए हैं। इन आकलन प्रपत्रों में सभी विकासात्मक लक्ष्य के अनुसार अधिगम सूचक दिए गए हैं। इन्हीं अधिगम सूचकों पर बच्चों के साथ कार्य करते हुए प्रगति दर्ज की जाएगी। अधिगम सूचकों के अनुसार गतिविधि कराते समय बच्चों की प्रतिक्रिया के अनुरूप संबंधित कॉलम (1) में किया जायेगा।
- माह का कार्य पूर्ण होने पर आकलन पत्रक को कार्य पुस्तिका से पृथक कर बच्चों के पोर्टफोलियो में संधारित किया जाना है। इसी प्रकार द्वितीय व तृतीय माह में भी संधारित किया जाएगा।

आकलन के टूल

- अवलोकन
- लिखित कार्य/रिकॉर्ड
- पोर्टफोलियो
- चैक लिस्ट
- रेटिंग स्केल
- फोटोग्राफ एवं वीडियो क्लिप

सुझावात्मक आकलन

कार्यक्रम की मार्गदर्शिका में माहवार समेकित आकलन प्रपत्र का आकलन संलग्न किया गया है जिसमें सीखने के स्तर के अनुसार निम्नांकित ग्रेड देते हुए समेकित आकलन प्रपत्र तैयार कर, प्रगति अभिलेख के रूप में विद्यालय स्तर पर संधारित किया जाना है।

(अ) स्वयं करता है।

(ब) सहयोग से करता है।

(स) बहुत अधिक सहायता से करता है।

निष्कर्ष

यह कार्यक्रम एक खेल-आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अनुसरण और विकासात्मक रूप से उपयुक्त गतिविधियों और स्थानीय खेल सामग्री के उपयोग के साथ अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए तैयार किया गया है। प्रायः यह देखा गया है कि स्कूल में प्रवेश करने वाले बच्चे प्रारंभिक दिनों में सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक रूप से शिक्षा के लिए कक्षा 1 और 2 के पाठ्यक्रम में सीधे प्रवेश करने के लिए तैयार नहीं होते हैं, उन्हें एक औपचारिक शैक्षणिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने के लिए सामाजिक भावात्मक, भाषा, संज्ञानात्मक कौशल विकास की आवश्यकता होती है। एक सुव्यवस्थित विद्यालय तैयारी कार्यक्रम (रेडीनेस कार्यक्रम) बच्चों के सीखने के माहौल को सहज बनाता है। बच्चों की वृद्धि, विकास और सीखने में माता-पिता और समुदाय की भूमिका सुनिश्चित करने के लिए सचेत प्रयास किए गए हैं। यह गतिशील दस्तावेज, मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक मिशन को लागू करने के लिए शिक्षकों, हितकारकों और समुदाय के अनुभवों/फीडबैक के आधार पर लगातार संबंधित करने के प्रावधान पर आधारित है। दिव्यांग बच्चों में सीखने के कौशल विकास के उद्देश्य से आनंदमय और तनावमुक्त सीखने की जरूरतों को भी ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इसमें यह अपेक्षा की गई है कि गतिविधियों के माध्यम से बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक अवधारणाओं को भी सीखेंगे और ऐसे कौशल हासिल करेंगे जो प्रारंभिक स्तर पर सीखने के लिए एक सुदृढ़ नींव के रूप में उपयोगी सिद्ध होंगे।

संदर्भ

कानून एवं न्याय मंत्रालय. 2009. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009. *भारत का राजपत्र*. कानून एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2021. *विद्यालय प्रवेश गाइडलाइंस-प्ले-बेस्ड स्कूल प्रिप्रेरेशन मॉडयूल फॉर ग्रेड-1 2021*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

———. 2021. राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत). *विवरणिका 2021*. स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

4

वर्तमान परिदृश्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का समीक्षात्मक अध्ययन (छत्तीसगढ़ के संदर्भ में)

प्रीति साहू*
मुकेश चन्द्राकर**

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा एक संपूर्ण योजना है जिसमें बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण, अनौपचारिक शिक्षा, स्वच्छ वातावरण एवं अच्छी आदतों का विकास आदि सभी आधारभूत सेवाओं का एक पुंज है जिसका संचालन आँगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से किया जा रहा है। इनकी सेवाओं को गाँव, ब्लॉक, जिला, राज्य तथा केंद्र स्तर में विभाजित कर बेहतर बनाया गया है। योजना के सुलभ संचालन की जवाबदेही महिला बाल विकास अधिकारी, परियोजना अधिकारी, पर्यवेक्षक, आँगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका की है। इस लेख में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर छत्तीसगढ़ में इस कार्यक्रम की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन द्वितीय आँकड़ों पर आधारित है। ये आँकड़े विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, शासकीय वेबसाइटों से एकत्रित किए गए हैं।

बच्चे बचपन में सबसे अधिक सीखते हैं। मानव जीवन में बचपन को सबसे तीव्र वृद्धि और विकास का समय कहा गया है। वैज्ञानिक प्रमाण कहते हैं कि 90 प्रतिशत मस्तिष्क का विकास बचपन (5 वर्ष तक की आयु) में हो जाता है (सिंह, 2012; ई.सी.सी.ई. 2013)। इस विकास के बहुत से पहलू हैं— संज्ञानात्मक, भावात्मक, शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि सभी का विकास समान रूप से होना चाहिए। जीवन की इस अवधि में आई कमियाँ मानव विकास को जीवन भर प्रभावित करती हैं, इसलिए भारत सरकार ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे सुविधाविहीनता के चक्र को तोड़ने और असमानता को दूर करने के लिए व दूरगामी सामाजिक व आर्थिक लाभ हेतु 2 अक्तूबर 1975 में एकीकृत बाल विकास सेवा योजना की पहल की। यह योजना गर्भवती महिला, किशोरियों, शिशु देखभाल व उनकी शिक्षा व संपूर्ण विकास पर केंद्रित है। जनगणना 2001 के अनुसार, भारत में प्रत्येक वर्ष 2.5 करोड़ बच्चे जन्म लेते हैं जिनकी मृत्यु दर 70/1000 है। हमारे देख में 0–6 आयु वर्ग के 15.8 करोड़ बच्चे हैं जिसमें से केवल 42 प्रतिशत बच्चे (12 से 23 महीने) का पूर्ण टीकाकरण करवा पाते हैं। वहीं 14 प्रतिशत बच्चे टीकाकरण नहीं करवा पाते हैं।

*शोधार्थी, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
**सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

0–6 आयु वर्ग के इन बच्चों में 5 प्रतिशत बच्चे कम या गंभीर रूप से खून की कमी (अनीमिया) के रोग से पीड़ित हैं तथा 47 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं एवं 6 वर्ष से कम उम्र के 16 करोड़ बच्चों में से केवल 3.42 करोड़ बच्चे कुपोषण से बचाव के लाभ ले रहे हैं एवं इनमें से केवल 1.94 लाख बच्चे ही एकीकृत बाल विकास सेवा के तहत शालापूर्व शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं (भारत सरकार 2002 (अ) *भारत में बालक— एक प्रोफाइल,* यू.एन.डी.पी.— *मानव विकास रिपोर्ट,* प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा— *राष्ट्रीय फोकस समूह 3.6,* रा.शै.अ.प्र.प.)

छत्तीसगढ़ में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा

भारत सरकार ने जब प्रारंभिक बचपन सेवा के आयोजन के क्षेत्र में विचार किया तब 1972 में योजना मंत्री ने समेकित बाल विकास सेवा (आई.सी.डी.एस.) योजना शुरू करने का सुझाव दिया। यह समेकित बाल विकास योजना वर्तमान की समस्त समस्याओं व समग्र आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था। इस योजना की शुरुआत गाँधी जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय स्तर पर 2 अक्तूबर 1975 में 33 ब्लॉकों में शुरू की गई थी जिसमें से छत्तीसगढ़ (अविभाजित मध्य प्रदेश) उन प्रथम राज्यों में से एक था जो पायलेट प्रोजेक्ट के लिए चुना गया था। समेकित बाल विकास सेवा छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के तोकापाल ब्लॉक में शुरू की गई थी। वर्ष 2011–2012 के अनुसार राज्य के 27 जिलों में 220 बाल विकास परियोजनाएँ और 43,763 आँगनबाड़ी केंद्र तथा 6,548 मिनी आँगनबाड़ी केंद्र स्वीकृत हैं। इन परियोजनाओं में से 84 ग्रामीण, 121 आदिवासी एवं 15 शहरी बाल विकास परियोजना हैं जिनमें क्रमशः 23,998 ग्रामीण, 17,424 आदिवासी तथा 2,027 शहरी आँगनबाड़ी केंद्र हैं। इन परियोजनाओं के तहत 5 लाख गर्भवती और शिशुवती माताओं, किशोरियों को पूरक पोषण कार्यक्रम के तहत और लगभग 10 लाख बच्चे शालापूर्व शिक्षा के तहत कुल मिलाकर 30 लाख से अधिक हितग्राही लाभांवित हो रहे हैं (संस्कार अभियान— महिला एवं बाल विकास छत्तीसगढ़)। इस योजना में बच्चों के पोषण, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच, देखभाल, शालापूर्व शिक्षा, छोटी-छोटी बीमारियों के प्रति जागरूकता, इलाज व संरक्षित और अनुकूल वातावरण तथा महिलाओं को पोषण, किशोरियों को टीकाकरण व परामर्श आदि को शामिल किया गया। इसके सुलभ संचालन हेतु कई स्तर व विभागों में सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं। इन सबका केंद्रबिंदु आँगनबाड़ी कार्यकर्ता हैं जो सभी योजनाओं को गाँव, ब्लॉक, जिला, राष्ट्रीय स्तर पर समन्वित व लागू करते हैं (थिप्पेश और गुंजल, 2014)।

अध्ययन के उद्देश्य— अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

1. आँगनबाड़ी केंद्र की वर्तमान स्थिति का अध्ययन निम्न के संदर्भ में—
   - केंद्रों की संख्या
   - कर्मचारियों की संख्या
   - लाभार्थी छात्रों की संख्या
2. आँगनबाड़ी केंद्र द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं का अध्ययन करना।

3. आँगनबाड़ी केंद्र के अधिकारियों की संरचना एवं उत्तरदायित्व का अध्ययन करना।

अनुसंधान कार्यप्रणाली

वर्तमान अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु आँकड़े छत्तीसगढ़ की विभिन्न पुस्तिकाओं (*आँगनबाड़ी कार्यक्रम— एक प्रवेशिका, प्रशासकीय प्रतिवेदन 2020–2021, हस्तपुस्तिका, उड़ान 2017*, *संस्कार अभियान*) एवं वेबसाइट्स से एकत्रित किए गए हैं।

विश्लेषण एवं चर्चा

छत्तीसगढ़ राज्य में आई.सी.डी.एस. आँगनबाड़ी केंद्रों की स्थिति

तालिका 1 में छत्तीसगढ़ राज्य में स्वीकृत मिनी आँगनबाड़ी केंद्र एवं आँगनबाड़ी केंद्रों की स्थिति को दर्शाया गया है। वर्ष 2000–2001 में छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश से अलग होने के पश्चात छत्तीसगढ़ में 836 मिनी आँगनबाड़ी केंद्र एवं 20,289 आँगनबाड़ी केंद्र स्वीकृत थे जो कि क्रमशः कुल केंद्रों के 3.96 प्रतिशत एवं 94.04 प्रतिशत थे। इस तालिका से यह स्पष्ट हो रहा है कि वर्ष 2005–2006 में एक भी मिनी आँगनबाड़ी केंद्रों की संख्या में वृद्धि नहीं हुई, जबकि आँगनबाड़ी केंद्रों की संख्या में 9,148 की वृद्धि हुई, उसी प्रकार 2008–2009 एवं 2010–2011 में क्रमशः 1,483 एवं 4,229 मिनी आँगनबाड़ी केंद्र एवं 5,500 और 8,826 नए आँगनबाड़ी केंद्र खोले गए, परंतु 2010–2011 से 2016–2017 तक एक भी मिनी आँगनबाड़ी केंद्र एवं आँगनबाड़ी केंद्र नहीं खोले गए। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि 2010–2011 से 2016–2017 तक राज्य शासन द्वारा एक भी नए केंद्र की स्वीकृति नहीं दी गई। वर्ष 2020–2021 में राज्य सरकार द्वारा 2,897 नए आँगनबाड़ी केंद्रों को स्वीकृति दी गई। इस प्रकार 2020–2021 तक छत्तीसगढ़ में कुल 46,660 आँगनबाड़ी केंद्र स्वीकृत हैं जो कि वर्ष 2000–2001 कि तुलना में 129.97

तालिका 1— छत्तीसगढ़ में परियोजना व आँगनबाड़ी केंद्रों की स्थिति

वर्ष	स्वीकृत मिनी आँगनबाड़ी	स्वीकृत आँगनबाड़ी	कुल केंद्र	वृद्धि (आधार वर्ष 2001)
2000–2001	836	20289	21125	
2005–2006	836	29437	30237	9112(43.14)
2008–2009	2319	34937	37256	16131(76.40)
2010–2011	6548	43763	50311	29186(138.19)
2011–2012	6548	43763	50311	29186(138.19)
2016–2017	6548	43763	50311	29186(138.19)
2020–2021	5814	46660	52474	31349(248.40)

स्त्रोत— स्ट्रैंथनिंग अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इन छत्तीसगढ़—एन इवैल्युएशन ऑफ दि उड़ान पैकेज

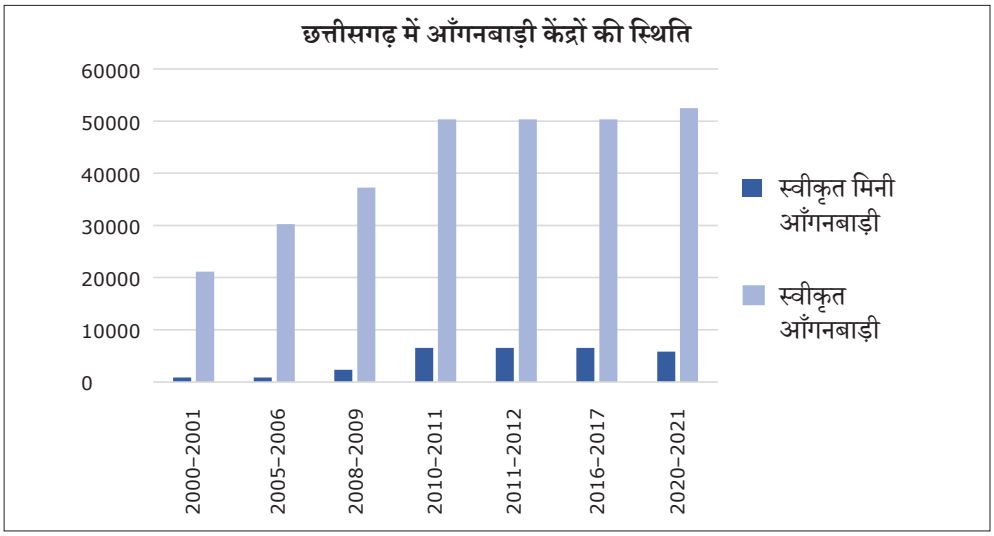

प्रतिशत की वृद्धि है। उसी प्रकार 2020–2021 के आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि मिनी आँगनबाड़ी केंद्रों की संख्या में 734 केंद्रों की गिरावट आई है जो कि वर्ष 2016–2017 के संदर्भ में 11.21 प्रतिशत की कमी थी, परंतु आधार वर्ष 2000–2001 की तुलना में 595.45 की वृद्धि है। उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से हम यह कह सकते हैं कि वर्ष 2000–2001 से 2020–2021 तक राज्य सरकार ने क्रमशः 4,978 मिनी आँगनबाड़ी केंद्र एवं 26,371 नए आँगनबाड़ी केंद्र स्वीकृत कर खोले।

इस तालिका के आँकड़ों के वर्षवार विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि 2000–2001 की तुलना में आँगनबाड़ी केंद्रों की वृद्धि 2005–2006 में 9,112 (43.14 प्रतिशत), 2008–2009 में 16,131 (76.40 प्रतिशत), 2010–2011 से 2016–2017 तक में 29,186 (138.19 प्रतिशत) तथा 2020–2021 में 31,349 (248.40 प्रतिशत) की वृद्धि दर्ज की गई। अतः यह कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ में 2000–2001 से 2020–2021 तक आँगनबाड़ी केंद्रों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है।

तालिका 2— छत्तीसगढ़ राज्य में आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के कर्मचारियों की स्थिति

आई.सी.डी.एस. कर्मचारी	छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा स्वीकृत पद	नियुक्ति		रिक्त पद	
		कुल	*प्रतिशत (%)*	*कुल*	*प्रतिशत (%)*
सी.डी.पी.ओ./ए.सी.डी.पी.ओ.	323	126	39.01	197	60.99
पर्यवेक्षक	1617	1307	80.82	310	19.17
कार्यकर्ता	50311	48901	97.19	1410	2.80
सहायिका	46660	42523	91.13	4137	8.86

स्रोत–www.0icds-wcd.nic.in

नोट— यह सूचना 2015 की स्थिति में है।

तालिका 2 सी.डी.पी.ओ., पर्यवेक्षक, आँगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं के पदों की राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत, नियुक्ति व रिक्त पदों की वर्तमान स्थिति को दर्शाती है। छत्तीसगढ़ में सी.डी.पी.ओ. के स्वीकृत पदों की संख्या 323 है जिसमें से केवल 126 पदों में ही नियुक्ति की गई है जो कि कुल स्वीकृत पदों का 39.01 प्रतिशत है एवं 197 अर्थात 60.99 प्रतिशत पद रिक्त हैं। उसी प्रकार पर्यवेक्षकों के स्वीकृत पदों की संख्या 1,617 थी, उनमें से 1,307 (80.82 प्रतिशत) पदों में नियुक्ति हुई एवं 310 (19.17 प्रतिशत) पदों में नियुक्ति शेष है। छत्तीसगढ़ में आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के कुल 50,311 पद स्वीकृत हैं जिसमें से 48,901 (97.19 प्रतिशत) पदों पर नियुक्ति की जा चुकी है एवं मात्र 1,410 (2.80 प्रतिशत) पदों पर ही नियुक्ति शेष है। उसी प्रकार सहायिका के कुल 46,660 स्वीकृत पदों में से 42,523 पदों में नियुक्ति की गई जो कि कुल स्वीकृत पदों का 91.13 प्रतिशत है एवं 4,137 (8.86 प्रतिशत), पदों पर आज तक नियुक्ति नहीं हो पाई है।

तालिका 3— छत्तीसगढ़ राज्य में शालापूर्व शिक्षा के लाभार्थियों की स्थिति

वर्ष	बालक	बालिका	कुल	वृद्धि आधर वर्ष 2010
2010	430788	434806	865594	–
2011	434974	441054	876028	10434 (1.20)
2012	443258	453678	896936	31342 (3.62)
2013	446246	453439	900181	34587 (3.99)
2014	435857	444376	880233	14639 (1.69)
2015	435857	444376	880233	14639 (1.69)
2017–2018	424630	429630	854260	–11334 (–1.31)
2018–2019	383582	389108	772690	–92904 (–10.73)

स्त्रोत— www.icds.wcd.nic.in

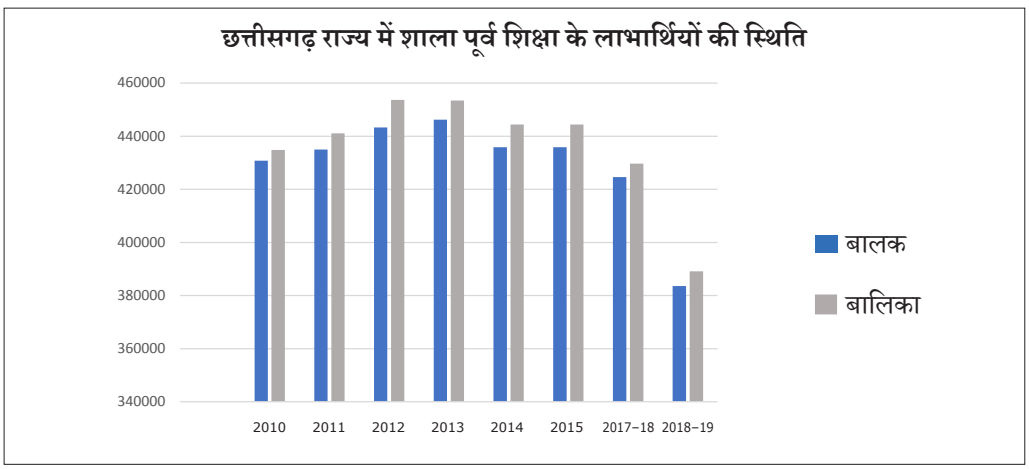

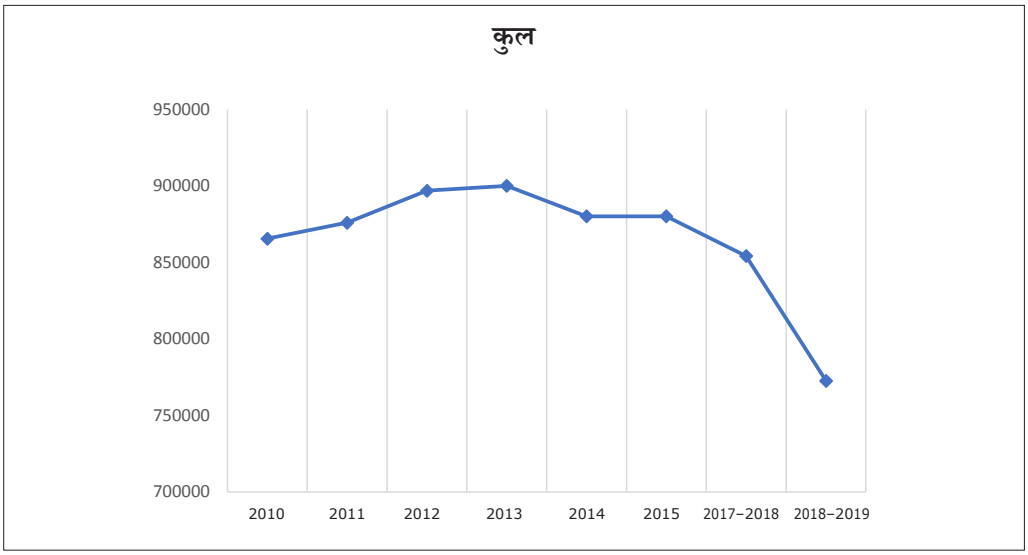

उपरोक्त तालिका में छत्तीसगढ़ राज्य में शालापूर्व शिक्षा से लाभांवित बच्चों की संख्या को दर्शाया गया है। अवलोकन से यह स्पष्ट है कि पिछले 10 वर्षों में लाभांवित बच्चों की संख्या में उतार-चढ़ाव है। सन 2010 में कुल लाभांवित बच्चे 8,65,594 हैं जिसमें से बालकों की संख्या 4,30,788 व बालिकाओं की संख्या 4,34,806 थी। सन 2011 से 2013 तक लाभांवित बच्चों की संख्या में क्रमशः 1.02, 3.62, 3.99 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि सन 2014–2015 में लाभांवित बच्चों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं पाई गयी। सन 2017–2018 की तुलना में 2018–2019 तक लाभांवित बालकों की संख्या में 41,048 (–1.31) व बालिकाओं में 40,522 (–10.73) की कमी पाई गई। सन 2017–2018 व 2018–19 में लाभांवित बच्चों की वृद्धि 2015 के तुलना में क्रमशः 25,973 एवं 1,07,543 कम पाई गई तथा आधार वर्ष 2000–2001 की तुलना में इसकी वृद्धि क्रमशः 11,334 (–1.31) व – 92,904 (–10.73) है जो कि ऋणात्मक है। तालिका 3 के लाभांवित बालक एवं बालिकाओं के आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि सत्र 2010 से 2019 तक बालकों की तुलना में बालिकाओं में क्रमशः .93 प्रतिशत, 1.39 प्रतिशत, 2.35 प्रतिशत, 1.61 प्रतिशत, 1.95 प्रतिशत, 1.17 प्रतिशत व 1.44 प्रतिशत ज्यादा लाभांवित हुए थे। अतः यह कहा जा सकता है कि सन 2010 से 2015 तक लाभार्थी बच्चों की संख्या में बहुत कम वृद्धि हुई, जबकि 2018 में लाभार्थियों की संख्या में ऋणात्मक वृद्धि देखी गयी।

आँगनबाड़ी कार्यक्रम के तहत प्रदान की जाने वाली सेवाएँ

आँगनबाड़ी में पारस्परिक रूप से छह प्रकार की सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं— पूरक पोषण आहार, टीकाकरण, संदर्भ सेवाएँ, वृद्धि निगरानी एवं स्वास्थ्य पोषण, शालापूर्व शिक्षा एवं स्वास्थ्य परामर्श।

अक्तूबर 2012 में आँगनबाड़ी कार्यक्रम को पुनर्गठित किया गया एवं इसे प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और विकास केंद्र के रूप में देखा गया। पुनर्गठित आँगनबाड़ी व परंपरागत आँगनबाड़ी कार्यक्रम को मिलाकर अब मुख्य रूप से आँगनबाड़ी केंद्र द्वारा छह सेवाएँ— पूरक पोषाहार, पोषण एवं स्वास्थ्य परामर्श, टीकाकरण, विद्यालय पूर्व शिक्षा, स्वास्थ्य जाँच एवं संदर्भ सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं। उपरोक्त छह सेवाओं के विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष पाए गए हैं।

पूरक पोषाहार संबंधित सेवाओं का निष्कर्ष

राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा नीति 2013 का उद्देश्य गर्भावस्था से 6 वर्ष तक के बच्चों की संपूर्ण विकासात्मक आवश्यकता के अनुरूप व्यापक बाल्य देखभाल सेवाएँ व सुविधाएँ प्रदान करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा पूरक आहार व विकास निगरानी को शामिल किया है। इसके तहत आँगनबाड़ी कार्यकर्ता व सहायिका की मदद से अपने क्षेत्र का सर्वेक्षण कर गर्भवती महिला व 0–6 वर्ष तक के बच्चों की पहचान कर उन्हें पूरक आहार व स्वास्थ्य सेवाओं की सहायता प्रदान करते हैं।

स्वास्थ्य जाँच एवं संदर्भ सेवाएँ

0–6 आयु के बच्चों को पोलियो, टेटनेस, खसरा, डी.पी.टी., टी.बी., बाल मृत्यु, विकलांगता, रुग्णता और संबंधित कुपोषण तथा महिलाओं में अनीमिया, मातृत्व मृत्यु दर, गर्भस्थ शिशु मृत्यु आदि प्रमुख समस्याएँ हैं। इस समस्या का समाधान आँगनबाड़ी व स्वास्थ्य विभाग दोनों की जिम्मेदारी है। इसके लिए ऑग्जिलरी नर्स मिडवाइफरी (ए.एन.एम.) या सहायक नर्स व आँगनबाड़ी कार्यकर्ता की मदद से गर्भवती महिलाओं का प्रसव पूर्व एवं प्रसव पश्चात देख-रेख, छोटी-छोटी बीमारियों का निदान, शिशु स्वास्थ्य जाँच, दवाई वितरण, माता-पिता या बालक को जागरूक करना, रिकॉर्ड रखना, टीकाकरण व जाँच शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया जाता है। जन्म से 3 वर्ष तक के सभी बच्चों की प्रत्येक माह वृद्धि जाँच की जाती है।

स्वास्थ्य जाँच और विकास निगरानी के दौरान, बीमार या कुपोषित बच्चे, जिन्हें आवश्यकतानुसार तत्काल चिकित्सा सुविधा की जरूरत होती है, उन्हें आँगनबाड़ी कार्यकर्ता द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र या उपकेंद्र में रेफर किया जाता है तथा छोटे बच्चों में विकलांगता का पता लगाकर उन्हें सूचीबद्ध कर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र/उप-केंद्र के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी और ए.एन.एम. को संदर्भित किया जाता है।

शालापूर्व शिक्षा

इस कार्यक्रम के तहत 3–6 वर्ष के बच्चों को सीखने योग्य वातावरण प्रदान करना उनके शारीरिक, बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक, भावात्मक व सामाजिक गुणों के विकास को बढ़ाया जा रहा है। बच्चों को शिक्षा, खेल गतिविधियों के माध्यम से प्रदान की जाती है, इसके लिए सहायक सामग्री हेतु स्थानीय संस्कृति और प्रथाओं पर आधारित सामग्री का उपयोग करके शिक्षा को सरल बनाया गया है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ में समेकित बाल विकास योजना विस्तार के तीसरे चरण में इन आँगनबाड़ी केंद्रों में शालापूर्व शिक्षा हेतु लगभग 10 लाख बच्चे नामांकित हैं।

आँगनबाड़ी कार्यकर्ता शालापूर्व शिक्षा संबंधी मूलभूत जानकारी हेतु शालापूर्व शिक्षा किट (*संस्कार, उड़ान*) का उपयोग करते हैं, इस किट को समय-समय पर छत्तीसगढ़ शासन द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। (संस्कार अभियान— *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा 2017*)।

टीकाकरण एवं स्वास्थ्य शिक्षा

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा अपने शिशु बाल स्वास्थ्य (आर.सी.एच.) कार्यक्रम के तहत टीकाकरण सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। आँगनबाड़ी कार्यकर्ता टीकाकरण के लिए लक्षित आबादी में स्वास्थ्य कर्मियों की सहायता करते हैं। वह निश्चित दिन के टीकाकरण सत्र के आयोजन में मदद करते हैं। वह एकीकृत बाल विकास योजना (आई.सी.डी.एस.) लाभार्थियों के टीकाकरण रिकॉर्ड रखते हैं और पूर्ण लक्ष्य सुनिश्चित करने के लिए अनुवर्ती कार्रवाई करते हैं। आयरन और विटामिन 'ए' सप्लीमेंटेशन आयरन फोलिक एसिड (आई.एफ.ए.) टैबलेट टीकाकरण कार्यक्रम के तहत बच्चों और गर्भवती महिलाओं को प्रदान किया जाता है, जो स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रजनन बाल स्वास्थ्य प्रणाली (आर.सी.एच.) कार्यक्रम के तहत भी वितरित किए जाते हैं।

पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा (एन.एच.ई.)

एन.एच.ई. का 15–45 वर्ष के आयु वर्ग की महिलाओं के क्षमता निर्माण का दीर्घकालिक लक्ष्य है, ताकि वे अपने स्वास्थ्य, पोषण और विकास की ज़रूरतों के साथ-साथ अपने बच्चों और परिवारों की देखभाल कर सकें। पोषण की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की भोजन की आदतों और प्रथाओं को स्थापित करने में मदद करना है जो शरीर की पोषण संबंधी आवश्यकताओं के अनुरूप हैं और जिस क्षेत्र में वे रहते हैं उसके सांस्कृतिक पैटर्न और खाद्य संसाधनों के अनुकूल हैं।

आई.सी.डी.एस. का संगठन

आई.सी.डी.एस. का संगठन पाँच अलग-अलग स्तरों में विभाजित है— केंद्रीय स्तर, राज्य/केंद्र शासित प्रदेश स्तर, जिला स्तर, ब्लॉक स्तर और ग्राम स्तर।

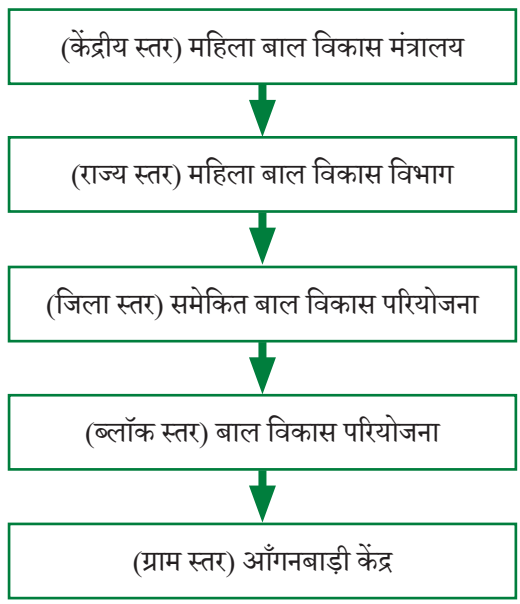

केंद्रीय स्तर पर, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत महिला एवं बाल विकास विभाग नोडल विभाग है, जिसकी जिम्मेदारी बजटीय नियंत्रण और कार्यक्रम के क्रियान्वयन की है। राज्य स्तर पर, महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, ग्रामीण विकास, आदिवासी कल्याण विभाग राज्य के भीतर

कार्यक्रम के सुलभ परिपालन/क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार हैं।

राज्य स्तर पर, कार्यक्रम की निगरानी के लिए आई.सी.डी.एस. प्रकोष्ठों की स्थापना की गई है। राज्य के भीतर, आई.सी.डी.एस. का प्रशासन जिला, ब्लॉक और ग्राम स्तर और आँगनबाड़ी केंद्र पर विकेंद्रीकृत है।

जिला स्तर पर, जिला अधिकारी (कलेक्टर/जिला विकास और कार्यक्रम अधिकारी/उपायुक्त) योजना के समन्वय और सुलभ परिपालन/कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार/उत्तरदायी है। जिलों के भीतर आई.सी.डी.एस. की प्रशासनिक इकाई को आई.सी.डी.एस. परियोजना कहा जाता है।

ब्लॉक स्तर पर, बाल विकास परियोजना अधिकारी (सी.डी.पी.ओ.) ब्लॉक स्तर पर कार्यक्रम को सुचारु रूप से लागू करने की जिम्मेदारी है।

आई.सी.डी.एस. परियोजना में ग्रामीण क्षेत्र में सामुदायिक विकास खंड, जनजातीय क्षेत्र में जनजातीय विकास खंड और शहरी क्षेत्र में मलिन बस्तियों का समूह शामिल है।

प्रत्येक ब्लॉक में औसतन 100 आँगनबाड़ी केंद्र हैं। पर्यवेक्षण की सुविधा के लिए आँगनबाड़ी केंद्र की संख्या के आधार पर ब्लॉक को 4–5 सर्कलों में विभाजित किया गया है; प्रत्येक सर्कल में एक पर्यवेक्षक कम से कम 25 आँगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण और जो सी.डी.पी.ओ. को रिपोर्ट करता है। नए मापदंड के अनुसार जनजातीय परियोजना में 17, ग्रामीण परियोजना में 20, शहरी परियोजना में 25 पर्यवेक्षणों का दायित्व है। बड़े ग्रामीण और आदिवासी ब्लॉकों में, एक अतिरिक्त बाल विकास परियोजना अधिकारी (एसी.डी.पी.ओ.) की नियुक्ति की जाती है जो पर्यवेक्षकों और सी.डी.पी.ओ. के बीच की कड़ी बनाता है और सी.डी.पी.ओ. को दिन-प्रतिदिन के क्रियाकलापों और क्षेत्र के दौरे में सहायता करता है। गाँव स्तर पर स्वास्थ्य, पोषण और शैक्षिक सेवाओं का पैकेज गाँव या शहरी स्लम क्षेत्र में स्थित आँगनबाड़ी केंद्र (ए.डब्ल्यू.सी.) में प्रदान किया जाता है। आई.सी.डी.एस. सेवा वितरण के लिए आँगनबाड़ी केंद्र बिंदु है जो रविवार और छुट्टियों को छोड़कर आम तौर पर चार घंटे के लिए दैनिक रूप से संचालित होता है। जमीनी स्तर पर एक महिला आँगनबाड़ी कार्यकर्ता आई.सी.डी.एस. की प्रमुख कार्यकर्ता होती है जो कि एक स्वैच्छिक कार्यकर्ता है जिसे प्रतिमाह मानदेय के आधार पर भुगतान किया जाता है। उसे एक आँगनबाड़ी सहायिका (ए.डब्ल्यू.एच.) द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, जिसे मासिक मानदेय मिलता है। अपने स्वास्थ्य संबंधी कार्यों को करने में आँगनबाड़ी कार्यकर्ता को स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पी.एच.सी.) और उप-केंद्रों के स्वास्थ्य अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होता है।

पदाधिकारियों की मुख्य जिम्मेदारियाँ

समेकित बाल विकास योजना में काम करने वाले मुख्य पदाधिकारी इस प्रकार हैं— जिला कार्यक्रम अधिकारी, जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी/सहायक संचालन, परियोजना स्तर पर

परियोजना अधिकारी, पर्यवेक्षक, ग्राम स्तर पर आँगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका।

बाल विकास परियोजना अधिकारी (सी.डी.पी.ओ.)

समेकित बाल विकास सेवा परियोजना का क्षेत्रीय स्तर पर प्रशासनिक और कार्यान्वयन संबंधी कार्यों के लिए जवाबदेही है।

- परियोजना स्तर पर समेकित बाल विकास सेवा परियोजना का प्रमुख कार्यकर्ता होता है। यह प्रतिदिन के प्रशासनिक कार्यों की देखरेख करता है तथा पर्यवेक्षक, आँगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका समेत पूरे समूह का संचालन करता है तथा इस कार्य के लिए क्षेत्रीय दौरा व बैठक आयोजित करता है।
- राज्य व जिला स्तर के अधिकारियों से संपर्क स्थापित कर कार्यक्रम में वर्णित आपूर्तियों की अधिप्राप्ति, ढुलाई, भंडारण, वितरण व मासिक तथा वार्षिक निधियों को आवंटित करने की व्यवस्था करता है।
- परियोजना अधिकारी की जवाबदेही है कि वह परियोजना कार्यक्रम के लिए वितरित किए गए सभी संसाधनों का इस्तेमाल, सामग्री की स्थिति व लेखा-जोखा रखे।
- समेकित बाल विकास सेवा के क्षेत्र में कार्य कर रहे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, स्वयंसेवी संगठनों व पंचायती संस्थाओं से कार्यात्मक संपर्क की स्थापना की व्यवस्था करता है तथा स्थानीय समुदाय को योगदान एवं कार्यकर्ता की सहायता से आयोजन किए जाने वाले कार्यक्रम (पोषाहार, सफाई संबंधी, शालापूर्व अनौपचारिक शिक्षा, टीकाकरण जागरूकता) आदि देने के लिए उत्साहित करता है।
- राज्य व केंद्रीय समेकित बाल विकास सेवा योजना को भेजी जाने वाली सूचनाओं के लिए समय-समय पर प्रगति रिपोर्ट तैयार करना परियोजना अधिकारी का उत्तरदायित्व है।
- पर्यवेक्षक व आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की प्रशिक्षण या अनुशिक्षण के लिए प्रतिनियुक्त कर सकता है।
- अपने क्षेत्रीय दौरे व मासिक बैठक कार्यक्रम का ब्यौरा अपने उच्च अधिकारियों को भेजना। क्षेत्रीय दौरे व मासिक बैठक कार्यक्रम की रूपरेखा संबंधित अधिकारियों के विचार-विमर्श से बनाई जाती है।

पर्यवेक्षक

- लक्ष्य समूह की पहचान करना, उनकी सूची बनाना, ग्रामों में जन्म एवं मृत्यु का अभिलेख तैयार करना व लाभार्थियों की सूची बनाने के लिए क्षेत्र सर्वेक्षण में आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करना।
- अपने अधीनस्थ आँगनबाड़ी केंद्रों का नियमित क्षेत्र भ्रमण द्वारा निरीक्षण करना तथा बैठक बुलाने के कार्यक्रम में आँगनबाड़ी कार्यकर्ता की सहायता करना।
- परियोजना अधिकारी को नियमित समय तक प्रतिमाह मासिक प्रगति प्रतिवेदन तैयार कर भिजवाना।
- आँगनबाड़ी केंद्रों में निर्धारित समय-सारणी के अनुसार शालापूर्व अनौपचारिक शिक्षा के संचालन का निरीक्षण करना तथा कमी पाए जाने

पर कार्यकर्ता को आवश्यकतानुसार निर्देश एवं मार्गदर्शन देना।

- परियोजना अधिकारी, स्वास्थ्य कर्मचारी व आँगनबाड़ी कार्यकर्ता के बीच कड़ी के रूप में कार्य करना तथा कार्य संबंधी समस्याओं को हल करने हेतु उनका मार्गदर्शन करना व आवश्यकतानुसार परियोजना अधिकारी को सूचित करना।
- पूरक पोषाहार, दवाइयों, खाद्य सामग्री भंडारण, शालापूर्व शिक्षा से संबंधित सामग्री, रजिस्टरों तथा रिकॉर्डों का समय-समय पर निरीक्षण करना व कमी पाए जाने पर परियोजना अधिकारी को सूचित करना।
- परियोजना मुख्यालय में होने वाली बैठक में परियोजना अधिकारी की मदद से अपने क्षेत्र की आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व सहायिकाओं के मानदेय का भुगतान, उनकी अनुपस्थिति में वैकल्पिक व्यवस्था, बैठक की तिथि निर्धारण, किसी विशेष समस्या या स्थिति के बारे में अधिकारियों को अवगत कराने में सहायता करेंगी।

आँगनबाड़ी कार्यकर्ता

- आँगनबाड़ी केंद्र के अंतर्गत आने वाले सभी हितग्राहियों को चिह्नित करना, उनकी सूची तैयार करना तथा हर तीसरे माह उसे अद्यतन करना तथा हितग्राहियों के लिए रक्षा कार्ड तैयार करना व कार्ड की जानकारी देना, पूरक पोषणाहार का वितरण करना।
- महिला व बच्चों से संबंधित योजनाओं का क्रियान्वयन करना व लोगों को इस विषय में जागरूक करना। गर्भवती माता, शिशुवती माता, किशोरियों तथा 05 वर्ष तक के बच्चों को स्वास्थ्य जाँच व टीकाकरण सेवा उपलब्ध करना और वृद्धि निगरानी कर वृद्धि चार्ट तैयार करना।
- शालापूर्व अनौपचारिक शिक्षा का पूर्व-निर्धारित समय-सारणी के अनुसार आयोजन करना।
- आँगनबाड़ी केंद्रों में शिक्षण सामग्री, मेडिसिन किट, पोषणाहार, खिलौने आदि की सही देखरेख करना।
- आँगनबाड़ी कार्यकर्ता केंद्र स्तर पर उन सभी अभिलेख को व्यवस्थित तथा अद्यतन करना तथा पर्यवेक्षक के निर्देशानुसार व पूर्व-निर्धारित प्रारूप में मासिक प्रगति प्रतिवेदन तैयार कर निर्धारित समय में पर्यवेक्षक को देना।
- जिला महिला बाल विकास अधिकारी, पर्यवेक्षक व शासन द्वारा समय-समय पर दिए गए अन्य कार्यों का निर्वहन करना।
- सामान्य आँगनबाड़ी केंद्र से एक आदर्श आँगनबाड़ी केंद्र बनाने की हर संभव कोशिश करना इसके लिए विशेष कार्यक्रम, जैसे— गोदभराई, बाल भोज, वजन त्यौहार व जागरूकता शिविर करना।

आँगनबाड़ी सहायिका

आँगनबाड़ी सहायिका को आँगनबाड़ी कार्यकर्ता की सहायता के लिए ही नियुक्त किया जाता है। इनका मुख्य कार्य बच्चों को लाना-छोड़ना, बच्चों के लिए खाना बनाना तथा बच्चों व आँगनबाड़ी केंद्र का रखरखाव करना है।

- आँगनबाड़ी केंद्र को प्रतिदिन समय पर खोलना, आसपास की सफाई करना, स्वच्छ पानी भरना आदि।

- आँगनबाड़ी कार्यकर्ता की अनुपस्थिति में कार्यकर्ता के सभी सामान्य कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को वहन करना।
- शालापूर्व अनौपचारिक शिक्षा की गतिविधियों में आँगनबाड़ी कार्यकर्ता की सहायता करना।

निष्कर्ष

समेकित बाल विकास योजना पर कई शोध हुए हैं जिसमें सकारात्मक व नकारात्मक परिणाम सामने आये हैं। आई.सी.डी.एस. के प्रभाव को उच्च करने के लिए इसकी कमी को कम करना होगा। आँगनबाड़ी संचालन की आधारभूत आवश्यकता भौतिक संसाधन, भवन है जिसमें कमी पाई गई है (कुमारी, 2016, प्रजापति; 2018)। भौतिक संसाधन आँगनबाड़ी कार्यकर्ता के औजार के रूप में कार्य करते हैं, इसलिए आवश्यक है कि इसे और अधिक विशिष्ट बनाया जाए। आँगनबाड़ी के कर्तव्यों को और अधिक स्पष्ट किया जाए, सी.डी.पी.ओ., स्वास्थ्य अधिकारी व पर्यवेक्षक के साथ समन्वय और बेहतर बनाया जाए तथा इनके रिक्त पदों की भर्ती की जाए। आँगनबाड़ी में पोषक आहार वितरण, स्वास्थ्य जाँच व सामुदायिक सदस्यों की भागीदारी से यह सभी कार्य सफलता से संचालन हो रहा है (प्रजापति, 2018)। समेकित बाल विकास कार्यक्रम का नियमित मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि लाभार्थियों की संख्या में कमी के कारणों का व कमजोर कड़ी की पहचान कर उसे ठीक किया जा सके।

संदर्भ

आई.सी.डी.एस. मिशन— कार्यान्वयन के लिए विस्तृत ढाँचा. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

आँगनबाड़ी कार्यकर्ता प्रशिक्षण संदर्शिका. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

आँगनबाड़ी कार्यक्रम— एक प्रवेशिका. 2014. एनईजी-फायर, नई दिल्ली.

थिप्पेश और गुंजल. 2014. फंक्शनरी इन इम्प्लीमेंटेशन ऑफ इंट्रीग्रेटेड चाइल्ड डेवलपमेंट सर्विस (आई.सी.डी.एस.) : अ स्टडी इन कर्नाटक. *आई.आर.जे.एम.एस.एच*. वॉल्यूम 5. आई.एस.एस.एन. 2277-9809. www.irjmsh.com.

न्यू बोर्न एक्शन प्लान 2014. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली.

प्रजापति, ए.के. 2018. अन इवोल्युएटिव स्टडी ऑफ अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन इन सागर एंड भोपाल डिवीजन ऑफ मध्य प्रदेश, पीएच.डी. एजुकेशन. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/276317

प्रशासकीय प्रतिवेदन 2020–2021. महिला एवं बाल विकास विभाग, छत्तीसगढ़ शासन.

रा.शै.अ.प्र.प. 2010. प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा-राष्ट्रीय फोकस समूह. *आधार पत्र* 3.6. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

संस्कार अभियान : आरंभिक बाल्यावस्था देखरेख एवं शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या. महिला एवं बाल विकास विभाग, छत्तीसगढ़ शासन.

सिसोदिया, यू. और ए. कुमारी, 2016. क्वालिटी ऑफ प्री-स्कूल एंड इट्स इम्पेक्ट ऑफ कॉग्निटिव डेवलपमेंट ऑफ चिल्ड्रन. *एडवांस रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंस*, वाल्यूम 7. ईशु. 2. आई.एस.एस.एन. 2231-6418.

सिंह, ए.के. 2012. *शिक्षा मनोविज्ञान*. भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना.

उड़ान हस्तपुस्तिका. 2017. शिशु शिक्षा एवं देखभाल, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर.

http://www.cgwcd.gov.in

www.icds-wcd.nic.in

5

कुपोषण पर प्रहार शिक्षकों की भूमिका

अनिल कुमार तेवतिया*

भारत में कुपोषण की समस्या चिंताजनक स्तर पर रही है और इसके ऋणात्मक प्रभाव स्कूलों और अन्य शिक्षण संस्थानों में साफ दिखाई देते रहे हैं। देश-विदेश में हुए विभिन्न अध्ययनों से इस बात का समर्थन होता है कि बेहतर पोषण वाले बच्चे, कुपोषित बच्चों की तुलना में, स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। पोषण का बच्चों की अनुभूतियों और अन्य मानसिक क्षमताओं पर भी सीधा प्रभाव दिखाई पड़ता है। मध्याह्न भोजन योजना स्कूल में सभी बच्चों की पोषण स्थिति में गुणवत्तापूर्ण सुधार करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। हालाँकि, प्रस्तुत शोध में यह देखा गया कि स्कूल मध्याह्न-भोजन की मात्रा और गुणवत्ता के साथ समझौता कर रहे हैं। मध्याह्न-भोजन की तैयारी और वितरण में स्कूल कोई खास पर्यवेक्षण और निगरानी नहीं कर रहे हैं। वर्तमान अध्ययन में, शोधकर्ता ने विद्यालयों में पोषण की समस्या से निपटने के लिए शिक्षक की तत्परता को विस्तृत किया है। शिक्षकों के साथ साक्षात्कार में यह पाया गया कि लगभग सभी शिक्षक पोषण और संतुलित आहार को लगभग सही ढंग से परिभाषित करने में सक्षम हैं, और उन्हें पोषण के बारे में कुछ बुनियादी जानकारी है जिसे नियमित रूप से अद्यतन करने की आवश्यकता है। शिक्षकों के लिए कुछ ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित करने की तत्काल आवश्यकता है, जो उन्हें पोषण पर नवीनतम ज्ञान से परिचित करा सकें।

हर देश की सबसे बड़ी पूँजी वहाँ के लोग होते हैं। उन्हें अच्छे स्वास्थ्य और परिस्थितियों में रहने की आवश्यकता है। अच्छा पोषण उन्हें राष्ट्र को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए सशक्त बनाने की क्षमता रखता है। पोषण सभी व्यक्तियों के विकास और स्वास्थ्य में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययनों के अनुसार, बेहतर पोषण का बेहतर स्वास्थ्य (जीवन के सभी चरणों में), मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली, गैर-संचारी रोगों के कम जोखिम और माँसपेशियों की पुष्टता से गहरा संबंध है। पोषण का शरीर के सामान्य कार्य सहित व्यक्ति के समग्र विकास और वृद्धि पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। तंत्रिका विज्ञान के शोध अध्ययनों का दावा है कि, 'उचित पोषण इष्टतम मस्तिष्क कार्यों को सुनिश्चित करता है'।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 1992–1993 के अनुसार, बाल कुपोषण के मामले में हमारे देश का प्रदर्शन अन्य देशों की तुलना में सबसे आगे खड़ा था। इस सर्वेक्षण की रिपोर्ट में कहा गया है कि "4 साल से कम उम्र के आधे से अधिक बच्चे कम वजन वाले

**प्रधानाचार्य*, मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, दिलशाद गार्डन, दिल्ली 110 095

और बौने थे, और हर छह में से एक बच्चा अत्यधिक पतला था"। यकीनन इन स्तरों को सुधारने के लिए, सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर जबरदस्त संघर्ष किया गया है। हालाँकि, भारत में वर्तमान कुपोषण अभी भी चिंताजनक स्तर पर है। दशकों के निवेश और प्रयासों के बावजूद हमारी बाल कुपोषण दर अभी भी दुनिया में सबसे खराब स्तर पर है। सत्र 2015–2016 में आयोजित एन.एफ.एच.एस. के चौथे दौर की रिपोर्ट में 35.7 प्रतिशत बच्चों में कम वजन, 28.4 प्रतिशत बच्चों में अवरुद्ध विकास और पाँच साल से कम उम्र के 21 प्रतिशत बच्चों में ऊँचाई के लिए कम वजन की व्यापकता की सूचना दी गई है। इसके अलावा, 2020 की ग्लोबल हंगर इंडेक्स रिपोर्ट भारत को 107 देशों में 94वें स्थान पर रखती है। यह देश में संपूर्ण लोक प्रशासन के लिए एक पुरानी और गंभीर समस्या है। इस संकट की उत्पत्ति ऐतिहासिक पूर्ववृत्त से होती प्रतीत होती है, इसलिए कुपोषण की समस्या के लिए गरीबी, असमानता और भोजन की कमी को जिम्मेदार ठहराया जाता है। लेकिन विडंबना यह है कि कई देशों की ऐतिहासिक और सामाजिक संरचना समान होते हुए भी इन देशों का प्रदर्शन, हंगर-इंडेक्स में, भारत से बेहतर है।

सभी छात्रों में स्कूलों में अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता होती है, लेकिन कुपोषण से पीड़ित बच्चे अकादमिक और गैर-शैक्षणिक गतिविधियों में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। स्कूल में छात्रों के प्रदर्शन में पोषण एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। स्कूल जाने वाले बच्चों को सही पोषण न मिलना इन बच्चों को अपने संभावित-लक्ष्यों तक पहुँचने से चूकने के खतरे को बढ़ा देता है। इस लेख में, शोधकर्ता स्कूलों में सभी बच्चों के पोषण में सुधार करने की आवश्यकता को उजागर करता है और कुछ प्रभावी तरीकों को साँझा करने का भी प्रयास करता है जिससे बच्चों के सीखने के स्तर में सुधार हो सके।

कक्षाओं में पोषण की स्थिति और इसकी भूमिका

दुनिया भर के शोधकर्ता छात्रों में पोषण और अकादमिक प्रदर्शन के बीच एक निश्चित संबंध साबित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। हालाँकि, मौजूदा आँकड़ों के साथ, निस्संदेह यह कहा जा सकता है कि बेहतर पोषण वाले बच्चे बेहतर ढंग से सीखने में सक्षम होते हैं। कई अध्ययनों ने यह भी साबित किया है कि पोषण मस्तिष्क के कार्य करने की गति को बढ़ाता है। स्कूल जाने वाले बच्चों की मानसिक क्षमता पर पोषण का सीधा प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से बोलने पर हम कह सकते हैं कि प्रारंभिक या शुरुआती वर्षों में आयरन की कमी से डोपामाइन संचरण में कमी आती है और इससे संज्ञान पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है (पोलिट, 1993)। विटामिन और खनिजों की कमी, जैसे— थियामिन, विटामिन-ई, विटामिन-बी, आयोडीन और जिक का संज्ञानात्मक क्षमताओं पर बुरा असर पड़ता है और यह मानसिक एकाग्रता को बाधित करने के लिए जिम्मेदार पाई गई हैं (चेनोवेथ और अन्य, 2007)। इसके अलावा, अमीनो एसिड और कार्बोहाइड्रेट के सप्लिमेंट्स अनुभूति, अंतर्ज्ञान और तर्क में सुधार करते है (लिबरमैन, 2003)। इसी तरह, अन्य अध्ययनों से पता चला है कि पोषक तत्वों

के सेवन से बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमताओं और बुद्धि के स्तर में गुणवत्तापूर्ण प्रभाव पड़ता है।

अन्य अध्ययनों से पता चला है कि "कुपोषण से व्यवहार संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं" (क्लेनमैन और अन्य, 1998) और "शुगर का बच्चों के व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है" (जोन्स और अन्य, 1995)। पोषण छात्रों को स्वस्थ बनाता है और यह अनुपस्थिति के कारणों को कम करके विद्यालय-उपस्थिति में भी सुधार करता है। यह कक्षा में अधिक गुणवत्तापूर्ण समय बिताने और सीखने में रुकावटों को कम करने में भी मदद करता है। शोधकर्ताओं ने उच्च गुणवत्ता वाले आहार और परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन के बीच सकारात्मक संबंध पाया है (फ्लोरेंस और अन्य, 2008) और छात्रों के स्वास्थ्य को बेहतर करने पर केंद्रित कार्यक्रम भी छात्रों के शैक्षणिक परीक्षण स्कोर में सुधार दिखाते हैं (मेयर्स और अन्य, 1989)। एक अन्य अध्ययन में कहा गया है कि, छात्रों के आहार की गुणवत्ता में सुधार से छात्रों की प्रतिभागिता के स्तर में सुधार आता है और उनके गणित की परीक्षा के स्कोर में वृद्धि होती है, संभवतः पढ़ने के परीक्षण के स्कोर में भी वृद्धि होती है, और उनकी उपस्थिति में भी वृद्धि होती है (पॉवेल और अन्य, 1998)।

स्कूलों में शिक्षक स्वीकार करते हैं कि बेहतर पोषण स्तर वाले बच्चों की कक्षाओं में अनुपस्थिति कम होती है और उनके व्यवहार में भी सुधार होता है जिससे कक्षाओं में कम व्यवधान होता है। दिल्ली के नंद नगरी और झिलमिल कॉलोनी के स्कूल के शारीरिक शिक्षा विषय-संबंधी शिक्षकों ने हमें बताया कि कुपोषित बच्चे सभी शारीरिक गतिविधियों और खेलों में, पोषित बच्चों की तुलना में, खराब प्रदर्शन करते हैं और इन बच्चों में किसी भी खेल या एक्टिविटी में भाग लेने की क्षमता, शक्ति और इच्छा कम ही रहती है।

मध्याह्न-भोजन योजना— जमीनी-हकीकत

मध्याह्न-भोजन योजना भारत सरकार द्वारा 15 अगस्त 1995 को शुरू की गई थी। इस योजना के तहत प्रारंभिक कक्षाओं के छात्रों को देश के लगभग सभी सरकारी स्कूलों में ताजा पका हुआ भोजन परोसा जाता है। मध्याह्न भोजन का उद्देश्य कक्षा में बच्चों को भूखे रहने से बचाना; उनकी उपस्थिति में सुधार करना; बच्चों के बीच समाजीकरण को बढ़ाना और कुपोषण के संकट को दूर करना है। पीएम-पोषण में (अब, मध्याह्न-भोजन योजना पीएम-पोषण के तहत कवर की जा रही है) पोषण मानदंड प्राथमिक कक्षाओं के लिए 450 कैलोरी और 12 ग्राम प्रोटीन और उच्च प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों के लिए 700 कैलोरी और 20 ग्राम प्रोटीन निर्धारित किए गए हैं।

दस्तावेज में निर्धारित मानदंड आँखों को भा सकते हैं, लेकिन वास्तविक समस्या उनके कार्यान्वयन में है। नियमित आधार पर कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए बजट में संशोधन नहीं होता है। उच्च मुद्रास्फीति दर वितरकों को पूरे वर्ष एक ही गुणवत्ता और परिणाम का भोजन प्रदान करने की अनुमति नहीं देती है।

गौर करने पर पता चलता है कि सरकारी स्कूलों में चल रहे मध्याह्न-भोजन के वितरण और कार्यान्वयन

तालिका 1— मध्याह्न-भोजन की स्थिति

व्याख्या	हमेशा (%)	ज्यादातर (%)	कभी-कभार (%)	कभी नहीं (%)
मध्याह्न-भोजन लेने वाले बच्चों का प्रतिशत (साक्षात्कार के आधार पर)	58	05	11	26
मध्याह्न-भोजन चखने वाले शिक्षकों का प्रतिशत (साक्षात्कार के आधार पर)	20	10	40	30
मध्याह्न-भोजन की चेकिंग और चखने वाले शिक्षकों का प्रतिशत (अप्रैल माह के रिकॉर्ड अनुसार)	100	00	00	00

में कई खामियाँ हैं। कितने बच्चे वास्तव में मध्याह्न भोजन लेते हैं? और कितने बच्चों के लिए यह भोजन तैयार किया जाता है? यह ज्यादातर पर्दे के पीछे ही रहता है। दिल्ली के सरकारी स्कूल, जो नंद नगरी और झिलमिल कॉलोनी में स्थित हैं, के दौरे में हमने देखा कि स्कूल के अधिकारियों द्वारा मध्याह्न-भोजन को सत्यापित करने और जाँच करने के लिए किसी मानदंड का पालन नहीं किया जा रहा था।

नियमानुसार मध्याह्न-भोजन को बच्चों में बाँटने से पहले उसकी अच्छी तरह से जाँच और वजन किया जाना चाहिए। परंतु यह देखा गया कि मध्याह्न-भोजन प्रभारी वितरण करने से पहले इसकी जाँच व तुलाई नहीं कर रहे थे। जब हमने उनसे इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने बहाने के रूप में पेशकश की "आज देर हो रही है, हम इसे नियमित रूप से जाँचते हैं और हर समय इसका वजन करते हैं जो हमेशा सही ही आता है।" हालाँकि, जब हमने पूछा कि आमतौर पर भोजन का वजन कितना होता है? तो उनके पास कोई जवाब नहीं था। ऐसा लगता है कि स्कूल कभी भी मध्याह्न-भोजन की जाँच/तौल नहीं करता। इसके अलावा, यह भी देखा गया कि बच्चों में बाँटने से पहले किसी भी कक्षा के शिक्षक ने भोजन का स्वाद नहीं चखा। जब हमने इस बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया, यह खाना ठीक नहीं होता, इसे खाना अस्वास्थ्यकर है और इसे खाना हमारे लिए सुरक्षित भी नहीं है। हमने पाया कि कुछ बच्चे भी वितरित भोजन नहीं ले रहे थे। जब हमने उनसे इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि उनके माता-पिता ने उन्हें वह खाना खाने से मना किया है। हालाँकि, स्कूल का दावा है कि 100 फीसदी बच्चे नियमित रूप से मध्याह्न-भोजन लेते हैं। हम अपने अध्ययन में मध्याह्न-भोजन चखने वाले माता-पिता/स्कूल मैनेजमेंट कमेटी (एस.एम.सी.) मेंबर का प्रतिशत भी जानना चाहते थे, परंतु यह डाटा विद्यालय में उपलब्ध नहीं था।

यह भी पाया गया कि स्कूल की ओर से कोई पर्यवेक्षण समिति गठित नहीं की गई है जो मध्याह्न-भोजन के तैयारी स्थल का दौरा करती हो व मध्याह्न-भोजन की तैयारी और वितरण में कोई भी स्कूल मैनेजमेंट कमेटी का सदस्य सक्रिय नहीं है। ये सभी कारक स्कूलों में परोसे जाने वाले भोजन की गुणवत्ता के स्तर को गिराने के लिए काफी हद तक जिम्मेदार माने जा सकते हैं।

मध्याह्न-भोजन के साथ समझौता

बच्चों के पोषण-स्तर का कक्षा संचालन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। सरकारी स्कूलों में अधिकांश बच्चे निम्न स्तर के सामाजिक-आर्थिक परिवेश से आते हैं जो उन्हें उचित पोषण प्रदान नहीं कर पाते। इसलिए, मध्याह्न-भोजन द्वारा निभाई गई भूमिका को कम आँकना बच्चों के हक में कतई नहीं है। यह कक्षा में शिक्षार्थियों को बाधित कर सकता है और उनके सीखने के स्तर को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, स्कूलों के बच्चों में पोषण की जरूरत को उजागर करती है। यह बच्चों के इष्टतम पोषण को सुनिश्चित करने के लिए मध्याह्न-भोजन योजना में ऊर्जावान नाश्ते को जोड़ने की भी वकालत करती है।

स्कूलों की शुरुआत में ऊर्जावान नाश्ते को जोड़ने के बारे में सोचना सुखद हो सकता है लेकिन स्कूलों में परोसे जाने वाले मध्याह्न-भोजन की गुणवत्ता और मात्रा को देखते हुए, इस क्षेत्र में सुधार की कोई उम्मीद नहीं रखने देता। यदि स्कूल अपने छात्रों के पोषण स्तर में सुधार करना चाहते हैं, तो स्कूल-समुदायों विशेषकर शिक्षकों की भूमिका केंद्रीय होती है। शिक्षकों को खुद से एक सवाल पूछने की जरूरत है कि हम मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता से समझौता क्यों कर रहे हैं?

शिक्षक की भूमिका

स्कूल से संबंधित सभी गतिविधियों के कार्यान्वयन में शिक्षक की भूमिका केंद्रीय होती है। वे स्वस्थ आदतों को विकसित करने, बुरी आदतों को खत्म करने और रुकी हुई वृद्धि और विकास को वैकल्पिक दिशा प्रदान करने में प्रमुख भूमिका अदा करते हैं। नंद नगरी और झिलमिल कॉलोनी के सरकारी स्कूल के शिक्षकों के साथ हमारी बातचीत में, जिसमें हम विशेष रूप से पोषण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, हमने बहुत महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किए। हमने शिक्षकों से पूछा कि वे पोषण को कैसे परिभाषित करते हैं। तीन-चौथाई से अधिक 76 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि पोषण का मतलब है सही खाना, या एक संतुलित-आहार या उपलब्ध भोजन का एक स्वस्थ संयोजन चुनना। लगभग 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना था कि पोषण समग्र स्वास्थ्य और जीवन शैली है। 5 प्रतिशत से कम उत्तरदाताओं ने पोषण को परिभाषित करने के अपने प्रयास में शारीरिक गतिविधि या व्यायाम को शामिल किया। शिक्षक अक्सर अपनी कक्षाओं में पोषण के बारे में नही पढ़ाते हैं, इस बारे में हमारी पूछताछ से पता चलता है कि अधिकांश शिक्षक 92 प्रतिशत पोषण और इसके प्रभावों पर केंद्रित चर्चा नहीं करते हैं, और 84 प्रतिशत शिक्षक छात्रों के बीच अच्छे पोषण की स्थिति बनाए रखने में अपनी भूमिका को महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं। हमारे अवलोकन में, हम इस तथ्य से टकराते हैं कि शिक्षक अधिक-वजन, मोटापे, बाधित-विकास, अत्यधिक पतले, शारीरिक गतिविधि की कमी इत्यादि को पहचानने में सक्षम हैं। हालाँकि, लगभग सभी शिक्षकों ने एक सुर में यही माना की बच्चों में अच्छे स्वास्थ्य बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका माता-पिता द्वारा ही निभाई जाती है और यह केवल उन्हीं की जिम्मेदारी है।

तालिका 2— पोषण पर शिक्षकों का मत

व्याख्या	हमेशा (%)	ज्यादातर (%)	कभी-कभार (%)	कभी नहीं (%)
उन शिक्षकों का प्रतिशत जो कक्षा में पोषण की अवधारणा को पढ़ाते हैं।	15	05	25	55
उन शिक्षकों का प्रतिशत जो परिवारों को पोषण से संबंधित सलाह देते हैं।	05	05	10	80
उन शिक्षकों का प्रतिशत जो बच्चों को स्वस्थ रखने के लिए कक्षा में फिजिकल-एक्टिविटीज (शारीरिक क्रियाएँ) कराते हैं।	15	00	35	50

जब पोषण की स्थिति में सुधार की बात आती है तो पोषण और इसकी भूमिका के बारे में शिक्षकों का ज्ञान और समझ आवश्यक है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि स्कूलों में अपने कार्यकाल के दौरान बच्चों में अच्छे स्वास्थ्य का विकास कैसे किया जाए, इस बारे में किसी भी शिक्षक के पास कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं था। उन्हें अपने सेवा-पूर्व (प्री-सर्विस) अनिवार्य क्रेडिट के दौरान प्रदान किए गए प्रशिक्षण के कारण पोषण के बारे में कुछ जानकारी जरूर थी, पर उसमें कोई भी सुधार या बदलाव नहीं हुआ था। इन अवधारणाओं को नियमित रूप से दोहराने की जरूरत होती है। उत्तरी कैरोलिना के एक अध्ययन का दावा है कि पोषण-शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षक पोषण-स्तर सुधारने के लिए अधिक संसाधनों का उपयोग करते हैं और बिना प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की तुलना में अधिक गतिविधियों की योजना बनाते हैं (फार्थिंग और अन्य, 1989)। इसलिए, सक्षम प्राधिकारी को इसे संज्ञान में लेना चाहिए और शिक्षकों को स्वास्थ्य और पोषण पर नवीनतम ज्ञान से लैस करना चाहिए, ऐसे क्षेत्रों में दीक्षा-निष्ठा पाठ्यक्रम काफी उपयोगी हो सकते हैं। शिक्षक उच्च लागत वाले भोजन के विकल्प (कम लागत वाले भोजन से) के माध्यम से बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार के लिए परिवारों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। वे परिवारों को अपने बच्चों के आहार में उचित बदलाव के बारे में सलाह दे सकते हैं। स्कूल प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ मिलकर एक उचित समन्वय से शिक्षक मध्याह्न भोजन की तैयारी और वितरण पर भी अतिरिक्त निगरानी रख सकते हैं।

प्राथमिक विद्यालय स्तर पर अच्छी आदतों (भोजन से संबंधित) का निर्माण करना भी उपयोगी हो सकता है और शिक्षकों को बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में अपनी भूमिका को महत्वपूर्ण मानना अति-आवश्यक है। वे प्रामाणिक जानकारी के स्त्रोत हो सकते हैं, और माता-पिता को कम लागत में स्वस्थ आहार के स्त्रोतों और संसाधनों का पता लगाने में भी मदद कर सकते हैं। स्कूलों में बच्चों की अस्वास्थ्यकर पोषण की स्थिति के बढ़ते मामलों के साथ स्थिति को संभालने में शिक्षकों की भूमिका केंद्रीय हो जाती है। शिक्षक पोषण-शिक्षा को वर्तमान पाठ्यक्रम में रचनात्मक रूप से एकीकृत कर सकते हैं, और जब पोषण की बात आती है तो माता-पिता को सही निर्णय

लेने में मदद करने की नैतिक जिम्मेदारी भी शिक्षकों को ही लेनी चाहिए। शिक्षकों को शारीरिक व्यायाम और गतिविधियों की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। क्योंकि वे छात्रों के फिटनेस पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देते हैं।

निष्कर्ष

बच्चों के पोषण स्तर की बात करें तो भारत का प्रदर्शन निचले स्तर वाले देशों की सूची में आता है। आज, कुपोषण दर खतरनाक स्तर पर है और ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत 107 देशों में 94वें स्थान पर है। छात्रों के सीखने में बच्चों के पोषण की स्थिति के बहुत सारे निहितार्थ हैं। शोधकर्ताओं ने अच्छे पोषण और बेहतर शैक्षणिक और मानसिक विकास के बीच के संबंध को उजागर किया है। शिक्षकों का यह भी दावा है कि पोषण अप्रत्यक्ष तरीके से भी मदद करता है यानी यह स्कूलों में उपस्थिति में सुधार करता है और कक्षाओं में व्यवधान की संभावना को कम करता है।

मध्याह्न-भोजन योजना स्कूल जाने वाले बच्चों की पोषण स्थिति में सुधार के उद्देश्य से शुरू की गई थी। हालाँकि, वास्तविक जाँच से पता चलता है कि यह भोजन अपेक्षित मानकों को पूरा नहीं करता है और बच्चे और माता-पिता भी इस भोजन को खाने के लिए तैयार नहीं हैं। मध्याह्न-भोजन की तैयारी व वितरण की निगरानी में स्कूल प्रशासन सतर्क नहीं है।

स्कूल से संबंधित सभी गतिविधियों में शिक्षक केंद्रीय व्यक्ति होते हैं। यह देखना अच्छा है कि सभी शिक्षकों को संतुलित आहार और पोषण की कुछ बुनियादी समझ है; वे स्वस्थ खाने की आदतों का मॉडल प्रस्तुत कर सकते हैं और प्रामाणिक जानकारी भी प्रदान कर सकते हैं। शिक्षक छात्रों को उनकी पोषण संबंधी आवश्यकताओं के अनुसार वर्गीकृत करने में सक्षम हैं, लेकिन पोषण विषय पर शिक्षकों को नियमित रूप से अपडेट नहीं किया जाता है। वे इसे माता-पिता की एकल जिम्मेदारी मानते हैं। शिक्षकों को अधिक अद्यतन ज्ञान से लैस करने की आवश्यकता है और शिक्षकों को सभी बच्चों की पोषण स्थिति में सुधार के लिए पहल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस समस्या का समाधान व्यावहारिक रूप से होना चाहिए।

संदर्भ

क्लेनमैन, आर., जे. मर्फी, एम. लिटिल, एम. पैगानो, सी. वेहलर, के. रीगल, और एम. जेलिनेक. 1998. हंगर इन चिल्ड्रेन इन द यूनाइटेड स्टेट्स : पोटैन्श्यल बीहेवियर एंड इमोशनल कोरेलटेस. *पीडियाट्रिक्स*. 101(1). https://publications.app.org/pediatrics/article-abstract/101/1/eb/52342/Hunger-in-children-in-the-United-States-Potentialpredirectedform=fulltext

ग्रीनबाम, एल. 2007. विटामिन-ई डेफिश्यंसी. आर. क्लिगमैन, एच. जेनसन, आर. बेहरमैन और बी. स्टैंटन (सं.) में. *नेल्सन टेक्स्टबुक ऑफ पीडियाट्रिक्स*. 18वाँ संस्करण. सॉन्डर्स, फिलाडेल्फिया.

चेनोवेथ, डब्ल्यू. 2007. विटामिन बी कॉम्प्लेक्स डेफिश्यंसी एंड एक्केस्स. आर. क्लिगमैन, एच. जेनसन, आर. बेहरमैन और बी. स्टैंटन (सं.) में. *नेल्सन टेक्स्टबुक ऑफ पीडियाट्रिक्स*. 18वाँ संस्करण. सॉन्डर्स, फिलाडेल्फिया.

जोन्स, टी., डब्ल्यू. बोर्ग, एस. बौलवेयर, जी. मैककार्थी, आर. शेरविन और डब्ल्यू. टैम्बोरलेन. 1995. एनहैन्स्ड एड्रेनोमेडुलरी रिस्पोंस एंड इंक्रीज़्ड ससकेपटिबिलिटी टू न्यूरोग्लाइगोपेनिया : मैकेनिज़्म अंडरल्यींग द अद्वेर्स इफैक्ट ऑफ शुगर इनजेशन इन चिल्ड्रेन. *बाल रोग जर्नल*. 126, पृ.सं. 171–177.

पॉवेल, सी., एस. वॉकर, एस. चांग और एस. ग्रांथम-मैकग्रेगर.1998. न्यूट्रिशन एंड एजुकेशन : ए रेंडोमाईज्ड ट्रायल ऑफ द एफेक्ट्स ऑफ ब्रेकफास्ट इन रुरल प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेन. *अमेरिकन जर्नल ऑफ क्लिनिकल न्यूट्रीशन*. 68, पृ.सं. 873–879.

पोलिट, ई. 1993. आयरन डेफिश्यंसी एंड कॉग्निटिव फंक्शन. *ऐनुअल रिव्यू ऑफ न्यूट्रिशन*. 13, पृ.सं. 521–537.

फार्थिंग, एम.सी., के.एल. ग्रेव्स. जे.एम. तुर्ची और एस.ए. स्मिथ. 1989. इवैल्यूएशन ऑफ दी नॉर्थ कैरोलिना नेट प्रोग्राम : दी टीचर्स परस्पेक्टिव. *जर्नल ऑफ न्यूट्रिशन एजुकेशन*. 21, पृ.सं. 5–10.

फ्रिसवॉल्ड, डी. 2012. न्यूट्रिशन एंड कोग्निटिव अचीवमेंट : अन इवैल्यूएशन ऑफ द स्कूल ब्रेकफास्ट प्रोग्राम. *वर्किंग पेपर*. एमोरी यूनिवर्सिटी.

फ्लोरेंस, एम., एम. असब्रिज. और पी. वेउगलर्स. 2008. डाइट क्वालिटी एंड अकैडमिक परफॉर्मेंस. *जर्नल ऑफ स्कूल हेल्थ*. 78, पृ.सं. 209–215.

मेयर्स, ए., ए. सैम्पसन, एम. विट्जमैन, बी. रोजर्स और एच. कायने. 1989. स्कूल ब्रेकफास्ट प्रोग्राम एंड स्कूल परफोर्मेंस. *अमेरिकन जर्नल ऑफ डिजीज ऑफ चिल्ड्रेन*. 143, पृ.सं. 1234–1239.

लिबरमैन, एच. 2003. न्यूट्रिशन, ब्रेन फंक्शन एंड कोगनिटिव परफोरमेंस. *अपेटाइट*. 40, पृ.सं. 245–254.

सोरहिंदो, ए. और एल. फीनस्टीन. 2006. वॉट इज द रिलेशनशिप बीटविन चाइल्ड न्यूट्रिशन एंड स्कूल आउटकम्स. *वाइडर बेनेफिट्स ऑफ लर्निंग रिसर्च रिपोर्ट नंबर 18*. सेंटर फॉर रिसर्च ऑन द वाइडर बेनेफिट्स ऑफ लर्निंग.

6

बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले कारक

नीतिन कुमार ढाढोदरा*

लैटिन कहावत के अनुसार, "साहित्यकार पैदा होते हैं, साहित्यकार बनाए नहीं जा सकते" (poets are born not made)। यह सच हो सकता है कि साहित्यकार पैदा होते हैं, लेकिन इन साहित्यकारों की साहित्यिक प्रतिभा का पोषण कौन करता है, इस पर मतभेद है। बच्चों के लिए यह बहुत उपयोगी होगा यदि उन कारकों को ज्ञात किया जाए जो साहित्यिक प्रतिभा को आकार देते हैं। इसके आधार पर स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों में सुषुप्त साहित्यिकता को पोषित करने की योजना को अंजाम दिया जा सकता है। इस अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक और बाह्य कारकों को ज्ञात करके बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में अभिभावकों, शिक्षकों और विभिन्न संस्थाओं की भूमिका को स्पष्ट करना है। निष्कर्ष में साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक और बाह्य कारकों की सूची दी गई है; अभिभावकों, शिक्षकों और विभिन्न संस्थाओं की भूमिका ज्ञात करके सुझाव दिए गए हैं। इससे बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका, अभिभावकों की भूमिका, स्कूल में माहौल का निर्माण और पाठ्यक्रम संबंधी गतिविधियों को निर्देशित किया जा सकता है। अनुसंधान के निष्कर्ष भाषा-साहित्य में बच्चों की रुचि विकसित करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकते हैं।

साहित्य सृजन की प्रक्रिया अत्यंत जटिल, समझ से बाहर और कुछ हद तक चमत्कारी लगे ऐसी है। साहित्यकार जब अपनी संवेदनाओं को एक निश्चित साहित्य स्वरूप में अभिव्यक्त करता है, तब क्या बनता है, उसका वर्णन करना संभव नहीं लगता है। कोई गद्य या पद्य किस तरह अवतरित होता है, यह कहना बहुत कठिन है। साहित्यकारों की संवेदना या स्फुरण कलम के माध्यम से कागज पर जब जन्म लेती है तब कौन-सी मानसिक प्रक्रिया होती है उसका विवरण देना असंभव लगता है, सृजन प्रक्रिया जटिल होती है समझने में परन्तु जब साहित्यकार की रचना की समझ बनने लगती है तो चित्त प्रसन्न हो जाता है। आनंद की अनुभूति होती है तथा और जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

लेकिन यह निश्चित है कि सृजन तभी संभव है जब लेखक में साहित्यिक प्रतिभा हो। साहित्यिक

**सहायक प्राध्यापक*, शिक्षा संकाय, गुजरात विद्यापीठ, आश्रम मार्ग, अहमदाबाद, गुजरात, 380 014

प्रतिभा के बिना साहित्य कागज का टुकड़ा रह जाता है; केवल मृत शब्दों का कंकाल रह जाता है, जिनमें अभिव्यक्ति की आत्मा नहीं होती। कुछ लोगों का कहना है कि सृजन के लिए जन्मजात प्रतिभा अनिवार्य है, लेकिन क्या इस प्रतिभा का आविष्करण स्वयं होता है, यह अनुसंधान का विषय है। यद्यपि साहित्य निर्माण की प्रक्रिया अवर्णनीय है, लेकिन साहित्यकार आसानी से उन चीजों का वर्णन कर सकता है, जिन्होंने उसे साहित्य सृजन के लिए प्रेरित किया। प्रत्येक साहित्यकार बता सकता है कि उसकी साहित्यिक अभिरुचि या साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में किन कारकों ने भूमिका निभाई है। प्रतिमा तो पहले से ही पत्थर में निहित होती है, पर उसका आविष्करण स्वयं नहीं होता, उसके लिए छैनी या हथौड़ी जैसे कारक सहायक बनते हैं तब उसमें से प्रतिमा निर्मित होती है। क्या यह साहित्यिक प्रतिभा पर भी लागू नहीं होता है? इस साहित्यिक प्रतिभा को आकार देने में किन कारकों ने भूमिका निभाई होगी? क्या यह सोचने वाली बात नहीं है?

लैटिन कहावत के अनुसार, "साहित्यिकार पैदा होते हैं, साहित्यकार बनाए नहीं जा सकते" (poets are born not made)। यह सच हो सकता है कि साहित्यकार पैदा होते हैं, लेकिन इन साहित्यकारों की साहित्यिक प्रतिभा का पोषण कौन करता है, इस पर मतभेद है। संभवतः नवागंतुकों के लिए यह बहुत उपयोगी होगा यदि उन कारकों को ज्ञात किया जाए जो साहित्यिक प्रतिभा को आकार देते हैं। इसके आधार पर स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों में सुषुप्त साहित्यिकता को पोषित करने की योजना को अंजाम दिया जा सकता है। व्यक्ति की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में शैक्षणिक संस्थानों, माता-पिता या शिक्षकों की भूमिका को स्पष्ट किया जा सकता है। शिक्षण संस्थानों में शिक्षा से साहित्यिक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की योजना की जा सकती है। इन्हीं उद्देश्यों से प्रेरित होकर शोधार्थी ने प्रस्तुत शोधकार्य किया था।

शोध का महत्व

प्रस्तुत शोध का महत्व निम्नांकित है—

1. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक और बाह्य कारकों को ज्ञात किया गया है।
2. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले बाह्य कारक भविष्य के बच्चों की सर्जनात्मकता को आकार देने में सहायक हो सकते हैं।
3. बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को आकार देने में शिक्षकों की भूमिका, अभिभावकों की भूमिका, स्कूल के माहौल का निर्माण और पाठ्यक्रम-संबंधी गतिविधियों को निर्देशित किया जा सकता है।
4. अनुसंधान के निष्कर्ष भाषा-साहित्य में बच्चों की रुचि विकसित करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकते हैं।
5. बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा के विकास के लिए शिक्षा कैसी होनी चाहिए, इस शोध के आधार पर मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

शोध के उद्देश्य

1. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक कारकों को ज्ञात करना।
2. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले बाह्य कारकों को ज्ञात करना।

3. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में अभिभावकों की भूमिका ज्ञात करना।
4. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका ज्ञात करना।
5. साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में विभिन्न संस्थाओं की भूमिका ज्ञात करना।

शोध का सीमांकन

प्रस्तुत शोधकार्य गुजराती साहित्यकारों की कैफियत समाविष्ट करने वाली पुस्तकों को केंद्र में रखकर किया गया था। जिनमें गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित एवं हर्षद त्रिवेदी द्वारा संपादित पुस्तकों *कविता अने हुं* (2014), *नाटक अने हुं* (2010), *नवलकथा अने हुं* (2012) और *टूंकीवार्ता अने हुं* (2014) को ही समाविष्ट किया गया है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोधकार्य में सामाजिक विज्ञान एवं साहित्यिक शोध में विषयवस्तु विश्लेषण प्रयुक्ति प्रयुक्त की गई है।

प्रदत्त आकलन

प्रस्तुत शोधकार्य साहित्यकारों की कैफियत समाविष्ट करने वाली पुस्तकों को केंद्र में रखकर किया गया था। जिनमें गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित एवं हर्षद त्रिवेदी द्वारा संपादित पुस्तकों *कविता अने हुं* (2014), *नाटक अने हुं* (2010), *नवलकथा अने हुं* (2012) और *टूंकीवार्ता अने हुं* (2014) को ही समाविष्ट किया गया है। शोधकर्ता ने इन चारों पुस्तकों से उद्देश्यों के संबंध में प्रदत्त आकलन किया था।

प्रदत्त विश्लेषण

शोधकर्ता ने शोध उद्देश्यों के संदर्भ में प्रदत्त आकलन करने के बाद प्रदत्त का विश्लेषण करने के लिए विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया। इस पद्धति के अनुसार प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए सूचित किए गए निम्नांकित सोपानों का अनुकरण किया गया है।

1. समस्या चयन— उद्देश्य और शीर्षक का निर्धारण
2. विश्लेषण इकाईयों की परिभाषा निर्धारित करना
3. कक्षा निर्धारण या वर्गीकरण
4. नोंधपत्रक का निर्माण
5. न्यादर्श चयन
6. साहित्य/दस्तावेजों का अध्ययन
7. इकाईयों का चयन
8. इकाईयों का वर्गीकरण
9. अर्थघटन एवं निष्कर्ष

प्रदत्त विश्लेषण के लिए, प्रत्येक साहित्यकार की कैफियत का अध्ययन करके उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा को विकसित करने वाले कारकों का विवरण तैयार किया गया था। प्रत्येक कारक को एक विशिष्ट प्रकार और समूह में समालोचनात्मक रूप से विचार करके समाविष्ट किया गया था कि क्या ये कारक आंतरिक या बाह्य हैं?

निष्कर्ष और सुझाव

- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले आंतरिक कारक—
  1. जन्मजात संवेदनशीलता और विश्व को देखने की दृष्टि
  2. अन्य साहित्यकारों से प्रेरणा

3. साहित्य का विस्तृत वाचन और पढ़ने की अत्यधिक भूख
4. भाषायी अकेलापन
5. लेखन-प्रतिभा को पोषित करनेवाले शौक
6. अकेलापन
7. लेखन चुनौती को स्वीकार करने की मनोवृत्ति
8. साहित्यकारों की प्रेरणा
9. दैनंदिनी लिखने की आदत
10. नोंधपोथी लिखने की आदत

- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने वाले बाह्य कारक—
  1. घर और पड़ौस का हवामान
  2. परिवार में सर्जनात्मक व्यक्तित्व
  3. शिक्षक और अध्यापक
  4. पाठशाला या महाविद्यालय की सहअभ्यासक प्रवृत्तियाँ
  5. साहित्यिक कृतियों का परिशीलन
  6. विशेषज्ञ व्याख्यान
  7. बच्चों की पत्रिकाओं और समाचारपत्रों की पूर्ति
  8. साहित्यिक पत्रिकाएँ
  9. साहित्य सृजन या पढ़ने का शौक रखने वाले मित्र
  10. साहित्य मंडल और उसकी प्रवृत्तियाँ
  11. लेखन-प्रतिभा को पोषित करने वाली प्रवृत्तियाँ
  12. ईनाम, पुरस्कार या पारितोषिक
  13. पाठ्यक्रम में शामिल गुणवत्तापूर्ण कृतियाँ
  14. प्रोत्साहित करने वाले लोग
  15. भींतपत्र
  16. साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक
  17. साहित्यकारों का साक्षात्कार
  18. कहानियाँ और कविताओं का पाठन
  19. कहानियाँ और कविताओं का श्रवण
  20. साहित्यकारों का मार्गदर्शन
  21. लेखन प्रतियोगिताएँ
  22. लेखन शिविर
  23. भवाई, रामलीला, नुक्कड़-नाटक या नाट्यमंडल
  24. नाट्यदर्शन
  25. प्रशिक्षण
  26. नाट्य प्रतियोगिता

- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में अभिभावकों की भूमिका—
  1. घर में सर्जनात्मक प्रतिभा के लिए अनुकूल माहौल बनाना
  2. बच्चों की पत्रिकाओं और समाचारपत्रों की पूर्ति को सुलभ करना
  3. साहित्यिक पत्रिका की सुविधा प्रदान करना
  4. साहित्यिक सृजन और पढ़ने में रुचि रखने वाले दोस्त बनाने की प्रेरणा देना
- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका—
  1. पढ़ने के लिए प्रेरणा
  2. लेखन के लिए मार्गदर्शन
  3. प्रभावी छंद शिक्षण
  4. भाषा और साहित्य का रोचक शिक्षण

5. विश्व की सर्वोत्तम साहित्य कृतियों का परिचय
6. साहित्यिक सहअभ्यासक प्रवृत्तियों का आयोजन
7. प्रेरणा और प्रोत्साहन
8. विशेषज्ञ व्याख्यानों का आयोजन
9. बच्चों की पत्रिका और समाचारपत्र को पढ़ने की प्रेरणा
10. साहित्यिक पत्रिका पढ़ने की प्रेरणा
11. भींतपत्र का प्रकाशन
12. साहित्यकारों के साक्षात्कार का आयोजन
13. कहानी-कविता पठन कार्यक्रमों का आयोजन
14. कहानी-कविता श्रवण कार्यक्रम का आयोजन
15. लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन
16. लेखन शिविर का आयोजन
17. गुणवत्तापूर्ण साहित्य कृतियों को पाठ्यक्रम में शामिल करना
18. नाट्य दर्शन का आयोजन
19. सृजन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन
20. नाट्य प्रतियोगिताओं का आयोजन

- बच्चों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में समाज और संस्थाओं की भूमिका—
  1. ईनाम, पुरस्कार या पारितोषिक की घोषणा
  2. भवाई, रामलीला, नुक्कड़-नाटक या नाट्यमंडली का आयोजन
  3. साहित्यिक मंडली की विविध प्रवृत्तियों का आयोजन
  4. लेखन शिविर का आयोजन
  5. नाट्य प्रतियोगिताओं का आयोजन

शैक्षिक सुझाव

अभिभावकों की भूमिका के संबंध में सुझाव—

- परिवार के सदस्यों की रुचि या प्रवृत्ति अक्सर बच्चे में एक निश्चित रुचि पैदा करता है। परिवार के सदस्य में देखे जाने वाले पढ़ने, लिखने, मंचन, गायन और वादन की रुचि से बच्चा अभिभूत हो जाता है और ऐसी रुचि विकसित करता है। इसलिए माता-पिता को भी व्यक्तिगत रूप से ऐसी रुचि विकसित करनी चाहिए जो बच्चे की सृजन प्रतिभा को विकसित करने में उपयोगी हो। इसमें संगीत सुनना, किताब पढ़ना, फिल्म देखना या नाटक देखना शामिल हो सकता है। बच्चों को सिर्फ पढ़ाई के लिए मजबूर करने के बजाय ऐसी रुचि विकसित करने में सहायता करनी चाहिए।
- साहित्यकारों ने कहा है कि माता-पिता के मुख से सुने गए गीत, कहानियाँ, भजन, लोकगीत, कविता, नाटक ने उनकी रचनात्मक प्रतिभा को आकार दिया है। इसलिए माता-पिता को अपने बच्चों की सृजन प्रतिभा को पोषित करने के लिए गीत, कहानियाँ, भजन, तुकबंदी, लोकगीत, कविता, नाटक गाकर और सुनाकर एक साहित्यिक माहौल प्रदान करना चाहिए। संतान को लेकर भजनवाणी और संतवाणी कार्यक्रमों में हिस्सा लेना चाहिए। बच्चे को साहित्यिक और संगीत कार्यक्रमों में जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, माता-पिता के रूप में सहायक होना चाहिए।
- कुछ साहित्यकारों ने अपनी कैफियत में कहा है कि परिवार के सदस्यों में पुस्तक पढ़ने और निजी पुस्तकालय की रुचि के माध्यम से उनकी सृजन प्रतिभा का विकास हुआ है। इसलिए

अभिभावकों को बच्चों के लिए किताबें उपलब्ध करवानी चाहिए। बच्चों के लिए पत्रिकाएँ और समाचारपत्र का प्रावधान करना चाहिए। घर में एक छोटा निजी पुस्तकालय विकसित किया जाना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण पत्रिकाओं या किताबों में से कुछ सामग्री को अपने बच्चों के सामने पढ़ा जाना चाहिए। बच्चों को सार्वजनिक पुस्तकालयों का सदस्य बनाया जाना चाहिए। पुस्तकालय का नियमित उपयोग करवाना चाहिए। बच्चों को वाचन शिविर या लेखन शिविर में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

- लेखकों के साथ साक्षात्कार या चर्चा से भी सृजन प्रतिभाओं को आकार मिला है। इसलिए माता-पिता अपने बच्चों को ऐसे कार्यक्रमों में ले जाएँ जहाँ वे विभिन्न साहित्यकारों से परिचित हों। बच्चों के साथ ऐसे कार्यक्रमों में जाने के लिए समय निकालना चाहिए।
- नाटक, कविता पाठ या सांस्कृतिक कार्यक्रम ने भी गुजराती साहित्यकारों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, इसलिए माता-पिता को अपने बच्चों को नाटक, कविता पाठ, सांस्कृतिक कार्यक्रम या प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

शिक्षकों की भूमिका के संबंध में सुझाव

- शिक्षकों की पढ़ने की तत्परता छात्रों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करती है जो उसकी सर्जनात्मकता को विकसित करने के लिए उपयोगी होती है। इसलिए शिक्षकों को विस्तृत वाचन करके छात्रों को उत्कृष्ट साहित्यकृतियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। छात्रों को उत्कृष्ट पुस्तकों का आस्वाद एवं परिचय करवाना चाहिए।
- छात्र जब कुछ लिख कर आता है तो शिक्षक को उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यार्थी जो कुछ भी लिखता है उसे प्रोत्साहन मिले तो उसकी सर्जनात्मकता निखरेगी। पाठशाला एवं महाविद्यालयों में शिक्षकों का काम प्रेरणारूप होना चाहिए। छात्रों द्वारा लिखी गई कृतियों को सुधारने में शिक्षकों को सहायक होना चाहिए।
- छंदगान, छंदशिक्षा और छंदपाठ से छात्रों की साहित्यिक प्रतिभा का विकास होता हैं। इसलिए शिक्षकों को कविता को रोचक तरीके से पढ़ाना चाहिए। कई उदाहरणों से छंदशिक्षा को दिलचस्प बनाया जाना चाहिए। छात्रों में काव्य अभिरुचि का निर्माण करना चाहिए।
- शिक्षकों को पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट साहित्य कृतियों को रोचक तरीके से पढ़ाना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य साहित्य कृतियों का परिचय एवं आस्वाद करवाना चाहिए। यह सब छात्रों के सर्जनात्मकता को परिष्कृत करता है। शिक्षकों को अधिगम के दौरान काव्यात्मक और आलंकारिक भाषा का प्रयोग करके छात्रों की सर्जनात्मकता का विकास करना चाहिए।
- शिक्षकों द्वारा भींतपत्र, अंक प्रकाशन, पुस्तक परिचय, पुस्तक समीक्षा, साहित्यकारों के साथ संवाद, फिल्म दर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, साहित्यिक साक्षात्कार, पुस्तक प्रदर्शन, नाट्य मंचन, कवि सभा, मुशायरे, कहानी कथन, नाट्यीकरण, प्रार्थना सभा, संवादीकरण, वाचिकम् जैसी प्रवृत्तियाँ होनी चाहिए। ऐसी

सहअभ्यासक प्रवृत्तियाँ छात्रों की साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करने में सहायक होती हैं।

- शिक्षकों को भाषा और साहित्य का रोचक और प्रभावी शिक्षण प्रदान करना चाहिए। ऐसा स्वाध्याय देना चाहिए जिससे साहित्यिक प्रतिभा का पोषण हो। पाठ्यक्रम में गुणवत्तापूर्ण साहित्य कृतियों को शामिल करना चाहिए।
- शिक्षकों को पठन, लेखन या अभिनय से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित करनी चाहिए, नाट्य दर्शन और युवामहोत्सव का आयोजन करना चाहिए।
- बच्चों को बच्चों की पत्रिकाएँ, साहित्यिक पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए शिक्षकों द्वारा छात्रों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। साहित्यकारों के साथ साक्षात्कार आयोजित किए जाने चाहिए। पठन कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। लेखन प्रतियोगिता, सृजन प्रशिक्षण शिविर एवं लेखन शिविर का आयोजन करना चाहिए।

समाज और संस्थाओं की भूमिका के संबंध में सुझाव

साहित्यिक संस्थाओं को उत्कृष्ट साहित्य की रचना के लिए ईनाम, पुरस्कार एवं पारितोषिकों की घोषणा करनी चाहिए। विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं को समय-समय पर भवाई, रामलीला, नुक्कड़ नाटक या नाट्यमंडली का आयोजन करना चाहिए। साथ ही साहित्यिक मंडलों का गठन किया जाना चाहिए और विभिन्न प्रवृत्तियों का आयोजन किया जाना चाहिए। लेखन शिविर और नाट्य प्रतियोगिताएँ आयोजित करनी चाहिए।

संदर्भ

उपाध्याय, उषा (संपादक). 2006. *सृजन प्रक्रिया अने नारीचेतना*. पार्श्व पब्लिकेशन.

जोशी, उमाशंकर (संपादक). 1984. *सर्जकनी आंतरकथा*. गंगोत्री ट्रस्ट, अहमदाबाद.

जोषी, विद्युत. 2004. *साहित्य अने समाज*. पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद.

त्रिवेदी, हर्षद, (संपादक). 2010. *नाटक अने हुं*. गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर.

_____ 2012. *नवलकथा अने हुं*. गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर.

_____ 2014. *कविता अने हुं*. गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर.

_____ 2014. *टूंकीवार्ता अने हुं*. गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर.

शाह, सुमन. 2000. *साहित्यिक संशोधन विशे*. पार्श्व पब्लिकेशन, अमहदाबाद.

7

शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत संचालित विशेष प्रशिक्षण केंद्र के विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की वस्तुस्थिति का अध्ययन

सरला वर्मा*

बच्चे के जीवन में सीखना जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यालय में सीखने की प्रक्रिया का प्रमुख आधार शिक्षक और विद्यार्थी के बीच का संबंध है, जिसकी वजह से बच्चा बिना परेशानी के अपनी शिक्षा पूर्ण कर पाता है। यदि हम प्रारंभिक शिक्षा को सभी बच्चों तक पहुँचाने की बात करें तो निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एक महत्वपूर्ण अधिनियम है। इसमें उन बच्चों की शिक्षा पर प्रकाश डाला गया है जो किसी कारण से विद्यालय नहीं जा पाए अथवा प्रारंभिक शिक्षा को पूरी किए बिना बीच में ही विद्यालय छोड़ चुके हैं। ऐसे बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय आने वाले बच्चों के स्तर तक लाने के लिए विशेष प्रशिक्षण केंद्र खोले गए हैं। इसका मुख्य उद्देश्य इन बच्चों के अधिगम स्तर में वृद्धि करना है, जिससे कि वे अपनी आयु के नियमित विद्यालय आने वाले बच्चों के समान स्तर को प्राप्त कर सकें। इस प्रशिक्षण के बाद वे नियमित विद्यालयों में अपनी आयु के अन्य बच्चों के साथ समायोजित और प्रगति करने में समर्थ होकर मुख्यधारा से जुड़ जाते हैं।

अक्सर देखा गया है कि विशेष प्रशिक्षण केंद्र में आने वाले विद्यार्थी तथा उनके माता-पिता स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति उदासीन रहते हैं, जिससे इन विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में दिनोंदिन गिरावट आती जा रही है और ये कुपोषण के शिकार हो जाते हैं। विद्यार्थियों का शारीरिक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है, क्योंकि बच्चा जब शारीरिक रूप से स्वस्थ होगा, तभी वह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में भाग लेगा और अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण कर पाएगा। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा से संबंधित भौतिक संसाधनों तथा स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की क्रियान्विति का पता लगाना आवश्यक समझा गया। इसके लिए एक शोध किया गया और इस शोधकार्य को दिल्ली राज्य के 2 जिलों के राजकीय विद्यालयों में संचालित 5 विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में अध्ययनरत कक्षा 1 से 8 तक के 150 विद्यार्थियों में से 100 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया। दत्त संकलन स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग कर सर्वेक्षण विधि के माध्यम से किया गया है। दत्त विश्लेषण प्रतिशत का उपयोग किया गया है।

* *असिस्टेंट प्रोफेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

बच्चे के जीवन में सीखना जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है, जो उसकी जन्मजात शक्तियों का विकास कर उसको समाज और अपने आसपास के वातावरण से जोड़े रखती है। सीखने की प्रक्रिया परिवार, मित्र, आसपास का वातावरण तथा विद्यालय में अनवरत चलती रहती है। विद्यालय में सीखने की प्रक्रिया का प्रमुख आधार शिक्षक और विद्यार्थी के अंतर्संबंध हैं, जिसकी वजह से बच्चा बिना परेशानी के अपनी शिक्षा पूर्ण कर पाता है। शिक्षा ही बच्चे का सर्वांगीण विकास करने में सहायक होती है। महात्मा गांधी ने *हिन्द स्वराज* में शिक्षा के बारे में बताया है कि शिक्षा का साधारण अर्थ अक्षर ज्ञान है जिसमें बालक को लिखना, पढ़ना और हिसाब करना, सिखाना, बुनियादी या प्राथमिक शिक्षा कहलाता है, लेकिन सच्ची शिक्षा वह है जो उसके शरीर व इंद्रियों को सुदृढ़ करें एवं उसका शरीर आसानी से सौंपा हुआ कार्य कर सके। साथ ही बालक की बुद्धि शुद्ध शांत और न्यायदर्शी बने। ऐसी शिक्षा ही बालक के विकास और उसके भविष्य के लिए उपयोगी साबित होगी।

वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा का मुख्य आधार बच्चे एवं विद्यालय को ही माना गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ऐसी पहली शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति बच्चों में उपस्थित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर जोर देती है एवं इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता एवं संख्याज्ञान जैसी बुनियादी क्षमताओं की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए, बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी बच्चों का विकास होना आवश्यक है। विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में पढ़ने वाले बच्चे शैक्षिक गतिविधियों के साथ अपनी शिक्षा पूर्ण करके देश के भावी नागरिक बनें— इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए। शारीरिक स्वास्थ्य यदि सही नहीं होगा तो शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाएगी। बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है परिवेश की स्वच्छता। नहीं तो तमाम तरह की बीमारियाँ घर बना लेती हैं और बच्चे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सक्रिय नहीं हो पाते और वे पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं। किसी भी देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक हो जाता है, कि उस देश के सभी विद्यालयों के आंतरिक एवं बाह्य परिवेश को पूर्णतः स्वस्थ रखा जाए।

यदि हम प्रारंभिक शिक्षा को सभी बच्चों तक पहुँचाने की बात करें तो निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एक महत्वपूर्ण अधिनियम है जिसमें उन बच्चों की शिक्षा पर प्रकाश डाला गया है जो किसी कारण से विद्यालय नहीं जा पाए अथवा प्रारंभिक शिक्षा को पूरी किए बिना बीच में ही विद्यालय छोड़ चुके हैं। इस अधिनियम के अध्याय 2, अनुच्छेद 4 में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि, "जहाँ छह वर्ष से अधिक की आयु के किसी बालक को किसी विद्यालय में प्रवेश नहीं दिया गया है या प्रवेश तो दिया गया है किंतु उसने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी नहीं की है, तो उसकी आयु के अनुसार समुचित कक्षा में प्रवेश दिया जाएगा"। इसके अंतर्गत आगे भी कहा गया है कि "परंतु जहाँ किसी

बालक को उसकी आयु के अनुसार समुचित कक्षा में सीधे प्रवेश दिया जाता है वहाँ उसे अन्य बालकों के समतुल्य होने के लिए, ऐसी स्थिति में और ऐसी समय-सीमा के भीतर, जो विहित की जाए, विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने का अधिकार होगा"। अतः पूरे देश के लगभग सभी राज्यों में इन बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए विशेष प्रशिक्षण केंद्र चलाए जा रहे हैं जो महत्वपूर्ण भी हैं, क्योंकि जो बच्चे कभी विद्यालय नहीं गए या बीच में पढ़ाई छोड़ चुके हैं उनकी पृष्ठभूमि अन्य बच्चों से भिन्न होती है जिसके कारण आयु के अनुसार उन्हें कक्षाओं में समायोजित करने से शिक्षकों तथा बच्चों दोनों को कठिनाई होती है। इसलिए विशेष प्रशिक्षण केंद्र में इन बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय आने वाले बच्चों के स्तर तक लाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात इन बच्चों को आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश दे दिया जाता है। विशेष प्रशिक्षण केंद्र का उद्देश्य इन बच्चों के अधिगम स्तर में वृद्धि करना है, जिससे कि वे अपनी आयु के बच्चों के समान स्तर को प्राप्त कर सकें। इस प्रशिक्षण के बाद वे नियमित विद्यालयों में अपनी आयु के अन्य बच्चों के साथ समायोजित और प्रगति करने में समर्थ होकर मुख्यधारा से जुड़ जाते हैं।

इस तरह विद्यालय शिक्षा से वंचित बच्चों में बाहर से आए हुए अफगानी बच्चे (प्रवासी), अपनी जीविका हेतु एक जगह से दूसरी जगह खेतों में काम या मजदूरी करने आए परिवारों के बच्चे, आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के बच्चे, निरक्षर या अल्प शिक्षित अभिभावकों के बच्चे, घरेलू कामकाजी बच्चे, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति से संबंधित बच्चे, झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वाले बच्चे, भीख माँगने के काम में लगे बच्चे, सड़क पर काम करने वाले बच्चे, रेलवे प्लेटफॉर्म तथा बस अड्डों पर रह रहे बच्चे, मजदूरी के लिए ढाबे/रेस्टोरेंट में या कहीं अन्यत्र काम कर रहे बच्चे, रैन बसेरों मे रहने वाले बच्चे, अनाथ या निराश्रित बच्चे आदि प्रमुख हैं। इन बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए केंद्र सरकार, राज्य सरकार एवं कई गैर-सरकारी संगठन अपने-अपने स्तर पर बहुत प्रयास कर रहे हैं। विद्यालय एवं विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में मध्याह्न भोजन बच्चों को उपलब्ध कराना सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों में से एक है।

स्वास्थ्य शिक्षा वह शिक्षा है जो विद्यार्थियों के जीवन को स्वस्थ रहने की शिक्षा देती है। विद्यार्थियों के रहन-सहन, खानपान, सोच-विचार आदि पर प्रभाव डालती है एवं स्वस्थ रहने के दिशा-निर्देश देती है। स्वास्थ्य शिक्षा उन समस्त अनुभूतियों का योग है जो स्वास्थ्य संबधी आदतों, आचरणों को समान रूप से प्रभावित करती है। विद्यार्थी के स्वास्थ्य के संबंध में ज्ञान प्रदान करने वाले सभी साधन स्वास्थ्य शिक्षा के अंतर्गत आते हैं। स्वास्थ्य शिक्षा उन सभी आदतों, अनुभव, रुचियों व ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है जो विद्यार्थी स्कूल, पुस्तकालय, घर, पड़ोस, समाज व खेल के मैदान से प्राप्त करता है। इसी कारण बच्चों को शुरू से ही स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता रहा है। एक स्वस्थ विद्यार्थी स्कूल की सभी क्रियाओं में स्वेच्छा से शामिल होता है। अतः अच्छे शरीर का निर्माण स्वास्थ्य शिक्षा द्वारा संभव है जहाँ विद्यार्थी स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हैं। शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य से

संबंधित मौलिक सिद्धांत की जानकारी प्रदान करती है जिसका पालन करके बच्चे स्वस्थ आदतों एवं विचारों को अपनाकर भविष्य में सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

शोधार्थी ने शोध के लिए विशेष प्रशिक्षण केंद्र के विद्यार्थियों का चयन किया, क्योंकि विशेष प्रशिक्षण केंद्र में आने वाले विद्यार्थी तथा उनके माता-पिता भी स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति उदासीन रहते हैं, जिससे इन विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में गिरावट आ जाती है और ये कुपोषण के शिकार हो जाते हैं। अतः इस शोध द्वारा शोधार्थी स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति शिक्षकों और विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित करना चाहता है।

1. **शोध के उद्देश्य**— विद्यार्थियों के जीवन में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है, प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य रखे गए हैं—
   - विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा से संबंधित भौतिक संसाधनों का पता लगाना।
   - विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की क्रियान्वति का पता लगाना।

शोध विधि— प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

परिसीमन— शोधार्थी ने दिल्ली राज्य के 2 जिलों को चुना उनके राजकीय विद्यालयों में शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत जो विशेष प्रशिक्षण केंद्र संचालित हो रहे हैं, उनके अध्ययन का प्रयास किया। शोधकार्य में उद्देश्यपरक विधि का उपयोग कर विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में अध्ययनरत कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों पर ही शोधकार्य किया गया है। शोधकार्य हेतु दत्त संकलन के लिए 10 दिवस की अवधि शोधार्थी द्वारा निर्धारित की गई और शोधार्थी द्वारा व्यक्तिशः विद्यालयों में जाकर चयनित न्यादर्शों पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा प्रश्नावली द्वारा दत्त संकलन किया गया। न्यादर्श के रूप में 5 विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में अध्ययनरत 150 विद्यार्थियों में से 100 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। इन प्रशिक्षण केंद्रों में बच्चों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की वस्तु स्थिति का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग विद्यार्थियों पर करने के पश्चात संकलित दत्तों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय तकनीक के अंतर्गत प्रतिशत का उपयोग किया गया। इसके बाद शोधार्थी द्वारा दत्त विश्लेषण क्षेत्रवार किया गया जो इस प्रकार है—

सारणी 1— क्षेत्र 1 स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा संबंधित

प्र.सं.	कथन	विशेष प्रशिक्षण केंद्र	
		हाँ (%)	नहीं (%)
1.	शिक्षक द्वारा आपको स्वास्थ्य के महत्व के विषय में बताया जाता है।	100	0
2.	शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को प्राथमिक उपचार की जानकारी दी जाती है।	40	60

3.	केंद्र में आपको संक्रामक रोगों की जानकारी दी जाती है।	70	30
4.	आपके शिक्षक आपको संक्रामक रोगों से बचाव की जानकारी देते हैं।	70	30
5.	केंद्र में प्राथमिक उपचार पेटी है।	40	60

शोधार्थी द्वारा कथनों का विश्लेषण करने पर यह जानकारी प्राप्त हुई कि सभी विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा स्वास्थ्य का महत्व बताया जाता है। विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में 40 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनको शिक्षक द्वारा प्राथमिक उपचारों की जानकारी दी जाती है। विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के 70 प्रतिशत विद्यार्थियों को संक्रामक रोगों एवं उनसे बचाव की जानकारी शिक्षकों द्वारा समय-समय पर दी जाती है। सभी विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के केवल 40 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि उनके केंद्र में प्राथमिक उपचार पेटी है, जबकि 60 प्रतिशत विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के विद्यार्थियों का कहना है कि उनके यहाँ प्राथमिक उपचार पेटी उपलब्ध नहीं है। इससे पता चलता है कि सभी विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा क्षेत्र से संबंधित विभिन्न जानकारी दी जाती है।

शोधार्थी द्वारा स्वच्छता से संबंधित कथनों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि सभी विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के 70 प्रतिशत विद्यार्थी केंद्र और स्वयं की साफ-सफाई का महत्व जानते हैं। विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के 90 प्रतिशत विद्यार्थी अपने-अपने केंद्र की स्वच्छता बनाए रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा 40 प्रतिशत विद्यार्थी अपने विशेष प्रशिक्षण केंद्र में प्रत्येक दिन स्नान करके आते हैं। सभी विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के 100 प्रतिशत विद्यार्थी का कहना है कि उनके केंद्र पर समय-समय पर शिक्षक नाखून व दाँतों की सफाई का निरीक्षण करते हैं एवं 100 प्रतिशत विद्यार्थियों का ये भी कहना है कि वे सभी शौचालय के पश्चात एवं मध्याह्न-भोजन से पहले

सारणी 2— क्षेत्र 2 स्वच्छता संबंधी जानकारी

प्र.सं.	कथन	विशेष प्रशिक्षण केंद्र	
		हाँ (%)	नहीं (%)
1.	आप साफ-सफाई का महत्व जानते हैं।	70	30
2.	आप केंद्र की स्वच्छता बनाने में मदद करते हैं।	90	10
3.	आप प्रत्येक दिन स्नान करके जाते हैं।	40	60
4.	आपके केंद्र में शिक्षक नाखून व दाँतों की सफाई का निरीक्षण समय-समय पर करते हैं।	100	–
5.	आप मध्याह्न भोजन से पहले हाथ धोते हैं।	100	–
6.	आप शौचालय के पश्चात हाथ साबुन से धोते है।	100	–
7.	आप केंद्र में साफ कपड़े पहनकर आते है।	60	40

साबुन से हाथ धोते हैं तथा 60 प्रतिशत विद्यार्थी ही केंद्र में साफ कपड़े पहनकर आते हैं। अतः ऊपर दिए गए आँकड़ों से यह पता चलता है कि विशेष प्रशिक्षण केंद्र के विद्यार्थियों को स्वच्छता संबंधी जानकारी है और वे इसका उपयोग करके स्वयं को स्वस्थ रखने का प्रयास करते हैं।

सारणी 3— क्षेत्र 3 खानपान संबंधित

प्र.सं.	कथन	विशेष प्रशिक्षण केंद्र	
		हाँ (%)	नहीं (%)
1.	आप संतुलित भोजन के विषय में जानते हैं।	20	80
2.	क्या आप केंद्र में दोपहर का नाश्ता लेकर आते हैं।	10	90
3.	आपके केंद्र में पोषाहार मिलता है।	100	–
4.	आपके केंद्र में अच्छा पोषाहार मिलता है।	100	–
5.	आपके केंद्र में पीने के पानी की व्यवस्था है।	100	–

शोधार्थी द्वारा खानपान संबंधित कथनों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि सभी विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के 20 प्रतिशत विद्यार्थी ही संतुलित भोजन के बारे में जानते हैं तथा 10 प्रतिशत विद्यार्थी ही दोपहर का नाश्ता लेकर केंद्र आते है, जबकि 90 प्रतिशत विद्यार्थी केंद्र का मध्याह्न में मिलने वाला पोषाहार खाते हैं। पोषाहार योजना के अंतर्गत सभी केंद्रों में पोषाहार दिया जाता है। अतः सभी विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के 100 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि उनके केंद्र में अच्छा पोषाहार मिलता है और उनके केंद्रों में स्वच्छ पानी अर्थात पीने योग्य पानी की उचित व्यवस्था है। इस तरह यह पता चलता है कि सभी विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के विद्यार्थियों को खानपान संबंधित जानकारी है एवं केंद्रों पर अच्छा पोषाहार दिया जाता है एवं पीने के पानी की भी व्यवस्था है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है सभी विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के विद्यार्थियों को स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा संबंधी, स्वच्छता संबंधी एवं खानपान संबंधी जानकारी है।

शिक्षक का दायित्व

विशेष प्रशिक्षण केंद्र में आने वाले बच्चे अलग-अलग परिस्थितियों का सामना करते हुए केंद्र तक आते हैं। इसलिए बच्चों का शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखना भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि विशेष प्रशिक्षण केंद्र में आने वाले बच्चे भावनात्मक, व्यवहारात्मक एवं सामाजिक रूप से बहुत पिछड़े हुए होते हैं, जिसकी वजह से उनका मानसिक स्वास्थ्य भी खराब रहता है। एक शिक्षक की जिम्मेदारी हो जाती है कि वे उनके विशेष प्रशिक्षण केंद्र में आने वाले बच्चों को उपयुक्त वातावरण प्रदान करें जिससे बच्चे मानसिक रूप से स्वस्थ हो सकें। विद्यार्थियों के उत्तम स्वास्थ्य के लिए शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि—

- विद्यार्थियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए शिक्षक, बच्चों को योगासन व शारीरिक क्रियाएँ करवा सकते हैं। प्रतिदिन बच्चों में ही अलग-अलग प्रतिनिधि चुनकर उनमें साफ-सफाई का ध्यान रख सकते हैं।

- अगर आपकी कक्षा का बच्चा आपके बताने पर भी साफ-सफाई का ध्यान नहीं रखता है, तब शिक्षक छोटे समूहों में रोल-प्ले करवाकर उसमें जागरूकता पैदा कर सकते हैं।
- शिक्षक बच्चों को प्रभावित करने वाले कारकों जैसे अभिभावकों से मिलकर बच्चे की स्थिति के बारे में जानने का प्रयास करें और उन्हें भी स्वस्थ रहने के प्रति जागरूक करने की कोशिश करें जिससे वे अपने बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रख सकें। शिक्षक वित्तीय व सामाजिक सुविधाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त कर बच्चों को सहयोग भी प्रदान कर सकते हैं।
- शिक्षक बच्चों को अनेक शिक्षण विधियों का उपयोग कर स्वास्थ्य के महत्व की समझ बना सकते हैं, जैसे— खेल विधि के माध्यम से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में स्वास्थ्य शिक्षा को आगे बढ़ाना चाहिए। उदाहरण के लिए— घर में, पार्क में विभिन्न आयुवर्ग के बच्चे मिलकर एक साथ खेलते हैं, जिससे बच्चे खेल-खेल में साफ-सफाई के नियमों को सीख लेते हैं। अतः समूह साथी शिक्षण को भी अपनाना चाहिए और वातावरण के द्वारा भी सिखाने का प्रयास करना चाहिए।

अतः इस शोध के माध्यम से शिक्षक कोशिश करेंगे कि विद्यार्थी नियमित व्यायाम कर व संतुलित भोजन ग्रहण कर स्वयं को स्वस्थ रखने का प्रयास करें। साथ ही साथ शिक्षक विद्यार्थियों की साफ-सफाई एवं उन्हें मिलने वाले पोषाहार की गुणवत्ता का ध्यान रखने की कोशिश करेंगे। इसके अलावा शिक्षक विद्यार्थियों के अभिभावकों को भी स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के महत्व को बता पाएँगे।

संदर्भ

गांधी, महात्मा. 2009. *हिन्द स्वराज*. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली.

गुप्ता, एस.पी. 2002. *सांख्यिकीय विधियाँ*. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार 2009. भारत का राजपत्र. भारत सरकार.

मंडल, पुष्पा. 2015. *गाइडलाईन*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

वर्मा, सरला. 2020. *'उड़ान' विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में कार्यरत शिक्षकों हेतु हस्तपुस्तिका*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

शर्मा, संतोष. 2014. *वॉट इस आर.टी.ई.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

8

प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण में भाषा की भूमिका

रमेश तिवारी*

शिक्षण किसी भी विषय का हो यह जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। जीवन में परस्पर विचाराभिव्यक्ति और भावसंप्रेषण के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा एक ऐसा औजार है जो मनुष्य को अन्य सभी प्राणियों से बेहतर अभिव्यक्ति क्षमता प्रदान करता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और भाषा उसकी सामाजिक जरूरतों को पूरा करने का एक सर्वाधिक उपयोगी माध्यम है। जब हम प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण की बात करते हैं तो कहीं न कहीं शिक्षार्थी के शब्द-संसार, परिवेश और उसकी क्षमताओं के संवर्धन को विशेष महत्व देते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (एन.सी.एफ. 2005) में जिन बिंदुओं पर विस्तार से विचार किया गया है, उनकी सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए ही रा.शै.अ.प्र.प. ने भाषा, पर्यावरण, गणित आदि विषयों की पाठ्यपुस्तकों की निर्मिति की है। एन.सी.एफ. 2005 की सिफारिशों को और अधिक विस्तार से मजबूती देने की बात हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 करती है। इसका प्रमाण हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार सिद्धांत की इन पंक्तियों में देखते हैं "शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है, जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिसमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों। इसका उद्देश्य ऐसे उत्पादक लोगों को तैयार करना है जो कि अपने संविधान द्वारा परिकल्पित–समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान करें।" इस आधारभूत सिद्धांत के आलोक में हम देखें तो पाएँगे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विद्यालयी शिक्षा और विशेषकर जो प्राथमिक शिक्षा है उसे अत्यधिक महत्वपूर्ण माना है और यह उचित भी है।

शिक्षा और विशेषकर प्राथमिक शिक्षा प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, उसके चिंतन-व्यवहार और आचरण में बुनियाद का काम करती है। यदि किसी भी चीज की बुनियाद कमजोर रह गई तो उस पर हम मजबूत इमारत का निर्माण कतई नहीं कर सकते हैं। इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की यह कोशिश सराहनीय है। इस नीति के पीछे की जो दृष्टि है वह भी उल्लेखनीय है, "नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में, बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में भी और साथ ही साथ ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए, जो मानवाधिकारों, स्थायी विकास और जीवनयापन

**सीनियर फैकल्टी*–हिंदी, आई.टी.ई.आई. (इन सर्विस टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूट), टेक महिंद्रा फाउंडेशन, हनुमान वाटिका के सामने, नांगिया पार्क, शक्ति नगर, दिल्ली 110 007

तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो, ताकि वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सकें।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान को सर्वोपरि मानते हुए हरेक बच्चे के लिए अनिवार्य माना गया है। वर्तमान में ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 5 करोड़ से भी अधिक होने का अनुमान इस नीति में व्यक्त किया गया है। इस चुनौती से निबटने के लिए यह नीति स्पष्ट करती है कि "सभी बच्चों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को प्राप्त करना तत्काल रूप से एक राष्ट्रीय अभियान बनेगा जिसे कई मोर्चों पर किए जाने वाले तात्कालिक उपायों और स्पष्ट लक्ष्यों के साथ अल्पावधि में प्राप्त किया जाएगा (जिसमें प्रत्येक छात्र को कक्षा 3 तक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को आवश्यक रूप से प्राप्त करना शामिल किया गया है।) शिक्षा प्रणाली को सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक विद्यालय में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या-ज्ञान प्राप्त करना होगा।"

इन संदर्भों को ध्यान में रखते हुए हम देखें तो पाएँगे कि पिछले अकादमिक ढाँचे के बरक्स एक नया अकादमिक ढाँचा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रदान किया गया है। इसके अनुसार शुरुआती प्राथमिक कक्षाओं की बात करें (जो सामान्यतया पहली से पाँचवीं कक्षा तक माना जाता रहा है। तो उसके लिए अब फाउंडेशनल और प्रिपरेटरी स्टेज निर्धारित किया गया है। कक्षा 6–8 मिडल और 9–12 सेकेंडरी उद्धृत है। इस ढाँचे ने बच्चों के लिए एक नया वातावरण और नई सोच बुनने का सुअवसर निर्मित किया है। यदि हम इसमें से केवल फाउंडेशनल और प्रिपरेटरी स्टेज के बच्चों की शिक्षा और उनके विषयों के संदर्भ में देखें तो भाषा और गणित ही नहीं, बल्कि परिवेश और पर्यावरण भी भाषा के हिस्से के रूप में दिखाई देते हैं। हमने इस प्रपत्र में गणित शिक्षण में भाषा की भूमिका को ही केंद्र में रखते हुए विचार-विश्लेषण किया है।

गणित हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। शिक्षा चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक, गणित एक ऐसा विषय है जिसकी आवश्यकता हमें हमेशा रहती है और भविष्य में भी रहेगी। हम यदि शुरुआती शिक्षण में गणित की अनिवार्य विषयवस्तु पर ध्यान दे तो पाएँगे कि प्रायः सामान्य अंकों का ज्ञान, आकार (छोटा-बड़ा, मँझला, गोल, लंबा, चौड़ा, पतला-मोटा आदि आकृतियाँ), जोड़-घटाव को बुनियादी दक्षता के रूप में स्वीकार किया जाता है। आमतौर पर हमारी कोशिश होती है कि हम बच्चों में इन बिंदुओं की व्यापक समझ के प्रति ललक उत्पन्न कर सकें। इस दृष्टि से यदि हम रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्य पुस्तकों में भाषा और गणित की पुस्तकों को देखें तो इस अवधारणा को और बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। कक्षा 1 की हिंदी की पुस्तक रिमझिम में कुल 23 पाठ हैं। इसमें यदि आप 'स्कूल का पहला दिन' शीर्षक से एक शुरुआती चित्र वाला पृष्ठ देखें तो आप इस कक्षा में लगे चित्रों से ही गणित की शुरुआती विषयवस्तु को जोड़ सकते हैं। नीचे हमने वह चित्र आपकी सुविधा के लिए दिया है—

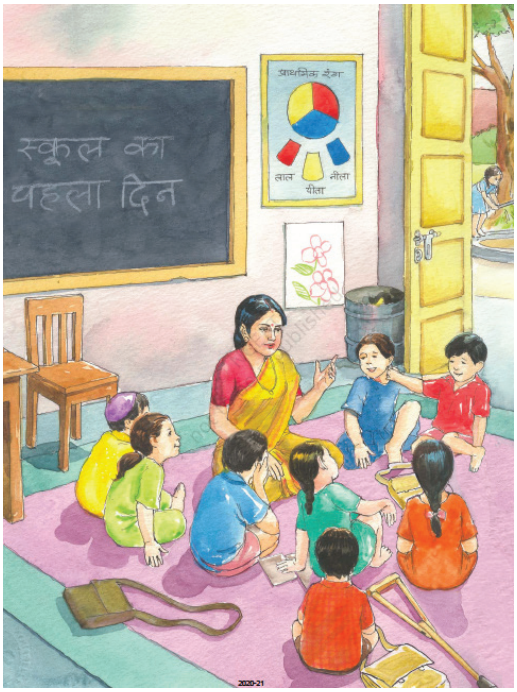

निम्न चित्र में आप गणितीय संकल्पनाओं का समावेश देख सकते हैं। आकार, पैटर्न, प्री-नंबर अथवा अंक पूर्व दक्षता की अवधारणा हम बच्चों को भाषा की कक्षा के आरंभिक परिवेश के द्वारा सिखा सकते हैं। इसी प्रकार छोटा, बड़ा, मझला, पतला, मोटा, कम, ज्यादा, गोल, चौड़ा, आयताकार आदि संबंधी अवधारणाओं को भी स्पष्ट कर बच्चों में गणितीय समझ विकसित की जा सकती है। कम-अधिक की तरह ही एक अन्य अवधारणा है पहले और बाद में। इसे दूसरे शब्दों में पूर्व और उत्तर तथा अंग्रेजी में प्री और पोस्ट कहते हैं। पहली कक्षा की *रिमझिम* के पहले ही पाठ 'झूला' में एक पंक्ति का प्रयोग किया गया है– चल दिल्ली, ले चल कलकत्ता। इस प्रकार की पंक्तियों को पढ़ाते हुए हम बच्चों को प्लेस करना सिखा सकते हैं। जैसे कौन-सा नाम पहले आया, कौन बाद में। या इस कविता में कौन (क्या) ऊपर है, कौन (क्या) नीचे? इस प्रकार उन्हें ऊपर-नीचे का आशय भी समझ में आने लगेगा। बच्चे अपने परिवेश से भी ऊपर-नीचे की चीजों को देख-समझ कर उसे जोड़कर समझ-समझा सकेंगे। इस प्रकार बच्चों में गणितीय क्षमताओं के साथ-साथ भाषायी समझ भी मजबूत होगी। इसी प्रकार पहले-बाद वाले प्रश्न के उत्तर में जवाब मिलेगा कि पहले दिल्ली का नाम आया फिर उसके बाद कलकत्ता। इस प्रकार बच्चों में गणितीय क्षमताओं का विकास होगा और उनकी समझ में वृद्धि होगी।

ऊपर के चित्र में आप अंकों के ज्ञान का आरंभिक रूप भी देख सकते हैं। चित्र में देखकर बच्चे यह बता सकेंगे कि कौन-कौन सी वस्तु एक है और कौन-सी

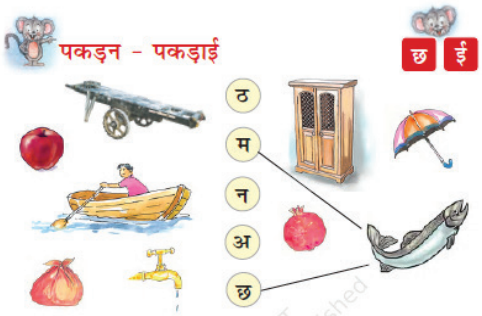

ऊपर बनी चीज़ों के नाम उन अक्षरों के नीचे लिखो जो उनमें आते हैं।

ठ	छ	म	अ	न
	मछली	मछली		

यहाँ मछली दो बार लिखा गया है। क्या किसी और चीज़ का नाम भी तुमने दो बार लिखा है?

17

एक से अधिक। आगे पूछा गया है कि मछली का नाम दो बार लिखा है अन्य नाम जो बच्चों ने दो-दो बार लिखा है, उनका नाम बताना है। अंक ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों को इस प्रकार के पाठों और अभ्यास-कार्यों से भाषा (अक्षर) ज्ञान, आकार ज्ञान, रंग ज्ञान, पहचान, मिलान, पैटर्न ज्ञान आदि भी सहज ही होता जाता है। इस इंटीग्रेटेड अप्रोच के द्वारा हम बच्चों की समझ को भलीभाँति विकसित कर सकते हैं।

इसी प्रकार यदि हम हिंदी भाषा के ही कुछ अन्य पाठों, जैसे— 'आम की टोकरी', 'चार चने', 'सात पूँछ का चूहा' आदि पाठों को ध्यान से देखें तो इनके द्वारा भी हम बच्चों को गणितीय बिंदुओं का शिक्षण प्रदान करते हैं। 'आम की टोकरी' कविता में छह साल की छोकरी यानि बच्ची से कविता को जोड़ा गया है। यानि इस कविता के द्वारा हम बच्चों को छह अंक की समझ भी करा सकते हैं। अंकों की बात आने पर हम बच्चों को उनके परिवेश के उदाहरणों से जोड़कर अंक-क्रम का और उनके बीच के अंतर का ज्ञान भलीभाँति करा सकते हैं। इसी प्रकार यदि हम 'चार चने' कविता को देखें या 'सात पूँछ का चूहा' कहानी वाले पाठ को देखें तो पाएँगे कि इन पाठों के द्वारा हम बच्चों को अंकों का ज्ञान खेल-खेल में गतिविधि के द्वारा करा सकते हैं।

'सात पूँछ का चूहा' कहानी में अवरोही (घटते) क्रम से एक-एक पूँछ को काटकर कम किया गया है। आप नीचे के अंश को देखकर इसे समझ सकते हैं—

23. सात पूँछ का चूहा

एक था चूहा। उस चूहे की सात पूँछें थीं।
सब उसे चिढ़ाते – सात पूँछ का चूहा, सात पूँछ का चूहा।
तंग आकर चूहा गया नाई के पास। उसने नाई से कहा – ए नाई, मेरी एक पूँछ काट दो।
नाई ने एक पूँछ काट दी। अब उसके पास बची सिर्फ़ छह पूँछें।
अगले दिन जैसे ही चूहा बाहर निकला, सब उसे चिढ़ाने लगे छह पूँछ का चूहा, छह पूँछ का चूहा।
चूहा फिर से तंग आ गया। वह गया नाई के पास।
उसने कहा – ए नाई, मेरी एक पूँछ और काट दो।
नाई ने एक पूँछ और काट दी। अब उसके पास बचीं सिर्फ़ पाँच पूँछें।

आप देख रहे हैं कि सात में से एक पूँछ काटने के बाद बची छह पूँछ, और छह में से एक पूँछ कटी तो बची पाँच पूँछ। यह कहानी क्रमशः 4–3–2–1 से होते हुए अंत में शून्य तक बुनी गई है जिससे बच्चे कहानी के आनंद के साथ गणितीय अंक-ज्ञान भी सहजतापूर्वक हासिल कर लेते हैं। ऐसे अनेक मौकों पर भाषा की भूमिका और महत्ता को समझने की आवश्यकता है।

अब हम कक्षा 1 की ही गणित की पाठ्यपुस्तक का कोई पाठ देखते हैं। पहले पाठ की बात करें तो इसमें अंदर-बाहर शीर्षक से एक कहानी बुनी गई है। यह ध्यान रखना होगा कि कहानी, कविता, चुटकुला आदि गणितीय उपकरण नहीं हैं, बल्कि ये भाषायी उपकरण हैं। पाठ्यपुस्तक बेशक गणित की है, विषयवस्तु भी गणित की हो सकती है किंतु उसे बच्चों तक पहुँचाने में जो प्रभावी माध्यम है, वह माध्यम भाषा ही है। इसलिए भाषा को संप्रेषण का सर्वाधिक कारगर और प्रभावी माध्यम माना गया है। गणित की पहली कक्षा के इस पाठ की गणितीय अवधारणा है— आकृतियाँ और स्थान। इसी को अंदर-बाहर शीर्षक से कहानी के प्रारूप में रोचकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी के द्वारा बच्चों को सर्दी, अरब, ऊँट, तम्बू, अंदर, बाहर, पीठ, गर्दन, आगे, टाँगें, हम, दोनों, छोटा, बड़ा का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष ज्ञान कराया गया है। अभ्यास के दौरान बड़ा-छोटा, ऊपर-नीचे की संकल्पना को चित्रों की सहायता से बच्चों को समझाया और प्रश्न किया गया है। आयु और क्षमता-अनुसार हम इन अभ्यासों के द्वारा बच्चों को बड़ा-छोटा के साथ मझला, ऊपर-नीचे के साथ बीच/मध्य में भी सिखा सकते हैं।

© NCERT not to be republished

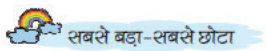

सबसे बड़ा-सबसे छोटा

सबसे छोटे पेड़ पर (✓) निशान लगाइए।

सबसे बड़े जानवर पर (✓) निशान लगाइए।

सबसे छोटे फल पर (✓) निशान लगाइए।

सबसे बड़े बुलबुले पर (✓) निशान लगाइए।

ऊपर-नीचे

ऊपर वाले मटके पर (✓) निशान लगाइए।

सीढ़ियों के नीचे वाले जानवर पर (✓) निशान लगाइए।

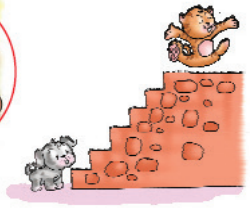

पास-दूर

मकान के पास वाली चिड़िया पर (✓) निशान लगाइए।

पेड़ से दूर वाली बिल्ली पर (✓) निशान लगाइए।

© NCERT not to be republished

इसी प्रकार हम सबसे ऊपर और सबसे नीचे, सबसे पास और सबसे दूर की अवधारणा को भी बच्चों को समझा सकते हैं। चित्रों के माध्यम से पढ़ाने से बच्चों को ये विषय आसानी से समझ में आ जाते हैं। बच्चों के साथ जब हम मूर्त, भौतिक अथवा ठोस वस्तुओं के उदाहरण से गणितीय बिंदुओं को स्पष्ट रूप से समझाते हैं तो बच्चे सहज ही कक्षा और अध्यापक के शिक्षण से जुड़कर तल्लीनतापूर्वक सीखने लगते हैं। हममें से प्रायः सभी ने देखा होगा कि बच्चे प्रायः ठोस अथवा मूर्त चीजों के साथ खेलने में आनंद का अनुभव करते हैं। एक अध्यापक अथवा अध्यापिका के तौर पर हम सबको बच्चे की इस प्रवृत्ति का सकारात्मक उपयोग करने की जरूरत है। इसके लिए हम उन्हें मूर्त चीजों के साथ खेलने

को प्रेरित करें इससे वे खेल-खेल में सीखने की ओर अग्रसर हो जाएँगे। इसमें बच्चे अपने परिवेश से जुड़ेंगे तो कहीं-न-कहीं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 का भी अनुसरण होगा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों का अनुसरण होगा। उन्हें कंचे, गोलियाँ, गिट्टियाँ, कंकड़, फूल, पत्तों घास के टुकड़ों, तिनकों, माचिस की तीलियों, गेंदों आदि की सहायता से मिलाने, जोड़ने, अलग करने, छाँटने, घटाने, कम-अधिक की तुलना करने, अंतर पहचानने, जोड़ी बनाने, क्रम बनाने आदि के साथ-साथ उनके अनुभव सुनाने का पर्याप्त अवसर देकर हम उनके गणितीय ज्ञान और मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा उनका आरंभिक भाषा-ज्ञान भी समृद्ध कर सकते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में बच्चे कहीं भी विरक्ति अथवा बोरियत महसूस नहीं करेंगे और उनका अधिगम-स्तर निरंतर बेहतर होता जाएगा। उनको इस प्रकार से आनंदमय वातावरण में कुछ नया और कुछ उपयोगी सीखने को मिलेगा। इस क्रम में हम बच्चों को कुछ अन्य गतिविधियों के द्वारा गिनती आदि सीखना भी सिखा सकते हैं। आगे एक चित्र के द्वारा हम ऐसे ही खेल-खेल में गिनती सीखने-सिखाने का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं—

यहाँ कंचे या गोली का उदाहरण बताया गया है, परंतु अच्छा होगा कि कंचों के स्थान पर नींबू लें। यह सिर पर किताब या गिलास आदि रखकर चलने वाला खेल भी हो सकता है। इन सभी में बच्चों की रुचि, एकाग्रता, सामूहिकता और आनंद बढ़ेगा। साथ-साथ उनको खेल-खेल में सीखने का सुअवसर भी मिलेगा।

चम्मच पर कंचा रखकर लाइन पर चलो, कंचा गिरे नहीं।

1. यह गतिविधि हम क्यों करें?
   - ⇒ बच्चे खेल के माध्यम से गणित से जुड़ पाएँगे।
   - ⇒ हम यह समझ पाएँगे कि बच्चे कहाँ तक की संख्याओं को सही क्रम में बोल पाते हैं।
2. यह गतिविधि हम कैसे करें?
   - ⇒ कक्षा या मैदान में एक लम्बी लाइन खींचें।
   - ⇒ चम्मच को मुँह में दबाकर उस पर कंचा रखकर एक बच्चे को लाइन पर चलने को कहें।
   - ⇒ अन्य बच्चों को गोल घेरे में इस प्रकार खड़ा करें कि गतिविधि सबको दिखाई दे। यदि बच्चे नहीं चल पा रहे हों तो स्वयं करके बताएँ।
   - ⇒ बच्चे द्वारा चले गए कदमों को हम व अन्य बच्चे गिनें। कुछ समय बाद हम गिनना बन्द कर दें। केवल बच्चे गिनें।
   - ⇒ प्रत्येक बच्चे के चलने के बाद हम अन्य बच्चों से पूछें कि वह कितने कदम चला।
   - ⇒ यह गतिविधि सभी बच्चों से बारी-बारी कराएँ।
3. क्या यह भी हो सकता है?
   - ⇒ सिर पर डंडा रखकर लाइन पर चलने को कहें।
   - ⇒ सिर पर गिलास रखकर चलने को कहें।
   - ⇒ इसी प्रकार के अन्य खेल जो आपको उपयुक्त लगें।
4. इस गतिविधि के कुछ फायदे और भी हैं -
   - ⇒ बच्चों में 'लाइन' की सामान्य समझ विकसित होगी।
   - ⇒ बच्चों में एकाग्रता आएगी।
   - ⇒ बच्चे सामूहिक रूप से गिनती बोलना सीखेंगे।
   - ⇒ बच्चों में किसी लाइन के 'शुरू' और 'अंत' की सामान्य समझ विकसित होगी।

एक शिक्षक ने ऐसा किया -

मैं घर से ही यह गतिविधि करने का निश्चय कर स्कूल गया। मैंने अपने साथ एक चम्मच और कुछ कंचे भी रख लिए थे। स्कूल पहुँच कर मैं बच्चों को मैदान में ले आया। वहाँ नीम के पेड़ के नीचे एक लम्बी लाइन खींची। बच्चों को बारी - बारी से चम्मच को मुँह में दबाकर उस पर कंचा रखकर लाइन पर चलने की गतितिधि को कराया। बाद में मैंने इसी गतितिधि को सिर पर डंडा एवं गिलास रखकर भी करवाया।

शिक्षक का अनुभव -

बच्चे इस गतिविधि को आसानी से कर रहे थे। एक-दो बच्चों को छोड़कर बाकी सब बच्चे लाइन के अंतिम छोर तक पहुंचने में कामयाब रहे। सिर पर डंडा, गिलास रखकर यह गतिविधि करने पर बच्चों को थोड़ी कठिनाई हुई परन्तु कुछ अभ्यास के बाद इसमें भी सफलता प्राप्त हो गई। बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। मैंने भी उनके साथ बच्चा बनकर इस गतिविधि में भाग लिया।

संजय कुमार देवांगन,
शा.क.प्रा.शाला अमोदा,
जिला- जाँजगीर

इस प्रकार की गतिविधियों से उनमें सीधी लाइन की समझ विकसित होगी। बच्चों में एकाग्रता बढ़ेगी। एक बच्चे को देखते हुए उसके चलने पर कदमों को गिनते हुए बच्चे खेल-खेल में गिनना सीखेंगे। किसी लाइन के स्थान विशेष से शुरू और एक स्थान विशेष पर समाप्त होने की समझ बनेगी।

इस प्रकार की गतिविधियों के परिणाम भी कक्षावार आधार पर अलग-अलग हो सकते हैं, जैसे— यदि आप इस चित्र में शिक्षक के अनुभवों पर ध्यान दें तो पाएँगे कि एक-दो बच्चों को छोड़कर बाकी सब बड़ी ही सहजता से लाइन के आखिरी छोर तक जाने में सफल रहे। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि जिन बच्चों ने लाइन के आखिर तक पहुँचने में सफलता नहीं हासिल की उनको भी किसी प्रकार की हीनता या असफलता का बोध नहीं

होने देना ही अध्यापक का कर्तव्य है। हमें इस प्रकार की गतिविधियों में ऐसा वातावरण निर्मित करने की जरूरत है कि सफलता-असफलता बेमानी हो जाए और खेल-खेल में सीखने, कुछ हासिल करने का भाव प्रमुख। यदि हम ऐसा करने में सफल रहते हैं तभी हम सही मायने में अध्यापन को सार्थकता प्रदान करते हैं।

संदर्भ

गतिविधि आधारित शिक्षण. कक्षा-1. गणित संदर्शिका. www.alokshukla.com.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2006. *गणित का जादू भाग-1*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2006. *रिमझिम भाग-1*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

9

अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए रचनावादी शिक्षण

देवेन्द्र कुमार यादव*
शिरीष पाल सिंह**

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए रचनावादी शिक्षण का अनुप्रयोग किया गया है। इस शोध में उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन तकनीकी के माध्यम से उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज द्वारा संचालित माँ शारदा इंटर कॉलेज जलालाबाद, गाजीपुर में पढ़ने वाले सत्र 2020–21 के कक्षा 9 के 140 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। शोध में पूर्व परीक्षण, पश्च परीक्षण गैर समतुल्य अर्द्ध-प्रायोगिक अभिकल्प समूह का प्रयोग किया गया है। प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों को रचनावादी शिक्षण एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों को परंपरागत विधि की सहायता से पढ़ाया गया। प्रयोगात्मक समूह में कुल 70 विद्यार्थी एवं नियंत्रित समूह में भी कुल 70 विद्यार्थी सम्मिलित थे। आँकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित अंग्रेजी व्याकरण उपलब्धि परीक्षण एवं व्यक्तित्व परीक्षण का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों का विश्लेषण एक मार्गीय एवं द्विमार्गीय सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी विधि की सहायता से किया गया है। शोध निष्कर्ष में परंपरागत विधि की तुलना में रचनावादी शिक्षण अधिक प्रभावी पाया गया एवं अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

भाषा मनुष्य की भावनाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का वह माध्यम है, जिससे वह एक दूसरे से सूचनाओं को आदान-प्रदान करते हुए सभी सामाजिक गतिविधियों का निष्पादन करता है। दुनिया में विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं, किंतु सभी भाषाओं के मध्य अंग्रेजी भाषा अपना अद्वितीय स्थान रखती है। अंग्रेजी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। अधिकांश उच्च कोटि की शोध पत्रिकाएँ अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होती हैं। भारत में उच्चतम एवं उच्च न्यायालय की भाषा भी अंग्रेजी ही है। किसी भाषा की अनदेखी करके कोई भी राष्ट्र कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चल सकता। सहज जीवनयापन के लिए प्रत्येक व्यक्ति को भाषा के माध्यम से ही अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करनी पड़ती है। दुनिया में सभी भाषाओं के मध्य अंग्रेजी भाषा में विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा एवं सामाजिक विज्ञान के संवृद्ध

**शोधार्थी,* शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र
** *प्रोफेसर*, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

साहित्य उपलब्ध हैं और मीडिया रिपोर्ट के अनुसार 50 प्रतिशत समाचारपत्र एवं समकालिक वैज्ञानिक पत्रिकाओं का प्रकाशन अंग्रेजी भाषा में ही होता है। दुनिया के 60 प्रतिशत से अधिक रेडियो स्टेशन अंग्रेजी भाषा में ही संचालित होते हैं (पूनम, 2018)। अंग्रेजी अक्सर दुनिया की महत्वपूर्ण भाषा मानी जाती है, जिसमें संचार एवं शैक्षिक मूल्य निहित हैं, जो हमें ज्ञान, शक्ति एवं भौतिक संपदा की ओर अग्रसर करती है। समय-समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों द्वारा अंग्रेजी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने बच्चों के संज्ञानात्मक विकास हेतु द्विभाषिता एवं बहुभाषिता पर बल दिया है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2006–2007) ने अपने प्रतिवेदन में जोर देकर कहा कि संसार के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए आधुनिक ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करना आवश्यक है। आयोग ने सिफारिश की थी कि स्कूली शिक्षा में प्रथम कक्षा से ही मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) के साथ अंग्रेजी की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाए (लाल, 2013)। इस तरह हम देखते हैं कि हिंदी के ज्ञान के साथ-साथ अंग्रेजी का ज्ञान भी आवश्यक है। किसी भी भाषा का शुद्ध उच्चारण, प्रयोग एवं लेखन व्याकरण द्वारा ही संभव है। अंग्रेजी भाषा के संवर्धन एवं विकास हेतु हमें अपनी कक्षाओं की शिक्षण प्रणाली को नवाचारी बनाना चाहिए। भाषा-शिक्षण भाषा की संरचनात्मकता को प्राथमिकता देकर उसके एकार्थक स्वरुप पर बल देता है। भाषा की स्पष्टता तथा संक्षिप्तता अधिक महत्वपूर्ण हो गई है, जिसके फलस्वरूप यह अपेक्षा की जाती है कि भाषा भी गणित के समान नपी-तुली संरचनायुक्त हो तथा इसे निर्धारित सूत्रों के माध्यम से अधिगत किया जा सके। एक तरह से देखें तो भाषा शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होता। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की ही कक्षाएँ होती हैं (एन.सी.एफ., 2005)। किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावली को सीखना, उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना और उनके बारे में लिख सकना। इसके साथ ही, भाषा की शिक्षा कुछ अनूठे अवसर उपलब्ध कराती है। कहानी, कविता, गीतों और नाटकों के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं और इससे उनको अपने अनुभव विकसित करने और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के अवसर मिलते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से व्याकरण भी अधिक आसानी से सीख सकते हैं, जो रचनावादी शिक्षण द्वारा संभव है। इन सभी गतिविधियों का समावेशन रचनावादी शिक्षण में होता है। इसलिए भाषा शिक्षण में हमें रचनावादी शिक्षण रणनीतियों का अनुप्रयोग करना चाहिए।

रचनावादी शिक्षण

रचनावादी विचारधारा के प्रवर्तक के रूप में सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे को माना जाता है जिन्होंने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत एवं अधिगम के प्रति व्यवहारवादी विचारधारा से अलग मनोविज्ञान में संज्ञानवादी विचारधारा की नींव रखी। वस्तुतः जीन पियाजे ने व्यवहारवादी मान्यता कि बालक

सिर्फ वातावरण से सीखता है, की बजाय यह माना कि बालक के अधिगम में वातावरण के साथ-साथ उसकी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का योगदान भी रहता है। इस प्रकार वातावरण एवं मानसिक संरचनाओं की पारस्परिक अंतःक्रिया बालक के अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दूसरे महत्वपूर्ण रचनावादी मनोवैज्ञानिक लेव वाईगोत्सकी ने इस मान्यता को खारिज किया कि बालक सिर्फ मानसिक प्रक्रियाओं एवं वातावरण की अंतःक्रिया से सीखता है। पियाजे से अलग वाईगोत्सकी ने बताया कि अधिगम हमेशा सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण में होता है। अतः अधिगम को हमेशा सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि बालक के अधिगम में उसके समाज एवं संस्कृति की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार यहाँ पर रचनावादी दृष्टिकोण दो विचारधाराओं में बँट गया। पहला संज्ञानवादी रचनावादी जिसके प्रवर्तक एवं समर्थक प्रसिद्ध विद्वान जीन पियाजे, ब्रूनर, गेने आदि रहे और दूसरा सामाजिक-सांस्कृतिवादी जिसके प्रबल प्रवर्तक एवं समर्थक वाईगोत्सकी रहे। रचनावाद के अनुसार प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है। रचनावादी परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत छात्र एक कोरी स्लेट नहीं होता, बल्कि वह अपने साथ पूर्व अनभुव लाता है। वह किसी परिस्थिति के सांस्कृतिक तत्व और पूर्व ज्ञान के आधार पर ज्ञान का निर्माण करता है। रचनावादी परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की समालोचनात्मक चिंतन व अभिप्रेरणा को विकसित कर उन्हें स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में ढाला जाता है। रचनावादी परिप्रेक्ष्य में शिक्षण युक्तियाँ व गतिविधियाँ अधिगम प्रक्रिया पर आधारित होती हैं। रचनावादी परिप्रेक्ष्य का केंद्र है छात्र सशक्तिकरण, जैसे— अभिभावक बालक के जन्म के बाद उसके स्वतंत्र जीवनयापन के लिए हर संभव आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, वैसे ही रचनावादी परिप्रेक्ष्य का उद्देश्य अधिगमकर्ता का निर्माण करना होता है और बालक उसी के लिए प्रयासरत रहता है। विद्यार्थी ज्ञान की रचना वातावरण से अंतःक्रिया करते हुए अपने अनुभवों द्वारा स्वयं करता है। शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थी पूर्व ज्ञान के आधार पर वर्तमान अधिगम से साहचर्य स्थापित करते हुए सीखता है। रचनावाद वास्तव में एक सिद्धांत है जो अवलोकन और वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित है, जिसमें व्यक्ति कैसे सीखता है, यह ज्ञात होता है। अधिगमकर्ता कुछ गतिविधियों को करते हुए सीखता है एवं सीखे हुए ज्ञान पर आपस में अंतःक्रिया करके अपनी समझ को विकसित करता है जो अधिगमकर्ता में झलकती है।

परंपरागत विधि

परंपरागत विधि में शिक्षण शिक्षक केंद्रित होता है। विद्यार्थियों को अंतःक्रिया करने हेतु अवसर ही नहीं दिया जाता है। शिक्षक पूरे विश्वास के साथ शिक्षण कार्य करता है और यह समझता है कि विद्यार्थियों को आसानी से समझ में आ रहा है। शिक्षक की यही सोच विद्यार्थियों की अधिगम गति में अवरोधक बन जाती है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि परंपरागत विधि से रटंत प्रणाली को बढ़ावा मिलता है। शिक्षक का प्रथम कर्तव्य यह होता है कि वह

विद्यार्थियों की अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करे। शिक्षण अधिगम के दौरान शिक्षक को ऐसे अवसर प्रदान कराने चाहिए, जिससे विद्यार्थियों का अधिगम स्थायी एवं सरल हो जाए। एक शिक्षक को पाठ्यवस्तु का ज्ञान होना तो आवश्यक है, किंतु इसके साथ ही शिक्षणशास्त्र का ज्ञान भी होना चाहिए। यदि हमारी शिक्षण विधि सार्थक है तो अधिगम रोचक, सरल एवं सहज हो जाता है।

शोध का औचित्य

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–1953) ने अपने प्रतिवेदन में कहा था कि "पाठ्यक्रम कितना भी श्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक बनाया जाए, जब तक अच्छी शिक्षण विधि का प्रयोग अच्छे शिक्षक द्वारा नहीं किया जाता, सब व्यर्थ है।" शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है। यह तभी संभव है जब शिक्षण नियोजन में ऐसी व्यूह रचनाओं का समावेश हो जिससे विद्यार्थी में जिज्ञासा बनी रहे, इसलिए हमें नवाचारी शिक्षण पद्धति का अनुप्रयोग करना चाहिए। नवाचारी शिक्षण पद्धति में रचनावादी शिक्षण का सबसे प्रमुख स्थान है। पूर्ववर्ती शोध परिणामों से यह ज्ञात होता है कि विज्ञान, गणित एवं सामाजिक विज्ञान की कक्षा में रचनावादी शिक्षण का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे (2015) इस बात की ओर इशारा करता है कि माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी भाषा की उपलब्धि निम्न स्तर की है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा संपादित पोजीशन पेपर में अंग्रेजी शिक्षण हेतु रचनावादी उपागम का सुझाव दिया गया है। रचनावादी शिक्षण रटंत अधिगम (Rote learning) का समर्थन नहीं करता है। अंग्रेजी भाषा एवं रचनावादी शिक्षण से संबंधित विभिन्न शोधकर्ताओं जैसे— कोकसाल (2009), यिजीत (2011), ओझा, आर्य और शेखर (2015), विलनुएवा (2016), देव (2016), नोघाभी और अशरफ (2017), बाड़ोला (2017), शर्मा और पूनम (2017), रामदास और शर्मा (2018), पूनम (2018), मोना (2018), तिवारी और सिरोही (2019), अल्कोगवा और ओफोरमा (2020) के शोधों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि पर रचनावादी शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है, किंतु अंग्रेजी व्याकरण एवं रचनावादी शिक्षण से संबंधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आधार पर शोध नहीं हुए हैं, इसलिए शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन का चयन किया गया है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए रचनावादी शिक्षण।

शोध उद्देश्य

1. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों की तुलना करना।
2. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार,

व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर की विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज द्वारा संचालित गाजीपुर जिले में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन तकनीकी

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन तकनीकी से उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज द्वारा संचालित माँ शारदा इंटर कॉलेज जलालाबाद, गाजीपुर में पढ़ने वाले सत्र 2020–2021 के कक्षा 9 के 140 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध मात्रात्मक विधि पर आधारित है एवं शोधकर्ता द्वारा प्रयोगात्मक शोध का प्रयोग किया गया है। इस शोध में कारण एवं प्रभाव का अध्ययन किया गया है। आश्रित चर पर स्वतंत्र चर का कितना प्रभाव पड़ा, यह देखने का प्रयास किया गया है।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध में पूर्व परीक्षण-पश्च परीक्षण गैर समतुल्य अर्द्ध-प्रायोगिक अभिकल्प समूह का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा निर्मित रचनावादी पाठ योजना, अंग्रेजी व्याकरण उपलब्धि परीक्षण एवं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को जानने के लिए शर्मा, अशोक एवं मीनू अग्रवाल (2002) द्वारा मानकीकृत व्यक्तित्व परीक्षण का उपयोग किया गया है। यह व्यक्तित्व परीक्षण 13 से 20 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए निर्मित किया गया है। इस परीक्षण में कुल 60 पद हैं। 30 पद अंतर्मुखी एवं 30 पद बहिर्मुखी व्यक्तित्व से संबंधित हैं।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रथम उद्देश्य

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए एक-मार्गीय सह प्रसरण विश्लेषण (One-Way Analysis of Covariance ANCOVA)

तालिका 1

स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्र्यांश	माध्यों का वर्ग	एफ मान	सार्थकता	टिप्पणी	प्रभाव आकार
संशोधित मॉडल	5480.027	2	2740.013	129.330	.000		.654
	4966.805	1	4966.805	234.436	.000		.631
पूर्व-उपलब्धि	184.877	1	184.877	8.726	.004		.060
उपचार	5367.744	1	5367.744	253.360	.000	< 0.01	.649
त्रुटि	2902.509	137	21.186				
कुल योग	224847.000	140					

विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार का प्रभाव

तालिका 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अंग्रेजी व्याकरण की पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर उपचार के समायोजित एफ का मान 253.360 है एवं स्वतंत्र्यांश (1,137) पर सार्थकता मान 0.000 है। यह मान 0.000 < 0.01 से कम है। यह मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना 'विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर (covariate) लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जा सकती है।' अतः हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि से पढ़ाने के पश्चात प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। उक्त परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि से पढ़ाने पर विद्यार्थियों की उपलब्धि के माध्य फलांको में अंतर पाया गया।

तालिका 1 की अंतिम पंक्ति में 'पारशियल ईटा स्कवायर' दर्शाया गया है जो उपचार के प्रभाव आकार का वर्णन करता है। इससे यह पता चलता है कि आश्रित चर के कितने प्रतिशत प्रसरण की व्याख्या करने में स्वतंत्र चर (उपचार) सक्षम हैं। उपचार के प्रभाव आकार का मान .649 है। अतः हम कह सकते है कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के माध्य फलांकों में 64.9 प्रतिशत प्रसरण हेतु उपचार एवं उससे संबंधित त्रुटि उत्तरदायी है।

रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि में से कौन-से समूह के विद्यार्थियों की उपलब्धि उच्च है। इसकी व्याख्या प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांको द्वारा की गई है।

तालिका 2— प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के समायोजित अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि का माध्य फलांक

उपचार	माध्य
प्रयोगात्मक	45.519
नियंत्रित	33.124

तालिका 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक का मान 45.519 है एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक का मान 33.124 है। प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक का मान तुलनात्मक रूप से नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक के मान से सार्थक रूप से अधिक है जिसकी पुष्टि उपचार के प्रभाव आकार से भी होती है। उक्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि कक्षा 9 के विद्यार्थियों को जब रचनावादी शिक्षण के माध्यम से पढ़ाया गया तो परंपरागत विधि से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि से रचनावादी शिक्षण से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि सार्थक रूप से अधिक पाई गई।

उद्देश्य द्वितीय

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध के द्वितीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन हेतु 2 × 2 कारकीय आकल्प सहप्रसरण विश्लेषण (2 × 2 Factorial Design Analysis of Covariance) का उपयोग किया गया है। 2 × 2 कारकीय आकल्प सहप्रसरण विश्लेषण प्रयुक्त करने के पूर्व इसकी सभी अवधारणाओं का परीक्षण किया गया है। सभी अवधारणाओं की पुष्टि होने के पश्चात ही सहप्रसरण विश्लेषण के माध्यम से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। यहाँ उपचार के दो स्तर प्रथम रचनावादी शिक्षण एवं द्वितीय परंपरागत विधि है एवं व्यक्तित्व के भी दो स्तर बहिर्मुखी एवं अंतर्मुखी हैं, इसलिए 2 × 2 कारकीय आकल्प सहप्रसरण विश्लेषण (2 × 2 Factorial Design Analysis of Covariance) का उपयोग किया गया है।

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया के समायोजित माध्य फलांकों की तुलना हेतु द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण का सारांश

तालिका 3

स्त्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्र्यांश	माध्यों का वर्ग	एफ मान	सार्थकता	टिप्पणी	प्रभाव आकार
संशोधित मॉडल	5487.288	4	1371.822	63.966	.000		.655
	4945.103	1	4945.103	230.581	.000		.631
पूर्व-उपलब्धि	182.651	1	182.651	8.517	.004		.059
व्यक्तित्व	.120	1	.120	.006	.941	>0.01	.000

उपचार	5330.024	1	5330.024	248.529	.000	<0.01	.648
उपचार* व्यक्तित्व	7.133	1	7.133	.333	.565	>0.01	.002
त्रुटि	2895.248	135	21.446				
कुलयोग	224847.000	140					

*अंत:क्रिया प्रभाव

विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर व्यक्तित्व का प्रभाव

तालिका 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्र्यांश (1,135) व्यक्तित्व के अनुसार समायोजित एफ का मान .006 एवं सार्थकता का मान .941 है। यह मान .941 > 0.01 से अधिक है। अतः सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना, 'विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर व्यक्तित्व का अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है' अस्वीकृत नहीं की जा सकती है। अतः हम कह सकते है कि बहिर्मुखी एवं अंतर्मुखी विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है जिसकी पुष्टि उपचार के प्रभाव आकार से भी होती है। प्रभाव आकार का मान 0.000 है, जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि फलांकों में व्यक्तित्व का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार का प्रभाव

तालिका 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्र्यांश (1,135) पर उपचार हेतु समायोजित एफ का मान 248.529 एवं सार्थकता मान 0.000 है। यह मान 0.00 < 0.01 से कम है। अतः सार्थकता 0.01 स्तर पर यह मान सार्थक है। इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना 'विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है' अस्वीकृत की जा सकती है अर्थात हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार का सार्थक प्रभाव पड़ता है। उक्त परिणाम की पुष्टि उपचार के प्रभाव आकार से भी होती है। प्रभाव आकार का मान .648 है, इस आधार पर हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि फलांकों में 64.8 प्रतिशत प्रसरण हेतु उपचार एवं उससे संबंधित त्रुटि उत्तरदाई है। अतः हम कह सकते है कि विद्यार्थियों को यदि रचनावादी शिक्षण के माध्यम से पढ़ाया जाए तो अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का प्रभाव

तालिका 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्र्यांश (1,135) पर उपचार एवं व्यक्तित्व की अन्तःक्रिया हेतु समायोजित एफ .333 है एवं

सार्थकता का मान .565। यह मान .565 > 0.01 से अधिक है। अतः सार्थकता के 0.01 स्तर पर यह मान सार्थक नहीं है। इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना 'कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर की विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है'। यहाँ शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जा सकती है। अतः हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार एवं व्यक्तित्व की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उपचार के प्रभाव आकार का मान 0.002 है, जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि .2 प्रतिशत प्रसरण हेतु उपचार तथा व्यक्तित्व एवं इससे संबंधित त्रुटि उत्तरदाई है। जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि विद्याथियों की उपलब्धि निर्धारण में व्यक्तित्व की कोई भूमिका नहीं होती है।

विवेचना

शोध उद्देश्य के अनुरूप प्राप्त परिणामों की विवेचना निम्नलिखित रूप से की गई है—

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों की तुलना करना।

प्रस्तुत शोध के प्रथम उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों को रचनावादी शिक्षण एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों को परंपरागत विधि की सहायता से पढ़ाया गया। उपचार के पश्चात यह पाया गया कि रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। इस आधार पर देखा गया कि जब दोनों समूह के विद्यार्थियों की पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर उपचार दिया गया तो प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के समायोजित माध्य फलांकों में अंतर मिलता है। दोनों समूह में से किस समूह के विद्यार्थियों ने अच्छा निष्पादन किया, इस तथ्य की पुष्टि हेतु दोनों समूह के विद्यार्थियों के समायोजित माध्य फलांकों का अवलोकन किया गया। अवलोकन के पश्चात यह पाया गया कि प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों के माध्य फलांक नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के माध्य फलांक से अधिक हैं। इस तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि जब विद्यार्थियों को अंग्रेजी व्याकरण रचनावादी शिक्षण के माध्यम से पढ़ाया गया तो उनकी उपलब्धि परंपरागत विधि से पढ़ाए गए विद्यार्थियों की उपलब्धि से अधिक थी। पूर्ववर्ती शोध के परिणाम भी हमारे शोध परिणाम के समान ही प्राप्त हुए हैं। कोकसाल (2009), यिजीत (2011), ओझा, आर्य और शेखर (2015), विलनुएवा (2016), देव (2016), नोघाभी और अशरफ (2017), बाड़ोला (2017), शर्मा और पूनम (2017), रामदास और शर्मा (2018), पूनम (2018), मोना (2018), तिवारी और सिरोही (2019), अल्कोगवा और ओफोरमा (2020) ने भी अंग्रेजी भाषा एवं रचानावाद पर शोध किया और शोध परिणाम में पाया गया कि विद्यार्थियों की उपलब्धि पर रचनावादी शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है। उक्त तथ्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी व्याकरण शिक्षण हेतु

रचनावादी शिक्षण का प्रयोग किया जाए तो सार्थक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध के द्वितीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोध परिणाम में पाया गया कि कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उक्त परिणाम की पुष्टि पूर्ववर्ती शोधों से भी होती है। शिंदे (2007) और शर्मा (2013) ने अपने शोध परिणाम में पाया कि पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उक्त परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि यदि हमारी शिक्षण विधि प्रभावी हो तो विद्यार्थी चाहे अंतर्मुखी अथवा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाला हो, उसकी उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध निष्कर्ष

1. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर (covariate) लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर रचनावादी शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक निहितार्थ

अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थी निष्क्रिय होकर ज्ञान अधिग्रहण नहीं कर सकता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी को सक्रियता से भाग लेना चाहिए। रचनावादी शिक्षण में विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सहभागिता हेतु पर्याप्त अवसर दिया जाता है, ताकि वह पूर्व-ज्ञान के आधार पर नए ज्ञान का निर्माण स्वयं कर सके। वह इस ज्ञान का उपयोग अपने दैनिक जीवन में भी करता है, जिससे सार्थक परिणाम प्राप्त हो सकें। यहाँ शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य अंतःक्रिया और शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता ही नहीं करता, बल्कि उनके भ्रम को भी दूर करता है। रचनावादी शिक्षण में विद्यार्थी स्वमूल्यांकन द्वारा अंग्रेजी व्याकरण की त्रुटियों को दूर करने में भी सक्षम हो जाते हैं। रचनावादी शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की पूर्व-सृजित समझ या ज्ञान को समझना अति आवश्यक है। शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक सुविधा प्रदाता की भूमिका का निर्वहन तभी कर सकता है, जब वह अपने विद्यार्थियों के कमजोर एवं मजबूत पहलू को जानता

हो। विद्यार्थी कितना वांछित अधिगम की प्राप्ति करते हैं, यह शिक्षक के अधिगम परिस्थिति के निर्माण एवं नवाचारी अधिगम प्रदत्त कार्यों का कक्षा में अनुप्रयोग के ऊपर निर्भर करता है। सुविधा प्रदाता की भूमिका में शिक्षक को प्रत्येक समूह के विद्यार्थियों का मार्ग निर्देशन करते हुए उनके दैनिक जीवन के अनुभवों तथा पूर्व-सृजित ज्ञान को आधार बनाकर स्वयं को अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनाना चाहिए।

संदर्भ

अल्कोगवा, ए.सी. और जी.सी. ओफोरमा. 2020. इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट बेस्ड इंस्ट्रक्शन मेथड ऑन सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स अचीवमेंट इन इंग्लिश लैंग्वेज एस्से राइटिंग. *जर्नल ऑफ दि नाइजीरियन अकैडमी ऑफ एजुकेशन*. 14(2), पृ.सं. 1–10.

ओझा, एन.सी., आर. आर्य और आर. शेखर. 2015. कंस्ट्रक्टीव एप्रोच एंड ट्रेडिशनल एप्रोच ऑफ टीचिंग इंग्लिश टू क्लास VI इन टर्म्स ऑफ अचीवमेंट ए कम्परेटिव स्टडी. *पेडागॉजी ऑफ लर्निंग*. 1(1), पृ.सं. 25–37.

कोकसाल, एच.ओ. 2009. टीचिंग टेंसेस इन इंग्लिश टू द स्टूडेंट्स ऑफ द सेकेंड स्टेज ऐट प्राइमरी एजुकेशन थ्रू यूजिंग 5E मॉडल इन कन्स्ट्रक्टिविस्ट एप्रोच. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. डिपार्टमेंट ऑफ टर्किश लैंग्वेज, सेलकुक यूनिवर्सिटी, केन्या.

तिवारी, आर. और एस. सिरोही. 2019. इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट एप्रोच इन टीचिंग इंग्लिश ग्रामर टू स्कूल लेवल मेल स्टूडेंट्स ऑफ जबलपुर डिस्ट्रिक्ट. *जर्नल ऑफ. डी.ओ.आई.* 44975451.

नोघाभी, एन.जी. और एच. अशरफ. 2017. इफेक्ट ऑफ इंप्लिमैन्टेशन ऑफ 5E टीचिंग मॉडल ऑन ईरानियन ई.एफ़.एल. लर्नर्स लिस्निंग एंड स्पीकिंग स्किल्स. *ई-प्रोसीडिंग ऑफ द 5th ग्लोबल सम्मिट ऑन एजुकेशन जी.एस.इ.* http://worldconferences.net/

पूनम. 2018. इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट इंस्ट्रक्शनल मॉडल ऑन अचीवमेंट एंड रिटेंशन ऑफ हाईस्कूल स्टूडेंट्स इन इंग्लिश. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा.

बाड़ोला, के. 2017. करेक्टरिस्टिक ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट क्लासरूम ऑफ इंग्लिश एजुकेशन. *शिक्षा शोध मंथन*. 4(1), पृ.सं. 180–185.

मोना. 2018. इफेक्ट ऑफ कोऑपरेटिव लर्निंग ऑन पीयर ग्रुप रिलेशन, सेल्फ कॉन्फिडेंस एंड अचीवमेंट इन इंग्लिश ग्रामर ऑफ 9थ क्लास स्टूडेंट्स. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा.

यिजीत, सी. 2011. दी इफेक्ट ऑफ 5E टीचिंग मॉडल इन राईटिंग ऑन अचीवमेंट एंड मोटीवेशन. *मास्टर थेसिस*. फॉरेन लैंग्वेज टीचिंग डिपार्टमेंट, टर्की यूनिवर्सिटी, टर्की.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

रामदास, वी. और जे. शर्मा. 2018. इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट एप्रोच बेस्ड टीचिंग स्ट्रेटेजी ऑन स्टूडेंट्स लिस्निंग स्किल इन इंग्लिश एट सेकेंडरी लेवल. *इंटरनेशनल इनवेंटिव मल्टीडिसीप्लिनरी जर्नल*. 6(2). पृ.सं. 118–124.

लाल, आर.बी. 2013. *भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ*. रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ.

विलनुएवा, एल.बी. 2016. दि इफेक्ट ऑफ कन्सट्रक्टिविस्ट एप्रोच इन टीचिंग शॉर्ट स्टोरीज एंड पोयम्स टू द इंग्लिश परफॉरमेंस ऑफ स्टूडेंट्स. *रिसर्चस वर्ल्ड*. 7(1), पृ.सं. 8–19.

शर्मा, एच. 2013. एफेक्टीवनेस ऑफ वीडियो इंस्ट्रक्शनल मटेरियल इन एजुकेशनल साइकोलॉजी इन टर्म्स ऑफ अचीवमेंट एंड रिएक्शन टुवर्ड्स डेवलप्ड मटेरियल ऑफ बी.एड स्टूडेंट्स ऑफ मध्य प्रदेश. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. शिक्षा विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, मध्य प्रदेश.

शर्मा, एच.एल. और पूनम. 2016. कन्स्ट्रक्टिविस्ट एप्रोच फॉर टीचिंग इंग्लिश : मेकिंग सेंस ऑफ पैराडाइम शिफ्ट फ्रॉम द ट्रेडीशनल एप्रोच. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च*. 5(10). पृ.सं. 788–792.

शिंदे, एल. 2007. एफेक्टीवनेस ऑफ वीडियो इंस्ट्रक्शनल मटेरियल ऑन रिसर्च मैथेडोलॉजी एंड स्टेटिस्टिक्स इन टर्म्स ऑफ अचीवमेंट एंड रिएक्शन टुवर्ड्स इट ऑफ पोस्टग्रेजुएट स्टूडेंट्स. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. शिक्षा विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, मध्य प्रदेश.

10

प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान और नैतिकता के समावेशन की आवश्यकता दर्शाती कलाम साहब की *तेजस्वी मन*

पूर्णिमा पाण्डेय*
दीपा मेहता**

वर्तमान समय में कोरोना महामारी ने जिस तरह से हमारे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक वातावरण को प्रभावित किया है, कहीं न कहीं यह महामारी मानव जीवन के लक्ष्य एवं आवश्यकताओं को पुनर्संरचित एवं पुनर्स्थापित करने की ओर इशारा करती है। इसके साथ ही, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, जनसंख्या वृद्धि, पर्यावरण प्रदूषण, मानवीय एवं नैतिक मूल्य में गिरावट, हमारे शैक्षिक उद्देश्यों, शैक्षिक पाठ्यक्रम एवं शिक्षा-प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन की नितांत आवश्यकता को दर्शाती है। मौजूदा समय में जिस तरह से शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाने एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति का जरिया बन कर रह गया है, ऐसी परिस्थिति में शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास में सहायक न होकर अवरोधक ही बन रही है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों, गतिविधियों एवं अध्यापन शैलियों में परिवर्तन किया जाए। शिक्षा को विज्ञान और तकनीकी के साथ-साथ आध्यात्मिक और नैतिक विकास की प्रक्रिया में भी एक मजबूत सहायक प्रणाली के रूप में उभरकर सामने आना होगा; क्योंकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य विज्ञान, तकनीकी, आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी विकास के साथ-साथ मानवीय आचरण में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का समावेशन करना भी है। इसी क्रम में, भारत के पूर्व-राष्ट्रपति अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'तेजस्वी मन' हमारी वर्तमान शिक्षा-नीतियों, पाठ्यचर्या, विद्यालयी-पाठ्यक्रम के साथ-साथ प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों, माता-पिता, अभिभावकों के लिए मार्ग-प्रशस्त करती है कि बालक-बालिकाओं में विज्ञान व तकनीकी ज्ञान के साथ ही चारित्रिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का विकास किस प्रकार किया जाए? यह पुस्तक विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर से ही देश-प्रेम, देश-रक्षा, भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों, जैसे— सत्य, त्याग, समर्पण, कर्तव्यनिष्ठता, ईमानदारी, समानता, एकता को अपने व्यवहार में समावेशित करने पर बल देती है। अतः यह पुस्तक प्राथमिक शिक्षकों के साथ-साथ नीति निर्माताओं, विद्यालय प्रशासकों, एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों को प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान और नैतिकता के समावेशन की परिपाटी बुनने के लिए प्रेरित एवं मार्गदर्शित करती है।

* *व्याख्याता*, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, रोहतास, सासाराम 821 115

** *असोसिएट प्रोफेसर*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 221 010

अबुल पकिर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम भारत के पूर्व-राष्ट्रपति, प्रसिद्ध वैज्ञानिक, अभियंता तथा मिसाइल-मैन के रूप में विख्यात हैं। वे मुख्यतः एक वैज्ञानिक के रूप में चार दशकों तक रक्षा-अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (आई.एस.आर.ओ.) में कार्यरत थे। उन्होंने शिक्षा, विज्ञान, लेखन, सार्वजनिक-सेवा आदि में विशेष योगदान की वजह से 'भारत रत्न' सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किए। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक *तेजस्वी मन* मुख्यतः भारत की कुछ गंभीर समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए विकसित भारत के स्वप्न को पूर्ण करने का एक प्रयास है। यह पुस्तक 12वीं कक्षा की छात्रा 'स्नेहल ठक्कर' को समर्पित है, जिससे कलाम जी एक विद्यालय में मिले थे। आनंदालय हाईस्कूल में बच्चों से बातचीत के दौरान एक प्रश्न उठा— "हमारा दुश्मन कौन है?"

कलाम जी को कई बच्चों ने जवाब दिया, परंतु उन सभी जवाबों में 'स्नेहल ठक्कर' द्वारा दिया गया जवाब सबसे उपयुक्त था, जो है "गरीबी ही हमारा सबसे बड़ा शत्रु है।"

तेजस्वी मन पुस्तक को नौ अध्यायों में आयोजित किया गया है, जो विभिन्न ज्वलंत विचारों, मूल्यों एवं समकालीन मुद्दों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हैं। नौ अध्याय निम्नवत हैं—

1. स्वप्न और संदेश
2. हमें हमारा आदर्श दो
3. समर्पित अध्यापक, साधक वैज्ञानिक
4. सत्संग की शक्ति
5. राजनीति तथा धर्म से परे देशभक्ति
6. ज्ञानवान समाज
7. ताकतों को एकजुट करना
8. नए राज्य का निर्माण
9. मेरे देशवासियों के नाम

उपर्युक्त नौ अध्यायों में कलाम जी द्वारा कई विषयों को शामिल किया गया है।

प्रथम अध्याय 'स्वप्न और संदेश'

इस अध्याय में अहिंसा, शांति, प्रेम, प्रसन्नता, आनंद, मानवता, त्याग जैसे मूल्यों का मानव-जीवन में आवश्यकता एवं उपादेयता का उदाहरण सहित वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिए, कलाम जी ने 'त्याग-मूल्य' को इन शब्दों में वर्णित किया है— "मैं हमेशा ही प्रकृति के नजदीक रहा हूँ और उसे हमेशा एक दोस्त की तरह पाया है, जो बगैर किसी संकोच के बस देना ही जानती है, आम के उस पेड़ की तरह जिस पर लोग पत्थर फेंकते हैं, उसकी शाखाओं को तोड़ डालते हैं, मगर इसके बावजूद वह थके-हारे मुसाफिरों को छांव और भूखों को फल देता है..." (पृ.सं. 20–21)। अतः प्रारंभिक स्तर पर बालक-बालिकाओं को शिक्षक द्वारा प्राकृतिक वातावरण में रहते हुए प्रकृति को ही माध्यम बना कर विभिन्न विषयों को पढ़ाया जाना चाहिए। प्रकृति की भाँति, अपने अंदर से अहंकार, लालच, ईर्ष्या, नफरत, क्रूरता, लोभ, भय, चिंता आदि को दूर करके स्व-व्यवहार में नैतिक एवं मानवीय-मूल्यों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

द्वितीय अध्याय 'हमें हमारा आदर्श दो'

द्वितीय अध्याय में कलाम जी द्वारा देशभर के विद्यार्थियों से वार्तालाप पर आधारित है। इस अध्याय में पूर्व-राष्ट्रपति जी आध्यात्मिक एवं भौतिक संपदाओं के मध्य संतुलन की बात करते हुए बच्चों के लिए उनके आदर्श के बारे में अपनी स्पष्ट राय प्रकट करते हैं। उनके अनुसार, बच्चों के माता-पिता, अभिभावकों तथा अध्यापकों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है, क्योंकि बच्चों में सार्वभौमिक मूल्यों (सत्य, अहिंसा, प्रेम, सदाचरण, शांति) पर आधारित संपूर्ण-विकास की प्रक्रिया में अभिभावकों एवं अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कलाम जी के शब्दों में, "मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि अगर अभिभावक और अध्यापक युवाओं का जीवन संवारने के लिए आवश्यक समर्पण की भावना रखें तो भारत को एक नया जीवन मिल सकता है। जैसा कि कहा भी गया है— अभिभावकों के पीछे स्कूल खड़ा होता है और अध्यापक के पीछे होता है घर" (पृ.सं. 31–32)। बालकों में मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों को कोई कानून या नियम नहीं विकसित कर सकता है। मूल्यों के समावेशन के लिए माता-पिता, परिवार, संबंधियों तथा अध्यापकगण को अपनी उचित भूमिका निभानी पड़ेगी।

तीसरे अध्याय 'समर्पित अध्यापक, साधक वैज्ञानिक'

तीसरे अध्याय में भारत के प्रसिद्ध अध्यापकों, विचारकों, विद्वानों, गणितज्ञों, मनीषियों, भौतिक विज्ञानियों, समाज-सेवकों आदि के कार्यों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इनके संक्षिप्त परिचय द्वारा कलाम जी प्रत्येक देशवासियों को यह संकेत देना चाहते हैं कि वर्तमान में ऐसे ही महापुरुषों एवं विद्वानों की आवश्यकता है, तभी देश के अंदर मौजूद गरीबी, भ्रष्टाचार, असमानता, द्वेष, सांप्रदायिक, हिंसा को सदैव के लिए समाप्त करके भारत को एक विकसित तथा गुणवत्तापूर्ण राष्ट्र के रूप में स्थापित किया जा सकता है। अतः अभिभावकों, माता-पिता एवं शिक्षकों की यह जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को शुरू से ही स्व-विकास के साथ-साथ अपने समाज, देश एवं पर्यावरण के प्रति भी संवेदनशील बनाएँ, ताकि उनमें निःस्वार्थता, त्याग और सेवा के गुण विकसित हो सकें।

चतुर्थ अध्याय 'सत्संग की शक्ति'

चौथे अध्याय में कलाम जी ने विज्ञान तथा आध्यात्मिकता के मध्य संतुलन व समन्वयन की आवश्यकता पर भी वृहद एवं स्पष्ट रूप में अपने विचारों का सचित्र प्रस्तुतीकरण किया है। वर्तमान समय में, विश्व विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी-क्षेत्रों में निरंतर विकास तो कर रहा है, परंतु दूसरी तरफ नैतिक व मानवीय मूल्यों का अनवरत ह्रास हो रहा है। तकनीकी एवं भौतिक संसाधनों के विकास की अंधी दौड़ में मानव आध्यात्मिकता, मानवता एवं नैतिकता से मुख मोड़ चुका है। अतः कलाम जी ने सभी का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिए इस अध्याय में कई संतों से अपने वार्तालाप के अनुभवों को साझा किया है, जिसमें प्रमुख रूप से स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज से हुई वार्ता बहुत ही प्रभावशाली एवं प्रेरक है, जो मानव-जीवन में

आध्यात्मिक ज्ञान की महत्ता पर प्रकाश डालता है। आध्यात्मिक ज्ञान होने पर स्वतः ही व्यक्ति में अपने देश, समाज और धर्म के प्रति प्रेम एवं जिम्मेदारी का भाव विकसित हो जाता है। अतः यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम भारतीय शिक्षा प्रणाली में पुनः प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान को आत्मसात किया जाए, तथा प्राथमिक शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं विद्यालय प्रशासकों को प्रशिक्षित किया जाए। इस परिप्रेक्ष्य में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 भी भारतीय स्वदेशी पारंपरिक ज्ञान प्रणाली (Indigenous Traditional Knowledge System) को विद्यालयी पाठ्यक्रम में संरक्षित और अंगीकृत करने पर बल देती है। कलाम जी के अनुसार शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सूचना-संचार, ढाँचागत प्रौद्योगिकी विकास के लिए ईमानदार, नैतिक व मानवीय मूल्यों से प्रेरित लोगों की आवश्यकता होगी। ऐसे मूल्यवान एवं नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण नागरिकों का निर्माण आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा द्वारा ही हो सकता है। अतः एक उन्नत व समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण के लिए आध्यात्मिक ज्ञान के धरातल पर ही विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का विकास होना चाहिए, क्योंकि तभी वास्तव में विज्ञान संपूर्ण प्राणी-जगत के लिए वरदान साबित होगा।

पाँचवाँ अध्याय 'राजनीति तथा धर्म से परे देशभक्ति'

पाँचवे अध्याय में कलाम जी ने भारत की विविधता तथा विभिन्नता की व्याख्या करते हुए, देशवासियों की आत्मा में देश के प्रति प्रेम, बलिदान, धार्मिक-सहिष्णुता की भावना एवं एकता जैसे मूल्यों को आवश्यक बताया है। कलाम जी के अनुसार, भारत देश को सबसे ज्यादा खतरा उन विचारकों से है, जो जनता को धार्मिक दंगे, सांप्रदायिक हिंसा, जातिगत समीकरण, लैंगिक भेदभाव, क्षेत्रवाद आदि के आधार पर विभाजित करना चाहते हैं। अतः हमारे देश के विकास के लिए बालकों में ऐसी व्यापक दृष्टि की आवश्यकता है, जिससे सभी के अंदर अपने देश के प्रति त्याग एवं प्रेम के साथ-साथ एकता एवं भाईचारे को पुष्पित एवं पल्लवित किया जा सके।

छठा अध्याय 'ज्ञानवान समाज'

छठे अध्याय में कलाम जी ने ज्ञान के रूपों पर चर्चा करते हुए ज्ञान को "हमेशा से समृद्धि व ताकत का स्त्रोत" बताया। ज्ञानवान समाज के निर्माण के लिए विविध प्रौद्योगिकी, समुचित प्रबंधन-प्रणाली, न्यायप्रिय प्रशासनिक प्रणाली, सुचारु दूरसंचार संपर्क व्यवस्था, संसाधनों से परिपूर्ण कृषि-व्यवस्था, रोजग़ारपरक व मूल्यपरक शैक्षिक-व्यवस्था आदि का होना बेहद जरूरी है, क्योंकि यही विशेषताएँ देश के नागरिकों को ज्ञानवान बनाती हैं तथा देश के ज्ञानवान नागरिक अपनी योग्यता और सेवा-भाव से अपने राष्ट्र एवं समाज को ज्ञानवान बनाते हैं।

सातवाँ अध्याय 'ताकतों को एकजुट करना'

सातवें अध्याय में कलाम जी ने पाँच क्षेत्रों के एकीकरण एवं समन्वयन को देश की सफलता की कुंजी बताया है। यह पाँच क्षेत्र हैं—

(1) कृषि तथा खाद्य प्रसंस्करण; (2) बिजली; (3) शिक्षा और स्वास्थ्य रक्षा; (4) सूचना प्रौद्योगिकी; (5) परमाणु अंतरिक्ष तथा रक्षा प्रौद्योगिकी।

विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए उपरोक्त पाँचो क्षेत्रों में संवृद्ध विकास कार्यक्रमों, जागरूकता अभियान तथा एकीकृत कार्य प्रणाली के आधार पर खाद्यान्न, आर्थिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। देश के विकास एवं प्रगति के लिए इन सभी क्षेत्रों में मिशन-भाव से प्रत्येक नागरिक को क्षमतानुसार अपनी सहभागिता देनी होगी। अतः प्रारंभिक स्तर से ही विद्यार्थियों को अपने स्थानीय क्षेत्रों से संबंधित कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, बिजली-उत्पादन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, सूचना प्रौद्योगिकी आदि की मूलभूत जानकारी दी जानी चाहिए, जिससे उनमें शुरू से ही इन क्षेत्रों के प्रति रुचि, समझ और जागरूकता विकसित हो सके। तब जाकर ऐसे विद्यार्थी भविष्य में एक अच्छे कृषक, शिक्षक, व्यवसायी, वैज्ञानिक एवं अंतरिक्षयात्री बन सकेंगे।

आठवाँ अध्याय 'नए राज्य का निर्माण'

आठवें अध्याय में कलाम जी ने भारत की एक प्रमुख समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। प्राकृतिक संपदा, संसाधनों, शक्ति एवं सौंदर्य से परिपूर्ण होने के बावजूद, भारत एक गरीब देश है; क्योंकि हमारे देश में मूल्यवर्धन पर ध्यान नहीं दिया जाता है। हम खनिज पदार्थों एवं अयस्कों को आवश्यक-उत्पाद में बदलने की जगह कच्चे माल के रूप में विदेशों को निर्यात कर देते हैं। अतः विकास की रफ्तार को बढ़ाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है। सफलता-असफलता की सोच से ऊपर उठकर हमें कार्य करने के लिए जोखिम लेने की आवश्यकता है, तभी सफलता हमारे कदम चूमेगी। यह तभी संभव होगा, जब हम अपने विद्यालयों में विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ स्थानीय व्यावसायिक-कौशलों में भी प्रशिक्षित करेंगें।

नौवाँ अध्याय 'मेरे देशवासियों के नाम'

नौवें अध्याय में कलाम जी ने भावी-भारत की कल्पना की है। ऐसा भारत, जो गरीबी, असमानता, निरक्षरता, भ्रष्टाचार आदि बुराइयों से मुक्त हो, स्वतंत्र हो। विद्यार्थियों को प्रारंभ से ही भेदभाव एवं असमानता से रहित ऐसा स्वस्थ वातावरण दिया जाना चाहिए, जिससे वे एकता एवं सौहार्द्र को अपना सकें। ऐसा भारत, जहाँ श्रेष्ठ नेता शासन-तंत्र पर आसीन हो। ऐसा भारत, जहाँ शांति एवं समृद्धि विद्यमान हो। ऐसा भारत, जहाँ सभी देशवासी मिलजुल कर रहें एवं देश की प्रगति एवं देश-हित में निरंतर प्रयासरत रहें। ऐसे भारत का आगाज हमारे विद्यालयों, बालक-बालिकाओं, शिक्षकों, अभिभावकों एवं माता-पिता के सहयोग से ही संभव हो पाएगा। अतः कलाम साहब की '*तेजस्वी मन*' पुस्तक की शुरुआत ही एक विद्यालय में बच्चों से बातचीत से होती है।

तेजस्वी मन पुस्तक के माध्यम से ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने वास्तविक रूप में भारत के प्रत्येक शिक्षक तथा प्रत्येक विद्यार्थी के मन एवं हृदय को तेजवान, ऊर्जावान एवं ओजवान बनाने का अथक प्रयास किया है। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को देश से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों एवं क्षेत्रों के बारें में व्यवस्थित तरीके से परिचित कराया है। इस पुस्तक

के माध्यम से, कलाम जी ने भारत के लोगों के समक्ष 'जय जवान-जय किसान-जय विज्ञान-जय अध्यात्म' के घोष को मूर्त रूप में प्रस्तुत किया है। साथ ही, यह भी मार्ग प्रशस्त किया है कि जीवन में किसी मंजिल पर पहुँचने के लिए सादगी, साधुतत्व एवं तप-भाव से ही लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यदि भारत को एक समृद्ध और विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित होना है, तो प्रत्येक नागरिक को पूर्ण सुसज्जित तरीके से निष्ठावान होकर सतत एवं निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है, क्योंकि संक्षिप्त-मार्ग से देश की प्रगति और सफलता सुनिश्चित नहीं की जा सकती। कलाम जी ने अपनी पुस्तक के माध्यम से विज्ञान तथा नैतिकता के मध्य संतुलन व समन्वयन के संदर्भ में स्पष्टतः यह बताया है कि एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, विज्ञान, तकनीकी के पंखों से तो हो सकता है, परंतु उस पंछी का मन, हृदय एवं चरित्र मूल्यवान एवं नीतिवान होना चाहिए।

निष्कर्ष

अंततः हम यह कह सकते हैं कि पेड़ की शाखाएं चाहे जितनी भी प्रौद्योगिकी, विज्ञान, तकनीकी की पत्तियों से हरी-भरी हों, परंतु उसकी जड़ें सदा ही मूल्यों एवं नीतिवान आदर्शों से ही सिंचित एवं सृजित होनी चाहिए, तभी वह संपूर्ण देश एवं विश्व के लिए कल्याणकारी एवं शुभकारी होगा। अतः हमें अपने विद्यार्थियों में विज्ञान व तकनीकी ज्ञान के साथ ही चारित्रिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान को सिंचित और विकसित करना होगा।

संदर्भ

कलाम, ए.पी.जे.ए. 2016. *इग्नायटेड माइंड्स : अनलिशिंग द पावर विदिन इंडिया*. पेंग्विन बुक्स, भारत.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय. भारत सरकार, नई दिल्ली.

11

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के इंटर्नशिप के दौरान उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन

डिगर सिंह फर्स्वाण*
किरन सती**

अध्यापक का स्थान शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों— अध्यापक, विद्यार्थी व पाठ्यवस्तु में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। एक अच्छा अभ्यास-शिक्षण (इंटर्नशिप) सदैव अपने प्रशिक्षणार्थियों में विशेष प्रशिक्षण कौशलों में निपुणता प्रदान करता है। शिक्षण कौशल शिक्षक के हाथ में वह शस्त्र है जिसका प्रयोग करके शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली तथा सक्रिय बनाने का प्रयास करता है तथा कक्षा की अंतःक्रिया में सुधार लाने का प्रयास करता है। इस शोधपत्र में विद्यार्थी-शिक्षकों में कौशलयुक्त शिक्षा प्राप्त करने एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रवीणता लाने में आने वाली विभिन्न समस्याओं एवं तत्संबंधी तथ्यों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इस शोध अध्ययन की विधि सर्वेक्षण विधि है। इसमें उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में आम्रपाली इंस्टिट्यूट, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड में सत्र 2021–2022 में अध्ययनरत बी.एड. के 73 विद्यार्थी-शिक्षकों का चयन किया गया। शोध उपकरण के रूप में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित अभ्यास शिक्षण सूचना-पत्र का प्रयोग किया गया, जिसमें शिक्षण कौशलों के प्रयोग तथा उनके प्रयोग के समय उत्पन्न होने वाली समस्याओं से संबंधित प्रश्न थे। इस शोध अध्ययन में निष्कर्षतः पाया गया कि विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास-शिक्षण के दौरान शिक्षण कौशलों का प्रयोग करने में सर्वाधिक समस्या प्रस्तावना प्रश्न निर्माण से आती है। इसके अतिरिक्त प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में, कक्षा-कक्ष में बच्चों से, पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में तथा आधुनिक तकनीकी की सुविधा से भी विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या का सामना करना पड़ता है। शिक्षण कौशलों के ज्ञान का अभाव व उनकी सभी जगह पर प्रस्तुतीकरण का पर्याप्त अभ्यास न होना भी समस्या उत्पन्न करता है। इन समस्याओं का मुख्य कारण पर्याप्त विषय ज्ञान का अभाव, आत्मविश्वास की कमी, प्रशिक्षण संस्थानों में योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, अभ्यास शिक्षण हेतु पर्याप्त समय न मिल पाना, क्योंकि संस्थान के पास प्रशिक्षण हेतु स्वयं के विद्यालय नहीं होते हैं, उन्हें इंटर्नशिप हेतु बाहर के विद्यालयों में जाना पड़ता है जहाँ पर पर्याप्त व व्यवस्थित प्रशिक्षण संपन्न कराना संभव नहीं हो पाता है।

*_एसोसिएट प्रोफेसर_, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड 263 139

** _सहायक प्राध्यापक_, बी.एड. विभाग, आम्रपाली इंस्टिट्यूट, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड

शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा प्रक्रिया का महत्वपूर्ण भाग होता है। एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण के द्वारा प्रशिक्षित शिक्षक एक व्यक्ति को कुशल नागरिक बनाने में सक्षम होता है। शिक्षक वह प्रकाश है जो सभी की जिंदगी में रोशनी भर देता है। शिक्षक एक मोमबत्ती रूपी ज्ञान का उजाला है जो विद्यार्थी को अँधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है। शिक्षक की भूमिका किसी से छिपी नहीं है। शिक्षक अपनी शिक्षा के जरिये व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माण करता है। उसकी शिक्षा की वजह से व्यक्ति में आत्मविश्वास का संचार होता है जिसकी वजह से वह अपनी जिंदगी में कुछ कर गुजरने की चाहत रखता है। शिक्षक एक खूबसूरत आईने की तरह है जिससे व्यक्ति अपने वजूद की पहचान कर पाता है। शिक्षा वह मजबूत ताकत है जिससे हम समाज को सकारात्मक बदलाव की ओर ले जा सकते हैं। भारत में शिक्षक-शिक्षा नीति को समय के हिसाब से निरूपित किया गया है और यह शिक्षा समितियों तथा आयोगों की विभिन्न रिपोर्टों में निहित सिफारिशों पर आधारित है, जिनमें से महत्वपूर्ण हैं— कोठारी आयोग (1966), चट्टोपाध्याय समिति (1985), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई. 1986 तथा पी.ओ.ए. 1992), आचार्य राममूर्ति समिति (1990), यशपाल समिति (1993) एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ. 2005)। नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार (आर.टी.ई.) अधिनियम, 2009 जो 1 अप्रैल, 2010 से लागू हुआ, का देश में शिक्षक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर जोर देते हुए स्पष्ट किया गया है कि अगली पीढ़ी को आकार देने वाले शिक्षकों के निर्माण में अध्यापक शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को तैयार करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण और ज्ञान की आवश्यकता के साथ-साथ बेहतरीन प्रशिक्षकों के निर्देशन में मान्यताओं और मूल्यों के निर्माण के साथ ही साथ उनके उचित अभ्यास की भी आवश्यकता होती है।

उच्चतम न्यायालय द्वारा गठित न्यायमूर्ति जे.एस.वर्मा आयोग (2012) के अनुसार स्टैंड-अलोन टी.ई.आई., जिनकी संख्या 10,000 से अधिक है, अध्यापक शिक्षा के प्रति लेशमात्र गंभीरता से प्रयास नहीं कर रहे हैं। अतः इस सेक्टर और इसकी नियामक प्रणालियों में महत्वपूर्ण कार्यवाहियों के द्वारा पुनरुद्धार की तात्कालिक आवश्यकता है जिससे कि गुणवत्ता के उच्चतर मानकों को निर्धारित किया जा सके और शिक्षक शिक्षा प्रणाली में अखंडता, विश्वसनीयता, प्रभाविता और उच्चतर गुणवत्ता को बहाल किया जा सके। कोठारी आयोग (1964–1966) ने अपने प्रतिवेदन "शिक्षा तथा राष्ट्रीय विकास" में स्पष्ट किया है कि शिक्षा के स्तर तथा राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के योगदान की जितनी भी बातें प्रभावित करती हैं, उनमें अध्यापक के गुण, क्षमता व चरित्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। एक शिक्षक हमेशा शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करने तथा अपने कार्य की उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध रहता है। हमारा वर्तमान समाज परिवर्तन व विकास के एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है, ऐसी परिस्थिति में शिक्षक का

उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि शिक्षकों के ऊपर ही समाज तथा राष्ट्र के भावी निर्माताओं को तैयार करने का दायित्व होता है। एक अच्छा शिक्षक प्रशिक्षण सदैव अपनी प्रशिक्षण स्थिति में विशिष्ट शिक्षण कौशल में निपुणता प्रदान करता है। एक छात्राध्यापक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह शिक्षण कौशलों का अर्थ समझे, उनकी धारणाओं से परिचित हो और उन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने में समर्थ हो, तभी वह एक अच्छा व निपुण शिक्षक बन सकता है। कोठारी आयोग (1964–1966) में शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करने पर बल दिया गया था। आयोग का मत था कि शिक्षक-शिक्षा को एक तरफ विश्वविद्यालयों की अकादमिक मुख्यधारा में और दूसरी ओर स्कूली जीवन तथा शैक्षिक विकास में लाने की बात पर जोर दिया जाए। शिक्षण-कौशल शिक्षण व्यवहारों से संबंधित वह स्वरूप है जो कक्षा की अंतःक्रिया द्वारा उन विशिष्ट परिस्थितियों को जन्म देता है जो शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती हैं और विद्यार्थियों को सीखने में सुगमता प्रदान करती हैं। एक शिक्षक केवल ऐसा व्यक्ति नहीं होता है कि वह दूसरों की शिक्षा हेतु परिस्थिति उत्पन्न कर सके, अपितु अपने शिक्षण कार्य में कुशलता एवं दक्षता भी विकसित करता है। वह सीखता ही नहीं है, अपितु स्वयं भी अभ्यास से व्यवसाय कौशल को विकसित कर लेता है। एक शिक्षक को प्रभावी शिक्षण के लिए अनेक कौशलों को सीखने तथा उनका समुचित प्रयोग करने की दक्षता हासिल करने की योग्यता विकसित करने की आवश्यकता होती है। दक्षता या क्षमता आवश्यक कौशल ज्ञान के वर्णन से मिलकर निर्मित होते हैं। वास्तविक संसार में दृष्टिकोण और व्यवहार में प्रभाव प्रदर्शन अति आवश्यक है। क्षमता-आधारित शिक्षा परिवार, समुदाय, वयस्कों व कार्यस्थल के लिए आवश्यक है।

शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षक जो विभिन्न विषयों, जैसे— विज्ञान, मानविकी, वाणिज्य व अन्य विषयों की पृष्ठभूमि से जुड़े होते हैं। इन्हें शिक्षा पाठ्यक्रम के अंतर्गत नवीन विषय, जैसे— शिक्षा दर्शन, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा तकनीकी, शिक्षा प्रबंधन, शिक्षा का इतिहास, लैंगिक असमानता आदि विषयों का अध्ययन करना पड़ता है, यह सभी विषय शिक्षक प्रशिक्षण के अभिन्न अंग हैं, जिनका ज्ञान एक शिक्षक को होना आवश्यक है। इन विषयों के ज्ञान के अभाव में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती है। इन विषयों के साथ-साथ शिक्षक प्रशिक्षण में अभ्यास शिक्षण का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके द्वारा वह विभिन्न शिक्षण कौशलों का ज्ञान प्राप्त करता है। इस क्षेत्र में विद्यार्थी-शिक्षकों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों को अनेक शिक्षण कौशलों को सीखना होता है, तथा उनका प्रस्तुतीकरण करना पड़ता है। विभिन्न कौशलों के विकास हेतु पाठ योजना का निर्माण करना होता है, जिसे विभिन्न शिक्षण विधियों के सहयोग से विकसित किया जाता है। पाठ योजना में प्रस्तावना प्रश्नों का निर्माण, समस्यात्मक प्रश्न का निर्माण, संपूर्ण पाठ योजना में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का निर्माण, जैसे— विकासात्मक प्रश्न, बोध प्रश्न, पुनरावृत्ति प्रश्न

निर्माण विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहता है। व्याख्या लिखना तथा उसको प्रस्तुत करने में भी विद्यार्थी-शिक्षकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त उद्देश्यों का चयन, शिक्षण सहायक सामग्री निर्माण तथा प्रस्तुतीकरण कार्य भी कम चुनौतीपूर्ण नहीं रहता है। कक्षा-प्रबंधन तथा अनुशासन, बच्चों की सहायता से विषयवस्तु को विकसित करना, प्रकरण का चयन तथा बच्चों में विषयवस्तु के प्रति रोचकता जैसे कार्यों में विद्यार्थी-शिक्षकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है।

वस्तुतः शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसी प्रशिक्षण के द्वारा विद्यार्थी-शिक्षकों को शिक्षण की बारीकियाँ सीखने का अवसर प्राप्त होता है तथा वह शिक्षण में दक्षता हासिल करने में सफल होता है। जिसके द्वारा उसमें शैक्षिक-सामाजिक अनुशासन, लगनशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, समय का सदुपयोग, व्यावहारिकता जैसे गुणों का विकास होता है। ज्ञान को रोचक एवं सुबोध बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों की शिक्षा का संबंध उनकी अधिकाधिक ज्ञानेंद्रियों के साथ हो, क्योंकि ज्ञानेंद्रियाँ ज्ञान के द्वार होते हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है। इससे सैद्धांतिक, मौखिक एवं नीरस पाठ शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से अधिक स्वाभाविक, मनोरंजक, उपयोगी तथा रुचिकर बनाया जा सकता है। सहायक सामग्री का उद्देश्य श्रवण एवं दृष्टि की ज्ञानेंद्रियों को सक्रिय बनाकर ज्ञान ग्रहण करने के मार्ग खोल देता है।

शिक्षण सहायक सामग्री को विषयवस्तु से संबंधित करना, आकर्षक तथा रुचि पैदा करने वाला बनाना तथा उसे उपयुक्त समय पर प्रस्तुत करना, उसे प्रभावपूर्ण ढँग से प्रस्तुत करना भी विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है। जब तक शिक्षण-सहायक सामग्री को उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत नहीं किया जाएगा, तब तक शिक्षण के सकारात्मक परिणाम को प्राप्त किया जाना संभव नहीं होगा। विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास शिक्षण के दौरान विभिन्न कौशलों के विकास तथा उनके समुचित प्रयोग में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अतः यहाँ महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि शिक्षण को प्रभावी कैसे बनाया जाए? शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए विषय का ज्ञान, आत्मविश्वास का विकास तथा कौशलों का ज्ञान होना आवश्यक है। अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों को कई बिंदुओं के साथ सामंजस्य स्थापित करना होता है, जैसे— कक्षा प्रबंधन तथा अनुशासन, बच्चों की सहभागिता, शिक्षण-कौशलों का समुचित प्रयोग, शिक्षण-अधिगम सामग्री का यथासमय प्रयोग, विषयवस्तु में नियंत्रण, रोचकता, आत्मविश्वास आदि।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे—

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के इंटर्नशिप के दौरान पाठ योजना निर्माण में कौशलों के लेखन में समस्या का अध्ययन।
2. शिक्षण-कौशलों के प्रयोग के समय उत्पन्न समस्या का अध्ययन।
3. कक्षा-अनुशासन में उत्पन्न समस्या का अध्ययन।

4. संपूर्ण इंटर्नशिप के दौरान उत्पन्न समस्या का अध्ययन।
5. स्कूल इंटर्नशिप की अवधि में प्राप्त सुविधाओं से उत्पन्न सर्वाधिक समस्या का अध्ययन।

विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति सर्वेक्षण विधि है।

प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के रूप में आम्रपाली इंस्टिट्यूट, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड में सत्र 2021–2022 में अध्ययनरत बी.एड. विभाग के 73 प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया था। इसका चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि से किया गया था।

उपकरण

इस शोध अध्ययन हेतु स्वनिर्मित इंटर्नशिप सूचना पत्र का प्रयोग किया गया। उपकरण में शिक्षण कौशल के प्रयोग तथा उनके प्रयोग के दौरान उत्पन्न होने वाली समस्याओं से संबंधित प्रश्न थे। साथ ही इंटर्नशिप के दौरान कौन-कौन सी समस्याएँ अधिक आईं और किसमें अधिक सहयोग प्राप्त हुआ जैसे बिंदुओं को सम्मिलित किया गया था। उपकरण में पाठ योजना निर्माण में कौशल की समस्या, शिक्षण के दौरान कौशलों का प्रयोग, कक्षा अनुशासन में समस्या, संपूर्ण इंटर्नशिप में उत्पन्न समस्या एवं इंटर्नशिप अवधि में प्राप्त अन्य सुविधाओं को सम्मिलित किया गया।

आँकड़ों का संकलन

आँकड़ों का संकलन सत्र 2021–2022 में आम्रपाली इंस्टिट्यूट, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड के बी.एड. विभाग में अध्ययनरत 73 विद्यार्थी-शिक्षकों पर स्वनिर्मित अभ्यास शिक्षण सूचना पत्र प्रशासित कर किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 01— बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की इंटर्नशिप के दौरान पाठ योजना निर्माण में कौशलों के प्रयोग की समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 1 में प्रस्तुत किया गया है। सारणी 1 में प्रदत्त आँकड़ों के आधार पर स्पष्ट है कि अभ्यास शिक्षण के दौरान प्रस्तावना प्रश्न निर्माण में 52.05 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को सर्वाधिक समस्या आई, जबकि सबसे कम 6.85 प्रतिशत समस्या व्याख्या लिखने में आई। इसी प्रकार प्रकरण का चयन करने में 23.29 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को, विभिन्न प्रकार के प्रश्न निर्माण में 9.59 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को तथा 8.22 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को श्यामपट्ट सारांश लिखने में समस्या उत्पन्न हुई। प्रस्तावना प्रश्न निर्माण पाठ योजना का महत्वपूर्ण कौशल होता है। इसके लिए समुचित अभ्यास व विषय का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक होता है। प्रस्तावना प्रश्न निर्माण एक शिक्षण कला है जो बच्चों के स्तर के अनुसार निर्मित करना होता है।

सारणी 1— पाठ योजना निर्माण में कौशलों के लेखन में सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	पाठ योजना निर्माण में कौशलों के लेखन में सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	प्रकरण का चयन करने में	23.29
2.	प्रस्तावना प्रश्न निर्माण में	52.05
3.	व्याख्या लिखने में	6.85
4.	श्यामपट्ट सारांश लिखने में	8.22
5.	प्रश्न निर्माण करने में	9.59
	योग	**100.0**

उद्देश्य 02— प्रशिक्षणार्थियों को इंटर्नशिप के दौरान शिक्षण कौशलों के प्रयोग के समय उत्पन्न समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सारणी 2 में दिया गया है। सारणी में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि शिक्षण कौशलों के प्रयोग में सर्वाधिक समस्या 46.57 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में आई तथा सबसे कम 8.22 प्रतिशत प्रश्नों को पूछने में सर्वाधिक समस्या आई। इसी प्रकार प्रकरण निकालने में 20.55 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या का सामना करना पड़ा। व्याख्या करने में 13.70 प्रतिशत तथा श्यामपट्ट कार्य में 10.96 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या का सामना करना पड़ा। प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण करना निश्चित रूप से विद्यार्थी शिक्षकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि प्रस्तावना अभ्यास शिक्षण का प्रथम सोपान होता है। प्रस्तावना कौशल प्रस्तुतीकरण में समस्या का मुख्य कारण विषय का पर्याप्त ज्ञान न होना, प्रश्नों का निर्माण उपयुक्त ढँग से न हो पाना, अभ्यास की कमी, आत्मविश्वास की कमी तथा प्रश्नों का तारतम्य सही ढँग से न हो पाना भी हो सकता है।

सारणी 2— अभ्यास शिक्षण के दौरान कौशलों के प्रयोग में सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	अभ्यास शिक्षण के दौरान कौशलों के प्रयोग में सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में	46.57
2.	प्रकरण निकालने में	20.55
3.	व्याख्या करने में	13.70
4.	प्रश्नों को पूछने में	8.22
5.	श्यामपट्ट कार्य में	10.96
	योग	**100.0**

उद्देश्य 03— बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों को इंटर्नशिप के दौरान कक्षा अनुशासन में उत्पन्न समस्याओं के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सारणी 3 में दिया गया है। सारणी में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि अभ्यास शिक्षण के दौरान सर्वाधिक 49.31 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को बच्चों से सर्वाधिक समस्या आई तथा सबसे कम 9.59 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या विषयवस्तु से आई। इसी प्रकार कक्षा-कक्ष की व्यवस्था से 16.44 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या का सामना करना पड़ा। शिक्षण शैली के विकास में 13.70 प्रतिशत तथा विद्यालय के वातावरण से 10.96 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या आई। कक्षा प्रबंधन एवं कक्षा अनुशासन एक महत्वपूर्ण कारक होता है। कक्षा अनुशासन के बिना प्रभावी शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती है। कक्षा अनुशासन एक कला है। बच्चों की वैयक्तिक विभिन्नता को न समझ पाना, शिक्षण का पर्याप्त अभ्यास न होना, विषय का समुचित ज्ञान न होना, आत्मविश्वास की कमी तथा कक्षा-कक्ष में समुचित सुविधाओं का अभाव इसके प्रमुख कारण हो सकते हैं।

सारणी 3— कक्षा अनुशासन में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	कक्षा अनुशासन में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	बच्चों से	49.31
2.	कक्षा-कक्ष की व्यवस्था से	16.44
3.	विद्यालय के वातावरण से	10.96
4.	विषयवस्तु से	9.59
5.	शिक्षण शैली के विकास में	13.70
	योग	**100.0**

उद्देश्य 04— बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के संपूर्ण अभ्यास शिक्षण के दौरान उत्पन्न समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 4 में दिया गया है। सारणी 4 में संपूर्ण इंटर्नशिप की अवधि में उत्पन्न समस्या का वर्णन किया गया है, जिसमें सर्वाधिक 58.90 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में आई तथा सबसे कम समस्या 8.22 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षकों को सहायक सामग्री का प्रयोग करने में उत्पन्न हुई। इसी प्रकार शिक्षण प्रक्रिया में 9.59 प्रतिशत, बच्चों की सहभागिता में 10.96 प्रतिशत तथा कक्षा-प्रबंधन में 12.33 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षकों को सर्वाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। अभ्यास शिक्षण में विद्यार्थी-शिक्षकों को एक निर्धारित पाठ योजना प्रारूप के आधार पर पाठ योजना तैयार कर शिक्षण कार्य करना होता है। पाठ योजना प्रारूप का पालन करते हुए शिक्षण कार्य करना विद्यार्थी शिक्षक के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

सारणी 4 — संपूर्ण अभ्यास शिक्षण अवधि में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	संपूर्ण अभ्यास शिक्षण अवधि में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	शिक्षण प्रक्रिया में	9.59
2.	सहायक सामग्री का प्रयोग करने में	8.22
3.	पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में	58.90
4.	बच्चों की सहभागिता में	10.96
5.	कक्षा प्रबंधन में	12.33
	योग	**100.0**

उद्देश्य 05— बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के स्कूल इंटर्नशिप की अवधि में प्राप्त सुविधाओं से उत्पन्न समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 5 में दर्शाया गया है। सारणी 5 में प्रस्तुत आँकड़ों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि 54.79 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को शिक्षण में आधुनिक तकनीकी की सुविधा से सर्वाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ा तथा सबसे कम 6.85 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या विद्यार्थी-शिक्षकों को बैठने की उचित व्यवस्था से उत्पन्न हुई। इसी प्रकार अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर पेयजल की सुविधा से 10.96 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षकों को, शौचालय की सुविधा से 9.59 प्रतिशत तथा पुस्तकालय की सुविधा से 17.81 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या का सामना करना पड़ा। वर्तमान समय में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आधुनिक तकनीकी का महत्वपूर्ण योगदान होता है, इसके लिए इससे

संबंधित संसाधनों की समुचित व्यवस्था का होना भी आवश्यक होता है।

सारणी 5— स्कूल इंटर्नशिप की अवधि में प्राप्त सुविधाओं से उत्पन्न सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	स्कूल इंटर्नशिप की अवधि में प्राप्त सुविधाओं से उत्पन्न सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	पेयजल की सुविधा से	10.96
2.	शौचालय की सुविधा से	9.59
3.	पुस्तकालय से	17.81
4.	प्रशिक्षिणाथियों के बैठने के लिए उचित व्यवस्था से	6.85
5.	आधुनिक तकनीकी की सुविधा से	54.79
	योग	**100.0**

निष्कर्ष

शोध अध्ययन के परिणाम यह बताते हैं कि विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास शिक्षण के दौरान सर्वाधिक समस्या प्रस्तावना प्रश्न निर्माण में आती है। इसके साथ ही प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में, पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में, कक्षा-कक्ष में बच्चों से तथा आधुनिक तकनीकी की सुविधा से भी समस्या उत्पन्न होती है। शोध अध्ययन में पाया गया कि शिक्षण कौशलों के प्रयोग का पर्याप्त अभ्यास न होना तथा उनके प्रयोग का पर्याप्त ज्ञान न होने से भी विद्यार्थी शिक्षकों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के मुख्य कारणों में संस्थानों में व्यवस्थित प्रशिक्षण की कमी, पर्याप्त व योग्य प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी तथा विद्यार्थी शिक्षकों के लिए अभ्यास शिक्षण हेतु विद्यालयों में पर्याप्त समय न मिल पाना, क्योंकि ये विद्यार्थी-शिक्षक इंटर्नशिप हेतु बाहर के विद्यालयों में निर्भर होते हैं। ये विद्यालय इनको प्रशिक्षण हेतु पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं, क्योंकि इन विद्यालयों को भी अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रक्रिया को निर्धारित समय में पूर्ण करना होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास शिक्षण के दौरान प्रस्तावना प्रश्न बनाने में, प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में, कक्षा-कक्ष में बच्चों से, पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में तथा आधुनिक तकनीकी की सुविधा से सर्वाधिक समस्या उत्पन्न हो रही थी। सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को अभ्यास शिक्षण के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा, क्योंकि अभ्यास शिक्षण के सफल संचालन से ही एक अच्छे एवं योग्य शिक्षक का निर्माण किया जा सकता है तथा उसमें शिक्षण के प्रति आत्मविश्वास पैदा किया जा सकता है। शिक्षक की भूमिका राष्ट्र निर्माता के रूप में होती है। विद्यार्थी शिक्षक की भूमिका में जितना ही उत्तम प्रशिक्षण उसे प्रदान किया जाएगा वह उतना ही दक्ष एवं आदर्श शिक्षक के रूप में पूर्ण मनोयोग से अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकेगा।

सुझाव

विद्यार्थी शिक्षकों में अभ्यास शिक्षण में समस्याएँ हमेशा व्यक्तिगत कारणों से नहीं होती हैं, इसके पीछे कुछ सामाजिक एवं आर्थिक कारण भी उत्तरदाई होते हैं। हमें

उस व्यवसाय की वास्तविक स्थिति का आकलन कर सकारात्मक दिशा में प्रयास करना चाहिए।

1. अध्यापक शिक्षा में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों को अपने संस्थानों में योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति कर अभ्यास शिक्षण में विद्यार्थी शिक्षकों के सम्मुख आने वाली समस्याओं को दूर किया जा सकता है।
2. शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों को विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए अभ्यास शिक्षण हेतु व्यवस्थित एवं पूर्णकालिक व्यवस्था के द्वारा उनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाना समीचीन होगा।
3. समस्त शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों तथा विद्यालयों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षण के महत्व को बताया जाए तथा पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण को उचित स्थान प्रदान किया जाना चाहिए।
4. विद्यार्थी-शिक्षकों में पर्याप्त अभ्यास के द्वारा शिक्षण कौशलों का विकास कर यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी-शिक्षकों में शिक्षण कार्य के प्रति पूर्ण आत्मविश्वास आ गया है तभी उन्हें अभ्यास शिक्षण हेतु भेजा जाना चाहिए।
5. अध्यापक शिक्षा में कमी व गिरावट के कारणों का पता लगाकर उसे दूर किया जाना चाहिए।
6. अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए आधुनिक तकनीकी की सुविधा का विकास किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी शिक्षकों में प्रशिक्षण को प्रभावी तथा रुचिकर बनाने की कला का विकास किया जा सकता है।

अध्यापक शिक्षा के लिए बहु-विषयक इनपुट के साथ ही उच्चतर गुणवत्तायुक्त विषयवस्तु और शैक्षणिक प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। अतः इसे ध्यान में रखते हुए सभी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को समग्र बहु-विषयी संस्थानों में ही आयोजित किया जाना चाहिए। अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाले उच्चतर शिक्षण संस्थान शिक्षा और इससे संबंधित विषयों के साथ-साथ विशेष विषयों में विशेषज्ञों की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाना होगा। प्रत्येक संस्थान के पास सघन जुड़ाव के साथ काम करने के लिए सार्वजनिक और निजी स्कूलों और स्कूल परिसरों का एक नेटवर्क स्थापित किया जाना होगा जहाँ भावी शिक्षक अन्य सहायक गतिविधियों, जैसे— सामुदायिक सेवा, वयस्क और व्यावसायिक शिक्षा आदि में सहभागिता के साथ शिक्षण कार्य कर सकेंगे। शिक्षक प्रशिक्षण का संबंध बुनियादी शिक्षा से होता है। ये शिक्षक प्रशिक्षण के बाद प्राथमिक तथा विद्यालयी शिक्षा में शिक्षण कार्य करते हैं। जब तक शिक्षण प्रशिक्षण में आवश्यकतानुसार समुचित व्यवस्थाओं तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था नहीं की जाएगी तब तक शिक्षा की आधारशिला को मजबूती प्रदान करना संभव नहीं हो सकता है।

संदर्भ

गुप्ता, ए.पी. 2005. *सांख्यिकीय विधियाँ*. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

गैरेट, एच.ई. 1981. *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी*. दशम संस्करण, बी.एफ. एंड संस, बाम्बे.

जॉन, वी. वेस्ट. 2000. *रिसर्च इन एजुकेशन*. प्रेन्टिस हाल ऑफ इंडिया लिमिटेड.

तोमर, लज्जाराम. 1991. *भारतीय शिक्षा के मूल तत्व*. सुरुचि प्रकाशन, केशवकुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली.

पाठक, पी.डी. 2008. *भारतीय शिक्षा के आयोग कोठारी कमीशन सहित*. आगरा पब्लिकेशन, आगरा.

मंगल, एस.के. और उमा मंगल. 2009. *शिक्षा तकनीकी*. पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.

सिंह, ए.के. 2005. *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ*. भारती भवन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, बिहार.

12

कोरोना/कोविड-19 में मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारण एवं निदान में शिक्षक की भूमिका
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अमित अग्रवाल*
अभिषेक कुमार सिंह**

मनुष्य में काम, क्रोध, मोह, लोभ, माया, तृष्णा, घृणा, प्रेम, भक्ति, धैर्य, विवेक, आनंद, शोक, मद, ईर्ष्या, निंदा, असूया, आत्म नियंत्रण, अनुशासन, निष्ठा, क्षमा, सहानुभूति, दृढ़ता, स्थिरता, निर्भरता, करुणा आदि अनेकों तत्वों का समावेश होता है। इन्हीं सब गुणों के कारण मनुष्य को किसी भी अन्य जीव-जंतु से श्रेष्ठ माना गया है। मानवीय मूल्यों का किसी भी व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्व होता है और ऐसा इसलिए, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने व्यवहार स्वभाव के द्वारा समाज में रहने वाले समग्र व्यवहार का निर्धारण करता है। मनुष्य पृथ्वी पर रहने वाले अन्य प्राणियों के समान ही इस पृथ्वी का एक सदस्य है जो कि अनंत काल से अन्य जीव-जंतुओं के साथ सामंजस्य बनाकर रहता आ रहा है। मनुष्य के अतिरिक्त अन्य प्राणी मात्र अपने शरीर तक ही सीमित रहते हैं अर्थात उनके लिए शरीर की सीमा का अतिक्रमण करना संभव नहीं होता, लेकिन मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो केवल चेतन जीवित सत्ता ही नहीं है, बल्कि एक आत्म चेतन सत्ता भी है। मनुष्य की चेतना न केवल बहिर्गामी, बल्कि वह अंतर्मुखी भी है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में जो निर्णय लेता है वे केवल एक व्यक्ति विशेष को ही प्रभावित नहीं करते, बल्कि हमारे परिवार, संगठन, समाज के साथ-साथ हमारे राष्ट्र को भी प्रभावित करते हैं। जिस प्रकार आज के समय में मानवीय मूल्यों में दिन-प्रतिदिन कमी होती जा रही है और उन कमियों के कारकों के ऊपर क्रमबद्ध तरीके से मानवीय मूल्यों की कमियों को दूर करके उनमें सुधार किया जा सकता है और ये सुधार एक शिक्षक के माध्यम से किसी भी मनुष्य के संपूर्ण विकास में योगदान दे सकते हैं। प्रस्तुत लेख में मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारणों का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव और उनके निदान का अध्ययन किया गया है। समाज में फैली विकृतियों को मानवीय मूल्यों, आदर्शों व संवेदनशीलता से जोड़ना होगा। संवेदनशील व उदार शिक्षक वर्तमान परिदृश्य को बदलने में सक्षम होते हैं। शिक्षा के माध्यम से समाज में सेवा, समर्पण, सामंजस्य, समन्वय, सद्भाव व त्याग की भावनाएँ विकसित होनी चाहिए। शिक्षा को सुदृढ़ बनाने में शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी व सद्भावना महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

---

*सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), राजकीय महाविद्यालय, रजानगर (रामपुर)
** सहायक प्राध्यापक, रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

'मूल्य' शब्द जिसे अंग्रेजी भाषा में 'वेल्यू' कहा जाता है, मूल धातु से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ जड़ या स्त्रोत होता है। ज्ञान या इससे संबंधित अन्य संदर्भों में जब हम केवल सतही दृष्टि तक सीमित न रहते हुए समस्या की तह, जड़ तक जाने का प्रयास करते हैं तो वह न केवल कठिन, बल्कि प्रतिफल युक्त भी होता है। नीतिशास्त्र जिसे अंग्रेजी में 'एथिक्स' कहते हैं की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के एथिकास शब्द से हुई है जिसका अर्थ कालजयी परंपरा है। यदि हम दूसरे शब्दों में कहें तो नीतिशास्त्र या एथिक्स उस परंपरा को जानना चाहता है जो देश काल की सीमाओं का अतिक्रमण करता है। संस्कृत भाषा का शब्द स्वधर्मआत्मा या सत्ता से जुड़ा है। मानवीय मूल्यों से अभिप्राय किसी व्यक्ति के भौतिक अथवा मानसिक अवस्था के उस गुण से है, जिसके द्वारा मनुष्य के किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति होती है।

शोध के उद्देश्य

1. मानवीय मूल्यों से अवगत कराना एवं मानवीय मूल्यों में ह्रास के कारणों से अवगत कराना।
2. मानवीय मूल्यों में ह्रास को रोकने के उपायों से अवगत कराना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र के लिए मानवीय मूल्यों के अध्ययन करने हेतु प्राथमिक समंकों का प्रयोग किया गया है। सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षक, पेशेवर व्यक्ति, जैसे— वकील, आदि 200 उत्तरदाताओं से अनुसूचियों एवं प्रश्नावलियों के माध्यम से प्राथमिक समंक एकत्र किए गए हैं। प्रश्नावलियों/अनुसूचियों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। सहायक आँकड़ों के आधार पर मानवीय मूल्यों का अध्ययन प्रस्तुत पत्र में किया गया है। साहित्य पूर्वालोकन एवं आँकड़ें द्वितीय संमकों से एकत्र किए गए हैं। कंप्यूटर प्रोग्राम/एम.एस. एक्सेल की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

नरेंद्र चौधरी (*कुलपति*, उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय) ने कहा कि पिछले सात दशकों में हमारे देश में शिक्षा का विस्तार तो हुआ, मगर शिक्षा में मानवीय संवेदना जो हमारे धरोहर की गुरुकुल पद्धति में मौजूद थी। आज की शिक्षा में खत्म सी हो गई है। अब लागू होने जा रही राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्वामी विवेकानंद द्वारा कथित 'शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव के अंदर व्याप्त सुप्त शक्ति का प्रकटीकरण है,' को समाए हुए है।

राजेश बहुगुणा (*कार्यकारी कुलपति*, उत्तरांचल विश्वविद्यालय, देहरादून) का कहना है कि कोई व्यक्ति कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, परंतु उसकी दूरदृष्टि की एक सीमा होती है। माता-पिता के बाद गुरू को ही सबसे ऊपर माना गया है। गुरू अर्थात शिक्षक उस कुम्हार के समान है जो मिट्टी रूपी विद्यार्थी को एक बरतन का आकार देकर एक योग्य व उपयोगी पात्र बना देता है।

गुरू किसी भी छात्र को शिक्षा देकर एक बेहतर मनुष्य बना देता है। नैतिक मूल्यों की जो शिक्षा वह विद्यार्थी को देगा उसका प्रभाव विद्यार्थी पर जीवनपर्यंत बना रहेगा। यहीं से उसके चरित्र निर्माण की प्रक्रिया आरंभ होगी। अतः नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

एक शिक्षक ही विद्यार्थी को समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्वों से रूबरू कराता है। एक शिक्षक का मुख्य काम यह है कि वह अपने विद्यार्थी को वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर शिक्षा दे। शिक्षा में परंपरा और नवीनता का मिश्रण होना चाहिए। वह विद्यार्थी को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रखे, बल्कि उसे जीवन के व्यावहारिक ज्ञान की भी शिक्षा दे। मूल्य शिक्षा छात्रों को जीवन के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है और उन्हें एक अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित करती है, उन लोगों की मदद करती है, उनके समुदाय का सम्मान करने के साथ-साथ अधिक जिम्मेदार और समझदार बनाती है। विद्यार्थी तो एक गीली मिट्टी के समान होता है, शिक्षक उसे जैसा ढालेगा वैसा ढल जाएगा। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। अतः नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शिक्षण संस्थान दो स्तरों पर मूल्य विकास में योगदान देते हैं— आधारभूत शिक्षा के स्तर पर व उच्च शिक्षा के स्तर पर। आधारभूत स्तर पर मूल्यों का प्रभाव ज्यादा होता है, जबकि उच्च शिक्षण संस्थान प्रायोगिक मूल्यों का विकास कर पाते हैं। व्यक्तित्व परिवर्तन की संभावना उच्च स्तर पर ज्यादा होती है। विभिन्न विचारधाराओं के संपर्क में आने का क्रम भी उच्च शिक्षण संस्थानों से ही शुरू होता है। विभिन्न पाठ्यक्रमों द्वारा स्वतंत्रता, समानता, अहिंसा, नैतिक शिक्षा का प्रभाव भी मूल्य विकास में सहायक होता है। इस प्रक्रिया में अध्यापक और छात्र समूह भी अहम योगदान देते हैं।

कोरोना काल में मूल्य ह्रास के निवारण में शिक्षक की भूमिका में ह्रास के कारण

कोरोना/कोविड-19 के कारण भारत और शेष विश्व में शैक्षणिक संस्थान और विश्वविद्यालय बंद कर दिए गए। जैसे-जैसे छात्र अपने घरों में, महामारी जन्य आइसोलेशन में कैद होते गए, वे अपने मित्रों और शिक्षकों से दूर होते गए। साथ ही महामारी में आने वाली बुरी खबरों का असर जो घर के बड़ों पर पड़ा, उनके तनाव से भी बच्चों और किशोरों के मन मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। घर के जबरिया थोपे गए एकांत और हमउम्र मित्रों के अभाव के कारण उपजी संवादहीनता ने बच्चों के सीखने की क्षमता और स्वाभाविक जिज्ञासु भाव को बहुत अधिक प्रभावित किया है। शिक्षक और शिक्षार्थियों के मध्य संपर्क का माध्यम ऑनलाइन हो गया है। शिक्षण क्षेत्र में नई-नई विधाओं का उदय हुआ जिससे मानवीय संबंधों में व्यापक परिवर्तन आ गया है। नए-नए मानवीय मूल्यों की उत्पत्ति हुई। महामारी के दौरान नई सामाजिक एवं कार्य संस्कृति विकसित हुई। ऑफलाइन शिक्षण की तुलना में ऑनलाइन शिक्षण में मूल्यों के विकास में शिक्षक की भूमिका तुलनात्मक रूप से कम है।

सारणी 1— कोरोना काल में मूल्य ह्रास के निवारण में शिक्षक की भूमिका में ह्रास के कारण

क्र. सं.	शिक्षक की भूमिका में ह्रास के कारण	न्यूनतम (उत्तरदाताओं की सहमति का %) अधिकतम→
क	शिक्षक-शिक्षार्थी का प्रत्यक्ष संपर्क न होना	

ख	विवेक एवं ज्ञान निर्माण की निगरानी में कमी	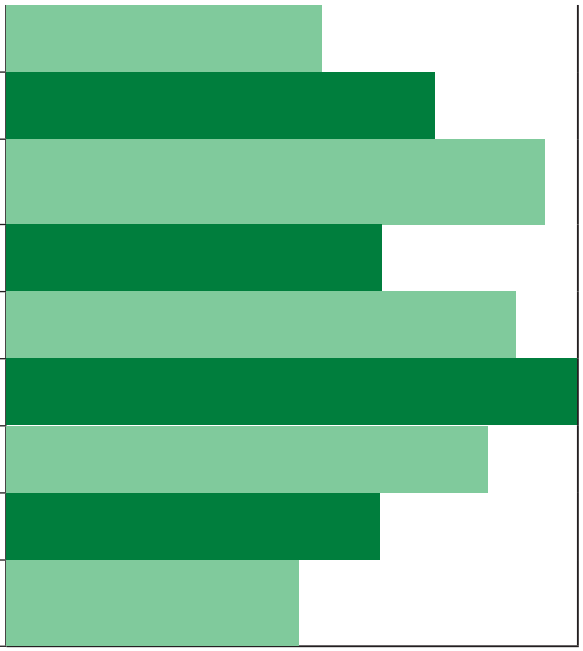
ग	मूल्य एवं व्यवहार परिमार्जन के समय में कमी	
घ	मूल्य निर्माण की विभिन्न विधियों का प्रयोग न होना	
ङ	वातावरण में अंतःक्रिया न हो पाना	
च	चिंतन की प्रक्रिया बाधित होना	
छ	सर्वांगीण विकास की क्रियाएँ न हो पाना	
ज	तनाव निवारण न हो पाना	
झ	समूह/सांस्कृतिक गतिविधियों का अभाव	
ञ	अनुशासित वातावरण में व्यवहार असंशोधित रहना	

स्त्रोत— स्वतः सर्वेक्षण

मानवीय मूल्यों के ह्रास के निदान एवं निवारण में शिक्षक की भूमिका

शिक्षा की एक बहुत बड़ी भूमिका यह भी है कि वह अपनी संस्कृति, धर्म तथा अपने इतिहास को अक्षुण्ण बनाए रखें, जिससे कि राष्ट्र का गौरवशाली अतीत भावी पीढ़ी के समक्ष द्योतित हो सके और युवा पीढ़ी अपने अतीत से कटकर न रह जाए। किसी भी देश व दुनिया, क्षेत्र, समाज, परिवार, का विकास व प्रगति मूल्यों पर टिकी होती है। मूल्यों का आधार जितना मजबूत होगा उसका परिणाम उतना ही सुखद होता है। आज दुनिया जिन समस्याओं से जूझ रही है, उसका मुख्य कारण है मूल्यों का ह्रास होना। मूल्यों का ह्रास होना मानवता के लिए सर्वाधिक घातक है, क्योंकि सदाचार, संस्कार, नैतिक आचरण, सत्यनिष्ठा विहीन जीवन सदैव विनाशकारी ही होता है। जब स्वतःसत्ता स्थापित करने की होड़ में मनुष्य चला है व मूल्यों को दाँव पर लगाकर मात्र सुख-सुविधाओं को पाने, तब वह केवल पतन की ओर ही अग्रसर हुआ है। जो भी कर्म मूल्यों के विरुद्ध होते हैं वह मनुष्य को कुछ समय लाभ अवश्य दे सकते हैं, किंतु अंतत: उनका परिणाम विनाशकारी व पतनगामी ही होता है।

एक शिक्षक को यदि किसी देश समाज का निर्माता कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, क्योंकि शिक्षक ही वह धुरी है जो किसी समाज, देश में रहने वाले व्यक्तियों में चारित्रिक निर्माण कर उनमें मानवीय मूल्यों, गुणों की नींव का निर्माण करता है। भारत, जैसे— विविध भाषा, धर्म, जाति, रीति-रिवाज और संस्कृति वाले राष्ट्र में मूल्यों का मापन एक जटिल

प्रक्रिया है। सार्वभौमिक पैमाना तैयार करना दुधारू कार्य है। एक मनुष्य के अंदर समय-समय पर मूल्य बदलते रहते हैं।

मानवीय मूल्यों के ह्रास के निदान एवं निवारण में एक शिक्षक की भूमिका को निम्न तालिका की सहायता से क्रमबद्ध किया जा सकता है—

सारणी 2— मानवीय मूल्यों के ह्रास के निदान एवं निवारण में शिक्षक की भूमिका

क्र. सं.	मानवीय मूल्य के निदान एवं निवारण में शिक्षक की भूमिका	रैंक या श्रेणी
क	नैतिकता को बनाने में	1
ख	चारित्रिक निर्माण करने में	2
ग	विवेक एवं ज्ञान के निर्माण करने में	3
घ	आध्यात्मिक क्षेत्र के निर्माण में योगदान	4
ङ	सामाजिक निर्माण में योगदान	5
च	आत्म-नियंत्रण के निर्माण में योगदान	6
छ	सांस्कृतिक निर्माण में योगदान	7
ज	अनुभव चिंतन, मनन, तनाव निवारण में योगदान	8
झ	कौशल विकास, तकनीकी विकास में योगदान	9
ञ	शिष्टाचार, योगाभ्यास, खेलकूद आदि द्वारा मूल्य निर्माण	10

स्त्रोत— स्वतः सर्वेक्षण

किसी देश के राष्ट्र निर्माण में शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति अपने बाल्यकाल से लेकर युवावस्था तक शिक्षक से शिक्षा ग्रहण करता है। इसलिए एक शिक्षक का अनेक शिष्यों से घनिष्ठ संबंध रहता है। इसलिए भी एक शिक्षक का व्यक्तित्व मानव को या शिष्य को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है, क्योंकि एक शिक्षक स्वंय समाज के लिए आदर्श होता है। अतः उसके द्वारा उसका अनुसरण करके मानवीय मूल्यों को बढ़ाया जा सकता है। सारणी 2 का अध्ययन करने से पता चलता है कि उत्तरदाताओं द्वारा नैतिकता को मानवीय मूल्यों के निवारण हेतु प्रथम कारक माना गया है। एक शिक्षक मानव में नैतिक गुणों का विकास करने में योगदान देता है। वह उसमें सदाचार, प्रेम, भावना, सहायताप्रद, सच्चाई, नियमों का पालन करने, दूसरे की सहायता करने समाज के विकास में योगदान देने जैसी मुख्य बातों का विकास करने में सहायता प्रदान करता है। एक शिक्षक का द्वितीय कार्य मानव में चारित्रिक गुणों का विकास करना है जब तक मनुष्य में चरित्र का निर्माण नहीं होगा उससे किसी भी कार्य में ईमानदारी से भागिता लेकर कार्य कराना संभव नहीं होगा। कहा भी गया है कि, यदि धन खो जाए तो कोई दुःख नहीं है यदि स्वास्थ्य खो जाए तो कुछ हानि समझनी चाहिए और यदि चरित्र खो जाए तो सब कुछ नष्ट समझना चाहिए। तीसरे पायदान पर विवेक एवं ज्ञान को स्थान दिया गया है। ज्ञान के द्वारा ही कठिन से कठिन समस्या को हल किया जा सकता है। एक शिक्षक अपनी शिक्षा से किसी भी मनुष्य को आध्यात्मिक क्षेत्र में लगा सकता है अर्थात जब मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा कर लेता है तो उसके बाद वह एक कुशल शिक्षक के सान्निध्य में रहकर अध्यात्म की ओर अग्रसर हो सकता है। एक शिक्षक द्वारा किसी भी व्यक्ति (शिष्य) में सामाजिक मूल्यों का विकास करने में महत्ती भूमिका निभाई जा सकती है। एक व्यक्ति के अपना विकास करने के साथ-साथ समाज के विकास

के प्रति भी कुछ उत्तरदायित्व होते हैं। अतः एक शिक्षक समाज में रहने वाले व्यक्तियों में सामाजिक मूल्य को पैदा करने में योगदान देता है। आत्म-नियंत्रण वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति का अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण हो जाता है। अतः जब कोई मनुष्य लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, चोरी आदि कुरीतियों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता और कोई भी अनुचित काम नहीं करता है तो वह आत्म-नियंत्रण की अवस्था को प्राप्त कर लेता है। संस्कृति प्रत्येक मनुष्य के जीवन से जुड़ी हुई है यहाँ पर किसी भी प्रकार का कोई भी आभूषण नहीं है जिसे मनुष्य प्रयोग कर सके। संस्कृति तो वह गुण है जो हमें मनुष्य बनाता है। संस्कृति के बिना तो मानव जीवन का इस धरा पर रहना ही संभव नहीं होगा। संस्कृति परंपराओं से, विश्वासों से, जीवन की शैली से, आध्यात्मिक पक्ष से, भौतिक पक्ष से निरंतर जुड़ी हुई है। मानव ही संस्कृति का निर्माता है और साथ ही संस्कृति मानव को बनाती है। ऐसे में एक शिक्षक द्वारा मानवीय मूल्यों का विकास किया जाना स्वाभाविक-सी बात है। आठवें स्थान पर अनुभव चिंतन, मनन एवं तनाव के निवारण करने में एक शिक्षक के योगदान को बताया गया है। एक शिक्षक अपने अनुभव से समाज में रहने वाले व्यक्तियों में उनकी जिज्ञासाओं को शांत करके, उन्हें तर्क-वितर्क के जंजाल से निकालकर, तनाव मुक्ति का सूत्र पकड़ा कर चहुँमुखी विकास करने में अपना योगदान देता है। नौंवी श्रेणी का स्थान एक शिक्षक द्वारा मानव को कौशल विकास एवं तकनीकी विकास के क्षेत्र में पारंगत कर उनकी कुशलता का भरपूर फायदा उठाने के लिए प्रेरित किया जाना है। मानव नई-नई तकनीकें सीखकर रोजगार के साधनों को अपनाकर अपना व अपने समाज व देश के विकास में योगदान करता है। सबसे अंतिम बिंदु के अनुसार शिष्टाचार, योगाभ्यास और खेलकूद के द्वारा एक शिक्षक समाज में रहने वाले व्यक्तियों में शालीनता शिष्टाचार, प्रेम का भाव पैदा करने में अपना योगदान देता है। वह मनुष्य को बुद्धि से ही नहीं, बल्कि शारीरिक रूप से भी हृष्ट-पुष्ट बनाने में योगदान देता है। वह उन्हें नित्य ही योगाभ्यास करने के लिए प्रेरित करता है, ताकि पूरे दिन शरीर में सही उर्जा का संचार हो सके। शाम के समय खेलकूद के लिए प्रेरित करता है, ताकि शरीर मजबूत बना रहे, रोग प्रतिरोधक शक्ति बनी रहे। अपने परिवार समाज के लिए एक रक्षक की तरह अपना योगदान दे सके। अतः सारणी 2 का अध्ययन करने के पश्चात यही कहा जा सकता है कि एक शिक्षक किसी भी समाज में रहने वाले लोगों में मानवीय मूल्य के निर्माण करने में अपनी भूमिका निभाता है और शिक्षक की सहभागिता के द्वारा मानवीय मूल्यों के ह्रास के निदान में सहायता भी प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान कालक्रम तक मानव के विकास की अवस्थाओं में अनेक परिवर्तन आए हैं और इन्हीं कालक्रमों के परिवर्तनों के कारण समय पर मानव में विभिन्न मूल्यों (गुणों) की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति पाई जाती है। मानव इस सृष्टि की अद्‌भुत रचना है जो ईश्वर ने बनाई है इसलिए उसमें सामाजिकता, नैतिकता, राजनैतिकता, मद, लोभ, ईर्ष्या, घृणा, प्रेम शक्ति, ज्ञान, विवेक, शील, अच्छे,

बुरे सभी गुणों का समावेश है। एक समय विशेष पर जब किसी एक पक्ष की अधिकता हो जाती है तो व्यक्ति उसी के अनुरूप अपना आचरण, व्यवहार करने लग जाता है। नैतिक मूल्यों के द्वारा मानव अपने व्यवहार तथा कार्यों को नियंत्रित करता है। नैतिक मूल्यों का किसी भी समाज की उन्नति तथा पतन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रस्तुत शोधपत्र में मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारणों को एक सूचीबद्ध सारणी के माध्यम से रैंक या श्रेणी के आधार पर वर्णित किया गया है जो कि समाज में रहने वाले विभिन्न व्यक्तियों से उनके दिए गए निष्कर्ष के आधार पर निकाले गए हैं जो किसी भी समाज विशेष में रहने वाले व्यक्तियों पर स्टीक बैठते हैं, क्योंकि आज के भागमभाग समय में इन कारकों की अधिकता पाई जाती है। इस शोधपत्र के माध्यम से मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारणों का निवारण भी किया जा सकता है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारतीय कालातीत उच्च श्रेष्ठ मूल्यों को जन साधारण के जीवन में प्रस्थापित करने के उद्देश्य से ही शांति निकेतन जैसी शिक्षण संस्था की स्थापना की और इसके लिए उन्होंने प्रतिभाशाली तथा आदर्शवादी व्यक्तियों की मदद ली और स्वयं उन्हें उचित कार्य करने के लिए प्रेरित किया। महामारी के दौरान शिक्षकों ने शिक्षार्थियों के साथ ऑनलाइन शैक्षणिक गतिविधियाँ संपन्न की। शिक्षकों ने शिक्षार्थियों के समूह में मानवीय मूल्यों का विकास किया। शिक्षार्थियों के समूह में परस्पर अंत:क्रिया के द्वारा शिक्षार्थियों के मानसिक तनाव में कमी आई। अब महामारी के दौरान उत्पन्न स्थिति में परिवर्तन आने लगा है जिसमें शिक्षक की भूमिका पुन: अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

संदर्भ

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय. 2021. *मानवीय मूल्य और विचार*. उत्तराखंड.

———. *शिक्षा और मानव विकास*. उत्तराखंड.

एडिलेड घोषणा. 1999. http://www.curriculum.edu.au/mceetya/nationalgoals/natgoals.html

कुमार, प्रदीप और रमन चरला. 2013. *ह्यूमन वैल्यूज एंड प्रोफेशनल एथिक्स*. पैरामाउंट पब्लिशिंग हाउस, हैदराबाद.

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड. 2003. *मूल्य शिक्षा, शिक्षकों के लिए एक पुस्तिका*. सी.बी.एस.ई. नई दिल्ली.

गुप्ता, महावीर प्रसाद. 2017. *फिलॉस्फर एंड सोशल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन*. मॉडर्न पब्लिशर्स, जालंधर.

टंडन, एस. 2016. *टीचर्स इन द मेकिंग*. क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली.

डेस्ट. 2003. *मूल्य शिक्षा अध्ययन*. पाठ्यचर्या निगम, मेलबर्न.

———. 2005. *ऑस्ट्रेलियाई स्कूलों में मूल्यों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय ढांचा*. शिक्षा, विज्ञान और प्रशिक्षण विभाग, कैनबरा.

नॉर्मन, आर. 1998. *द मोरल फिलॉसफी— एन इंट्रोडक्शन टू एथिक्स*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड.

पांडे, एम.एम. 2004. शिक्षा विभाग, आर.आई.ई. (रा.शै.अ.प्र.प.), अजमेर.

वाल्श, एन. 2004. *कल का ईश्वर : हमारी सबसे बड़ी आध्यात्मिक चुनौती*. होडर एंड स्टॉटन लिमिटेड, लंदन.

www.sssieducare.org/valueeducation

शाह, पी.के. 2017. गांधीजी के विचार बेसिक एजुकेशन एंड इट्स रेलेवेंस. *पुणे रिसर्च एन इंटरनेशनल जर्नल इन इंग्लिश*. वॉल्यूम 3, अंक 4.

हिरिनयाना, एम. 1975. *इंडियन कॉन्सेप्शन ऑफ वैल्यूज*. कवल्या पब्लिशर्स, मैसूर.

हैबरमास, जे. 1990. *नैतिक चेतना और संचार क्रिया*. (अनुवाद-सी. लेनहार्ड्ट और एस. निकोलसन). एम.ए.एस.एस. मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी प्रेस, कैम्ब्रिज.

त्रिपाठी, ए.एन. 2008. *ह्यूमन वैल्यूज*. न्यू एज इंटरनेशनल (पी.) लिमिटेड, नई दिल्ली.

13

डिजिटल पेडागॉजी अर्थपूर्ण अधिगम को समृद्ध करने की दिशा में एक नवाचार

पुष्पेन्द्र यादव*

भारत में कोविड-19 महामारी के बाद सामान्य होते हालातों में शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल उपकरणों और तकनीकों का चलन काफी बढ़ा है। इसके साथ ही नवाचार के रूप में डिजिटल पेडागॉजी की अवधारणा हम सब के सामने आई है। हालाँकि, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि महामारी के समय में अचानक से पूरी शिक्षा व्यवस्था के ऑनलाइन प्रकार में परिवर्तित हो जाने के कारण शिक्षा के अलग-अलग स्तरों पर काफी सारी समस्याएँ प्रकाश में आई हैं। निश्चित रूप से इन समस्याओं को डिजिटल पेडागॉजी के सफल उपयोग द्वारा कम किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी आधिकारिक रूप से भारतीय शिक्षा प्रणाली में (प्राथमिक से परास्नातक) में डिजिटल पेडागॉजी के रोल को भली प्रकार से समझा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और केंद्रीय बजट 2022–2023 में इसके प्रचार-प्रसार और क्रियान्वयन के लिए विशेष प्रावधान भी किए गए हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में जिस प्रकार से डिजिटल उपकरणों और तकनीकों का चलन तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में डिजिटल पेडागॉजी शैक्षिक दृष्टिकोण से सावधानीपूर्वक और सही डिजिटल उपकरणों और तकनीकों के चुनाव करने एवं अन्य लाभकारी शैक्षणिक तकनीकों (गंभीर चिंतन, सहयोगात्मक अधिगम एवं व्यक्तिगत अधिगम इत्यादि) के मिश्रण के साथ शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को सशक्त करने में शिक्षकों की सहायता करती है। डिजिटल पेडागॉजी डिजिटल उपकरणों और तकनीकों का शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में समझदारीपूर्वक प्रयोग करने पर बल देती है और इन उपकरणों का अधिगम पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है? इस बात की निगरानी भी करती है। यह एक ऐसा नवाचार है जिसे शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में उपयोग में लाया जाए तो इससे शिक्षक, विद्यार्थी और संपूर्ण कक्षा को नए अधिगम अनुभव प्राप्त होते हैं। जहाँ सीखने के लिए नई संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं जिसमें अधिगम सिर्फ विद्यार्थियों या शिक्षकों तक सीमित न रहकर सामूहिक होता है। इस लेख में शोधकर्ता ने कोविड-19 महामारी के बाद से प्रचलित डिजिटल पेडागॉजी शैक्षणिक नवाचार को सरल शब्दों में समझाने और वर्तमान में इसकी आवश्यकता और प्रासंगिकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

**पीएच.डी. शोधार्थी*, शिक्षा विभाग (केन्द्रीय शिक्षा संस्थान), दिल्ली विश्वविद्यालय, 33, छात्र मार्ग, दिल्ली 110 007

एक अनुमान के अनुसार भारत में लगभग 15 लाख स्कूल हैं। लगभग 18 लाख शिक्षक इन स्कूलों में शिक्षण कार्य कर रहे हैं। भारत में 900 से अधिक विश्वविद्यालय हैं, 50,000 से अधिक महाविद्यालय हैं और पूरे देश में लगभग 1 करोड़ शिक्षक, शिक्षा के सभी स्तरों को मिला कर कार्य कर रहे हैं। ऐसे में शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ते हुए डिजिटल उपकरणों के चलन को देखते हुए और भविष्य में इसकी आवश्यकता को समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने और बड़ी संख्या में शिक्षकों को इसके लिए प्रशिक्षित करने के लिए अपने दस्तावेज में खास प्रावधान रखे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने अपने प्रतिवेदन में कहा है कि प्रत्येक शिक्षक को डिजिटल शिक्षक के रूप में विकसित होना चाहिए, ताकि 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में संप्रेषण, सहयोग, गंभीर चिंतन और समस्या समाधान की प्रक्रिया को दोगुना किया जा सके। भारत के केंद्रीय बजट 2022–23 में डिजिटल पेडागॉजी को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रमों में समाहित करने एवं इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए वित्तीय आवंटन सुनिश्चित किया गया है। बजट में इस बात की ओर विशेष ध्यान दिया गया है कि वर्तमान समय की जरूरतों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को आभासी प्रयोगशालाओं, 3-D मॉडलिंग, गूगल क्लाउड, फ्लिप क्लासरूम, क्रॉसओवर शिक्षण इत्यादि, जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ और इसके लिए डिजिटल पेडागॉजी को उपयोग में लाया जाए। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों के लिए ऐसे कई अनुभव है जो उनके लिए क्षेत्र में जाकर अनुभव करने पर जोखिम भरे हो सकते हैं या फिर पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए, सक्रिय ज्वालामुखी के उद्‌गार की संपूर्ण प्रक्रिया को सक्रिय ज्वालामुखी के मुहाने पर जाकर स्वयं देखना और अनुभव प्राप्त करना जोखिम भरा हो सकता है। इसी प्रकार से किसी जीव विज्ञान की कक्षा में मेंढ़क के आंतरिक अंगों की प्रकृति और उनकी बनावट को समझने के लिए उसे प्रयोग के तहत काट कर देखना होगा जो कि पर्यावरण मूल्यों के अनुकूल नहीं है, ऐसे आभासी प्रयोगशालाओं का प्रयोग डिजिटल पेडागॉजी के एक घटक के रूप में किया जा सकता है। ये विद्यार्थियों को नया ज्ञान सीखने और समझने में संभव जोखिम को कम कर देती है और उन्हें नए कक्षा-कक्ष के भीतर व्यतिगत अनुभव प्रदान करने में सक्षम होती है। इसी प्रकार के अन्य डिजिटल उपकरणों का चुनाव शिक्षकों द्वारा समझदारीपूर्वक विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार किया जा सकता है।

भाषाई रूप से भारत में व्यापक स्तर पर विविधता पाई जाती है। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 1700 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं और यहाँ 5 अलग-अलग भाषा परिवार हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने ये प्रस्तावित किया है की बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में हो, ताकि अधिगम की गति को बढाया जा सके। डिजिटल पेडागॉजी इस संदर्भ में अलग-अलग भाषाओँ के विद्यार्थियों को उनकी अपनी भाषा में सिखाने के लिए विभिन्न प्रकार के डिजिटल टूल्स, जैसे— वन नोट, गूगल जैमबोर्ड, मीरो, हेयलामा, डी.पी.एल. इत्यादि में से सही

उपकरण का चुनाव करने में एवं इसी प्रकार के नए उपकरणों का विकास करने में शिक्षकों की सहायता करती है, ताकि अधिगम को सुगम और त्वरित करने के नए अवसरों का सृजन किया जा सके जो कि विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों को भी नए अनुभव प्रदान करने में सक्षम हो सकें।

डिजिटल पेडागॉजी को बढ़ावा देने का वास्तविक उद्देश्य ये है कि हमारे शिक्षक और विद्यार्थी वैश्विक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर वैश्विक मानकों पर खरे उतर सकें। डिजिटल पेडागॉजी के माध्यम से शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में मिश्रित तरीके (Blended Mode) से समझदारी पूर्वक उपयुक्त डिजिटल उपकरणों का चुनाव कर एवं अन्य लाभकारी शैक्षणिक गतिविधियाँ जैसे कि गंभीर चिंतन, सहयोगात्मक अधिगम एवं व्यक्तिगत अधिगम इत्यादि के बीच सही तालमेल बैठाकर शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को समृद्ध करना है। जिसके लिए हाल ही में यू.जी.सी. ने मिश्रित अधिगम (Blended Learning) को बढ़ावा देने के लिए एक दस्तावेज जारी किया है जिस में यू.जी.सी. ने 60 प्रतिशत फिजिकल और 40 प्रतिशत डिजिटल पेडागॉजी को शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में सम्मिलित करने का प्रस्ताव रखा है।

डिजिटल पेडागॉजी में शिक्षक की भूमिका

डिजिटल पेडागॉजी की अवधारणा को समझने के लिए यह जानना अवश्यक है कि डिजिटल पेडागॉजी को शिक्षण-अधिगम में स्थान देने से आमने-सामने जाकर (face-to-face) शिक्षण करने में शिक्षक की भूमिका को कम नहीं किया जा रहा है। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि पहले थी। परिवर्तन यह आया है कि शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में डिजिटल पेडागॉजी के प्रयोग द्वारा शैक्षिक दृष्टिकोण से डिजिटल उपकरणों और तकनीकों का सावधानीपूर्वक चुनाव कर अधिगम को और व्यापक और उद्देश्यपूर्ण करने का प्रयास है, ताकि अलग-अलग विषयों में, जैसे— भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित इत्यादि में विषय की प्रकृति के अनुसार डिजिटल उपकरणों (Tools) का प्रयोग कर अधिगम के अनुभव को व्यापक, सुगम और व्यक्तिगत (Personalised) बनाया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तावित डिजिटल पेडागॉजी के प्रचार-प्रसार और क्रियान्वयन के लिए यूनेस्को महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन फॉर पीस एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट, नई दिल्ली और सी.आई.ई.टी. (रा.शै.अ.प्र.प.) ने आपस में मिलकर जुलाई 2022 के अंतिम सप्ताह में डिजिटल पेडागॉजी पर 5 दिवसीय ट्रेनिंग प्रोग्राम का सफल आयोजन किया है। यूनेस्को महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन फॉर पीस एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट द्वारा वर्तमान में, भारत में *डिजिटल टीचर* नाम से एक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम भी संचालित किया जा रहा है जिसमें मुख्य रूप से इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि शिक्षक किस प्रकार से प्रभावी ढंग से डिजिटल पेडागॉजी का प्रयोग शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में कर सकते हैं।

अर्थपूर्ण अधिगम कैसे होता है?

हमें ज्ञात है डिजिटल पेडागॉजी का पूरा बल अधिगम की गति को दोगुना करने, अधिगम को सुगम करने एवं विद्यार्थियों और शिक्षकों को सामूहिक रूप से अधिगम की प्रक्रिया में सम्मिलित कर नए अधिगम अनुभव प्रदान करने पर होता है। इसलिए इससे पहले कि हम डिजिटल पेडागॉजी के विषय पर और गहराई से चर्चा करें यह जान लेना आवश्यक है कि अर्थपूर्ण अधिगम कैसे होता है?

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डेविड असुबेल के अर्थपूर्ण मौखिक अधिगम मॉडल 1960 के अनुसार अर्थपूर्ण अधिगम तभी होता है जब शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थी नई अवधारणाओं को सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं एवं वे नई जानकारी और पुरानी जानकारी के बीच एक मजबूत संबंध (Connection) बनाने में सफल हो पाते हैं। विद्यार्थी इस संबंध को अपनी क्षमता एवं सुविधा के अनुसार समझ पाते हैं या बनता देख पाते हैं। अर्थपूर्ण अधिगम को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित प्रक्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जो इस प्रकार हैं—

- शिक्षण पूछताछ आधारित हो, साथ में पुरस्कार की भावना भी सम्मिलित हो;
- शिक्षण अनुभवजनित हो और प्रक्रिया के समय परस्पर सहयोग को प्रोत्साहित किया जाए;
- शिक्षण का सामाजिक और भावात्मक पृष्ठभूमि से जुड़ाव हों;
- शिक्षण बहुविधि आधारित हो और सहयोगात्मक हो।

डिजिटल पेडागॉजी के माध्यम से विभिन्न प्रकार के डिजिटल उपकरणों के सावधानीपूर्वक चुनाव द्वारा शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में ऊपर उल्लेखित गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है, ताकि सामान्य अधिगम को अर्थपूर्ण अधिगम की तरफ ले जाया जा सके।

डिजिटल पेडागॉजी क्या है?

वर्तमान समय में ऑनलाइन और डिजिटल तकनीकों का चलन शिक्षा के क्षेत्र में काफी बढ़ा है। उदाहरण के लिए, संवर्धित वास्तविकता (Augmented reality), आभासी वास्तविकता (Virtual reality), नेटवर्क वाले कंप्यूटर, मोबाइल तकनीकें, कृत्रिम बुद्धि

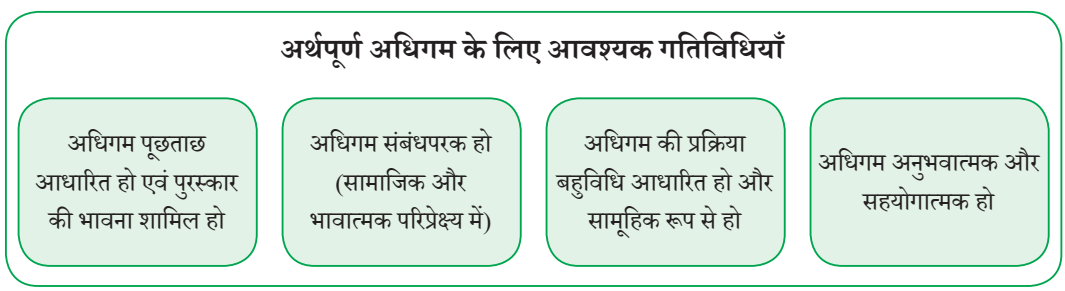

चित्र 1— अर्थपूर्ण अधिगम के लिए आवश्यक गतिविधियाँ

(Artificial Intelligence) इत्यादि। इसी के साथ शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के डिजिटल उपकरणों का विकास, जैसे— स्टोरीबर्ड, अनिमोटो, काहूट, सोक्रेटिव, स्क्रैच, प्रेजी, सेल्फकैड, क्विजलेट, गूगल क्लासरूम, अडोवस्पार्क वीडियो, खान अकादमी, सीसॉ, क्लासडोजो, फ्लेक्सबिलिटी इत्यादि का हुआ है। आज भी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में डिजिटल उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग कैसे हो? इस पर विद्वानों का एक मत नहीं है। इसलिए यह आज भी चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है। दूसरी ओर विशेषज्ञों और विद्वानों का एक बड़ा समूह ऐसा है जो यह मानता है कि शिक्षा में डिजिटल तकनीकों और उपकरणों का प्रयोग ज्ञान की नई संरचनाओं एवं जानने के नए तरीकों तक पहुँचने का माध्यम बन सकता है (केली, 2010)। दूसरी ओर इस बात को लेकर काफी आलोचना है कि शैक्षणिक संस्थान शिक्षण-अधिगम के लिए डिजिटल उपकरणों और तकनीकों को कैसे अपनाते हैं? शोध बताते हैं कि अधिगम को सशक्त करने के लिए डिजिटल उपकरणों और तकनीकों में परिवर्तनकारी शक्ति समाहित है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए ये डिजिटल उपकरण और तकनीकों से अभी तक हमें वैसे परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे जिसकी हमें उम्मीद थी। भारत के संदर्भ में इसका अनुभव पिछले लगभग तीन वर्षों में हम सभी ने किया है जब कोविड-19 काल के दौरान पूरी शिक्षा व्यवस्था ऑनलाइन माध्यम में परिवर्तित हो गई थी। हमारे अनुभव बताते हैं कि एका-एक पूरी शिक्षा व्यवस्था को ऑनलाइन प्रकार में परिवर्तित करने से विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, स्कूल हेड्स एवं नीति-निर्माताओं के सामने कई प्रकार की चुनौतियाँ आई हैं। इसलिए डिजिटल उपकरण और तकनीकों का शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में प्रयोग करने से पूर्व इस पर गंभीर चिंतन करने की आवश्यकता है। ऐसे में डिजिटल पेडागॉजी की अवधारणा ने विद्यार्थियों और शिक्षकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजिटल उपकरण और तकनीकों का चुनाव कैसे किया जाए?

डिजिटल पेडागॉजी अभी भी अध्ययन का एक उभरता हुआ क्षेत्र है (बाल्डिक, 2016)। डिजिटल पेडागॉजी की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा नहीं है, अलग-अलग विशेषज्ञों ने इसे अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। इसे कई और नामों से भी जाना जाता हैं, जैसे— ई-लर्निंग पेडागॉजी, ऑनलाइन पेडागॉजी, ई-पेडागॉजी इत्यादि। वास्तव में डिजिटल पेडागॉजी ऑनलाइन और आई.सी.टी. आधारित शिक्षा से अलग नहीं है, बल्कि ऑनलाइन और आई.सी.टी. आधारित शिक्षा को कैसे शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में प्रयोग किया जाए जिससे विद्यार्थी और शिक्षक कम से कम चुनौतियों का अनुभव कर सकें, यह उसका एक रोडमैप प्रदान करती है। यदि डिजिटल पेडागॉजी की कुछ व्यापक और समावेशी परिभाषाओं की बात की जाए तो वे इस प्रकार है—

तन और सुब्रमण्यम, 2013 के अनुसार डिजिटल पेडागॉजी का उद्देश्य डिजिटल उपकरणों और तकनीकों का उचित और सावधानीपूर्वक प्रयोग कर प्रभावी शिक्षण प्राप्त करना है।

वाताजा और रूकामो, 2021 के अनुसार शिक्षा-शास्त्रीय (Pedagogical) आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर डिजिटल उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करना ही डिजिटल पेडागॉजी है।

सरल शब्दों में कहा जाए तो डिजिटल पेडागॉजी वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी संख्या में प्रयोग हो रही ऑनलाइन और डिजिटल तकनीकों एवं उपकरणों का सही तरीके से प्रयोग करने का शिक्षा-शास्त्र (Pedagogy) है। शिक्षकों को डिजिटल पेडागॉजी का प्रशिक्षण दिया जाना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि डिजिटल पेडागॉजी के प्रयोग द्वारा वे समझ पाते हैं कि किसी विशेष शैक्षणिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्हें किन डिजिटल उपकरणों का चुनाव करना है? कितनी मात्रा में करना है? एवं इसके अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ेंगे? डिजिटल पेडागॉजी को ऑनलाइन, हाइब्रिड और आमने-सामने (face-to-face) प्रकार से प्रयोग में लाया जा सकता है। डिजिटल पेडागॉजी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में ऑनलाइन तकनीकों एवं उपकरणों का प्रयोग करना मात्र नहीं है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक दृष्टिकोण से डिजिटल उपकरणों तक पहुँचना या उनका चुनाव करने के बारे में है। यह डिजिटल उपकरणों का प्रयोग सोच समझ कर करने एवं यह निर्णय लेने के बारे में है कि कब डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करना है और कब नहीं। डिजिटल पेडागॉजी इस बारे में है कि किन डिजिटल उपकरणों के समुचित प्रयोग द्वारा किसी कक्षा के लिए वांछित सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) सरलता से कैसे प्राप्त किए जा सकते हैं?

डिजिटल पेडागॉजी का उद्देश्य है समझदारीपूर्वक डिजिटल उपकरणों के चुनाव द्वारा मिश्रित प्रकार (blended mode) से ऑनलाइन, हाइब्रिड या फिर शिक्षा के आमने-सामने प्रकार में अधिगम को अनुभव-आधारित वातावरण के समीप ले जाना। डिजिटल पेडागॉजी का उद्देश्य कक्षा में सही चुनाव और सही अनुपात में अन्य शिक्षण विधियों के साथ डिजिटल उपकरणों के प्रयोग द्वारा एक ऐसा अधिगम वातावरण तैयार करना है जहाँ पर ज्यादा सहयोग, ज्यादा आनंददायक सीखने का अनुभव, ज्यादा संप्राप्ति निर्माण की संभावना के साथ-साथ ज्यादा व्यक्तिगत और ज्यादा उद्देश्यपूर्ण अधिगम अनुभव प्रत्येक विद्यार्थी को प्रदान किया जा सके। जहाँ विद्यार्थी अधिगम को क्रिया में देख और सुन सकें। डिजिटल पेडागॉजी की अवधारणा सिर्फ विद्यार्थियों के अधिगम अनुभवों को सशक्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि ये बराबर रूप से शिक्षकों को भी नए अधिगम अनुभव उपलब्ध कराने में सक्षम है। सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि डिजिटल पेडागॉजी के कक्षा में उपयोग से विद्यार्थी और शिक्षक दोनों ही नए अधिगम अनुभवों को प्राप्त करते हैं।

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित डिजिटल पेडागॉजी पर एक लेख में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि जब विद्यार्थी ऑनलाइन और आई.सी.टी. उपकरणों के माध्यम से सीखते है तो उनके सीखने की गति और तरीके अलग-अलग होते हैं। ऐसे में डिजिटल पेडागॉजी की भूमिका उभर कर सामने आती है जो शैक्षिक दृष्टिकोण और वैक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखकर सही डिजिटल

उपकरणों के चुनाव कर अन्य लाभकारी शिक्षण विधियों के साथ सही तालमेल बैठाकर मिश्रित माध्यम से विद्यार्थियों को व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करने का कार्य करती है।

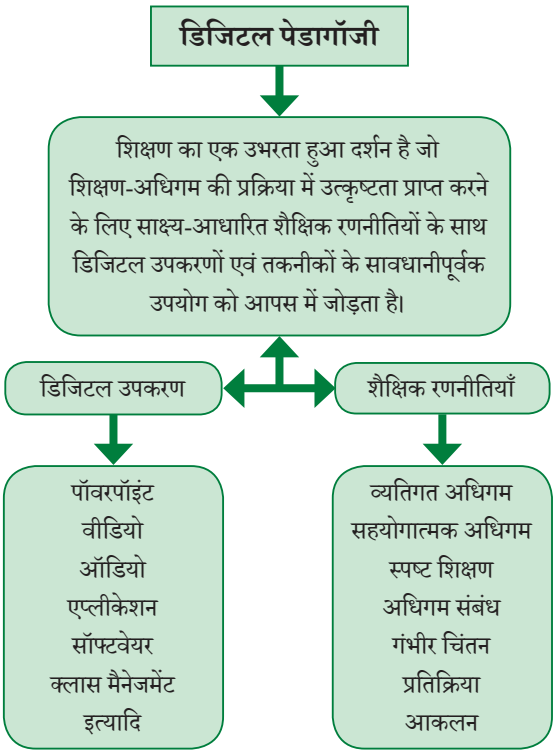

चित्र 2— डिजिटल पेडागॉजी

डिजिटल पेडागॉजी की प्रमुख विशेषताएँ

शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में डिजिटल पेडागॉजी की विशेषताओं को नीचे बिंदुवार लिखा गया है—

- डिजिटल पेडागॉजी में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के लिए डिजिटल उपकरणों का चुनाव विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और सीखने की गति को ध्यान में रखकर किया जाता है।
- इसमें सही डिजिटल उपकरणों के चुनाव के साथ-साथ अन्य सहयोगी शिक्षण विधियों का प्रयोग मिश्रित रूप में किया जाता है, ताकि विद्यार्थियों के अनुभवों को व्यक्तिगत किया जा सके।
- शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थियों का आपस में एवं शिक्षक के साथ जुडाव एवं सहयोग का खास ध्यान रखा जाता है, ताकि अधिगम सहयोगात्मक (Collaborative) हो।
- डिजिटल पेडागॉजी द्वारा शिक्षक स्वयं के लिए नए अधिगम अनुभव तो एकत्रित करते ही हैं। साथ ही साथ पूरी कक्षा के लिए भी नए अनुभव प्रदान हो सकें, इसके लिए कार्य करते हैं।
- इस तरह के शिक्षणशास्त्र में अधिगम के लिए विद्यार्थी प्रश्नों का प्रयोग करते हैं और संवाद (Dialogue) की प्रक्रिया में जुड़ते हैं जो कि गतिशील (Dynamic) होती है और लगातार परिवर्तित होती रहती है।
- डिजिटल पेडागॉजी द्वारा सही डिजिटल तकनीकों एवं उपकरणों, जैसे— वेब 2.0, आभासी प्रयोगशालाएं, 3-D मॉडलिंग इत्यादि, का सही चुनाव कर शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में जुडाव और सहयोग को बढ़ावा दिया जाता है, ताकि विद्यार्थियों को व्यक्तिगत अनुभव प्रदान किए जा सकें।

डिजिटल पेडागॉजी के मुख्य सिद्धांत

जैसा कि हम पहले ही समझ चुके हैं कि डिजिटल पेडागॉजी क्या है? और यह किस तरह से ऑनलाइन और आई.सी.टी. आधारित शिक्षा से अलग है?

डिजिटल पेडागॉजी का उद्देश्य इंटरनेट उपकरणों की सहायता से अर्थपूर्ण अधिगम को और समृद्ध कर शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को मजबूत करना है। डिजिटल पेडागॉजी मुख्य रूप से तीन सिद्धांतों पर कार्य करती है जो इस प्रकार है—

1. पसंद की पेशकश
2. विद्यार्थियों के लिए कठिनाई के स्तरों को समझना
3. साथ में सीखने का अवसर

चित्र 3— डिजिटल पेडागॉजी के मुख्य सिद्धांत

1. पसंद की पेशकश

शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थियों के सीखने की शैली भिन्न-भिन्न होती है न्यूरोसाइंस में हुए शोध बताते हैं कि जिस प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति के फिंगर प्रिंट्स अलग-अलग होते हैं, ठीक उसी प्रकार से प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने की शैली भी भिन्न-भिन्न होती है। अलग-अलग विषयों को सीखने में विद्यार्थी अलग-अलग अधिगम शैलियों का प्रयोग करते हैं। विद्यार्थियों के सीखने में इसी परिवर्तनशीलता को ध्यान में रखते हुए उन्हें एक विधि या एक इंटरनेट उपकरण से पढ़ाना न्यायोचित नहीं है। डिजिटल पेडागॉजी विद्यार्थियों को एक सरल अवसर प्रदान करती है जिसके माध्यम से विद्यार्थी अपनी क्षमता और अपनी पसंद के अनुरूप सीखने के लिए डिजिटल उपकरणों का चुनाव स्वयं कर सकते हैं जिस कारण विद्यार्थी की सीखने की प्रक्रिया अधिक आनंददायक और रोचक होती है। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों को विषयवस्तु उनकी मातृभाषा में उपलब्ध कराना, आभासी प्रयोगशाला (Virtual Lab) के माध्यम से किसी घटना को घटित होते दिखाना एवं मूल्यांकन के लिए ऐसे ऑनलाइन टूल्स विकसित करना जिसे अलग-अलग विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार चुन सकें इत्यादि।

2. विद्यार्थियों के लिए कठिनाई के स्तरों को समझना

जैसा कि हमें पता है प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने की शैली भिन्न-भिन्न होती है ठीक उसी प्रकार शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के दौरान किसी कार्य (Task) को या किसी समस्या को हल करने के दौरान विद्यार्थियों को समस्या या कार्य के अलग-अलग स्तर पर समस्या का अनुभव हो सकता है। उदाहरण के लिए, हो सकता है किसी विद्यार्थी को प्रारंभ में ही समस्या कठिन प्रतीत हो, जबकि अन्य विद्यार्थी को वही समस्या प्रारंभ में सरल प्रतीत हो, ठीक उसी प्रकार से हो सकता है किसी विद्यार्थी को समस्या के प्रारंभ

के कुछ चरण सरल प्रतीत हों, जबकि मध्य या फिर अंत के चरण कुछ कठिन प्रतीत हों, इसलिए किसी भी कक्षा में सभी विद्यार्थियों के लिए एक जैसा सहायता उपक्रम (Scaffolding) देना भी उचित समझ नहीं है। इसलिए डिजिटल पेडागॉजी इस बात पर जोर देती है कि शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत सीखने की शैली और उनको व्यक्तिगत रूप से सीखने में आने वाली समस्याओं को शिक्षकों के माध्यम से समझा जाना चाहिए, ताकि शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में अर्थपूर्ण अधिगम को और सशक्त किया जा सके।

3. साथ में सीखने का अवसर

शोध बताते हैं कि जब विद्यार्थी समूह में सीखते हैं तो उनके अर्थपूर्ण रूप से सीखने की संभावना सब से अधिक होती है, इसलिए डिजिटल पेडागॉजी प्रमुख आवश्यकता के रूप में इस बात पर जोर देती है कि शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया एक तरफा न हो अर्थात एक ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जिसमें विद्यार्थी और शिक्षक दोनों ही नए अनुभव प्राप्त करें एवं अधिगम की प्रक्रिया के आपसी सहयोग से आगे बढ़ें।

प्राथमिक शिक्षक डिजिटल पेडागॉजी को कैसे उपयोग में ले सकते हैं?

हमें पता है कि डिजिटल पेडागॉजी सिर्फ डिजिटल उपकरणों (वेब 2.0, आभासी प्रयोगशालाएँ, 3-D मॉडलिंग, थिंगलिंग, टेड-एड, क्लासडोजो इत्यादि) का शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में प्रयोग कर लेना मात्र नहीं है, बल्कि यह एक शिक्षाशास्त्र है। जिसके माध्यम से अधिगम को अर्थपूर्ण अधिगम की तरफ ले जाने एवं विद्यार्थियों और शिक्षकों को नए अनुभव प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। जिस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारत सरकार ने शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में डिजिटल पेडागॉजी के उपयोग को बढ़ावा देने का प्रयास किया है उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भविष्य में हम प्राथमिक स्तर पर डिजिटल पेडागॉजी का इस्तेमाल और ज्यादा होते देखेंगे। यदि प्राथमिक शिक्षकों के नजरिए से बात की जाए तो भविष्य में प्राथमिक स्तर पर कक्षाओं में अर्थपूर्ण अधिगम को बढ़ावा देने के लिए कई तरह से डिजिटल पेडागॉजी सहायक हो सकती है जिन्हें नीचे बिंदुवार लिखा गया है—

- ***विभिन्न प्रकार के डिजिटल उपकरणों का सावधानी से चुनाव करके***

हमें पता है डिजिटल पेडागॉजी शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में शैक्षणिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उपकरणों के चुनाव करने में सहायता करती है। आज के समय में शिक्षा के क्षेत्र में नित नए डिजिटल उपकरणों और तकनीकों का अविष्कार हो रहा है। उदाहरण के लिए, स्टोरीबर्ड, अनिमोटो, काहूट, सोक्रेटिव, स्क्रैच, प्रेजी, सेल्फकैड, क्विजलेट, गूगल क्लासरूम, अडोब स्पार्क वीडियो, खान अकादमी, सीसॉ, क्लासडोजो, फ्लेक्सबिलिटी इत्यादि, ऐसे में किन उपकरणों का इस्तेमाल कैसे करना है? और कितने समय के लिए करना है? ये महत्वपूर्ण है। ऐसे में डिजिटल पेडागॉजी शिक्षकों को शैक्षिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सही डिजिटल उपकरणों का चुनाव करने में सहायता करती है।

• ***कक्षा में वैक्तिक भिन्नताओं के आधार पर डिजिटल उपकरणों का चुनाव करके***

इस बात का जिक्र पहले भी किया जा चूका है कि प्राथमिक स्तर पर प्रत्येक बच्चे का सीखने का पैटर्न अलग-अलग होता है, इसलिए किसी एक डिजिटल उपकरण से पूरी कक्षा को पढ़ाना उचित विचार नहीं है। शिक्षक को डिजिटल उपकरणों के चुनाव के लिए लचीला रवैया अपनाना चाहिए और वैयक्तिक भिन्नताओं के आधार पर एवं विद्यार्थियों के सीखने की गति में भिन्नता के आधार पर डिजिटल उपकरणों का चुनाव करना चाहिए, ताकि सभी प्रकार के विद्यार्थियों के लिए अधिगम अर्थपूर्ण भी हो और आनंददायक भी।

• ***अधिगम के वातावरण में संवाद और चर्चा को बढ़ावा देकर***

डिजिटल पेडागॉजी का एक प्रमुख गुण ये भी है कि इसमें सीखने की प्रक्रिया कभी भी एकपक्षीय नहीं होती अर्थात शिक्षक और विद्यार्थी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में डिजिटल उपकरणों का प्रयोग कर के उन पर संवाद और चर्चा करके दोनों एक-दूसरे से सीखते है, जिससे विद्यार्थियों के मन में अवधारणाओं के प्रति बनी गलत समझ का पता चलता है और उसे उचित उदाहरणों की सहायता से परिष्कृत भी किया जाता है।

• ***विद्यार्थियों को नए अनुभव प्रदान करके***

डिजिटल पेडागॉजी के प्रयोग द्वारा कक्षा में एक समय पर विद्यार्थियों की आवश्यकता और उनके सीखने की गति को ध्यान में रखकर किसी अवधारणा को समझाने के लिए कई प्रकार के डिजिटल उपकरण प्रयोग किए जा सकते हैं जो विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को नया अनुभव प्रदान करते हैं। विशेषकर विद्यार्थी अपनी सुविधा के अनुसार उपकरणों का चुनाव कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी कक्षा में अलग-अलग भाषायी पृष्ठभूमि के विद्यार्थी उपस्थित हैं तो शिक्षक द्वारा उन्हें उनकी मातृभाषा में विषयवस्तु एवं व्याख्यान का अनुवाद उपलब्ध कराया जा सकता है। जो निश्चित रूप से विद्यार्थियों को नए व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करता है और अधिगम की प्रक्रिया को सशक्त करता है।

• ***सीखने की प्रक्रिया में सहयोग को बढ़ावा देकर***

सीखने की प्रक्रिया में सहयोग का अपना विशिष्ट स्थान होता है, क्योंकि इसके माध्यम से हम सीखने की प्रक्रिया में कई विद्यार्थियों की आपस में सहभागिता करा सकते हैं जो सीखने के माहौल को सकारात्मक रूप से परिष्कृत करता है। डिजिटल पेडागॉजी के प्रयोग द्वारा शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया जाता है जिससे अधिगम स्व-केंद्रित न हो कर बहुआयामी होता है। यह नया अनुभव विद्यार्थियों को अर्थपूर्ण अधिगम की तरफ ले जाने में सक्षम होता है।

निष्कर्ष

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि आज के समय में तकनीक एक नए मुकाम पर पहुँच गई है। विभिन्न क्षेत्रों में तकनीक ने गुणवत्ता के संदर्भ में अपनी प्रभावकारिता को स्पष्ट किया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी पिछले दो दशकों में नई तकनीकों का चलन काफी बढ़ा है जिसमें ऑनलाइन और आई.सी.टी. आधारित तकनीक ने अपना एक विशिष्ट मुकाम बनाया है।

भारत समेत पूरी दुनिया में कोविड-19 महामारी के समय शिक्षण-आधिगम की प्रक्रिया में एका-एक ऑनलाइन और आई.सी.टी. आधारित उपकरणों का चलन काफी बढ़ा है और साथ ही भविष्य में इस प्रकार के उपकरणों की आवश्यकता को और बेहतर तरीके से समझा गया है।

डिजिटल पेडागॉजी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक नियमों को ध्यान में रखकर किस प्रकार से डिजिटल उपकरणों का प्रयोग किया जाए इसका एक बेहतर विकल्प प्रदान करती है। डिजिटल पेडागॉजी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में अधिगम की गति को त्वरित करने एवं विद्यार्थियों को सीखने के दौरान नए शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने में सक्षम है। यह किसी कक्षा में वैयक्तिक भिन्नता और विद्यार्थियों की सीखने की गति में भिन्नता को ध्यान में रखकर डिजिटल उपकरणों के चुनाव पर ध्यान केंद्रित करती है। डिजिटल पेडागॉजी प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों को नए अनुभव प्रदान कर अर्थपूर्ण अधिगम को सशक्त करने के लिए कार्य करती है। निश्चित रूप से आने वाले समय में डिजिटल पेडागॉजी का चलन और बढ़ेगा एवं यह शिक्षकों और विद्यार्थियों को सीखने के नए अवसर भी प्रदान कराने में सहायक होगी।

संदर्भ

असुबेल मीनिंगफुल वर्बल लर्निंग. 1960. 14 अक्तूबर, 2022 को https://link.springer.com/referenceworkentry/10.1007/978-1-4419-1428-6_1855 से प्राप्त किया गया।

डिजिटल टूल्स इन एजुकेशन. 2022. 14 अक्तूबर, 2022 को https://elearningindustry.com/digital-education-tools-teachers-students प्राप्त किया गया।

डिजिटल पेडागॉजी फॉर टीचिंग एंड लर्निंग. 2022. 4 सितंबर, 2022 को https://mgiep.unesco.org/digital-teacher-training से प्राप्त किया गया।

तन और सुब्रमण्यम. 2013. लर्निंग सिंगापुर हिस्ट्री इन अ वर्चुअल वर्ल्ड. 2013 में 63वाँ आई.ई.ई.ई. वार्षिक सम्मेलन इंटरनेशनल काउंसिल फॉर एजुकेशन मीडिया (आई.सी.ई.एम.) पृ.सं.1–10. आई.ई.ई.ई. 14 अक्तूबर, 2022 को https://ieeexplore.ieee.org/abstract/document/6820211 से प्राप्त किया गया।

बाल्डिक, ए. 2016. इनसाइट टू ई-पेडागॉजी कांसेप्ट डेवलपमेंट. *प्रोसीडिया-सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज*. पृ.सं. 231, 251–255. 14 अक्तूबर, 2022 को https://scholar.google.com/scholar?hl=en&as_sdt=0%2C5&q=%28Baldi%C5%86%C5%A1%2C+2016%29+digital+peadagogy&btnG= से प्राप्त किया गया।

भारत सरकार केंद्रीय बजट. 2022–23. 10 अगस्त, 2022 को https://www.india.gov.in/spotlight/union-budget-fy-20222023#:~:text=The%20Union%20Budget%20for%20FY,Energy%20Transition%2C%20and%20Climate%20Action से प्राप्त किया गया।

मोलॉय, एस. और सी. केली. 2010. *टैटैग्ड पेडागॉजी*. 14 अक्तूबर, 2022 को https://jitp.commons.gc.cuny.edu/tag/digital-pedagogy/ से प्राप्त किया गया।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. 2005. 12 जुलाई, 2022 को https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf से प्राप्त किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति. 2020. 2 अगस्त, 2022 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf से प्राप्त किया गया।

वाताजा और रूकामो. 2021. कांसेप्चुलाईजिंग डाईमेंशन्स एंड अ मॉडल फॉर डिजिटल पेडागॉजी जर्नल ऑफ पैसिफिक रिम साइकोलॉजी. 14 अक्तूबर, 2022 को https://journals.sagepub.com/doi/full/10.1177/1834490921995395 से प्राप्त किया गया।

व्हॉट इस डिजिटल पेडागॉजी एंड व्हॉई डू वी नीड वन? ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. 14 अक्तूबर, 2022 को https://www.oup.com.au/media/documents/higher-education/he-samples-pages/he-teacher-ed-landing-page-sample-chapters/HOWELL_9780195578430_SC.pdf से प्राप्त किया गया।

14

प्रातःकालीन सभा विद्यालय संस्कृति का प्रतिबिंब

ऋषभ कुमार मिश्र*

इस लेख की आधारभूत मान्यता है कि विद्यालयों में होने वाले रीति-रिवाज उसकी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। कोई विद्यालय शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक के बारे में जो दृष्टि रखता है, उसकी प्रत्यक्ष और परोक्ष अभिव्यक्ति इन रीति-रिवाजों में होती है। इस पृष्ठ भूमि में प्रस्तुत लेख आनंद निकेतन विद्यालय की प्रातःकालीन सभा के अध्ययन द्वारा विद्यालय की संस्कृति को प्रस्तुत करता है। यह लेख बताता है कि किस तरह से विद्यालय की प्रार्थना सभा में शारीरिक व्यवहारों के परिमार्जन और सख्त अनुशासन के स्थान पर आत्मानुशासन, अध्यापकों के वर्चस्वशाली नियंत्रण के स्थान पर लोकतांत्रिक भागीदारी, व्यवहारों और विचारों के पुनरुत्पादन के स्थान पर स्वतंत्र और मननशील चिंतन को पोषित किया जाता है।

विद्यालयों में होने वाली प्रातःकालीन सभा के दौरान की जाने वाली प्रार्थना, दिए जाने वाले निर्देश, विद्यार्थियों की प्रस्तुतियाँ और अन्य क्रियाकलाप शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक के बारे में विद्यालय की दृष्टि को प्रस्तुत करते हैं। प्रातःकालीन सभा, जैसे— विद्यालयी रीति-रिवाजों का लक्ष्य सामूहिक एकजुटता के बोध को पुष्ट करना, नैतिक संदेशों को प्रसारित करना और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना होता है (दुर्खाइम, 1965)। विद्यालय की प्रातःकालीन सभा जैसे रीति-रिवाज को क्वार्टज़ (1999) ने औपचारिक प्रतीकात्मक प्रदर्शन माना है जिसमें दर्शकों का एक समुदाय उपस्थित होता है। इस समुदाय के लिए सोद्देश्य प्रदर्शन किया जाता है। इस प्रदर्शन में समूह के सभी सदस्य भाग लेते हैं। हर भागीदार केवल अपने लिए अपने प्रदर्शन नहीं करता, वह दूसरों को भी दिखाना चाहता है कि वह खास तरह के आंगिक-वाचिक हाव-भाव द्वारा संप्रेषण कर सकता है। इस पूरे प्रदर्शन का प्रतीकात्मक अर्थ होता है जिससे वैयक्तिक और सामूहिक पहचान पुष्ट होती है। इन प्रतीकात्मक अर्थों का दूरगामी प्रभाव होता है। इसके द्वारा विद्यालय, विद्यार्थियों और शिक्षकों को अर्थ-निर्माण का एक सांस्कृतिक माध्यम उपलब्ध कराता है (बर्नस्टीन, लेविन और पीटर्स, 1966)। इस माध्यम में शामिल होने वाले भागीदार इसमें निहित प्रत्यक्ष और छुपे हुए अर्थों का निर्वचन करते हुए 'विद्यालय का सदस्य' होने के बोध से युक्त होते

* *असिस्टेंट प्रोफेसर*, स्कूल ऑफ एजुकेशन, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

हैं। उन्हें सामूहिक और वैयक्तिक स्तरों पर उनकी भूमिकाओं और विशिष्ट पहचान के प्रति सचेत किया जाता है। बर्नस्टीन, लेविन और पीटर्स (1966) के अनुसार विद्यालयी रीति-रिवाज दो तरीके के होते हैं। प्रथम, सहमति वाले रीति-रिवाज, जो पूरे विद्यालय को एक विशिष्ट समूह मानते हुए जोड़ते हैं और इसे एक अनूठी पहचान देते हैं। द्वितीय, विभेदक रीति-रिवाज, जो विद्यालय के भीतर उम्र, लिंग, कक्षा और कार्य विभाजन के आधार पर अलग-अलग समूहों को पहचान देते हैं। ये दोनों तरह के रीति-रिवाज नियंत्रण, व्यवस्था सत्ता को वैध बनाते हैं। फूको (1977) के विचार 'अनुशासनात्मक तकनीकी' के अनुसार प्रातःकालीन सभा में की जाने वाली गतिविधियाँ व्यक्ति के व्यवहार को सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप विनियमित और नियंत्रित करती हैं। वे विद्यार्थियों को स्वीकार्य और अस्वीकार्य व्यवहारों के बारे में संदेश देती हैं।

उपर्युक्त सैद्धांतिक पृष्ठभूमि में किए गए कार्य बताते हैं कि प्रातः कालीन सभा का लक्ष्य नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का पोषण, चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास, नागरिकता की शिक्षा देना होता है। इस दौरान नैतिक संदेशों के प्रसार के लिए धार्मिक प्रार्थनाओं का प्रयोग, सामाजिक समस्याओं पर चर्चा, विद्यार्थियों की उपलब्धि की सराहना और ऐतिहासिक महत्व के दिनों पर विशेष आयोजन का प्रयोग किया जाता है। इन गतिविधियों में मूलतः इस बात पर बल दिया जाता है कि अच्छा विद्यार्थी बनने के लिए अपेक्षित गुण कौन-कौन से हैं (कैपी, 2019)। सिलबर्ट और जैकलीन (2015) ने अपने अध्ययन में पाया है कि विद्यालय की प्रार्थना सभा में बच्चों को कक्षा के अनुसार अलग बैठाना, मॉनीटरों या चयनित विद्यार्थियों को कक्षा से अलग किसी विशेष स्थान पर बैठाना, शिक्षकों द्वारा निगरानी करने और अनुशासन बनाए रखने के हाव-भाव विद्यार्थियों के व्यवहारों का एक साँचे में ढालने का कार्य करते हैं। कब आना है? कहाँ बैठना है? क्या करना है? क्या नहीं करना है? की रोज-रोज पुनरावृत्ति बच्चों के विद्यालयी जीवन में ऐसे घुल जाती है कि ये विषय उनके लिए असामान्य नहीं रह जाते है और वे इसे अपनी पहचान के साथ आत्मसात कर लेते हैं। इस तरह से विद्यालयी रीति-रिवाज प्रभु वर्ग के स्वीकृत मूल्यों और व्यवहारों का पुनरुत्पादन करते हैं, लेकिन यदि इनका नियोजन इस दृष्टि से किया जाए कि इसमें व्यक्ति (विद्यार्थी और शिक्षक) की एजेंसी के लिए स्थान हो तो वे उक्त प्रवृत्ति से बच सकते हैं। इसके साथ-साथ विद्यालय को अपने रीति-रिवाजों के प्रदर्शन में वर्चस्व और शोषण को वैध बनाने वाले अर्थों व व्यवहारों को छुपाने के स्थान पर उन्हें प्रकट रूप से चर्चा की सामग्री बनाना होगा (बिजोर्क, 2002)। इस दृष्टि से आनंद निकेतन की प्रातःकालीन सभा एक भिन्न उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह लेख इसी उदाहरण को प्रस्तुत करता है।

आनंद निकेतन की प्रातःकालीन सभा

उपर्युक्त विचारों और अध्ययनों के आलोक में इस कार्य में आनंद निकेतन की प्रातःकालीन सभा की विशेषताओं को व्याख्यायित किया गया है। इस कार्य का उद्देश्य प्रातःकालीन सभा के अवलोकन और विश्लेषण द्वारा आनंद निकेतन की अधिगम संस्कृति

पर प्रकाश डालना है। इसके लिए वृत्त अध्ययन (केस स्टडी) उपागम को अपनाते हुए प्रातःकालीन सभा का सहभागी अवलोकन किया गया है। अवलोकन के दौरान जो टिप्पणियाँ तैयार की गई थीं उन्हीं के विश्लेषण के आधार पर यह लेख तैयार किया गया।

आनंद निकेतन वर्धा के सेवाग्राम में स्थित विद्यालय है जिसका संचालन नई तालीम समिति द्वारा किया जाता है। यह विद्यालय सेवाग्राम आश्रम परिसर में ही स्थित है जिसके भवन मिट्टी और खपरैल के बने हुए हैं। यह विद्यालय नई तालीम के सिद्धांतों के आधार पर संचालित किया जाता है। यहाँ लगभग 250 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं जो आसपास के गाँवों से आते हैं। यहाँ लगभग 20 शिक्षक हैं। यह विद्यालय अहिंसा और शांति आधारित न्यायमूलक एवं लोकतांत्रिक समाज की परिकल्पना को शिक्षा के माध्यम से साकार करना चाहता है। इस विद्यालय पर महात्मा गांधी और विनोबा भावे की वैचारिकी का प्रभाव सर्वाधिक है। इस विद्यालय की प्रातःकालीन सभा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नानुसार हैं—

आत्मानुशासन के साथ लोकतांत्रिक भागीदारी

आनंद निकेतन में दिन की शुरुआत कक्षा की तैयारी के साथ होती है। विद्यालय आने के साथ ही विद्यार्थी और शिक्षक मिलकर अपनी-अपनी कक्षा को तैयार करते हैं। इस दौरान वे कक्षा की सफाई करते हैं। उसके बाद वे अपने बैठने के आसन को बिछाते हैं और अपना स्कूल बैग रखते हैं। कक्षा के प्रवेश द्वार और ब्लैकबोर्ड पर रंगोली और चित्रादि बनाते हैं। वर्धा के गाँवों में एक आम चलन है कि यहाँ लोग हर सुबह अपने घरों के दरवाजों को फूलों और रंगोली से सजाते हैं। आनंद निकेतन के विद्यार्थी भी अपनी कक्षाओं और घर के समान को साफ करते हैं तथा सजाते हैं। कक्षा की सफाई तो स्कूल की अनिवार्य दिनचर्या का हिस्सा है, लेकिन कक्षा को सजाना विद्यार्थियों की पहल है। यह अवलोकनीय है कि इस दौरान विद्यार्थियों की निगरानी नहीं की जाती है। इसके लिए अलग से किसी पुरस्कार या सराहना की भी व्यवस्था नहीं है। कुछ विद्यार्थी घर से विद्यालय आते हुए रास्ते से जंगली फूल एकत्रित करके लाते हैं। इसका उपयोग वे प्रार्थना स्थल की सजावट और कक्षा की सजावट के लिए करते हैं। क्षेत्र अवलोकन के दौरान पाया गया कि जिस कक्षा को प्रार्थना के संचालन का दायित्व सौंपा गया है, उसके अलावा भी विद्यार्थी फूल लाकर सजावट करते हैं।

प्रातःकालीन सभा से पूर्व स्कूल के विद्यार्थी खेलने के अतिरिक्त अपनी सब्जियों के खेतों का निरीक्षण करने के लिए भी जाते हैं। इस दौरान कुछ विद्यार्थी अपनी-अपनी क्यारियों की निराई और सिंचाई का कार्य भी करते हैं। इसके बारे में विद्यार्थियों ने बताया कि समय से पहले विद्यालय आना और खेतों का निरीक्षण करना उनके दैनिक समय नियोजन का अंग होता है। वे इन्हीं कार्यों को करने के लिए समय से पहले आते हैं। यह अवलोकन विद्यार्थियों के दायित्व बोध का प्रमाण है जिसके लिए उन्हें किसी सख्त संरचनात्मक व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है। वे स्वतःस्फूर्त होकर अपने कार्यों को करते हैं। अवलोकन में यह पाया गया कि कई बार शिक्षक भी उनके इस कार्य में सहभागी बन जाते हैं।

आनंद निकेतन विद्यालय में प्रातःकालीन सभा का आयोजन सुबह 10 बजे कला भवन में होता है। प्रार्थना सभा की बैठक व्यवस्था में विद्यार्थी और शिक्षक एक साथ जमीन पर बैठते हैं। अन्य विद्यालयों की तरह यहाँ उनके वेश-भूषा आदि पर न तो कोई प्रतिबंध है और न ही इसकी कोई जाँच की जाती है। यह भी अवलोकनीय है इस विद्यालय में कक्षाओं को अपनी-अपनी पंक्ति में बैठने जैसी व्यवस्था भी नहीं है। यह भी देखा गया कि अध्यापकों के आने पर विद्यार्थियों के खड़े होने या उनसे दूरी बनाकर बैठने का भी चलन नहीं है। प्रार्थना सभा में, जहाँ से प्रार्थना का गायन होता है वहाँ बीच में एक मेज रखी होती है, जिसकी सजावट विद्यार्थियों द्वारा स्थानीय फूलों के माध्यम से की जाती है। प्रार्थना के लिए निर्धारित समय से पूर्व विद्यार्थी कला भवन में एकत्रित होने लगते हैं। प्रत्येक दिन प्रार्थना सभा संचालन का दायित्व कक्षा विशेष का होता है। नियोजित कार्यक्रमानुसार कक्षा विशेष और उसके शिक्षक कला भवन को प्रार्थना के लिए तैयार करते हैं। प्रार्थना आरंभ होने से पूर्व संगीत शिक्षक या किसी चयनित विद्यार्थी द्वारा हारमोनियम से एक मधुर ध्वनि बजाई जाती है। इस ध्वनि का बजना संकेत होता है कि प्रार्थना आरंभ होने वाली है और सभा में सभी उपस्थित जन शांत हो जाए। लगभग एक मिनट तक यह ध्वनि चलती है। इसके अतिरिक्त कोई भी आदेशात्मक निर्देश नहीं दिया जाता है। तदुपरांत सामूहिक प्रार्थना और गीत गाया जाता है। प्रार्थना के लिए विद्यालय ने गीतों का चुनाव सूझ-बूझ के साथ किया है। इनमें सर्वधर्म समभाव, प्रकृति की सराहना, आत्मविश्वास के भाव से युक्त गीत सम्मिलित हैं जो प्रकृति और मानव के सहजीवन की सराहना करते हैं और विद्यार्थियों को सामाजिक बदलाव के लिए कर्ता की भूमिका में देखते हैं। यह भी अवलोकनीय गायन समूह को अलग और विशिष्ट दर्जा नहीं दिया गया है। वे समूह के साथ ही बैठते हैं और सभी मिलकर गायन करते हैं।

प्रार्थना और गीत के बाद एक विद्यार्थी, जिसे पहले सूचना रहती है, सुविचार पढ़ता है। इसके बाद एक दूसरा विद्यार्थी आज के 'दिन विशेष' पर अपनी बात रखता है। जिन विद्यार्थियों को सुविचार और दिन विशेष की प्रस्तुति देनी होती है, वे पहले ही अग्रिम पंक्ति में बैठे रहते हैं। संबंधित कक्षा शिक्षक इन विद्यार्थियों की तैयारी करवाते हैं। इस तैयारी के लिए प्रकरण का चयन सोद्देश्य होता है। इसमें समाज सुधारकों, स्थानीय संतों, गांधीवादी विचारकों को सम्मिलित किया जाता है। उदाहरण के लिए, कक्षा छह की छात्रा सोनिया को उसकी अध्यापिका ने सत्य शोधक समाज और ज्योतिबा फुले पर प्रस्तुति तैयार करवाई थी। कक्षा पाँच की छात्रा हंसिका को उसके कक्षा शिक्षक ने, भारतीय शिक्षाशास्त्री पर प्रस्तुति तैयार करवाई थी। यह भी देखा गया कि विद्यार्थी व्यक्ति विशेष के अतिरिक्त गांधी विचारों एवं सम-सामयिक विषयों पर भी प्रस्तुति देते थे। उदाहरण के लिए, कक्षा सात के समीर ने कताई पर विचार प्रस्तुत किया। उसने अपनी प्रस्तुति में बताया कि कताई करने से हाथ और आँखों का समन्वय बनता है। इससे ध्यान शक्ति भी बढ़ती है। यह एक कौशल है जो स्वावलंबन की ओर ले जाता है। समीर की ही तरह कक्षा आठ की छात्रा आशू ने प्रार्थना सभा को 'दालान (शिल्प

कार्यों) से समानता कैसे आए?' विषय पर संबोधित किया। इसने कहा कि— "आनंद निकेतन के दालानों का उद्देश्य स्वावलंबी बनाने के साथ-साथ समानता लाना भी है। इस समानता का पहला आधार लैंगिक है, क्योंकि हम जिन घरों से आते हैं वहाँ पर इन्हीं कामों को लैंगिक भेदभाव के साथ किया जाता है। दूसरी समानता सामाजिक समानता की है जहाँ किसी खास जाति के लोग कोई काम करते हैं और लोग उसे उस जाति से संबंधित मानते हैं और सामाजिक स्थिति में नीचे पायदान पर रखते हैं। तीसरी समानता जिसकी नई तालीम में चर्चा है, वह है ज्ञान और श्रम के बीच भेद को कम करना। नई तालीम का मानना है कि जो श्रम है उसमें भी ज्ञान की जरूरत होती है और जो ज्ञान है उसके लिए भी श्रम करना पड़ता है।" इस तरह की प्रस्तुतियों के माध्यम से विद्यार्थियों को चिंतन के लिए दिशा प्रदान की जाती है। इससे वे एक ओर गांधी दर्शन और नई तालीम के सिद्धांतों से परिचित होते हैं तो दूसरी ओर एक संप्रेषक की भूमिका में संदेश का प्रसार भी करते हैं। यह अवलोकनीय है कि विद्यार्थियों की उक्त प्रस्तुतियों पर कोई चर्चा नहीं होती है।

आत्माभिव्यक्ति का मंच

प्रातःकालीन सभा के आखिरी चरण में कोई भी शिक्षक और विद्यार्थी आवश्यकतानुसार सभा के सामने अपनी बात रख सकता है। इसमें पहले विद्यार्थियों को अवसर मिलता है, यह चरण विद्यार्थियों को आत्माभिव्यक्ति का एक मंच प्रदान करता है। इस दौरान देखा गया कि विद्यार्थी समाचारपत्रों से, कहानी, कविता, खबर, पहेली या किसी प्रयोग का उल्लेख करते हैं। यह घटक पूर्णतया बच्चों की इच्छा और स्वतंत्रता पर आधारित है, इसके लिए उन्हें बाध्य नहीं किया जाता है। उदाहरण के लिए, कक्षा छह के एक विद्यार्थी पीयूष द्वारा 'मिनी कूलर' तैयार किया गया था। उसने अपने इस प्रयोग का प्रदर्शन प्रार्थना सभा में किया। इसी तरह एक अन्य प्रार्थना सभा में समीर नाम के विद्यार्थी 'कबाड़ से जुगाड़' परियोजना के अंतर्गत बैटरी से चलने वाली गाड़ी बनाई थी। उसने प्रार्थना सभा में इसका प्रदर्शन किया। इस तरह का अवसर विद्यार्थियों के कर्ता बोध को मजबूत करता है। इससे उनमें यह संदेश भी जाता है कि उनके विचार, प्रयोग और अनुभव भी महत्वपूर्ण हैं।

प्रार्थना सभा केवल विद्यार्थियों की ही प्रस्तुति और साझेदारी का मंच नहीं है, बल्कि आनंद निकेतन के शिक्षक भी इस मंत्र से अपने विचारों और अनुभवों को साझा करते हैं। उदाहरण के लिए, जया ताई और सुषमा ताई को स्विट्जरलैंड के इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर ट्रेनिंग में आमंत्रित किया गया था। एक हफ्ते के प्रवास के बाद जब वे दोनों वापस आई तब प्रार्थना सभा में उन्होंने अपने अनुभव साझा किए। वहाँ के मौसम, प्राकृतिक वातावरण, रहन-सहन और खानपान के बारे में बताया। वहाँ के विद्यालयों और बच्चों पर विस्तार से चर्चा की। जया ताई ने उल्लेख किया कि वहाँ के स्कूलों में शिल्प और हाथ के काम को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है। सुषमा ताई ने वहाँ के स्कूलों पर आधारित एक पॉवरपॉइंट प्रस्तुतीकरण भी दिया। इस दौरान बच्चे उत्साहित थे और वे वहाँ के स्कूलों की तुलना आनंद निकेतन से कर रहे थे। ऐसे ही एक प्रार्थना सभा में जीवन दादा ने 'अपना विद्यालय' विषय पर लिखी स्वरचित मराठी कविता

सुनाई। प्रकृति ताई ने स्थानीय वनस्पतियों और जीव-जंतुओं के ऊपर प्रस्तुति दी। विद्यालय के शिक्षक शरद दादा ने पूरी सभा के सामने अंधश्रद्धा के निर्मूलन के लिए प्रयोग करके दिखाए। गायत्री ताई ने पटाखों से होने वाले प्रदूषण पर पूरी सभा को जागरूक किया। यह अवलोकनीय रहा कि शिक्षकों की प्रस्तुतियों के दौरान किसी औपचारिकता को नहीं निभाया गया। जैसे कोई विद्यार्थी अपने विचार रखने के लिए प्रस्तुत होता था, वैसे ही शिक्षक भी आए।

प्रकृति के साथ सहजीवन की प्रस्तुति

आनंद निकेतन विद्यालय की प्रार्थना सभा में प्रकृति के साथ सहजीवन के मूल्य पर बल दिया जाता है। इस विद्यालय में गाई जाने वाली प्रार्थनाओं में निहित एक मुख्य संदेश प्रकृति और मनुष्य की एकात्मकता और पारस्परिकता है। इसके माध्यम से शिक्षक और विद्यार्थी इस तथ्य की सराहना करते हैं कि वे विराट प्रकृति का ही अंश हैं। प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों का प्रकृति प्रेम स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है। अक्सर प्रार्थना सभा में विद्यार्थी किसी न किसी स्थानीय वनस्पति और जीव को प्रस्तुत करते थे। उदाहरण के लिए, कक्षा 5 में पढ़ने वाली प्राची ने अपने खेत से निकले हुए भिंडी के फूल लेकर प्रार्थना सभा में दिखाएँ और बताया कि उसकी कक्षा ने जो फसल लगाई हुई थी, उसका फूल आने लगा है। इससे अभिप्रेरित होकर अन्य विद्यार्थियों ने भी मौसमी सब्जियों और फसलों का अवलोकन किया। उससे अपनी-अपनी कक्षाओं का परिचय कराया। ऐसे ही कक्षा तीन के एक विद्यार्थी प्रद्युम्न ने विद्यालय में मेंढक के छोटे बच्चों पर प्रस्तुतीकरण दिया। कक्षा चार में पढ़ने वाली अक्षरा घर से विद्यालय आ रही थी। उसे रास्ते में एक तितली मिली। तितली बहुत सुंदर थी और उसने उसको उठा लिया और अपनी हथेली में रखकर वह विद्यालय लेकर आई। प्रार्थना सभा में जब 'आज का विचार' और 'संबोधन' हो चुका था तब अक्षरा खड़ी हुई और अपने हाथ में तितली को लेकर सब को दिखाया। इसके बाद सुषमा ताई ने सभा के सामने जैव विविधता और छोटे कीट-पतंगों के ऊपर संकट की चर्चा की। इस चर्चा के अंत में तय हुआ कि आगामी शनिवार को विद्यार्थी और शिक्षक मिलकर विद्यालय परिसर में इस तरह के कीट-पतंगों को खोजेंगे और उनका अवलोकन करेंगे। आगामी शनिवार को यह गतिविधि हुई। स्पष्ट है कि विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों की पहल को वैधता प्रदान करने के साथ उसे एक महत्वपूर्ण शिक्षण अनुभव में भी परिवर्तित किया गया। ऐसा ही एक उदाहरण और प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रार्थना सभा— विद्यार्थियों के वैचारिक उन्मुखीकरण का मंच

आनंद निकेतन विद्यालय की प्रार्थना सभा एक ऐसा मंच है जो विद्यार्थियों को गांधीवादी मूल्यों और नई तालीम के सिद्धांतों से परिचित कराता है। क्षेत्र कार्य के दौरान पाया गया कि कक्षा नौ और दस के विद्यार्थियों ने कनिष्ठ कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए 'नई तालीम क्या है, इस विषय पर प्रार्थना सभा में एक प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति में विद्यार्थियों ने खुद को तीन-तीन के समूह में विभाजित किया और प्रत्येक समूह ने नई तालीम की किसी एक विशेषता पर अपना मत रखा। प्रथम समूह ने बताया कि नई तालीम की

पद्धति पर्यावरण के अनुकूल है। इस समूह ने वर्तमान विकास के प्रतिमान द्वारा हो रहे विनाश का उदाहरण दिया। इस समूह ने बल देकर कहा कि उक्त समस्याओं का हल हमें गांधी जी की नई तालीम में मिलता है। दूसरे समूह ने कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था के लिए नई तालीम की प्रासंगिकता पर विचार व्यक्त किए। इस समूह ने अपनी बात रखते हुए विदर्भ में किसानों की आत्महत्या पर चर्चा की। इस समूह ने बताया कि कृषि अब संपोषणीय नहीं रह गई है। किसान भी जैविक कृषि से दूर होते जा रहे हैं। इससे किसान की निर्भरता बाजार पर बढ़ जाती है और कर्ज ज्यादा हो जाता है। इस कारण से आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है। समूह ने यह भी जोड़ा कि कृषि के जैविक न रहने का असर हमारे पर्यावरण पर भी पड़ा है, जैसे-जैसे खेत को तैयार करने की मशीन आती गई हमारे जानवर हमसे दूर होते गए। जब हमारे पास पालतू जानवर हुआ करते थे तो हमें रासायनिक खाद, खेत जोतने के पैसे आदि देने नहीं पड़ते थे। साथ ही साथ रासायनिक दवा का उपयोग नहीं करना पड़ता था, लेकिन यह सब खत्म होने से नई समस्याओं को बढ़ावा मिला और पर्यावरण भी चिंता की श्रेणी में आ गया है। तीसरे समूह ने चर्चा कि नई तालीम पंथनिरपेक्षता सिखाती है। वह सभी धर्मों से प्रेम करना सिखाती है। इसके लिए इस समूह ने उदाहरण दिया कि वे अपनी प्रार्थनाओं में सबके मंगल की कामना करते हैं। किसी एक धर्म के प्रति नई तालीम का झुकाव कभी नहीं रहा है। नई तालीम विश्व शांति और मानवता के साथ रही है। नई तालीम में अहिंसा का विचार भी हम लोगों को सिखाया जाता है। चौथे समूह ने जाति भेद निर्मूलन, समतामूलक समाज, खादी की विविधता पर बातचीत की। पाँचवें समूह ने उपभोक्तावादी संस्कृति पर बात की। इस समूह ने पिज्जा कल्चर का उदाहरण दिया और बताया कि कैसे यह हमारे जीवन में शामिल हो गया है। छठें समूह ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा की स्वच्छता हमारे लिए बहुत जरूरी है। गांधी इसलिए बहुरूप गांधी हैं कि वे प्रत्येक काम स्वयं करने की बात करते थे। इस समूह ने बल दिया कि सफाई भी एक मूल्य है जिसका परिणाम स्वच्छता है।

इस विद्यालय में नैतिक जागरण के लिए उपदेश की विधि नहीं अपनाई जाती है। न ही किसी वयस्क द्वारा कठिन भाषा में ओजस्वी भाषण दिया जाता है, बल्कि विद्यार्थियों को तैयार किया जाता है कि वे अपनी विचाराभिव्यक्ति में इन विषयों पर चर्चा करें। इस तैयारी में शिक्षिका उनकी मदद करती है, लेकिन शब्दशः लिखकर या रटवाने के बजाय मिलकर पढ़ने, मनन करने और प्रस्तुतीकरण करने के तरीके को अपनाया जाता है। 'दिन विशेष' की तैयारी के संदर्भ में विद्यार्थी शिक्षकों के मार्गदर्शन में स्वतंत्रता आंदोलन, विज्ञान, शिक्षा एवं समाज सुधार जैसे क्षेत्रों के महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों से परिचित होते हैं। 'संबोधन' की तैयारी द्वारा वे अपने संप्रेषण कौशल पर कार्य करने के साथ-साथ खुद को वैचारिक ढंग से भी मजबूत करते हैं। इसके लिए शिक्षक विद्यार्थियों की प्रस्तुति से पूर्व ही उन्हें विषय देते हैं और उनकी तैयारी करवाते हैं। संबोधन के लिए विषयों के चुनाव से स्पष्ट होता है कि शिक्षक सशक्त और विचारवान नागरिकों की छवि को ध्यान में रखते हुए आवश्यक वैचारिकी की दृष्टि से विद्यार्थियों की तैयारी करवाते

हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा सात के रोहन ने विनोबा भावे के विचार को प्रस्तुत किया कि "प्रीति से मन प्रफुल्लित होता है और सेवा से जग प्रफुल्लित होता है।" इसकी व्याख्या में उसने बताया कि हमें निःस्वार्थ सेवा द्वारा जगत कल्याण के स्वप्न को साकार करना है। कक्षा आठ के तुषार ने 'अहिंसा बलवान शस्त्र है, जिससे दुनिया में शांति लाई जा सकती है', विषय पर संबोधन दिया। उसने बल दिया कि वर्तमान में पूरी दुनिया में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्तियों से बचने का उपाय गांधी का अहिंसा का विचार है। कक्षा पाँच की छात्रा समृद्धि ने प्रस्तुति दी कि "जिस तरह से प्रकाश के बिना वस्तु नहीं दिखती है, उसी तरह से विचारों के बिना सूचनाओं को रटने से ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है।" उक्त उदाहरण बताते हैं कि आनंद निकेतन प्रातःकालीन सभा को भी विद्यार्थियों के वैचारिक उन्मुखीकरण के मंच की तरह प्रयोग कर रहा है। यह विद्यालय विद्यार्थियों को सजग, सचेत और सक्रिय नागरिक मानता हैं, जो अपने परिवेश और विद्यालय में बदलाव के कर्ता बन सकते हैं।

इन्हीं बदलाव के कर्ताओं ने अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में, प्रार्थना सभा में 'भारत का संविधान' विषय पर प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति की तैयारी जीवन दादा के मार्गदर्शन में हुई थी। इस सत्र का आरंभ कक्षा आठ की छात्रा प्रणाली के प्रस्तुतीकरण से हुआ। उसने 'संविधान मतलब क्या?' इस सवाल पर अपने विचार प्रकट किए। उसने कहा कि किसी भी देश का संविधान उसकी राजनीतिक व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, नागरिकों के हितों की रक्षा करने का मूल ढाँचा होता है। किसी देश या संस्था द्वारा निर्धारित किए गए कानून जिनके द्वारा उस देश को सुचारू रूप से संचालन हो सके, उसे उस देश का संविधान कहा जाता है। यह किसी संस्था का भी हो सकता है, किसी विद्यालय का भी हो सकता है। इसके माध्यम से उस देश के नागरिकों के हितों की रक्षा होती है। इसके बाद कक्षा 8 के विद्यार्थी यश ने 'संविधान का मसौदा' विषय पर प्रस्तुति दी। उसने बताया कि संविधान सभा का मसौदा तैयार करने के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में एक प्रारूप समिति का गठन किया गया था। इस समिति को ड्राफ्ट तैयार करने में दो साल से ज्यादा समय लगा था। नवंबर 26, 1949 को समिति ने संविधान का ड्राफ्ट संविधान सभा के सामने पेश किया था। इसी क्रम में स्नेहल ने संविधान में मूल अधिकारों का महत्व बताया। उसने बल दिया कि भारत का संविधान केवल मौलिक अधिकारों की गारंटी ही नहीं देता, बल्कि विश्व के संविधानों में पाए जाने वाले अधिकारों से अधिक व्यापक और स्पष्ट भी है। मौलिक अधिकारों को भारत के संविधान में अलग से दर्ज किया गया है। संविधान ने उनकी सुरक्षा के लिए विशेष प्रावधान किए हैं। इन अधिकारों को अदालतों द्वारा लागू किया जा सकता है। प्रिया ने "बाबा साहेब ने संविधान की रचना कैसे की" इसके बारे में बताया। इस प्रस्तुति के अंत में शिक्षक जीवन दादा ने विद्यार्थियों के विचारों का समेकन प्रस्तुत किया। इन्होंने बताया कि संविधान एक उपकरण है जो सरकारी संस्थानों के बीच सत्ता को अलग करने और वितरित करने में मदद करता है। उन्होंने संविधान को सामाजिक उपकरण के रूप में बताया जो निम्न वर्ग के लोगों के अधिकारों की सुरक्षा करता है। इस

गतिविधि के माध्यम से विद्यालय ने केवल संविधान की भूमिका से विद्यार्थियों को परिचित कराया, बल्कि उसकी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि और मूल्यों के प्रति भी सजग किया।

निष्कर्ष

आनंद निकेतन की प्रातःकालीन सभा आत्मानुशान से युक्त लोकतांत्रिक भागीदारी वाली विद्यालय संस्कृति की प्रतिनिधि है। इस दैनिक गतिविधि में किसी भी अन्य विद्यालयी रीति-रिवाज की तरह समूह-बोध का प्रदर्शन किया जाता है। इस दौरान व्यक्ति की गरिमा, उसकी स्वतंत्र सत्ता और सृजनात्मक अभिव्यक्ति पर बल दिया जाता है। आनंद निकेतन जिस शांति आधारित समतामूलक अहिंसक और शाश्वत विकास की ओर उन्मुख 'नए समाज' के लक्ष्य को लेकर चलता है, उसके मूल्यों, व्यवहारों और विश्वासों को दैनिक अभ्यास में उतारने का यत्न प्रातःकालीन सभा में किया जाता है। यह आयोजन किसी बाह्य एजेंसी द्वारा आनंद का सृजन करने, समस्याओं का समाधान करने, नवाचार करने की मान्यताओं को खारिज करता है और एकजुटता के साथ सामूहिक प्रयत्न, पहल और संवाद से बदलाव हो सकता है, की स्थापना को साकार करते हैं। इसके द्वारा मानव की अंतर्निहित क्षमता के विकास के लिए नैतिकता, सहकारिता और स्वायत्तता को प्रमुखता दी जाती है। समष्टि स्तर पर सामुदायिकता की भावना को स्थापित किया जाता है। शोषण और अन्याय वाली सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था पर चिंतन करते हुए इसके विकल्प रूप में स्वावलंबन, आलोचनात्मक विवेक और वैज्ञानिक चिंतन के रास्ते बदलाव की परिकल्पना की जाती है। व्यक्तिगत स्तर पर हर शिक्षक और शिक्षार्थी के लिए स्वतंत्र और सृजनात्मक चिंतन के लिए अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच की दूरी को कम किया जाता है। निगरानी, सख्त अनुशासन और मानकीकृत व्यवहारों की पुनरावृत्ति जैसे अभ्यासों का यहाँ निषेध है। अनौपचारिक और पारस्परिक घनिष्ठ संबंध पर आधारित माहौल सामूहिकता का आधार है।

संदर्भ

कैपी, सी. 2019. राइटीयस पाथ : परफॉर्मिंग मोरलटी इन साउथ अफ्रीकन मॉर्निंग असेंबली. *एन्थ्रोपॉलॉजिकल क्वाटरली*. 92(3), पृ.सं. 845–876.

क्वार्ट्ज़, आर. 1999. स्कूल रिचुअल एज परफॉर्मेंस : अ रीकंस्ट्रक्शन ऑफ दुर्खाइम एंड टर्नर यूज ऑफ रिचुअल. *एजुकेशनल थियरी*. 49(4) पृ.सं. 493–514.

दुर्खाइम, ई. 1965. द *एलीमेंट्री फॉर्म्स ऑफ रिलीजियस लाइफ* (अनुवादक : जोसेफ वॉर्ड स्वाई). द फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क.

फूको, एम. 1977. *डिसिप्लिन एंड पनीश*. पेंग्विन, लंदन.

बर्नस्टीन, बी., एच.एल. लेविन और आर.एस. पीटर्स. 1966. रिचुअल इन एजुकेशन. *फिलॉसफिकल ट्रान्सैक्शंस ऑफ द रायल सोसाइटी ऑफ लंदन*. 251(772), पृ.सं. 429–436.

बीजोर्क, सी. 2002. रिकंस्ट्रक्टिंग रिचुअल्स : एक्सप्रेशंस ऑफ ऑटॉनोमी एंड रेजिस्टेंस इन अ सिनो-इंडोनेशियन स्कूल. *एन्थ्रोपॉलॉजी एंड एजुकेशन क्वाटरली*. 33(4), पृ.सं. 465–491.

बेनेई, वी. 2008. *स्कूलिंग पैशंस : नेशन, हिस्ट्री एंड लैंग्वेज इन कन्टेम्प्रेरी वेस्टर्न इंडिया*. स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैलिफोर्निया.

सिल्बर्ट, पी. और एच. जैकलीन. 2015. असेम्बलिंग द आइडियल लर्नर : द स्कूल असेंबली ऐज रेगुलेटरी रिचुअल. *रिव्यू ऑफ एजुकेशन, पेडागॉजी एंड कल्चरल स्टडीज*. 37(4), पृ.सं. 326–344.

विशेष

15

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय I (आयु 3–4 वर्ष)

टिप्पणी

1. मुख्य अवधारणाओं, प्रस्तावित शैक्षणिक प्रक्रियाओं और सीखने के आरंभिक प्रतिफलों को एक-से-एक मिलाना अपेक्षित नहीं है। इन्हें समग्र रूप में देखा जाना चाहिए।
2. इन सीखने के प्रतिफलों का विकास इस मान्यता के साथ किया गया है कि पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में प्रथम भाषा/निर्देश की भाषा घर में बोली जाने वाली भाषा या क्षेत्रीय भाषा ही होगी। अंग्रेजी भाषा का उपयोग द्वितीय भाषा के रूप में किया जाना चाहिए।

लक्ष्य 1— बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
• स्वयं के प्रति जागरूकता • स्वयं के प्रति सकारात्मक अवधारणा का विकास • आत्मनियमन • निर्णय लेना और समस्या-समाधान • सामाजिक रूप से वाँछनीय व्यवहार (प्रो-सोशल), जैसे— एक-दूसरे का ख्याल रखना, साझेदारी, सहयोग, दया और दूसरों की भावनाओं व अधिकारों का सम्मान करना • अच्छी आदतों का विकास, साफ-सफाई और स्वयं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता	निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ— • अपने, अपने शरीर के अंगों और अपने परिवार के सदस्यों के बारे में जानना • विभिन्न खेलों तथा गतिविधियों के द्वारा नामों को जानना और संबंधों के प्रति समझ बनाना, जैसे नाम पर ताली बजाना एवं मित्रता करना, भ्रमण (मित्रों के साथ घूमना) आदि। • बच्चों के जन्मदिवसों, त्यौहारों के आयोजन द्वारा बच्चों को छोटे-छोटे उत्तरदायित्व देकर उनके योगदान/कार्य की सराहना करके एवं उनके कार्य के प्रदर्शन द्वारा उनमें स्वयं के मूल्य और अपनी उपलब्धियों पर गर्व की अनुभूति करने के अवसर प्रदान करना।	• अपनी कुछ शारीरिक विशेषताओं का उल्लेख करना शुरू कर देते हैं। • परिवार के नजदीकी सदस्यों को पहचानते हैं। • गतिविधियों में भागीदारी करते हैं और पहल करते हैं। • गतिविधियों और खेल के दौरान अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं और सरल नियमों का पालन करते हैं। • शाब्दिक और अशाब्दिक रूप (हाव-भाव, चित्रकारी आदि) से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। • अपनी पसंद बताते हैं और प्राथमिकता को अभिव्यक्त करते हैं।

*पाठकों की सुविधा हेतु अधिनियम का सरलीकरण एवं उसका संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

- स्थूल गत्यात्मक कौशल का विकास (चलना, दौड़ना, कूदना, घुटनों के बल चलना, उछलना, चढ़ना, कदमताल, फेंकना, लपकना, किक मारना)।
- सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल का विकास और आँखों-हाथों का समन्वयन (धागा पिरोना, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़ना, चिपकाना, आड़ी-तिरछी रेखाएं (स्क्रिबल) खींचना, चित्रकारी, रंग भरना, छपाई करना (ठप्पे लगाना), मिट्टी के खिलौने या अन्य चीजें बनाना, कागज मोड़कर वस्तुएँ बनाना।

- मुक्त वार्तालाप और स्वच्छंद रूप से खेले जाने वाले खेल, जहाँ बच्चे अपने आपको अभिव्यक्त कर सकें, जैसे— खेल के मैदान में खेलना (चढ़ना, झूला झूलना, दौड़ना, चित्रकारी करना, रंग भरना आदि)।
- बच्चों को रुचिकर गतिविधियों में संलग्न करना और उनसे इस तरह से बात करना कि वे सहज महसूस करें और सभी के साथ व कक्षा में सामंजस्य बैठा सकें।
- ऐसे खेल और गतिविधियाँ कराना जिनमें नियम और निर्देश सरल हों, जैसे— फ्रीज़ डांस, तालियों का अनुसरण, जोर से या धीरे आवाज निकालना आदि।
- बारी वाले खेल और गतिविधियाँ करना, जैसे— सुनना और चलन करना, फिंगर गेम आदि।
- चित्रकारी, रंग भरना, पेंटिंग आदि।
- समस्याओं का समाधान करना और छोटे-छोटे झगड़े सुलझाना (रोल-प्ले के दौरान छोटे समूह में की जाने वाली गतिविधियाँ और पहेलियाँ सुलझाना।
- मुक्त खेल जिनमें बच्चों को स्वतंत्र रूप से या समूहों में खेलने के अवसर मिलें, जैसे— पहेलियाँ सुलझाना, पेग (शंकु) रखना और बाहर खेले जाने वाले खेल आदि।
- बच्चों के बीच परस्पर संवाद को प्रोत्साहित करना।
- दूसरे बच्चों के साथ संबंध बनाना, साथियों से सीखने और परस्पर संवाद करने हेतु अवसर प्रदान करना, जैसे— रोल-प्ले, अभिनय खेल आदि।
- भावनाओं की अभिव्यक्ति और पहचान (खुशी, दुख, क्रोध) इसके लिए भावना कार्ड और कहानियों की सहायता लेना।
- सीधे-सरल हाव-भाव/मुद्राओं से परिचित कराना, जैसे नमस्ते और हैलो आदि (अभिवादन करना)।

- बड़ों की सहायता से छोटे-छोटे मामले/समस्या सुलझा पाते हैं।
- दूसरे बच्चों के साथ काम करते और खेलते हुए खुशी व्यक्त करते हैं।
- दूसरे बच्चों की मदद करते हैं, उनका ध्यान रखते हैं और उनके साथ अपनी चीजें साझा करते हैं।
- लोगों में पाई जाने वाली विभिन्नताओं के प्रति समझ बनाने लगते हैं (संस्कृति, जाति, क्षमताओं और अक्षमताओं के आधार पर और विविधता के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं।
- तत्कालिक आवश्यकताएँ बताते हैं, स्वच्छता का पालन करते हैं और भोजन-संबंधी अच्छी आदतों का अनुसरण करते हैं।
- अच्छे स्पर्श और बुरे स्पर्श के अंतर की समझ को दर्शाते हैं और अपरिचितों से दूरी बनाए रखते हैं।
- सामान्य खतरों, खतरनाक स्थानों और वस्तुओं को पहचानते हैं तथा उनसे दूरी बनाते हैं।
- खेल/प्रतिदिन की गतिविधियों, जैसे— चलना, दौड़ना, कूदना, चढ़ना, नृत्य आदि में स्थूल माँसपेशियों का विकास और समन्वयन का प्रदर्शन करते हैं।
- संगीत, नृत्य और रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर ढूँढते हैं और भाग लेते हैं।
- विभिन्न गतिविधियों, जैसे— आड़ी तिरछी रेखाएँ खींचना, ठप्पे लगाना, धागा पिरोना, रंग भरना, मिट्टी का कार्य करना, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़ना और चिपकाना आदि में सूक्ष्म माँसपेशियों के विकास और आँखों-हाथों के सरल समन्वयन का प्रदर्शन करते हैं।

- बच्चों द्वारा महसूस की जा रही असुविधा और चिंताओं को साझा करना।
- पूरे समूह में की जाने वाली गतिविधियों को प्रोत्साहित करना, जैसे एक साथ भोजन करना।
- बच्चों की कल्पनाशक्ति को उत्प्रेरित करने के लिए छोटे समूह में की जाने वाली गतिविधियाँ, जैसे— कथा वाचन, ड्रामा, मुक्त खेल, कठपुतली खेल आदि।
- स्वास्थ्य की सार्वाधिक जाँच (जैसे— कद, वजन और सामान्य स्वास्थ्य), टीकाकरण और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- बड़ों द्वारा स्वयं अच्छी आदतों को अपनाकर बच्चों को संस्कार देना। स्वास्थ्य व स्वच्छता -संबंधी आदतों को अपनाना, जैसे— बड़ों की सहायता से हाथ धोना आदि।
- कक्षा में बच्चों के साथ और शिक्षक-अभिभावक मीटिंग (पी.टी.एम) तथा समय-समय पर आयोजित की जाने वाली बैठकों में अभिभावकों के साथ स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता-संबंधी मुद्दों पर चर्चा करना।
- अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श (गुड टच और बैड टच) पर चर्चा करना और उन्हें बताना कि यदि उनके सामने इस तरह की स्थिति आ जाए तो वे शिक्षक/अभिभावक और किसी भी नजदीकी व्यक्ति को अवश्य बताएँ।
- विभिन्न गतिविधियों द्वारा स्थूल माँसपेशियों के विकास के लिए अवसर प्रदान करना, जैसे— चलना, दौड़ना, कूदना, उछलना, घुटनों के बल चलना, चढ़ना, कदमताल, फेंकना, लपकना, किक मारना आदि।
- नृत्य, कदमताल, लय व ताल-संबंधी अन्य गतिविधियाँ करना, जैसे— झुकना, मुड़ना, स्वयं को तानना (स्ट्रेचिंग), संतुलन बनाना आदि।
- 'मैसी खेल', जैसे— रेत व पानी के साथ खेलना, मिट्टी के खेल करना, ठप्पे लगाना आदि।

	• वस्तुओं को महसूस करके उनमें अंतर बता पाना। • कागज के छोटे-छोटे टुकड़े करके उन्हें चिपकाना, स्टीकर उतारना और चिपकाना, अँगुलियों से छोटी-छोटी वस्तुएँ उठाना आदि।	

लक्ष्य 2— बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
बातचीत करना और सुनना • ध्यान देने की अवधि और सुनना • रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और वार्तालाप • भाषा और सृजनात्मक चिंतन • शब्द भंडार/शब्द सामर्थ्य **आरंभिक पठन** • मुद्रित सामग्री की पहचान और अर्थ समझना • पुस्तकों से लगाव • दिशात्मकता/दिशा बोध को समझ पाना • पठन का अभिनय (प्रीटेंड रीडिंग) • ध्वनियों की पहचान • अक्षर अवबोधन/पहचानना **आरंभिक लेखन** • आँखों-हाथों का समन्वयन • उचित उपकरणों का इस्तेमाल • चिह्न लगाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना • आड़ी-तिरछी रेखाओं व चित्रकारी के द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति **द्वितीय भाषा से परिचय**	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • ऐसे छोटे-छोटे समूहों में साझेदारी वाली खेल-संबंधी गतिविधियाँ जो बच्चों को साथ-साथ काम करने और सीखने में मदद करें और उनके सुनने के कौशलों को समुन्नत करें। • हाव-भाव के द्वारा विभिन्न प्रकार की संप्रेषण युक्तियों का प्रयोग। • कक्षा में होने वाली गतिविधि और एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि को शुरू करते समय सरल निर्देश सुनना, जैसे— "ब्लॉक खोजो और मेरे पास लाओ, खिलौने शैल्फ में रख दो"। • दूसरों को सुनना और फिर अपनी बारी आने पर बात करना जिससे ध्यान देने की अवधि में विस्तार हो (जैसे— धीरे-धीरे कहानी का समय बढ़ाना, सीधा-सपाट परिणाम बताने वाली सामग्री का उपयोग, जैसे दो टुकड़ों (चित्रों) वाली पहेली (पजल) सुलझाना, चित्र पठन, पोस्टर को देखना और उसके आधार पर बात करना। • टेप/सीडी/मोबाइल में रिकॉर्ड की गई विभिन्न प्रकार की आवाजों को विभिन्न परिवेशों में सुनना, जैसे— घर, विद्यालय, समुदाय आदि परिवेश में सुनी गई विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ।	• सुनने के कौशल का इस्तेमाल करते हैं और अपनी आवश्यकताएँ बताते हैं। • दूसरों से नजरें मिलाकर बात करते हैं और शरीर के हाव-भाव का प्रयोग उपयुक्त रूप से करते हैं। • एक या दो, मौखिक निर्देशों को समझते हैं। • बातचीत और कहानियाँ सुनने/सुनाने में भाग लेते हैं और तत्कालिक अनुभवों को साझा करते हैं। • कविता-पाठ और छोटी कविताओं को दोहराते हैं, हाव-भाव से गाना, संगीत और लयात्मक गतिविधियों में भाग लेते हैं। • 'क्या' और 'क्यों' जैसे प्रश्नों को निरंतर पूछते हैं। • सामान्य/परिचित वस्तुओं और चित्रों के लिए सटीक शब्दों का प्रयोग करते हैं, जैसे— अपना नाम, मित्रों के नाम और वस्तुओं के नाम बताते हैं। • कक्षा और घर के परिवेश में मुद्रित सामग्री पहचानने लगते हैं, जैसे— अपने प्रिय बिस्कुट/टॉफी, चॉकलेट के रैपर, चित्र आदि।

	• बच्चों को रिकॉर्ड की गई ध्वनियों को सुनने के लिए प्रोत्साहित करना और ध्वनि की पहचान कराना। • छोटे-छोटे समूहों में की जाने वाली गतिविधियाँ और बच्चों द्वारा शुरू की जा सकने वाली गतिविधियाँ जो बच्चों को सवाल करने के अवसर दे सकें (उदाहरण के तौर पर— "यदि ऐसा हो तो क्या होगा…", वंडर वॉल तैयार करना जिस पर शिक्षक जिज्ञासा पैदा करने और मस्तिष्क मंथन करने के लिए नयी-नयी तस्वीरें या वस्तुएँ प्रदर्शित करें)। • वार्तालाप और कहानी सुनाते समय प्रश्न पूछने के लिए उत्प्रेरित करना (उदाहरण के तौर पर सर्कल टाइम, किसी विषय पर भी वार्तालाप और छोटे समूहों में की जाने वाली गतिविधियाँ)। • समूह में गायन, ताल-संबंधी गतिविधियाँ और छोटे-छोटे एक्शन गीत (ऐसे गीत जिनके साथ अभिनय किया जा सके) • कक्षा में मुद्रित समृद्ध परिवेश का सृजन (शैल्फ और अलमारियों/बक्सों पर लेबल लगाना, कविताएँ, पोस्टर आदि लगाना। • पठन/पुस्तकालय के क्षेत्र में चित्र, बड़े आकार वाली पुस्तकें, वर्णमाला की पुस्तकें, भाषा-संबंधी चार्ट, पोस्टर और फ्लैश कार्ड देखना। • प्रत्येक बच्चे के नाम का कार्ड बनाना और गतिविधि के दौरान बारी निर्धारित करने के लिए। • दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों को चित्रों और मुद्रित शब्दों द्वारा प्रदर्शित करना और उनके बारे में बात करना। • बच्चों द्वारा की गई चित्रकारी/आड़ी-तिरछी रेखाओं वाली शीट पर शिक्षक द्वारा उनके नाम लिखे जाने का अवलोकन करना। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पहचानना और उनकी आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान देना।	• परिचित लिपि में लिखे हुए अपने नाम को पहचानते हैं (संकेत देने पर)। • आयु-अनुसार छोटी कहानियों का आनंद लेते हैं और सरल प्रश्नों के उत्तर देते हैं। • कहानी की किताब के चित्र देखकर परिचित कहानियाँ सुनाते हैं। किताबों का सही ढंग से इस्तेमाल करते हैं, जैसे किताब के मुख्य और पिछले पृष्ठ को पहचानते हैं और अपनी आयु के अनुकूल उपयुक्त किताबों में रुचि लेते हैं उन्हें उलट-पलट कर देखते हैं, जैसे— चित्रात्मक, वर्णमाला, कहानी, कविताओं की किताबें और पोस्टर। • आरंभिक ध्वनियों की पहचान प्रदर्शित करते हैं, जैसे— समान तुक-वाले शब्द बताते हैं, और पर्यावरण में परिचित ध्वनियों को पहचानते हैं। • विभिन्न प्रकार की सामग्री की खोजबीन और जोड़-तोड़ करते हैं, जैसे— वर्णमाला के वर्ण, (चुम्बकीय अक्षर, फोम, प्लास्टिक आदि), ठप्पा लगाने और टेढ़ी-मेढ़ी लाइनें खींचने वाले उपकरण (जिन्हें सरलता से पकड़ा जा सके)। • लेखन पूर्व कौशल का प्रदर्शन करते है (आड़ी-तिरछी लाइनें बनाना, ठप्पा लगाना, अँगुलियों से चित्रकला करना, क्रेयॉन, मार्कर, ब्रुश का विभिन्न कार्यों के लिए प्रयोग)। • बाएँ से दाहिनी ओर पूरे पृष्ठ पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचते हैं, पैटर्न दोहराते हैं और माँसपेशियों पर नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं।

	• बच्चों को ऐसे खेलों में संलग्न करना जिनके माध्यम से वे देखकर अंतर कर पाना सीख सकें, जैसे— चित्रों, वस्तुओं, रंगों और आकृति के आधार पर मिलान करना, डोमिनों को चित्रों, रंगों/बिंदुओं आदि से मिलाना। • दृश्य-अवबोधनात्मक गतिविधियाँ, जैसे— मिलान करना, दिशाबोध, चित्रखेल/ गतिविधियाँ। • कक्षा में पठन क्षेत्र या छोटा-सा पुस्तकालय बनाना, जिसमें बड़ी पुस्तकें, चित्रात्मक पुस्तकें, जानकारीपूर्ण और स्तरवार कहानी की पुस्तकें हों। • बड़े अक्षरों में छपी, चित्रों वाली कहानी की पुस्तकों से कहानी सुनाना (शिक्षक को चाहिए कि वे शब्दों के नीचे अँगुली रखें और बाएँ से दाएँ की ओर अँगुली को फिराएँ और इस तरह से बच्चों का ध्यान लिखे हुए की ओर आकर्षित करें)। • सस्वर पढ़ना, सामूहिक पठन बच्चों को प्रतिदिन कई बार पढ़कर सुनाना। छोटे या बड़े समूहों में और एक-एक करके भी बच्चों को पढ़कर सुनाना, पृष्ठ कैसे पलटते हैं इस ओर बच्चों का पढ़ते समय ध्यान आकर्षित करना। • बच्चों को यह दिखाना कि पूरे पृष्ठ पर अँगुली कैसे फिराई जाती है, और आँखें किस तरह अँगुली का अनुसरण करती हैं (कहानी कहते समय/चार्ट से कविता पढ़ते समय या 'साइट वर्ड' को देखते समय)। • कहानी कहते समय या वार्तालाप के दौरान कठपुतली, चित्र, फ्लैश कार्ड जैसी विभिन्न प्रकार की सामग्री का उपयोग करना। • 'मुझे खोजना है' खेल खिलवाना, जैसे— मुझे कक्षा में ऐसी हरे रंग की वस्तु ढूँढनी है जिसका नाम 'स' से शुरू होता हो। • तीन छोटे-छोटे शब्द बोलना, जैसे— बिल्ली, खंबा, लंबा, बच्चों से कहना कि इनमें से वह शब्द पहचानें जिसकी ध्वनि अलग हो।	• प्राय: इस्तेमाल किए जाने वाले अंग्रेजी के शब्दों, अभिवादन एवं शिष्टाचार-युक्त शब्दों का प्रयोग करते हैं।

	• आकृतियों, उभार वाले अक्षरों से खेलना, मुद्रित समृद्ध परिवेश वाली कक्षा में परिचित अक्षरों की खोज करना। • बच्चों का ध्यान मुद्रित अक्षरों की तरफ खींचना (उनके नामों में आने वाले अक्षर, मनपसंद बिस्कुट के पैकेट, टॉफी आदि पर मुद्रित अक्षर)। • अक्षर गीत-गाना, कटआउट/चुम्बक वाले अक्षरों से खेलना, छोटे समूह में गत्ते/लकड़ी आदि पर बने अक्षरों से कोलाज बनाना। • ठप्पे लगाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना। • मुक्त रूप से रंग भरना, चित्रों के अंदर रंग भरना (मोटे क्रेयॉन या मार्कर का उपयोग करके)। • आँखों-हाथों समन्वयन हेतु ठोस खिलौनों/वस्तुओं/सामग्री से खेलना, जैसे बड़े छेद वाले मोतियों को पिरोना, वस्तुओं को पकड़ना, मूँठ वाली पजल पकड़ना। • ब्लॉक, पकड़ी जा सकने वाली पजल से खेलना, वस्तुओं को चुनना। • सुबह आने और जाने के समय अभिवादन करना। • प्रतिदिन की जाने वाली गतिविधियों के दौरान छोटे अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करना, जैसे— गुड़ मोर्निंग, थैंक यू, वेलकम, प्लीज आदि।	

लक्ष्य 3— बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
संवेदी विकास • देखना • सुनना • छूना • सूँघना • चखना	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • संवेदी विकास से संबंधित गतिविधियाँ— चखना, सूँघना, देखना, सुनना और छूना। उदाहरण के तौर पर, वास्तविक ठोस पदार्थों का उपयोग, दृश्यात्मक समन्वयन और विभेदीकरण, श्रवण विभेदीकरण गतिविधियाँ आदि।	

संज्ञानात्मक कौशल

- अवलोकन
- पहचान करना
- स्मृति/याद करना
- मिलान करना
- वर्गीकरण करना
- नमूने बनाना
- क्रम के अनुसार सोचना
- सृजनात्मक चिंतन
- समीक्षात्मक चिंतन
- समस्या समाधान
- तर्क प्रस्तुत करना
- जिज्ञासा
- प्रयोग करना
- खोजबीन करना

अवधारणाओं का निर्माण

- रंग, आकृति, दूरी, नाप, आकार, लंबाई, भार, ऊँचाई, समय आदि।
- स्थान-बोध
- एक-से-एक की संगतता

संख्या-बोध

- गिनना और बताना कि कितने हैं।
- संख्याओं की पहचान
- क्रम का बोध (5 तक किसी भी दी गई संख्या से आगे गिनती कर पाना)

परिवेश से संबंधित अवधारणाएँ

- प्राकृतिक— पशु, फल, सब्जियाँ, खाद्य पदार्थ, जीव-जंतु
- भौतिक— जल, वायु, मौसम, सूर्य, चंद्रमा, दिन और रात
- सामाजिक— मैं, परिवार, यातायात, त्यौहार, हमारे सहयोगी, समुदाय

- प्रकृति भ्रमण के दौरान आसपास के परिवेश की विभिन्न वस्तुओं का अवलोकन, जैसे— पार्क, उपवन, चिड़ियाघर आदि।
- खेल, गतिविधि, वस्तुओं, पिक्चर कार्ड, ट्रे में से चुनने वाले खेल, मेमोरी कार्ड/खेलों द्वारा दृश्य विभेदीकरण, वर्गीकरण-संबंधी गतिविधियाँ।
- चित्रपठन पोस्टर का इस्तेमाल करके, बच्चों को चित्र देखने और उसके बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- किसी एक श्रेणी के आधार पर पिक्चर कार्डों को छाँटना और मिलाना, जैसे— एक डिब्बे में सभी जानवरों के चित्र रखना और दूसरे डिब्बे में पक्षियों के चित्र रखना, एक कटोरी/डिब्बे में पीले बटन/ब्लॉक रखना।
- दिए गए नमूने को दोहराना, सही क्रम में घटनाओं व कहानियों को याद रखना।
- वस्तुओं और चित्र कार्डों की सहायता से क्रम में लगाना।
- मेज (भूल-भूलैया) को हल करना, सरल पहेलियाँ बूझना, 2–3 टुकड़ों की पजल को व्यवस्थित रूप से लगाना।
- संबंध सूचक कार्डों के माध्यम से समस्या-समाधान (चित्रों के मिलान करना, संबंध ढूँढना, जैसे कप-प्लेट/कंघी-बाल आदि।
- सरल समस्याओं के समाधान खोजना, जैसे— बोतल पर उसी के नाप का ढक्कन ढूँढना, ढक्कन बंद करना व खोलना।
- परिचित चित्र में कोई एक-दो गायब भाग ढूँढना/पहचानना।
- रेत, पानी, खोजबीन क्षेत्र में उपयुक्त खिलौने, उपकरण आदि, जैसे— सैंड ट्रे, पानी का टब, छननी, पानी के डिब्बों, बेलचा, खुरपी, तैरने वाले खिलौनों से खेलना।
- रचनात्मक गतिविधियों के दौरान रंगों की पहचान।

- परिवेश के अवलोकन के लिए सभी इंद्रियों का प्रयोग करते हैं।
- सामान्य वस्तुओं, ध्वनियों, लोगों, चित्रों, पशु-पक्षियों, विभिन्न अवसरों/घटनाओं को पहचानकर उनके नाम बताते हैं।
- एक समय में देखी गई दो-तीन वस्तुओं के नाम याद रखते हैं और पुनः बताते हैं।
- परिचित वस्तुओं के चित्र को देखकर जो उसमें नहीं है उस हिस्से को पहचानते हैं।
- किसी एक बिंदु के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करते हैं।
- सरल नमूनों को समझकर उसे आगे बढ़ते या दोहराते हैं।
- दो-तीन चित्र कार्ड/वस्तुओं को क्रम से लगाते हैं।
- दिन-प्रतिदिन की सरल समस्याओं को स्वयं या बड़ों की मदद से सुलझाते हैं।
- वस्तुओं के बीच संबंधों को समझने लगते हैं, जैसे समूह से भिन्न वस्तु, पूरी वस्तु या उसके किसी भी भाग की पहचान, मिलती-जुलती वस्तुएँ, जैसे— सुई-धागा, ताला-चाबी।
- अपने आसपास के परिवेश के प्रति जिज्ञासा दिखाते हैं और उससे संबंधित प्रश्न पूछते हैं।
- मूल रंगों और आकारों को पहचानते हैं।
- प्रत्यक्ष विशेषताओं के आधार पर दो वस्तुओं की तुलना करते हैं, जैसे— हल्का-भारी, लंबा-छोटा, ज्यादा-कम, बड़ा-छोटा, ठंडा-गर्म आदि।
- दो-तीन वस्तुओं को एक से एक की संगतता में रखते हैं।

तकनीक का प्रयोग	• तरह-तरह के खेल, गतिविधियों का आयोजन करना, जिनमें वस्तुओं, फ्लैश कार्ड, डोमिनो द्वारा विभिन्न अवधारणाओं के प्रति समझ बनाना। • विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित गीत और अभिनय वाले शिशुगीत गाना। • सर्कल टाइम के दौरान विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित चित्र/पोस्टर दिखाना और उन पर बात करना। • बड़े और मोटे ब्रुश/क्रेयॉन का उपयोग करते हुए रचनात्मक कला-संबंधी गतिविधियाँ। • कप, कटोरी आदि मापन पात्रों का उपयोग। • छाया वाले खेल खेलना। • संख्या वाले गीत गाना, संख्या वाली कहानियाँ सुनना। • संख्याओं का मिलान करने के लिए डोमिनो, फ्लैश कार्ड का उपयोग करना। • अपने आसपास के परिवेश में संख्याओं और चिह्नों की पहचान, जैसे— मोबाइल फोन में नंबर, कलैंडर आदि में संख्याओं की पहचान। • खेलों, चलने-फिरने वाली गतिविधियों के माध्यम से स्थान से संबंधित समझ पैदा करना, जैसे— अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे। • जिन जगहों का भ्रमण किया गया हो वहाँ के चित्र बनाना और उन पर बातचीत करना। • प्रश्न पूछना और उत्तर देना। • 'सर्कल टाईम' की गतिविधि के दौरान पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर बातचीत करना, जैसे— पानी बर्बाद नहीं करना, मंजन करते समय जब जरूरत न हो तो नल बंद कर देना, कूड़ा कूड़ेदान में डालना, खेल खेलने के बाद खिलौने उपयुक्त स्थान पर रख देना आदि। • शिक्षक की निगरानी में आयु के उपयुक्त तकनीकी का उपयोग। • अंतः क्रियात्मक व आयु-अनुरूप वैबसाइट, शैक्षिक वीडियो और सॉफ्टवेयर का उपयोग। • कहानियों को स्व-स्वर पढ़कर सुनाना और उनकी वीडियो को दिखाना।	• माँगने पर तीन तक वस्तुएँ गिनकर देते है। • परिवेश के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता दर्शाते हैं। • टेलीविजन/स्मार्ट बोर्ड पर गीतों, कविताओं को देखकर आनंदित होते हैं।

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय II
(आयु 4–5 वर्ष)

टिप्पणी

1. मुख्य अवधारणाओं, प्रस्तावित शिक्षण प्रणाली की प्रक्रियाओं और सीखने के आरंभिक प्रतिफलों को एक-से-एक मिलाना अपेक्षित नहीं है। इन्हें समग्र रूप में देखा जाना चाहिए।
2. इन सीखने के प्रतिफलों का विकास इस मान्यता के साथ किया गया है कि पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में प्रथम भाषा/निर्देश की भाषा, घर में बोली जाने वाली भाषा या क्षेत्रीय भाषा ही होगी। अंग्रेजी भाषा का उपयोग द्वितीय भाषा के रूप में किया जाना चाहिए।

लक्ष्य 1— बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
• स्वयं और दूसरों के प्रति जागरूकता • स्वयं के प्रति सकारात्मक अवधारणा का विकास • आत्मनियमन • निर्णय लेना और समस्या समाधान • सामाजिक रूप से वाँछनीय व्यवहार (प्रो-सोशल, जैसे— एक-दूसरे का ख्याल रखना, साझेदारी, सहयोग, दया और दूसरों की भावनाओं व अधिकारों का सम्मान करना अच्छी आदतों का विकास, साफ-सफाई और स्वयं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता • स्थूल गत्यात्मक कौशलों का विकास (चलना, दौड़ना, कूदना, उछलना, घुटनों के बल चलना, चढ़ना, कदमताल, फेंकना, लपकना, किक मारना आदि)	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • बच्चे अपने बारे में, अपने शरीर के अंगों के बारे में अपने परिवार के सदस्यों और गणमान्य व्यक्तियों के बारे में और उनसे संबंधों के बारे में जानें। • बच्चों के जन्मदिवसों, त्यौहारों के आयोजन द्वारा बच्चों को छोटे-छोटे उत्तरदायित्व देकर उनके योगदान/कार्य की सराहना करके एवं उनके कार्य के प्रदर्शन द्वारा उनमें स्वयं के मूल्य और अपनी उपलब्धियों पर गर्व की अनुभूति करने के अवसर प्रदान करना। • दूसरों के साथ काम करते हुए नियमों की पहचान व समझ बनाना, जैसे— समूह में की जाने वाली गतिविधियाँ, भिन्न-भिन्न गतिविधि क्षेत्रों में खेलना और कहानी सुनाना आदि।	• अपनी शारीरिक विशेषताओं का वर्णन करते हैं। • निकट के पारिवारिक सदस्यों, मित्रों और पड़ोसियों को पहचानने लगते हैं। • अपनी प्राथमिकताएँ और रुचियाँ अभिव्यक्त करते हैं। • निर्देशों का पालन करते हैं। • कक्षा में और दूसरे बच्चों के साथ सामंजस्य बिठाते हैं। • आरंभ की गई गतिविधि को पूरा करते हैं। • स्थिति विशेष के अनुरूप भावनाओं को प्रकट करते हैं। • अपनी प्राथमिकताएँ, रुचियाँ प्रदर्शित करते हैं और उनके आधार पर चयन करते हैं।

• सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों का विकास और आँखों-हाथों समन्वयन (धागा पिरोना, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़ना, चिपकाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना, चित्रकारी, रंग भरना, छपाई करना (ठप्पे लगाना), कागज मोड़कर वस्तुएँ बनाना आदि)	• ऐसी कहानियों को पढ़कर सुनाना या फिर ऐसे कठपुतली के खेलों का आयोजन करना जिनमें पात्र साझेदारी की भावना प्रदर्शित करते हों, मदद और सहयोग जैसे मूल्य प्रदर्शित करते हों। • बच्चों में उत्तरदायित्व से जुड़े संबंधों को पोषित करना जिससे बच्चों को अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने, सुरक्षा का भाव महसूस करने, आत्मविश्वास जागृत करने, जिज्ञासु और संप्रेषक बनने में मदद मिल सके। • समस्या-समाधान और द्वंद्व की स्थिति से निपटने के लिए विकल्प ढूँढना और प्रयास करना (रोल-प्ले, छोटे समूहो में की जाने वाली गतिविधियों के दौरान, पहेलियाँ सुलझाते समय)। • मुक्त खेल जिनमें बच्चों को स्वतंत्र और समूहों में भी खेलने के अवसर मिलें, जैसे— पहेलियाँ सुलझाना, पेग (शंकु) रखना, बाहर खेले जाने वाले खेल आदि। • प्रश्न पूछना, दूसरे की स्थिति को समझना, तदानुभूति प्रकट करना और विभिन्न समस्यात्मक स्थितियों में कहानियाँ सुनाकर समस्याओं के समाधान ढूँढना। • कहानी के दौरान या कहानी सुनाने के बाद बच्चों से प्रश्न पूछना कि वे समस्या किस प्रकार सुलझाएँगे। • दूसरे बच्चों के साथ अंतःक्रिया करना और संबंध बनाना। साथियों से सीखने और उनके साथ अंतःक्रिया की प्रवृति को विकसित करने के मौके देना। • अपनी भावनाओं को महसूस और व्यक्त करना। • बच्चों द्वारा अनुभव की गई असुविधाओं, स्थिति व चिंता (यदि कोई हो) को साझा करना।	• द्वंद्व की स्थिति में समाधान सुझाते हैं (मार्गदर्शन के साथ कर पाते हैं)। • दूसरे बच्चों के साथ मिलजुल कर खेलते हैं। • योजना बनाते हैं कि क्या खेलेंगे और कैसे खेलेंगे। • एक-दूसरे का ध्यान रखने वाला व्यवहार प्रदर्शित करते हैं (चूमना, आलिंगन, थपथपाना), दूसरे बच्चों के साथ अपनी चीजें साझा करते हैं। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सहित भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि वाले बच्चों के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं और उनके प्रति स्वीकृति का भाव रखते हैं। • स्वच्छता एवं सफाई रखते हैं और भोजन संबंधी अच्छी आदतों में आत्मनिर्भरता का प्रदर्शन करते हैं। • खतरा/नुकसान पहुँचाने वाली स्थितियों को भाँपते हैं और सुरक्षात्मक उपाय अपनाते हैं। • अच्छे स्पर्श और बुरे स्पर्श के अंतर की समझ को दर्शाते हैं और अपरिचित व्यक्तियों से दूरी बनाए रखते हैं। • खेल-संबंधित गतिविधियों में (जैसे— चलना, दौड़ना, कूदना, चढ़ना आदि) स्थूल गत्यात्मक समन्वयन और नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं।

- सरल हाव-भाव और चिह्न की पहचान
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चें के अनुरूप गतिविधियों का सामंजस्य करके अन्य बच्चों के साथ सामंजस्य स्थापित करना।
- बड़ों की सहायता से शौचालय का उपयोग एवं हाथ धोना आदि।
- स्वास्थ्य की सार्वधिक जाँच (कद, वजन, सामान्य स्वास्थ्य), टीकाकरण तथा बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में पूरक पोषण का प्रावधान।
- बच्चों, अभिभावकों और समुदाय को स्वास्थ्य व पोषण की शिक्षा देना।
- बच्चों को कहानियों, कार्टून, फिल्मों, वीडियो, रोल-प्ले द्वारा शरीर के निजी अंगों के बारे में बताना और यह भी बताना कि उनके निजी अंग की न तो किसी अन्य द्वारा छुए जाने चाहिए ना ही फोटो खींची जानी चाहिए, उन्हें यह भी बताना चाहिए कि वे भी किसी दूसरे के निजी अंगों को न छुएँ।
- बच्चों को इस बारे में संवेदनशील बनाना कि कोई भी उनके प्रति शारीरिक या मानसिक दुर्व्यवहार करता है तो तुरंत शिक्षक या अपने किसी नजदीकी को बताएँ।
- सुरक्षित सामग्री प्रयोग और सुरक्षित परिवेश का निर्माण करना जो कौशल स्तर के अनुरूप भिन्न-भिन्न हों, जैसे— तीन पहिए वाली साइकिल, 'हल्ला हूप', संतुलन पट्टी (बैलेंसिंग बीम)।
- विभिन्न कौशलों का अभ्यास, जैसे— कूदना फाँदना, पकड़ना, फेंकना आदि।
- बच्चों को नृत्य, एक्शन गीत जिसमें सरल शारीरिक गतिविधियाँ शामिल हों, जैसे— घूमना, शरीर को लय-ताल के अनुसार हिलाना-डुलाना आदि।
- रेत, बालू, मिट्टी और पानी के खेत (मैसी प्ले), छापना आदि।

- सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों का प्रदर्शन करते हैं और जिन कामों में अपेक्षाकृत आँखों और हाथों के समन्वय की अधिक आवश्यकता है उन कामों में मध्यम स्तरीय स्पष्टता और नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं, जैसे— आकृतियों को काटना, चित्रकारी करना, रंग भरना, धागे में मोती पिरोना, फीते बाँधना, देखकर चित्र/आकृति बनाना, कागज के छोटे टुकड़े करना और चिपकाना।

	• खेल जहाँ बच्चे स्वतंत्र रूप से कोई भी आकार बनाते हैं, जैसे— संगीतमय खेल, गिनती के खेल, पहाड़ में आग लगी... भागो-भागो-भागो जिसमें स्थान बोध, दूरी एवं दिशा का ज्ञान हो। • एकल, जोड़े में, छोटे समूह एवं बड़े समूह की गतिविधियाँ जिसमें स्थूल माँसपेशियाँ विकसित करने के कौशल शामिल हों। • अँगूठे एवं अँगुलियों से पेंसिल पकड़ने के कोशल का अभ्यास, जैसे— फाड़ना, काटना और चिपकाना, छीलना/स्टीकर चिपकाना, अँगुलियों से वस्तुएँ चुनना। • जोड़-तोड़ वाली वस्तुओं का इस्तेमाल करते हुए जो छाँटने, मिलान करने, कल्पना करने को प्रोत्साहन देती हैं, के प्रत्यक्ष अनुभव करना।	

लक्ष्य 2— बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
बातचीत करना और सुनना • ध्यान देने की अवधि और सुनना • बातचीत के नियम तौर-तरीके • रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और वार्तालाप • भाषा और सृजनात्मक चिंतन • शब्द भंडार/शब्द सामर्थ्य **आरंभिक पठन** • मुद्रित सामग्री की पहचान और अर्थ समझना • दृश्य विभेदीकरण • पुस्तकों से लगाव • दिशात्मकता/दिशा बोध को समझ पाना • पठन का अभिनय • ध्वनियों की पहचान • अक्षर अवबोधन/पहचानना	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • मुक्त और निर्देशित वार्तालाप तथा हाव-भाव और अन्य तरह की सांकेतिक अभिव्यक्तियों को शामिल करते हुए विभिन्न प्रकार की संप्रेषण युक्तियों का इस्तेमाल करने में बच्चों की मदद करना। • दूसरों को सुनना और बारी आने पर बोलना। • ऐसे शिशु गीत और गानों में अभिनय के साथ भाग लेना जिनमें तुकबंदियाँ हों और पुनरावृत्ति हो। • चित्र-पठन एवं बातचीत • शब्द-भंडार का विकास करने वाले खेल • बोलते-बात करते, कहानी सुनाते और चित्र वर्णन के समय विवेचनात्मक प्रश्न पूछकर सोच को उत्प्रेरित करना।	• दूसरों को थोड़े समय के लिए सुनते हैं और अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, सामाजिक व्यवहार के कुछ तौर-तरीके प्रदर्शित करते हैं, जैसे— बात करना व सुनते समय आँखें मिलाना। • आवश्यकताओं और विचारों को मौखिक और सांकेतिक रूप से संप्रेषित करते हैं। • मौखिक रूप से बोले गए सरल निर्देशों का अनुसरण करते हैं। • वार्तालाप में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और व्यक्तिगत अनुभव, पसंद/नापसंद साझा करते हैं। • छोटी-छोटी कविताएँ, अभिनय गीत समझ के साथ गाते हैं और लयात्मक गतिविधियों में भाग लेते हैं।

आरंभिक लेखन

- आँखों और हाथों का समन्वयन
- उचित उपकरणों का इस्तेमाल
- चिह्न लगाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना
- आड़ी-तिरछी रेखाओं व चित्रकारी के द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति

दूसरी भाषा से परिचय

- आसपास के परिवेश में मुद्रित/लिखित सामग्री का अवलोकन और उन्हें खोजना (परिचित चिह्न, टॉफी/बिस्किट आदि के रैपर पर प्रतीक चिह्न (लोगो), नाम-ठप्पे आदि को पढ़ना)।
- कक्षा में मुद्रित समृद्ध परिवेश का सृजन (वस्तुओं, शैल्फ, पोस्टर आदि पर लेबल लगाना)।
- मिलकर पढ़ना (सामूहिक पठन) (स्तरवार पठन सामग्री हो, ताकि बच्चे अक्षर/शब्द (प्रिंट) पर अँगुली रखें और उसकी ध्वनि से मिलाकर पढ़ सकें)।
- कक्षा में बच्चों द्वारा सरलतापूर्वक देखे जाने वाली ऊँचाई पर प्रदर्शित चिह्न, कविताओं और चित्रों को देखना।
- दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों से संबंधित प्रदर्शित चित्र व शब्दों को देखना और पढ़ना तथा उनके बारे में बात करना (प्रातःकालीन गतिविधि के रूप में, किसी बड़े की मदद से)।
- शब्द-दीवार, श्वेतपट्ट, श्यामपट्ट पर लिखी हुई सामग्री को देखना और मजे-मजे में अक्षरों/शब्दों की पहचान करना।
- वार्तालाप और सस्वर वाचन के दौरान शब्दों के खेल करना जैसे— तुकबंदी।
- देखकर अंतर बता पाने वाले खेल (इनमें अलग क्या है? क्या नहीं है?) खेलना।
- कक्षा में 'पठन क्षेत्र' या 'छोटा-सा पुस्तकालय क्षेत्र' बनाना और इसमें चित्रात्मक पुस्तकें, सूचनात्मक पुस्तकें, स्तरवार कहानी की पुस्तकें रखना।
- विभिन्न प्रकार की आयु-उपयुक्त कहानियाँ (10–15 मिनट की अवधि वाली) जो मौखिक, सामग्री के साथ चित्रों व कठपुतली आदि की सहायता से सुनाई जा सकें।
- गतिविधियों और वार्तालाप के दौरान प्रश्न पूछते हैं और उचित उत्तर देते हैं।
- शब्द भंडार में और नए शब्द सीखने में रुचि प्रदर्शित करते हैं।
- परिवेश में दिखने वाले परिचित संकेतों, प्रतीक चिह्न (लोगो), लेबल आदि को पहचानते हैं।
- छोटी कहानी को क्रम में दोहराते हैं और कहानी की मुख्य घटनाओं का अभिनय करते हैं।
- अपने शब्दों में अपनी ही कोई कहानी सृजित करते हैं।
- मुद्रित सामग्री को पढ़ने से संबंधित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ या दाएँ से बाएँ। (लिपि के अनुसार) इस बात की समझ को दर्शाते हैं कि मुद्रित सामग्री में अर्थ निहित होता है।
- कहानी की किताबों के पृष्ठ एक-एक करके पलटते हैं और स्वयं पढ़ने का अभिनय करते हैं।
- तुकबंदी वाले शब्दों का आनंद उठाते हैं और उन्हें याद रखते हैं।
- सरल शब्दों की शुरू की ध्वनि पहचानते हैं।
- शब्दों में ध्वनियों को पहचानकर उनके अनुसार तालियाँ बजाते हैं।
- शब्दों में से कुछ अक्षरों और उनकी ध्वनियों को पहचानते हैं (सहायता करने पर)।
- अपना आरंभिक लेखन और चित्रकारी दूसरों के साथ साझा करने में आनंद का प्रदर्शन करते हैं।
- लेखन व रंग भरने से संबंधित उपकरणों में रुचि प्रदर्शित करते हैं।
- अपने विचार दर्शाने के लिए चित्रकारी करते हैं, कुछ चिह्न बनाते हैं और उनका वर्णन भी करते हैं।

	• बच्चों को भाषा के लिखित स्वरूप से परिचित करवाने के लिए कहानी की पुस्तकों को ऊँची आवाज में पढ़कर सुनाना (छोटी सरल व अर्थपूर्ण पठन सामग्री जिनसे बच्चे जुड़ाव महसूस कर सकें)। • बच्चों को यह दर्शाना कि किसी पृष्ठ को पढ़ते समय अँगुली रखकर कैसे घुमाया जाता है (कहानी सुनाने के समय/चार्ट पर लिखी कविता पढ़ते समय या 'साइट शब्द' की ओर देखते हुए)। • कक्षा में सृजित पठन क्षेत्र या छोटे से पुस्तकालय क्षेत्र में पुस्तकों को उलट-उलट कर देखने के अवसर देना (पृष्ठ पलटना, पुस्तकों को देखना, पढ़ने का अभिनय करने के लिए प्रोत्साहित करना)। • ध्वनियों के उतार-चढ़ाव के प्रति जागरूकता-संबंधी गतिविधि (ध्वन्यात्मक शब्द, तुकबंदी वाले शब्द) उदाहरण के तौर पर, ध्वन्यात्मक खेल जिसमें शुरू व अंत वाली ध्वनियों की पहचान पर जोर हो, मिलती-जुलती ध्वनि वाले खेल-खेलना)। • शिशुगीत गाते समय या जोर से पढ़कर सुनाते समय तुकबंदी (मिलती-जुलती ध्वनि वाले शब्द को छोड़ देना और ध्यान आकर्षित करने के लिए थोड़ा रुकना) फिर बच्चों से पूछना कि अब आगे क्या आएगा, उदाहरण के तौर पर, शिक्षक कह सकते हैं— हाँ, यह बिल्कुल सही है, जैसे— 'छप्पर', 'टप्पर'। • अक्षर खेल-चित्र/वस्तुओं के डोमिनो (मास्क)। • बड़े अक्षरों (केपिटल लेटर), छोटे अक्षरों (स्मॉल लेटर) से मिलान का खेल और गतिविधियाँ। • अक्षरों की पहचान एवं अक्षर और उसकी ध्वनि में तालमेल।	• प्रायः इस्तेमाल हो रहे अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करते हैं— अभिवादन में, विनम्र अभिव्यक्ति में, जैसे— थैंक यू, प्लीज/घर की भाषा या अंग्रेजी में, अभिवादन का जवाब देते हैं।

	• बड़ों की मदद से स्वयं की चित्र/अक्षर/संख्या पुस्तक बनाना। • मोटे क्रेयोन और मार्कर का प्रयोग कर अक्षर बनाना, रेत से भरी ट्रे और अखबार में छिपे हुए अक्षरों को ढूँढना और पहचानना। • आँखों-हाथों के समन्वयन को समुन्नत करने के लिए आसानी से पकड़ी जाने वाली सामग्री से काम करना, जैसे— मोती पिरोना। • जब शिक्षक बच्चों के नाम लिखें, उनकी उपस्थिति लें या अभिभावक के लिए कोई सूचना लिखे तब बच्चों को देखने के अवसर देना (मॉडल्ड राइटिंग)। • विभिन्न प्रकार के कागजों पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ बनाना • रंग भरना (मुक्त रूप से या शिक्षक द्वारा बनाकर दिए गए चित्रों में)। • ट्रेस करना, बिंदु मिलाना • तरह-तरह की आड़ी-तिरछी लकीरें खींचना/नमूने बनाना/अक्षर बनाना जो बाद में अक्षर पढ़ने-लिखने में मदद करेंगे। • ऑडियो-वीडियो के माध्यम से अंग्रेजी भाषा के आसान शब्दों को सुनना। • बच्चे के फोटो और प्रतीक चिह्न (लोगो) के साथ नाम का कार्ड बनाकर लगाना (हर बच्चे को एक चित्र दिया जाए जो उस नाम से मिलता-जुलता हो)। • छोटी-छोटी कविताओं को सुनना, दोहराना और स्वतंत्र रूप से गाना। • सुबह आने व जाने के समय अभिवादन करना और दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में विनम्रतासूचक शब्दों का प्रयोग करना। • अंग्रेजी भाषा में छोटी-छोटी कहानियाँ सुनना। • 'साइट वर्ड्स' और कहानी में प्रायः आने वाले शब्दों का लिखकर प्रदर्शन।	

लक्ष्य 3— बच्चे द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
संवेदी विकास • देखना • सुनना • छूना • सूँघना • चखना **संज्ञात्मक कौशल** • अवलोकन • पहचान करना • स्मृति/याद करना • मिलान करना • वर्गीकरण करना • नमूने बनाना • क्रम के अनुसार सोचना • सृजनात्मक चिंतन • समीक्षात्मक चिंतन • समस्या समाधान • तर्क प्रस्तुत करना • जिज्ञासा • प्रयोग करना • खोजबीन करना **अवधारणाओं का निर्माण** • रंग, आकृति, दूरी, नाप, आकार, लंबाई, भार, ऊँचाई, समय • स्थान-बोध • एक-से-एक की संगतता **संख्या बोध** • गिनना और बताना कि कितने हैं	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • चखने, सूँघने, देखने, सुनने व छूने जैसे संवेदों के विकास हेतु संवेदी विकास गतिविधियाँ, जैसे— बनावट को छूने वाले खेल, आवाज निकालने वाली डिब्बियों के खेल। • उभार की हुई सामग्री से खेल-खेलना, जैसे— पकड़ सकने वाली पजल आदि। • नजदीक के पार्क/उपवन, चिड़ियाघर आदि का भ्रमण। • प्रकृति भ्रमण के दौरान अपने आसपास के परिवेश में तरह-तरह की वस्तुएँ देखना। • संवेदों के विकास के लिए तैयार की गई ट्रे से संबंधित गतिविधियाँ, जैसे— चखना, सूँघना, आदि। • दृश्य-विभेदीकरण कार्ड, चित्र-पठन के लिए पोस्टर, स्मृति कार्ड। • चित्र में गायब हुए हिस्से की पहचान करना। • 'क्या गायब है', खेल खेलना • ठोस वस्तुओं का उपयोग करते हुए मिलान करना, चुनना, वर्गीकरण आदि। • दो श्रेणियों के आधार पर चुनना, जैसे— आकृति और रंग (नीले चौकोर, पीले तिकोने आदि)। • परिवेश में उपलब्ध विभिन्न सामग्री का उपयोग करते हुए सरल नमूनों की नकल करना, जैसे— आकार, रंग। • उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए उनमें कहानी के कार्डों को क्रम में लगाना। • चित्र-पठन।	• परिवेश का अवलोकन और खोजबीन करने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग करते हैं। • सामान्य वस्तुओं, ध्वनियों, लोगों, तस्वीरों, पशुओं, चिड़ियों, घटनाओं आदि का वर्णन करते हैं। • एक बार में देखी गई वस्तुओं में से 3–5 गायब हिस्सों की पहचान करते हैं। • वस्तुओं के समूह को दो श्रेणियों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं। • सरल नमूने को दोहराते समय नमूने की इकाई को पहचान कर आगे बढ़ाते हैं। • 3–4 चित्र कार्ड/वस्तुओं को क्रम से लगाते हैं। • विभिन्न घटनाओं या कहानियों को क्रम से बताते हैं। • संबंधों के प्रति कौशल को दर्शाते हैं, जैसे— एक हिस्सा या समूची वस्तु, भिन्न वस्तुओं की पहचान, संबंध जोड़ना आदि। • स्थितियों का विश्लेषण करते हैं, तदनुसार सोचते हैं और कार्य करते हैं। • प्रयोग करने में आनंद लेते हैं, अपने आसपास के भौतिक सामाजिक और जैवकीय परिवेश के बारे में जिज्ञासा प्रकट करते हैं। • किसी वस्तु को उसके दो से अधिक घटकों के आधार पर तुलना एवं वर्गीकृत करते हैं, जैसे— आकृति और रंग, आकार एवं आकृति।

- संख्याओं की पहचान
- क्रम का बोध (10 तक किसी भी दी गई संख्या से आगे गिनती कर पाना)

परिवेश से संबंधित अवधारणाएँ

- प्राकृतिक— पशु, फल, सब्जियाँ, खाद्यपदार्थ, जीव-जंतु
- भौतिक— जल, वायु, मौसम, सूर्य, चंद्रमा, दिन और रात
- सामाजिक— मैं, परिवार, यातायात, त्यौहार, हमारे सहयोगी, समुदाय

तकनीक का प्रयोग

- दृश्य अवबोधन गतिविधियाँ
- 4–5 टुकड़ों वाले पज़ल को पूरा करना।
- आसान समस्या समाधान के लिए प्रश्नों के उत्तर खोजना, जैसे अगर बारिश हो रही हो तो तुम स्कूल कैसे जाओगे?
- विवेचनात्मक सवालों के उत्तर देना, जैसे— क्या हमें फूल तोड़ने चाहिए?
- सृजनात्मक चिंतन और आसान-सी समस्याओं के समाधान ढूँढना, जैसे कोई ऐसा खिलौना जो अलमारी के ऊपर रखा है, अगर आपको चाहिए तो आप क्या करेंगे?
- ऐसे विवेचनात्मक सवाल पूछना जो उनकी खोजी प्रवृति को विकसित करें और उनके चिंतन को विस्तार दें और सूचनाओं को हासिल करने की क्षमता का विकास करें।
- सरल से मापक उपकरणों, जैसे— कप, गिलास, जार और अमानक वस्तुओं (जैसे— मुट्ठी भर बीज/टॉफी, एक कप पानी/दूध, चुटकी भर नमक आदि) का उपयोग करते हुए वस्तुओं का मापन करना।
- गणित से संबंधित शब्दावली का प्रयोग करना, जैसे— अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे आदि।
- आसपास के परिवेशों में संख्याओं और चिह्नों की पहचान करना।
- संख्या बोध वाले गीत गाना और खेल खेलना, स्वयं से सही जुड़ने वाली पहेलियों को हल करना।
- आसपास के परिवेश के वास्तविक संदर्भों में सीखना, खोजबीन और अन्वेषण से संबंधित परियोजनाओं का क्रियान्वयन, बातचीत, समस्या समाधान, प्रश्न पूछना, सूचनाओं का आदान-प्रदान, विचार-विनिमय, मौजूदा ज्ञान और कौशलों पर विमर्श एवं सूचनाओं का समावेशन।
- दशा/स्थिति को दर्शाने वाले शब्दों का सही प्रयोग करते हैं।
- किसी वस्तु के विशेष गुणों के आधार पर 5 वस्तुओं को क्रम देते हैं।
- 4–5 वस्तुओं को एक-से-एक की संगतता में रखते हैं।
- कहने पर 5 वस्तुएँ तक गिन कर लेते और देते हैं।
- पाँच तक के अंकों को पहचान लेते हैं और तदनुरूप संख्या का बोध कर लेते हैं।
- अपने आसपास के परिवेश के प्रति जिज्ञासा अभिव्यक्त करते हैं, और प्रश्न पूछते हैं तथा संबंधित अवधारणाओं का विकास करते हैं।
- परिवेशीय मुद्दों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं।
- तकनीकी के प्रति जागरूकता प्रदर्शित करते हैं।

	• जागरूकता विकसित करने वाली गतिविधियाँ, जैसे— पानी बेकार न करना, पौधों को पानी देना, बत्तियाँ प्रयोग के बाद बंद कर देना आदि। • शिक्षक की निगरानी में तकनीकी दुनिया से पहचान— ड्रैग एंड ड्रॉप, डिजिटल ड्राइंग/चित्रकारी, वेबसाइट का उपयोग/ शैक्षिक वीडियो/डिजिटल कथा/ ई-पुस्तकें आदि। • आयु-उपयुक्त उपकरणों का उपयोग— ड्रैग एंड ड्रॉप गतिविधि, डिजिटल पेंट और ब्रुश का प्रयोग।	

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय III (आयु 5–6 वर्ष)

टिप्पणी

1. मुख्य अवधारणाओं, प्रस्तावित शिक्षण प्रणाली की प्रक्रियाओं और सीखने के आरंभिक प्रतिफलों को एक-से-एक मिलाना अपेक्षित नहीं हैं। इन्हें समग्र रूप में देखा जाना चाहिए।
2. इन सीखने के प्रतिफलों का विकास इस मान्यता के साथ किया गया है कि पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में प्रथम भाषा/निर्देश की भाषा घर में बोली जाने वाली भाषा या क्षेत्रीय भाषा का उपयोग द्वितीय भाषा के रूप में किया जाना चाहिए।

लक्ष्य 1— बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
• स्वयं और दूसरों के प्रति जागरूकता • स्वयं के प्रति सकारात्मक अवधारणा का विकास • आत्म नियमन • निर्णय लेना और समस्या समधान	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • बच्चों का अपने, अपने शरीर के अंगों, अपने परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों और पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के कर्मचारियों, गणमान्य व्यक्तियों तथा संबंधों के बारे में जानना। (दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों, जैसे— सर्कल समय बच्चों को लेते-छोड़ते समय)।	• स्वयं और अन्य लोगों की शारीरिक विशेषताओं, जेंडर, रुचि, पसंद/ नापसंद के आधार पर वर्णन करते हैं। • परिवार के अन्य सदस्यों, जैसे— चाचा, मामा, मौसी आदि से अपने संबंधों को समझने लगते हैं।

- सामाजिक रूप से वाँछनीय व्यवहार (प्रो-सोशल), जैसे— एक-दूसरे का ख्याल रखना, साझेदारी, सहयोग, दया और दूसरों की भावनाओं व अधिकारों का सम्मान करना।
- अच्छी आदतों का विकास, साफ-सफाई एवं स्वयं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता।
- स्थूल गत्यात्मक कौशलों का विकास (चलना, दौड़ना, कूदना, उछलना, घुटनों के बल चलना, चढ़ना, कदमताल, फेंकना, लपकना, किक मारना)
- सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों का विकास और आँखों-हाथों का समन्वयन (धागा पिरोना, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़ना, चिपकाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना, चित्रकारी, रंग भरना, छपाई करना (ठप्पे लगाना), कागज मोड़कर वस्तुएँ बनाना (पेपर फोल्डिंग)।

- बच्चों का स्वयं के मूल्य और अपनी उपलब्धियों पर गर्व की अनुभूति करने के लिए सहयोग प्रदान करना।
- बच्चों के जन्मदिवस, त्यौहारों का आयोजन करना, जैसे— उनके कार्यों का प्रदर्शन और सराहना।
- एक-दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहने के नियमों की समझ विकसित करना, जैसे— समूह में की जाने वाली गतिविधियाँ, भिन्न-भिन्न गतिविधि क्षेत्रों में खेलना और कहानी सुनाना आदि। बाहरी खेल खेलना और खेल के नियमों का पालन।
- बच्चों में मनपसंद खेल, सामग्री और खेल क्षेत्र का चुनाव करना।
- बच्चों में आपसी मन-मुटाव के समय दोनों पक्षों के लिए तदानुभूति एवं समझ दर्शाना, जैसे— खेल सामग्री साझा करना।
- दूसरे बच्चों के साथ ताल-मेल, अंतःक्रिया के अवसर, जैसे— नाटकीय खेल, कठपुतली के खेल, नियम-आधारित खेल आदि।
- सरल हाव-भाव एवं चिह्नों की पहचान कराना।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की प्रतिभागिता सुनिश्चित करने हेतू गतिविधियों का अनुकूलन करना।
- अभिभावकों एवं समुदाय को शामिल करना।
- स्वयं शौचालय का प्रयोग करना एवं हाथ धोना (बिना बड़ों की सहायता के)।
- नियमित स्वास्थ्य जाँच (कद, वजन, और सामान्य स्वास्थ्य), टीकाकरण एवं बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- बातचीत, रोल-प्ले और कहानियों के माध्यम से खाने की स्वस्थ आदतों को विकसित करना।
- सुरक्षा नियमों जिनका पालन बच्चे कर सकें उन पर चर्चा और प्रदर्शन करना।
- अच्छे स्पर्श और बुरे स्पर्श के अंतर की समझ विकसित करना।

- गतिविधियों में स्वतंत्र रूप से भाग लेने लगते हैं।
- खेल में नियमों का पालन करते हैं।
- दिनचर्या में बदलाव को स्वीकार कर अनुकूलता दर्शाते हैं।
- दैनिक गतिविधियों में निरंतर और लंबी अवधि तक ध्यान दे पाते हैं।
- चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं।
- जिम्मेदारियाँ लेते हैं और अपनी प्राथमिकताओं एवं रुचियों के आधार पर चुनाव करते हैं।
- समूह में कार्य करते या खेलते समय मतभेदों के सामधान सुझाते हैं और परस्पर सामंजस्य बिठाते हैं।
- खेल और बातचीत के दौरान दूसरों के विचारों को सुनते और समझते हैं।
- बड़े और छोटे समूह की गतिविधियों के दौरान जरूरतमंद साथियों की मदद करते हैं।
- विविध पृष्ठभूमि से आए बच्चों एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति स्वीकार्यता एवं संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं।
- स्वतंत्र रूप से बुनियादी स्वास्थ्य और स्वच्छता को कायम रखते हैं।
- घर, पूर्व-प्राथमिक विद्यालय और खेल के मैदान में सुरक्षा संबंधित बुनियादी नियमों का पालन करते हैं।
- अच्छे स्पर्श और बुरे स्पर्श के अंतर की समझ को दर्शाते हैं और परिचित व्यक्तियों से दूरी बनाए रखते हैं।
- स्थूल माँसपेशी कौशलों में अधिक समन्वयन, नियंत्रण एवं ताकत प्रदर्शित करते हैं, जैसे— दौड़ने, कूदने, किक मारने, फेंकने और पकड़ने के कौशल।

	• नकल करने वाले खेल, जैसे— नेता की नकल करना, जानवरों की नकल करना आदि। • बच्चों को नाच, एक्शन गीत जिसमें सरल शारीरिक गतिविधियाँ शामिल हों, जैसे— घूमना, शरीर को लय ताल के अनुसार हिलाना-डुलाना, घुमाना आदि में संलग्न करना। • खेल जहाँ स्वतंत्र रूप से कोई भी आकार बनाते हैं, जैसे— संगीतमय खेल, गिनती के खेल, जैसे पहाड़ में आग लगी... भागो-भागो-भागो। जिसमें बच्चों को स्थान, बोध, दूरी एवं दिशा का ज्ञान हो। • एकल, जोड़े में, छोटे समूह एवं बड़े समूह की गतिविधियाँ जिनमें विभिन्न सतहों में स्थूल माँसपेशियाँ विकसित करने के कौशल शामिल हों। • अँगूठे एवं अँगुलियों से पेंसिल पकड़ने (पिंसर ग्रास्प) के कौशल का अभ्यास, जैसे— फाड़ना, काटना और चिपकाना, छीलना/ स्टीकर चिपकाना, अँगुलियों से वस्तुएँ चुनना। • जोड़-तोड़ वाली वस्तुएँ जो छाँटने, मिलान करने, कल्पना करने का अनुभव प्रदान करती हों, उनके प्रयोग से प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना।	• स्थान बोध की समझ प्रदर्शित करते हैं तथा संगीत एवं गत्यात्मक गतिविधियों में सक्रिय एवं रचनात्मक रूप से भाग लेते हैं। • सूक्ष्म, माँसपेशीय कौशलों का प्रर्दशन एवं उनका नियंत्रण सटीक रूप से करते हैं। • जटिल कार्यों को पूरा करने के लिए समन्वित गतिविधियों का प्रदर्शन करते हैं, जैसे— कागज को सीधी लाइन पर काटना, उड़ेलना, बटन बंद करना आदि। • चित्रकारी, रंगना और लिखते समय उपकरणों को पकड़ने और इस्तेमाल करने के लिए पिंसर ग्रास्प का प्रयोग करते हैं (हाथ के अँगूठे और अँगुली के बीच वस्तुओं को पकड़ने के लिए समन्वय बनाते हैं)।

लक्ष्य 2— बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना		
मुख्य अवधारणाएँ/ कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
बातचीत करना और सुनना • ध्यान देने की अवधि और सुनना • बातचीत के नियम/तौर-तरीके • रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और वार्तालाप • भाषा और सृजनात्मक चिंतन • शब्द भंडार/शब्द सामर्थ्य **आरंभिक पठन** • मुद्रित सामग्री की पहचान और अर्थ समझना दृश्य	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • मुक्त एवं निर्देशित वार्तालाप और बच्चों को विभिन्न संप्रेषण युक्तियों के प्रयोग के लिए मदद करना, जैसे— इशारे, हाव-भाव, अशाब्दिक अभिव्यक्ति, अपनी बारी आने पर बोलना और दूसरों को सुनना। • इस प्रकार के खेल खेलना जिनमें सरल प्रश्नों द्वारा हाल ही में घटित घटनाओं के बारे में बातचीत की जा सके।	• दूसरे व्यक्तियों को ध्यान से सुनते हैं और बातचीत के सामाजिक तरीकों को दर्शाते हैं, जैसे— दूसरों से नजरे मिलाकर बात करना और बोलने के लिए अपनी बारी का इंतजार करते हैं। • पूरे वाक्यों का इस्तेमाल कर अपनी जरूरतों और विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। • जटिल निर्देशों का पालन करते हैं।

- दृश्य विभेदीकरण
- पुस्तकों से लगाव
- निर्देशों को समझ पाना
- पठन का अभिनय
- ध्वनियों की पहचान
- श्रवण और लिखित सामग्री का ध्वनि के आधार पर संबंध
- अक्षर बोध

आरंभिक लेखन

- विचारों और चित्रकला में संबंध चित्रकला के द्वारा आत्म-अभिव्यक्ति
- उचित उपकरणों का प्रयोग
- चिह्न लगाना
- चित्रकला और लिखित सामग्री में विभेदीकरण
- सोचने और बोलने का लिखित भाषा से संबंध

द्वितीय भाषा से परिचय

- रचनात्मक सोच के साथ चित्र-पठन (समस्या-समाधान और पूर्वानुमानित प्रश्न सुलझाना, जैसे— तुम्हें क्या लगता है? चित्र में बच्चा आकाश की तरफ क्यों देख रहा है? छोटी लड़की गुब्बारे वाले से क्या कह रही है)।
- लयबद्ध गाने गाना और शारीरिक समन्वयन बनाते हुए गतिविधि करना (जैसे— नाचना, कूदना आदि)।
- बच्चों द्वारा कहानियों को अपने शब्दों में दोहराना, जैसे— घटनाओं, पात्रों के बारे में बातचीत।
- नए शब्द एवं शब्दावली सीखना, जैसे— 'शब्द दीवार' 'मेरी पहली पुस्तक' बनाकर।
- प्रतिदिन की गतिविधियों का फायदा उठाते हुए शब्द और ध्वनियों पर बात करना।
- चिंतन एवं वाचन कौशल को उत्प्रेरित करने के लिए विवेचनात्मक प्रश्न पूछना, जैसे— यदि आपके पसंदीदा खिलौने को अलमारी के सबसे ऊपर रखा गया हो और आप उससे खेलना चाहते हैं तो आप क्या करेंगे? यदि आपके पंख होते और आप उड़ पाते तो आप कहाँ जाते? आपको क्या लगता है यह पुस्तक किस विषय पर होगी आदि।
- छोटे समूहों में कहानी, कविता, पहेली गीतों को सुनना और स्वयं बनाना।
- कक्षा में प्रिंट समृद्ध वातावरण में परस्पर बातचीत करना (वस्तुओं, शब्द-दीवार पोस्टरों को लेबल करके)।
- आसपास के वातावरण में उपलब्ध मुद्रित/लिखित सामग्री का अवलोकन करना जो बच्चों को पढ़ने और दूसरों को पढ़कर सुनाने के लिए उत्प्रेरित करे (पर्यावरण में संकेत, साइन बोर्ड, खाद्य वस्तुओं के लेबल, बसों में पोस्टर, होर्डिंग्स आदि)।
- बच्चों के साथ दैनिक घटनाओं का वर्णन करना और मुद्रित समृद्ध कक्षा उपलब्ध करवाना।
- बातचीत में हिस्सा लेते हैं और अपनी बारी का इंतजार करते हैं। अपनी पसंद-नापसंद, व्यक्तिगत अनुभवों को क्रम से, उचित कारणों की सहायता से, विस्तार से साझा करते हैं।
- लंबी और ज्यादा संख्या में कविता, गीतों, कहानियों को समझने लगते हैं और सुना पाते हैं और लयबद्ध गतिविधियों में भाग लेते हैं।
- जानकारी प्राप्त करते के लिए प्रश्न पूछते हैं और जानकारी देने के लिए प्रश्नों के उत्तर देते हैं।
- शब्दावली में बढ़ोत्तरी और नए शब्द सीखने में रुचि दर्शाते हैं।
- पढ़ी जा रही कहानी में बार-बार आने वाले शब्दों/चित्रों को पहचानकर उन्हें इंगित करने लगते हैं।
- इस बात की समझ को दर्शाते हैं कि मुद्रित सामग्री में अर्थ निहित होता है।
- कहानी को सही क्रम में दुबारा सुनाते हैं और जटिल सवालों के जवाब देते हैं।
- चित्रों और शब्दों को देखकर किसी कहानी या जानकारी की पुस्तकों के विषय में पूर्वानुमान लगाते हैं।
- शब्दों के साथ खेलते हैं और तुकबंदी करते हैं, जैसे— हैट-फैट-बैट या दिल्ली, बिल्ली, तिल्ली।
- शब्दों की शुरुआती एवं अंतिम ध्वनि की पहचान करते हैं।
- शब्दों में ध्वनियों की पहचान के आधार पर तालियाँ बजाते हैं।
- कई अक्षरों और उनकी ध्वनियों को पहचानते हैं और शब्दों को डीकोड करने की कोशिश करते हैं।
- स्वर एवं व्यंजन को मिलाकर अपने शब्द बनाते हैं।

	• पृष्ठों में शब्द पढ़ते समय शिक्षक शब्दों के। नीचे पूरे पृष्ठ पर अँगुली बाएँ से दाएँ और। ऊपर से नीचे कैसे घुमा रहे हैं, इसका अवलोकन करना। • बच्चों का पुस्तकों के विभिन्न प्रकार और स्वरूपों से परिचय कराना। • बच्चों का घर या अन्य स्थानों, जैसे— बाजार, अस्पताल, पूर्व-प्राथमिक विद्यालय, कार्यस्थल पर उपलब्ध मुद्रित/लिखित सामग्री को पढ़ना और इंगित करना। • पुस्तकों को इस्तेमाल करते हुए उसके भाग दिखाना, जैसे— मुख्य पृष्ठ, पीछे का कवर और बच्चों को चित्रों और प्रिंट को पहचानने में मदद करना। • दैनिक दिनचर्या का चित्रों, मुद्रित शब्दों द्वारा प्रदर्शन और उसके बारे में बातचीत। • कक्षा में मुद्रित/लिखित शब्दों को देखना। एवं पढ़ना। • बच्चों को अवधारणाओं और शब्दों के बीच संबंध बनाने में मदद करना, जैसे— शब्दों से चित्रों को जोड़ना। • दृश्यात्मक विभेदीकरण वाली गतिविधियाँ, जैसे— अक्षर/चित्र/आकार/शब्द में अंतर पता करना। • दृष्टि बोधात्मक गतिविधियाँ, जैसे— अंतर पता करने वाली गतिविधियाँ, मेज (भूल-भुलैया) छुपे शब्द, अक्षर, चित्र में परिचित शब्दों की खोज करना। • कक्षा में पढ़ने का क्षेत्र या छोटा-पुस्तकालय क्षेत्र बनाना जिसमें ज्ञानवर्धक पुस्तकें, वर्गीकृत कहानियाँ उपलब्ध हों। बच्चों को छोटे समूह में स्वयं पुस्तकें बनाने के लिए प्रोत्साहित करना। ये कहानी या ज्ञानवर्धक पुस्तकें हो सकती है।। • सस्वर पठन करना और आयु के स्तर अनुसार पुस्तकें उपलब्ध कराना जिनसे बच्चे लिखित सामग्री से परिचित हों, जैसे— पशुओं, वाहनों और पौधों आदि विषयों पर बातचीत करना।	• स्वतंत्र रूप से ध्वनि-अक्षरों को जोड़कर कई नए शब्द और स्वयं स्पेलिंग (इंवेंटेड स्पेलिंग) बनाते हैं। • लिखने और चित्रकला के उपकरणों, जैसे— पेंसिल, क्रेयॉन, ब्रुश आदि को बेहतर ढंग से पकड़ते एवं इस्तेमाल करते हैं। • अपना नाम सही ढंग से लिखते हैं। • प्रायः इस्तेमाल हो रहे अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करते हैं— अभिवादन में, विनम्र अभिव्यक्ति में, जैसे— थैंक यू, प्लीज और घर की भाषा या अंग्रेजी में जवाब देते हैं। • दूसरी भाषा में कहे गए सरल वाक्य या छोटी कहानी की समझ दर्शाते हैं।

- विभिन्न प्रकार की आयु-उपयुक्त कहानियाँ, जैसे— मौखिक, रंग मंच की सामग्री, चित्रों, नाटक, कठपुतलियों द्वारा।
- पुस्तकों में शब्द चित्रों का उपयोग (लिखित शब्दों के स्थान पर चित्रों का उपयोग) जहाँ एक परिचित संज्ञा की जगह उसका चित्र बनाया गया हो, जैसे— "बस" शब्द की जगह 'बस' का चित्र बनाया गया हो। ।
- बच्चों के लिखने, पढ़ने और चित्रकारी। करने के लिए एक विशेष स्थान बनाना, जैसे— 'साक्षरता क्षेत्र' (किताबों एवं। अन्य पठन सामग्री को आसानी से। उपलब्ध कराना)।
- प्रसंग के अनुसार सरल पहेलियाँ बनाना और उन्हें हल करना (4–5 लाइनें)।
- ध्वनि खंडों के प्रति जागरूक होना (शब्द, शब्दांश, तुकात्मक शब्द), जैसे— शुरुआती एवं अंत ध्वनियों के साथ ध्वन्यात्मक खेल।
- बच्चों से किताबों में तुकात्मक शब्दों को स्वतः इंगित करवाना।।
- धुन का पालन करना, बच्चों को शब्दांशों को सुनकर उसके अनुसार ताली बजाने में सहायता करना, जैसे— यदि शिक्षक ने 'हाथी' शब्द का चयन किया तो दो बार ताली बजेगी 'हा' और 'थी'।
- तुकात्मक शब्दों की लड़ी बनाना, जैसे— रेन, चेन, ड्रेन, ट्रेन, ग्रेन, पेन आदि।
- अक्षरों की पहचान और उनके साथ उनकी ध्वनियों का मिलान।
- बच्चों को वर्गीकृत कहानी की पुस्तकें उपलब्ध कराकर, 'रीडिंग अलाउड' द्वारा लिखित भाषा, विभिन्न विषय वस्तुओं पर वार्तालाप, जिनमें बातचीत के कई बिंदु हों, जैसे— जानवर, यातायात, पेड़-पौधे आदि।
- स्वयं के मनपसंद अक्षरों/शब्दों की किताब बनाना
- अक्षर-चित्र/वस्तु डोमिनो के साथ खेल

	• अंग्रेजी के "अपर केस" और "लोवर केस" की पहचान और मिलान (कट-आउट्स के द्वारा, चुंबकीय अक्षर, विभिन्न सतहों वाले अक्षर, जैसे— मुलायम, खुरदुरे)। • लेखन एवं चित्रकला के शुरुआती प्रयासों द्वारा अपनी भावनाएँ, अनुभवों और विचारों को व्यक्त करना। • जिन बच्चों में गत्यात्मक चुनौतियाँ हों, उन बच्चों को पकड़ी जा सकने वाली पज़ल्स देना (जिसमें वे अक्षरों को कट-आऊट हैंडल की सहायता से लगा सकें)। • बच्चों को यह दर्शाना कि किसी पृष्ठ को पढ़ते समय अँगुली रखकर कैसे पढ़ा जाता है। आँखों को अँगुली के साथ कैसे घुमाया जाता है (कहानी सुनाने के समय/चार्ट पर लिखी कविता पढ़ते समय या 'साइट शब्द' की ओर देखते हुए)। • वातावरण में उपलब्ध लेखन/प्रिंट (कक्षा, घर या रोड) का अवलोकन और नकल करना। • बहुत-सी मुद्रित सामग्री के साथ अंतःक्रिया करना जो यदि बच्चे चाहे तो नकल करें। • विभिन्न प्रकार के कागजों में लाइनों, चित्रकारी द्वारा लेखन के शुरुआती प्रयास। • मोटी पेंसिल, मिट्टी, आटे, प्लासटीसीन द्वारा अक्षरों को लिखना। • कक्षा में उपलब्ध चार्ट में रोज अपनी उपस्थिति दर्ज करना। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समावेश के लिए अनुकूलन। • बोलचाल में प्रयुक्त हो रहे सरल अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग (सर्कल टाइम, छोटे समूह की गतिविधियाँ), बड़ों से बातचीत करते समय। • नाम कार्ड का इस्तेमाल • अंग्रेजी की कविताएँ, गाने सुनना • ऑडिया-वीडियो के माध्यम से आयु-उपयुक्त	

लक्ष्य 3— बच्चे द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
संवेदी विकास • देखना • सुनना • छूना • सूँघना • चखना **संज्ञात्मक कौशल** • अवलोकन • पहचान करना • स्मृति/याद करना • मिलान करना • वर्गीकरण करना • नमूने बनाना • क्रम के अनुसार सोचना • सृजनात्मक चिंतन • समीक्षात्मक चिंतन • समस्या समाधान • तर्क प्रस्तुत करना • जिज्ञासा • प्रयोग करना • जिज्ञासा • प्रयोग करना • खोजबीन करना **अवधारणाओं का निर्माण** • रंग, आकृति, दूरी, नाप, आकार, लंबाई, भार, ऊँचाई, समय • स्थान-बोध • एक-से-एक की संगतता	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • चखने, सूँघने, देखने, सुनने व छूने जैसी संवेदनाओं के विकास हेतु गतिविधियाँ, उदाहरण के लिए, चखकर अनुमान लगाना कि क्या खाया, फल/सब्जियों का स्वाद पहचानना और उनके नाम बताना, बोतलें सूँघना, खुशबुदार आटे से सृजन करना, उन वस्तुओं के साथ प्रयोग करना जिसमें खुशबू आती हो, नाम/अक्षर ढूँढना, खोज करने वाले खेल, आँख पर पट्टी बाँधकर खेलना, आवाज करने वाले ध्वनि डिब्बों को जोर से धीरे के क्रम में लगाना, बाहर की आवाजें ढूँढना, विभिन्न सतहों वाले अक्षर ढूँढना आदि। • संवेदनाओं का प्रयोग करके देखना उदाहरण के लिए, बच्चों को पर्यावरण में उपलब्ध ध्वनियाँ सुनने के लिए प्रोत्साहित करना, जैसे— सूखे पत्तों पर चलते समय, हवा चलने पर आदि। खाना बनाते समय खुशबू सूँघना, कड़वे और मीठे का स्वाद, सुनना और वाद्य यंत्रों को बजाना, संवेदनाओं के साथ प्रयोग, भ्रमण करना और संवेदनाओं पर आधारित कहानियाँ सुनना, विभिन्न रंगों की बोतल के ढक्कन/कपड़े के टुकड़ों के साथ खेलना आदि। • पहेलियाँ बूझना (संवेदनाओं) पर आधारित, जैसे— मेरी त्वचा मुलायम और रोएँदार है, मैं म्याँऊ करती हूँ बताओ मैं कौन हूँ?(बिल्ली) • सुबह के सर्कल टाइम में चर्चा करने वाले प्रश्न, जैसे— जब आप सुबह उठते हैं, पहली कौन-सी चीज आप देखते हैं/सुनते हैं/छूते हैं/सूँघते हैं/चखते हैं? आपके शरीर का कौन-सा अंग आपको देखने/सुनने/सूँघने/स्वाद लेने और महसूस करने में मदद करता है।	• परिवेश का अवलोकन और खोजबीन करने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग करते हैं। • अपने परिवेश में मौजूद वस्तुओं (ध्वनियों, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों आदि) पर ध्यान देते हैं और उनका वर्णन करते हैं। • एक साथ देखी गई 4–5 वस्तुओं को याद रखते हैं और पुनः बताते हैं। • किसी भी परिचित वस्तु के चित्र को देखकर 3–5 गायब भागों को पहचान/बता पाते हैं। • वस्तुओं के समूह को दो या दो से अधिक श्रेणियों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं। • नए आकार (पैटर्न) बनाते हैं। • 4–5 चित्र कार्ड या वस्तुओं को क्रम से लगाते हैं। • कहानी या घटनाओं को क्रम से बताते हैं। • सरल समस्याओं के सुलझाने के तरीके कारण सहित बताते हैं। • संबंधों को समझने लगते हैं, जैसे— पूरी वस्तु या उसका कोई भाग, दूसरों से भिन्न ढूँढना, संबंध बताना आदि। • कारण बताते हैं, अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालकर व्याख्या करते हैं। • अपने परिवेश की जाँच करते है, वस्तुओं को तोड़ते-मरोड़ते हैं, प्रश्न पूछते हैं, खोज करते हैं, अपने विचार बनाते हैं और पूर्वानुमान लगाते हैं। • वस्तुओं में समानता देख सकते हैं और वस्तुओं को आकार, रंग तथा बड़े-छोटे के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं।

संख्या बोध

- गिनना और बताना कि कितने हैं।
- संख्याओं की पहचान
- क्रम का बोध (10 तक किसी भी दी गई संख्या से आगे गिनती कर पाना)

परिवेश से संबंधित अवधारणाएँ

- प्राकृतिक— पशु, फल, सब्जियाँ, खाद्य पदार्थ, जीव-जंतु
- भौतिक— जल, वायु, मौसम, सूर्य, चंद्रमा, दिन और रात)
- सामाजिक— मैं, परिवार, यातायात, त्यौहार, हमारे सहयोगी, समुदाय

तकनीक का प्रयोग

- विभिन्न विषयों के पोस्टरों द्वारा चित्र पठन करना और बच्चों को चित्रों को देखकर बारीक अंतरों को पहचानने के लिए प्रोत्साहित करना, जैसे— कितने जानवर/चिड़िया हैं।
- कौन-सा एक भिन्न है, जैसे— 3 से अधिक घटकों के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करते हैं, जैसे— आकार, रंग और बनावट।
- भ्रमण के दौरान अपने आसपास के परिवेश में तरह-तरह की वस्तुएँ देखना, जैसे— वस्तु/खिलौना कहाँ था? वह दूसरे किसी वस्तु की तुलना में कहाँ रखा था?।
- तोड़-मरोड़कर फिर जोड़ देने वाली खेल सामग्री, जैसे— ब्लॉक्स, खिलौने, नट और बोल्ट आदि।
- खोजने से संबंधित खेल क्रियाएँ, जैसे— रेत की ट्रे में अक्षर ढूँढना/नंबर ढूँढना आदि।
- ठोस वस्तुओं में मिलान करना एवं छाँटना, बिंदुओं को संख्या से मिलाना, पैटर्न बनाना, टॉफी, बिस्कुट के रैपर का मिलान, जो शब्द बार-बार कहानी में आते हैं, उन्हें अपने परिवेश में सुनना/देखना आदि।
- सोचने पर मजबूर करने वाली गतिविधियाँ कराएँ, जैसे— वर्गीकरण करना (दो या तीन बिंदुओं के आधार पर), रंग-बिरंगे बटनों को रंगों के आधार पर वर्गीकृत करना एवं फिर अँगुली लगाकर गिनना, कपड़ों के टुकड़ों को रंगों तथा डिजाइन के हिसाब से वर्गीकृत करना, जैसे— कुछ फल छीलकर खाए जाते हैं व कुछ बिना छीले।
- वातावरण में उपलब्ध सामग्री का प्रयोग करके अपने आप नए पैटर्न बनाना और आगे बढ़ाना, जैसे— लकड़ी, फूल, पत्ती, वस्तुएँ/ब्लॉक आदि।
- लय को समझकर उसका अनुकरण करना, जैसे— ताली-ताली, चुटकी-चुटकी और अपनी लय बनाना।
- पाँच वस्तुओं को किसी एक विशेषता के आधार पर क्रम से लगाते हैं।
- माँगने पर 10 तक वस्तुएँ गिनकर देते हैं।
- 10 तक की संख्या और अंकों की पहचान करते हैं और उन्हें लिखते हैं।
- अपने आसपास के शारीरिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण के बारे में जिज्ञासा दिखाते हैं, प्रश्न पूछते हैं तथा संबंधित अवधारणाएँ विकसित करते हैं।
- पर्यावरण के प्रति जागरूकता और संवेदना व्यक्त करते हैं, जैसे— पानी बर्बाद नहीं करना, पौधों को पानी देना, जब जरूरत न हो लाइट बंद करना आदि।
- प्रौद्योगिकी के प्रयोग के प्रति जागरूकता और रुचि दिखाते हैं।

- जेब वाले अक्षर या संख्या चार्ट में अक्षरों या संख्याओं को डालना और पढ़ना।
- सुनना और सुनी हुई कहानी को क्रम से दोहराना और 5–6 कहानी कार्ड्स को क्रम से लगाना (बाएँ से दाएँ), शब्दरहित चित्रात्मक किताबों को देखकर शब्द बताना, दिनचर्या पर चर्चा करना (वह पहले क्या करते हैं, फिर क्या करते हैं)।
- समस्याओं को प्रस्तुत करना और उसके समाधान पूछना, जैसे— आप अगर कमरे में बंद हो जाएँ? अगर बारिश होगी आप स्कूल कैसे जाएँगे?
- 6–7 टुकड़ों वाली पजल पूरी करना, मेज (भूल-भुलैया) सुलझाना, अधूरे चित्र को पूरा करना और चित्र के अधूरे भाग को खोजना आदि।
- संबंध के आधार पर जोड़े बनाना, जैसे— कप-प्लेट।
- चिंतन कौशलों को उत्प्रेरित करना, जैसे— कारण और प्रभाव संबंध, विवेचनात्मक उत्तर वाले प्रश्न, अनुमान और आकलन लगाना, जैसे— फिर क्या होगा, क्या हुआ होगा या क्या हुआ होगा होता, अगर कछुआ-खरगोश के संग दौड़ लगाते समय सो जाता है आदि।
- बच्चे 'क्यों?' वाले प्रश्न पूछें और खोज करके उत्तर ढूँढें, जैसे— शिक्षक के साथ सरल प्रयोग करें, कागज की नाव बनाना और पानी में तैराना, कागज के हवाई जहाज बनाना और फिर हवा में उड़ाना, गुब्बारे फुलाते समय हवा को महसूस करना आदि।
- आरंभिक वैज्ञानिक प्रयोगों में शिक्षक की सहायता से सक्रिय रूप से भाग लेना (जैसे— खिलौनों को पानी में तैराना, पौधों को बड़े होते देखना और उनके बारे में बातचीत करना; अवलोकन करना कि पानी कैसे रूप बदलता है जैसे बर्फ से पानी तथा पानी से भांप बनती है आदि); संवेदनाओं का विकास और जानकारी प्राप्त करना, विभिन्न सामग्री देखना, कारण जानना, सरल से मापक उपकरण, जैसे— कप।

- गिलास, जार और अमानक वस्तुओं (जैसे— मुट्ठीभर बीज/टॉफी, एक कप पानी/दूध, चुटकीभर नमक आदि) का उपयोग करते हुए वस्तुओं का मापन करना।
- रंगों, आकारों के साथ प्रयोग, उदाहरण के लिए, रंग मिलाना और नए रंग ढूँढना/बनाना, रंगों को गाढ़े से हलके के क्रम का मापन करना।
- बच्चों के चित्रों के आधार पर संबंधसूचक शब्दों का प्रयोग, जैसे— ऊपर-नीचे, दायाँ-बायाँ, अंदर-बाहर आदि।
- यह बताना कि एक दिन पहले क्या हुआ था या उन्होंने अपने क्षेत्र भ्रमण के बाद क्या किया आदि।
- चार्ट, वस्तुओं और किताबों द्वारा तुलना करने के प्रत्यक्ष अनुभव आदि।
- स्थान बोध कराने हेतु गतिविधियाँ, जैसे— कुर्सी के सामने, पीछे, बगल में, ऊपर, नीचे, लय-ताल वाली गतिविधियाँ, यह आकलन करना कि नाचने या कोई काम करने के लिए कितनी जगह चाहिए होगी, कुछ रोचक कार्य-पत्रों का उपयोग, स्थान-बोध संबंधी भाषा (जैसे— सीधे/मुड़ना/सिकुड़ना या छोटे बीज बन जाने का अभिनय आदि)।
- क्रम से लगाने वाली गतिविधियाँ, जैसे— वस्तुओं या उनके चित्रों को बड़े से छोटे/भारी से हल्के के क्रम में लगाना।
- अपने परिवेश में वस्तुओं को अर्थपूर्ण तरीके से गिनना।
- अपने परिवेश में संख्या/चिह्नों को देखना, नंबर ढूँढना, गिनना आदि।
- दैनिक जीवन में संख्याओं और गिनती का प्रयोग करते हैं और यह समझते हैं कि संख्या परिमाण को दर्शाती हैं।
- एक संख्या के साथ एक वस्तु को मिलाना, जैसे— एक पत्थर पर एक पत्ता लगाना, एक गिलास में एक स्ट्रा डालना आदि।

	• किसी समारोह, जन्मदिन या त्यौहार के लिए बचे हुए दिन गिनना (जैसे— लकड़ी/पत्थर/चित्र वाला कैलेंडर आदि)। • खेल क्रियाओं द्वारा ये आभास कराना कि बच्चों को अपने आस-पड़ोस के बगीचे/पेड़-पौधे का ख्याल रखना चाहिए और उनकी सुंदरता बनाए रखनी चाहिए आदि। • आसपास के पार्क, बगीचे, बाजार, आस-पड़ोस में ले जाना जहाँ बच्चों को देखने, बातचीत करने के अवसर मिलें, जैसे— जानवर, चिड़िया, पेड़-पौधे, हमारे सहयोगी आदि। • जानवरों के प्रति संवेदना विकसित करना, जैसे— जानवरों को खाना खिलाना, चिड़ियों को खाना खिलाना, उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना, उनके साथ खेलना आदि। • बीती घटनाओं और आगे की योजनाओं पर बातचीत करना, जैसे— कल क्या किया, कल क्या करेंगे, अभी क्या करना चाहोगे इत्यादि। • परिवार के सदस्यों के साथ परिवार, समुदाय के विषय में बातचीत, जैसे— दादा-दादी, नाना-नानी आदि के बारे में जानना, बचपन के अनुभवों को साझा करना आदि। • तकनीकी के प्रयोग से बच्चों को कविता, कहानी, सुनाना। • बच्चों को कंप्यूटर में (ड्रेग एंड ड्रॉप) वाली गतिविधियाँ कराना। • तकनीक के प्रयोग द्वारा बच्चों को चिड़ियाघर में जानवरों, रेलवे स्टेशन, मेले आदि के चलचित्र दिखाना। • आयु के अनुरूप एप और अन्य डिजिटल सामग्री का प्रयोग करना।	

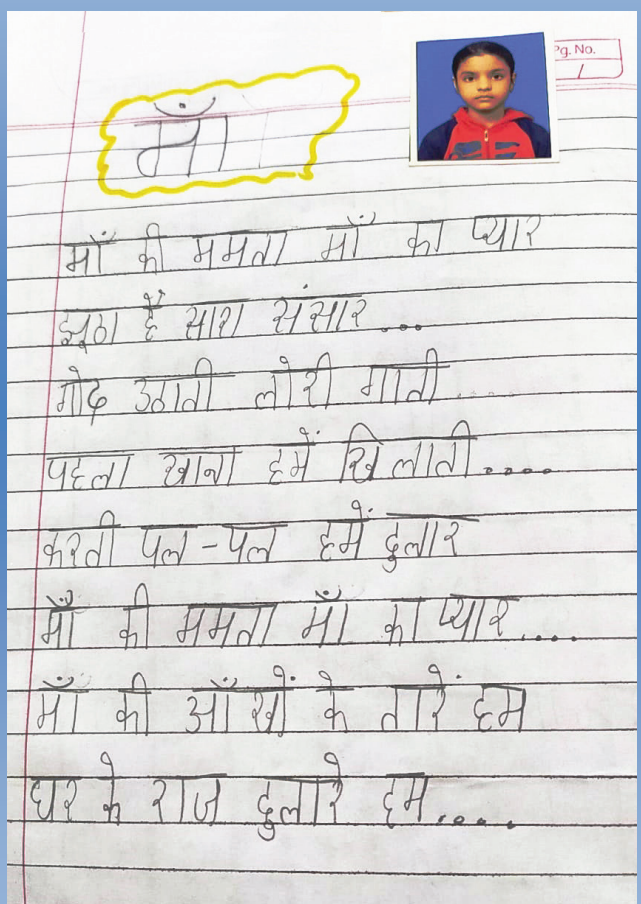

Pg. No. 1

माँ

माँ की ममता माँ का प्यार
झूठा है सारा संसार...
गोद उठाती लोरी गाती...
पहला खाना हमें खिलाती....
करती पल-पल हमें दुलार
माँ की ममता माँ का प्यार....
माँ की आँखों के तारे हम
घर के राज दुलारे हम....

— चार्वी यादव

कविता

17

योग एवं स्वास्थ्य

रितिका*

योग जीवन है, योग शक्ति है,
योग भक्ति है, विकारों से मुक्ति है।

रोगों से मुक्ति का योग ही समाधान है,
हमारी हर समस्या का योग ही निदान है।
समष्टि से व्यष्टि का मिलान है,
योग मानव जीवन को प्रकृति का अनमोल वरदान है।

सकारात्मकता का सवेरा है, मिटाता मन का अंधेरा है,
योग आत्म से एकाकार है, इसके बिना जीवन निराधार है।
योग आत्म शोध, जगत बोध है, संभावनाओं की तलाश है,
सूक्ष्म का विस्तार है, जीवन की संजीवनी, आत्म से साक्षात्कार है।

आओ योग करें, जीवन को सुख से भरें।

**परियोजना कनिष्ठ सलाहकार*, राष्ट्रीय शिक्षा एवं प्रशासन संस्थान (नीपा), नई दिल्ली

कुछ अन्य रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशन

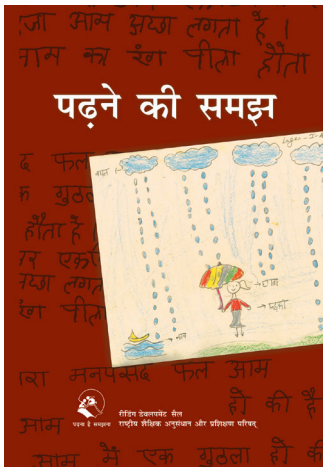

पढ़ने की समझ
₹ 75.00/pp.178
Code — 3277
ISBN — 978-81-7450-993-2

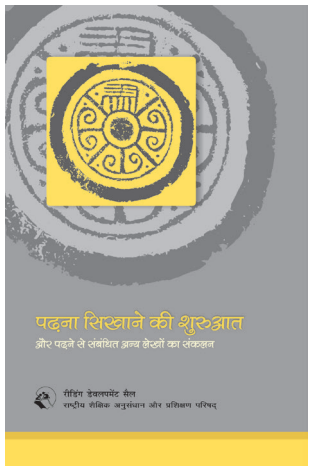

पढ़ना सिखाने की शुरुआत
₹ 55.00/pp.68
Code — 2100
ISBN — 978-81-7450-991-6

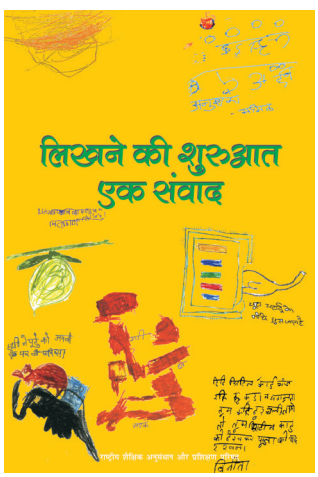

लिखने की शुरुआत एक संवाद
₹ 165.00 /pp.130
Code — 32107
ISBN — 978-93-5007-268-4

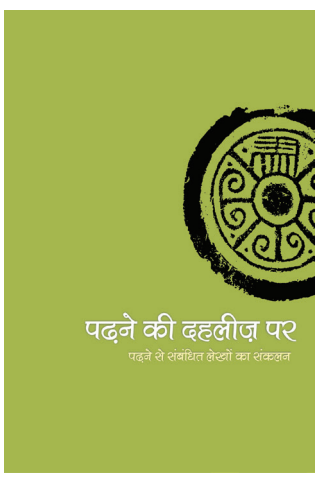

पढ़ने की दहलीज़ पर
₹ 35.00/pp.62
Code — 3267
ISBN — 978-81-7450-8371-9

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

लेखकों के लिए दिशा-निर्देश

- लेख सरल भाषा में तथा रोचक होना चाहिए।
- लेख की विषय-वस्तु 2500 से 3000 या अधिक शब्दों में डबल स्पेस में टंकित होना वांछनीय है।
- चित्र कम से कम 300 dpi में होने चाहिए।
- तालिका, ग्राफ़ विषय-वस्तु के साथ होने चाहिए।
- चित्र अलग से भेजे जाएँ तथा विषय-वस्तु में उनका स्थान स्पष्ट रूप से अंकित किया जाना चाहिए।
- शोध-पत्रों के साथ कम से कम सारांश भी दिया जाए।
- लेखक लेख के साथ अपना संक्षिप्त विवरण तथा अपनी शैक्षिक विशेषज्ञता अवश्य भेजें।
- शोधपरक लेखों के साथ संदर्भ की सूची भी अवश्य दें।
- संदर्भ का प्रारूप एन.सी.ई.आर.टी. हाउस स्टाइल के अनुसार निम्नवत होना चाहिए–

  सेन गुप्त, मंजीत. 2013. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा*. पी.एच.आई. लर्निंग प्रा. लि., दिल्ली.

लेखक अपने मौलिक लेख या शोध-पत्र सॉफ़्ट कॉपी (यूनिकोड में) के साथ निम्न पते पर या ई-मेल पर भेजें –

अकादमिक संपादक
प्राथमिक शिक्षक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016
ई-मेल – prathamik.shikshak@gmail.com

रजि. नं. 32427/76

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित शैक्षिक पत्रिकाओं के मूल्य

Rates of National Council of Educational Research and Training Journals and magazine

पत्रिका	प्रति कॉपी शुल्क	वार्षिक सदस्यता शुल्क
School Science (Quarterly) A Journal for Secondary Schools *स्कूल साइंस (त्रैमासिक)* *माध्यमिक विद्यालयों के लिए पत्रिका*	₹ 55.00	₹ 220.00
Indian Educational Review A Half-yearly Research Journal *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (अर्द्ध वार्षिक शोध पत्रिका)*	₹ 50.00	₹ 100.00
Journal of Indian Education (Quarterly) *जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन (त्रैमासिक)*	₹ 45.00	₹ 180.00
भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक) *Bharatiya Aadhunik Shiksha (Quarterly)*	₹ 50.00	₹ 200.00
Primary Teacher (Quarterly) *प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक)*	₹ 65.00	₹ 260.00
प्राथमिक शिक्षक (त्रैमासिक) *Prathmik Shikshak (Quarterly)*	₹ 65.00	₹ 260.00
फिरकी बच्चों की (अर्द्ध वार्षिक पत्रिका) *Firkee Bachchon Ki (Half-yearly)*	₹ 35.00	₹ 70.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पत्रिकाओं की सदस्यता लेने हेतु शिक्षाविदों, संस्थानों, शोधार्थियों, अध्यापकों और विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए पते पर संपर्क करें।

मुख्य प्रबंधक अधिकारी, प्रकाशन विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016
ई-मेल – gg_cbm@rediffmail.com, फ़ोन – 011-26562708, फ़ैक्स – 011-26851070

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING